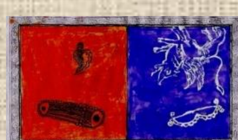
ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३७१ म अंक ०१ जून २०२३ (वर्ष १६ मास १८६ अंक ३७१)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve

Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 371 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्॥

अक्षर खम्भा (आखर खाम्ह)

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मान आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ऊपर (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ई त्रिभुवनरूपी उत्तम उक्तिक कीर्तिरूपी लत्ती कोना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षँ शान्ति:

: :

अनुक्रम

२.२.एम.एस.यू. क संक्षिप्त परिचय

२.३.चंदना दत्त- MSU

२.४.किसलय कृष्ण- "एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन"सँ "मिथिलावादी पार्टी" धरि

२.५.अजित कुमार झा- घटाटोप अन्हरिया मे उम्मीदक किरण: मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन

२.६.सच्चिदानंद सच्चू- मैथिल संगठन आ ओकर सामाजिक सरोकार

२.७.लक्ष्मण झा सागर- मिथिला स्टूडेंट यूनियन

२.८.प्रणव झा- मिथिला स्टूडेंट यूनियन

२.९.आचार्य रामानंद मंडल- मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन बनाम मिथिला राज्य!

३ अंकक अन्य रचना

३.गद्य खण्ड

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

५.विदेह ई कोश

६. विदेह ई-लर्निंग

७.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

८.विदेह मिथिलाक खोज

९.विदेह मिथिला नक्शा



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি রনষ্পতয: শান্তির্রিশ্বে দেরা: শান্তির্ব্রঁহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্রঁহ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুনোকমে, ঋংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জনমে, ঔষধমে, রনষ্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে ঋা ব্রঁহ্মমে শাঁতি হুঅয।

ওঁ-ব্রহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুলোকক বীচ, আপ:-জল, বিশ্বেদেবা- সভ দেবতা, ব্রহ্ম- সর্জক।

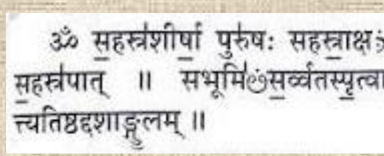
ॐ, सहस्रंशीर्षा पुरुंषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्।

ওঁ, স↓হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুৰু↑ষঃ। স↓হ↓স্রা↓ক্ষঃ স↓হস্রা↑ পাত্।

स भूमिं ग्वंग विश्वतों वृत्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

স ভূমিঁ↑ ẇ বি↓শ্বতো↑ বৃ↓ত্বা। অত্য↑তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।


ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

প↓দ্ভ্যাগঁ↑ শূ↓দ্রো অ↑জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रांत्।

প↓দ্ভ্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑ত্।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

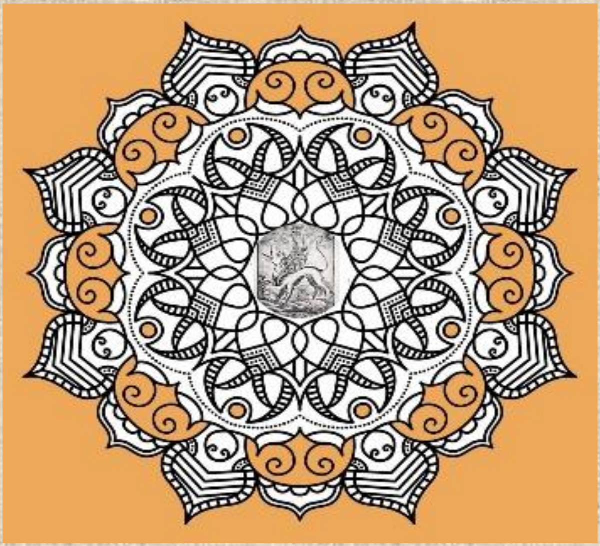
卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३७० पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

मैथिली आ मिथिला लेल अपनी-अपनी हिसाबे करैत साहित्यकार आ करैत लेखनी एसोसियेशन (साहित्य अकादमी सहित) आ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरक करैत मिथिलावासी सम्बन्धित लोक आ संस्थाक अतिरिक्त मिथिला स्टूडेन्ट यूनियनपर विशेषांक निकालबाक निर्णय लेल, एकर उद्देश्य छल जे विविध करबामे ओ किछु काज सोझाँ अनबाक छी आ किछु काज करबाक छी। जेना करैत मिथिला/ मैथिलीक जातिवादी संस्था सभ जेहने मैथिलीक जातिवादी रंगमंचक संस्था सभ सेहो अछि जे मुख्य काज अछि माला आदि पहिरनाइ, पत्रिका-स्मारिका आदि छपनाइ, ई मात्र सोझाँ अनबाक छी, एकर विवेचन करब महत्व नै छी। ओहिना अपन संस्थाक नामपर अन्तर्राष्ट्रिय वा ब्रह्माण्डीय लगा लिअ, विवेक लेल ओकर कोनो महत्व नै। कारण ओ सभ संस्था द्वारा जातिवादी कल्पना बढ़ाओल जा रहल अछि, कारण ई सभ पाकेट संस्था अछि।

विवेकक विशेषांक अभिनन्दन ग्रन्थ नै छी। मिथिला स्टूडेन्ट यूनियनक विशेषांकमे बहुत आलेखमे ओकरापर बहुत बात आएल सेहो लागल छी। एकर सकारात्मक ई संस्था (एम.एस.यू.) आलोचनाक आलोकमे किछु सुधार करत, कारण ओ पाकेट संस्था नै बनत् संस्था अछि आ तेहेन करबा संदेह नै।

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३७० पर टिप्पणी

साकेत ठाकुर

आदरणीय श्रमन जी पर लिखल सब आलेख नीक लागल.विदेह पत्रिका स' संबंधित सब विद्वान जन क हार्दिक आभार।

लक्ष्मण झा सागर

समय क पक्का अछि विदेह।

सुशील लाल दास

सराहनीय कार्य। मोनसँ पढ़ब। बधाई।

उषाकिरण खान

पहिने देखलहुँ। विषय सूची बहुत विशिष्ट लागल। सुविधासँ पढ़बो।

जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल

उमा कान्त, हम घटना नहि पढ़ैत सकलहुँ, आलेख नहि पढ़ि सकलहुँ। आलेख बहुत अछि। समय पढ़ब।

नारायण जी

आ० रमनजी प्रकाशित विशेषांक हम थोड़ेक पढ़ल अछि। ताहि आधार पर कहब जे मैथिली साहित्यमे रमनजीक रचनासँ पहिनहुँ 'घनमुँहा' शब्द आएल अछि, आ से आएल अछि पुर्णेन्दु चौधरीक कथा द्वारा। हुनकर एक टा कथाक शीर्षक थिक 'घनमुहाँ', जे हिंदीक कथा साहित्यक प्रसिद्ध पत्रिका 'सारिका'मे 'लौट जा पांव ' शीर्षकसँ अनूदित भ' छपल अछि। हमरहु 'म'कँ सानुनासिक वर्ण मानैत छी। तँ मैथिलीमे 'घनमुहाँ' लिखैत छी। शुभकामना।

माधव प्रसाद उपाध्याय

साहित्य सत्ता र राष्ट्र सत्ता एक अर्काका परिपूरक हुन साथै दुवै पक्षका सत्ताका साझा इतिहास=हुन्छ,ज्ञान कहिल्यै मर्दैन।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

मिथिला स्टूडेण्ट यूनियन (एम.एस.यू.) विशेषांक

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भ

२.२.एम.एस.यू. क संक्षिप्त परिचय

२.३.चंदना दत्त- MSU

२.४.हिमकर राय्राज- "एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन"सँ "मिथिलावादी पार्टी" धरि

२.५.अजित कुमार झा- घटाटोप अन्हरिया मे उम्मीदक किरण: मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन

२.६.सच्चिदानंद सच्चु- मैथिल संगठन आ ओकर सामाजिक सरोकार

२.७.लक्ष्मण झा सागर- मिथिला स्टूडेंट यूनियन

२.८.प्रवीण झा- मिथिला स्टूडेंट यूनियन

२.९.आचार्य रामानंद मंडल- मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन बनाम मिथिला राज्य!

२.१०.डॉ कैलाश कुमार मिश्र-मिथिला स्टूडेंट यूनियन: दशा, दिशा आ गन्तव्य

२.११.लालदेव कामत- एम एस यू कर हश्र

२.१२.आशीष अनचिन्हार- MSU केर काज एवं हमर अपेक्षा

२.१३.प्रवीण कुमार झा- जनहित याचिका म

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भ

1

पोथीक रूपमे तँ संस्थाक उपर काज भेल छै। पत्रिका सभमे सेहो छिटपुट रिपोर्ट वा संस्था सभहक सूची बला आलेख सभ छपैत रहलैए। मुदा एखन धरि कोनो पत्रिका कोनो संस्थापर विशेषांक नहि प्रकाशित कर छल। जीवित लेखक जकाँ एक बेर फेर विदेह एहन काज करए बलामे पहिल भऽ गेल।

दिसम्बर 2022 मे विदेह "एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन विशेषांक" प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा कएलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा।

MSU पर प्रस्तुत विशेषांकमे एहि संस्थाक प्रशंसा-आलोचना सभ हएत। लोक जकरासँ अपेक्षा करैत छै तकरा बारेमे किछु कहैत छै वा लिखैत छै। तेँ MSU कर बारेमे जे लिखल गेल छै तकरासँ ई संस्था वा आन संस्था सभ अपना लेल तँ ओहि संस्थाक संग-संग मिथिलाक कल्याण भऽ जाए। आ तेँ विदेहक हरेक विशेषांक जकाँ ईहो विशेषांक अभिनंदनग्रंथ हेबासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छनि तिनकामे सुधारक गुंजाइश खतम भऽ जाइत छै। तेँ विदेहक विशेषांकमे आलोचना-प्रशंसा सभ हएत।

जेना कि एहि विशेषांकसँ पहिने संस्थापन कोनो आयोजन नै भेल छै तेँ हमरा लग एकर कोनो निजगुत अनुभव नै अछि। आ तेँ लेखक केर उत्तर जाहि अनुभवमे विशेषांक अबैत ठीक तहिना तेँ भेटत। तेँ अलग बात जे हम सब कतेक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर शुरुआत विदेहक आन विशेषांक जकाँ अछि। संग-संग तेँ क्रम न तँ उम्रक वरिष्ठता केर पालन कएल आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एकर ध्यान जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै होनि।

पहिने विदेहक सब अंक नागरी, तिरहुता आ ब्रेल लिपिमे प्रकाशित होइत छल आब एहिमे कैथी, बंगाली, एवं आइ.पी.ए. लिपि सेहो जोड़ल गेल अछि, मने एखन विदेह कुल छह लिपिमे प्रकाशित होइए। एकर अतिरिक्त विदेहक किछु अंक रंजना (नेवारी केर एक आन रूप), ब्राह्मी, खरोष्ठी, उर्दू, तिब्बती एवं तिब्बती-उमे लिपिमे सेहो छपल अछि। कुल मिला कऽ देखी तँ विदेह बारह लिपि अपना लेल रखने अछि जाहिमेसँ कुल छह टा लिपिमे विदेह लगातार प्रकाशित भऽ रहल अछि।

2

विदेह द्वारा लेखकपर विशेषांक 'जीवैत मुद्रा उपरान्त' शृंखला रूपमे शुरू कएल गेल छल 2015 सँ जकरा आब "विदेहक जीवित मैथिलकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी-रंगमंच-निर्देशकपर विशेषांक शृंखला" नामसँ जानल जाइत अछि।

मैथिलकर्मीसँ हमर सम्बन्धक आशय जिनकर काज मिथिला-मैथिली-मैथिली लेल कोनो माध्यमसँ रहल हो। ओ संगठनकर्ता सेहो भऽ सकै छथि, आन रचनाक लेखक सेहो। तहिना संगीतकर्मी मने गीत-संगीतसँ जुड़ल लोक। संग-संग संस्था सेहो भऽ सकैए।

एहन पृष्ठभूमि, एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह 10 टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छै। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि लेख एकत्रित करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ, ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जाहि लेख केर उम्मेद केर रहैत छी हम ताहि नै आबैए, जाहि लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत- अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारणो छै, किनको ई लागै छनि जे आलेख लिखब से हम अपन रचना किए ने लीखि लेब, किनको लग पोथिए नै रहै छनि, जखन कि हम सभ पाठककेँ विकल्प रूपमे पोथीक पी.डी.एफ फाइल सेहो देबाक लेल तैयार रहैत छी। किछ विदेहक समानधर्मी रूपसँ दुखी छथि, तँ किनको मित्रकेँ विदेहसँ दिक्कत छनि तँइ ओ नहि देता। बहुत लोक तँ विदेहमे एहू लेल रचना नै पठबैत छथि जे कहीं हमरा अकादमी वा धनी संस्था सभ न देखि लिए। अकादमी आ संस्था सभ विदेहकेँ अपन अपन शत्रु मानि बैसल अछि आ पुरस्कारक इच्छा रखनिहार तँइ विदेहमे रचना नै पठबै छथि। एकरा हम संकट बूझै छियै जे सभ फेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठबैत छथि। जे सभ कहियो काल

फेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सेहो टाइप करैत छी। जिनकर नवका टाइप करैत छी तहिमे स्वतः नुकसँ टाइप करनिहारक वर्तनी आबि जाइत छै। ई संकट लेखक वा कि संस्था दुनू लेल बनाबए अछि। खास यहिना करेलहुँ जे संकटसँ बची समर्थन अछि तँइ आइ यहिलसँ लऽ कऽ दसम विशेषांक धरि पढ़ूवलहुँ हम। निश्चित समर्थन बची रहल हमरा। जखन कि विदेहक ई 10 विशेषांक कर अलाव आन विषयपर विशेषांक प्रकाशित रहल अछि।

3

पाठक जखन एहि विशेषांकके पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ठा मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से साम-साम हमर सेहो गलती थिक जे हम सेहो संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई ध्यान राखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हमर वर्तनी बला लेखकक स्वीकार करैत एलैए। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमर सेहो गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ठाम सेहो काला विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिया रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ काला पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा साथियो जे 72-80 पन्नाक काला प्रिंट पत्रिका होइत छै तइमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तइमे लेखक कए किछु नवका

नहि छनि आ हुनका लगमे किछु नव सामग्री नहि छनि। मुदा हुनका लोकनि नव सामग्रीपर बेसी ध्यान दै छथि। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइते नहि। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोना ने कोना किनयर समझौता करए पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्रणक हो कि विचारधाराक हो कि सामग्रीक हो। हुनका लोकनि वर्तनीक किनयर समझौता कए लेल छथि मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भए गेलाक बाद दोबारा नै भए सकैए (भए सकैए मुदा हुन पाइ लागि जाएत) तेँ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही नहि छै। इन्टरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इन्टरनेटसँ प्रिंट होबाक अवधि) ओकरा सही कए सकैत छी मुदा सामग्रिए बसिया भेल तँ सही वर्तनी नहिये। नव अध्याय नै खुजि सकत तेँ हुनका लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता कएलहुँ। हुनका लोकनि कएलनि, कयलनि आ कलनि तीनू शुद्ध मानैत छथि, एक शुद्ध मानैत छी एकै नजरिमे तीनू शुद्ध भए जाएत। आन शब्दक लेल एहन बुझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आन विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेहक द्वारा जीवैत लेखक आ संस्थाक विशेषांक शृंखलामे प्रकाशित भेल आन विशेषांक सभहक लिस्ट एना अछि (एहिठाम जे अंकक लिस्ट देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत)-

१) अरविन्द ठाकुर विशेषांक ०१ नवम्बर २०१५ अंक १८९

२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक ०१ दिसम्बर २०१५ अंक

१९१

३) रामलोचन ठाकुर विशेषांक ०१ अप्रैल २०२१ अंक ३१९

४) राजनन्दन लाल दास विशेषांक ०१ नवम्बर २०२१ अंक ३३३

५) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक १५ जून २०२२ अंक ३४८

६) केदारनाथ चौधरी विशेषांक १५ अगस्त २०२२ अंक ३५२

७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक ०१ नवम्बर २०२२ अंक ३५७

८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक १५ नवम्बर २०२२ अंक ३५८

९) अशोक विशेषांक १ मई २०२३ अंक ३६९

१०) रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक १५ मई २०२३ अंक ३७०

विदेहक अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वातंत्र्यता-अनिरुद्ध ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व" केर नामसँ प्रकाशित भेल उत्साह ओ परिश्रम "एम.एस.यु (MSU)-मिथिला स्टूडेंट युनियनपर कॉलेज एहि विशेषांक केर पोथी रूप सङ्ग आएल।

श्री गँ भेल ओ काज हम सभ कए सकलहुँ तकर विवरण मुदा किछु एहेन पोथी छै ओ कि हम सभ नै कए सकलहुँ जेना २०१६ म हम सभ रामभरोस कापड़ि, कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर पोथी कहियो कए नहि प्रकाशित कए सकलहुँ। पाठक एहि पोथीकेँ एहि लिंकपर देखि सकै छथि- सूचना

बादमे निबन्ध "बीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक" (जे कि प्रकाशित नै भऽ सकल) लेल बीरेन्द्र मल्लिक जीक साक्षात्कार जे नवोनारायण मिश्रजी स निबन्ध ३३१म अंकमे प्रकाशित भेल पाठक एकरा एहि लिंकपर पढ़ि सकै छथि- १ जनवरी २०२२ अंक ३३१

4

निबन्ध एहि जीवित विशेषांक शृंखलामे किनकर चयन हो ताहि लेल माटा-माटी निर्धारक किछु बिन्दुक पालन कएल जाइत अछि-

१) लगभग पाँच-छह मास पहिनेसँ निबन्ध अयन पाठककेँ सुझाव देबा लेल लेल सूचना देल अछि।

२) आएल सुझावमेसँ निबन्ध मात्र जीवित लेखककेँ चयन करैत अछि। संस्था सभ वर्तमानमे जीवंत हेबाक चाही।

३) सभ जीवित लेखकक बीचमे हुनकर लेखन एवं आचरणक साम्यता देखल जाइत अछि। जाहि लेखकक लेखन आ आचरणमे बेसी साम्यता (कम फाँक) रहैत तहन छह टा नाम चयनित होइत अछि।

४) छह नाम एलायन ओ तुलना कएल जाइत छै जे ओ छहो लेखक अथवा संस्थाकेँ नवल लिखबाक वा सामाजिक काज करबाक एवजमे समाजसँ की भेटलनि।

५) जिनका सभसँ कम भेटल बुझाइत अछि ताहि तीन लेखक-संस्थाकेँ अगिला चरण लेल राखि लैत छी।

६) एहि तीन चयनित जीवित लेखकक वा संस्थाक रचना, काज, हुनक उद्देश्य आदिक बीचमे परस्पर तुलना करैत जाइत अछि।

७) अंतिम रूपसँ विदेह द्वारा एकटा नाम चुनि सालक अंतमे घोषणा करैत जाइत अछि आ नियत समयपर ई विशेषांक निकालबाक प्रयास करैत छी।

प्रश्न उठि सकैए जे कि उपरक नियम एहन छै जाहिमे अंतिम रूपसँ सभ सुपात्र जीवित लेखक केर चयन समयपर भऽ जाति? तऽ एकर उत्तर छै नै। विदेहक पाठक लग सेहो अपन सीमा छनि। मुदा अही सीमाक संग हमरा सभकेँ अपन बात रखबाक छै आ मैथिली लेल एकटा एहन नक्शा बना रखबाक छै जाहिसँ आबए बला 500-600 वर्षक साहित्य विदेहक लीकसँ प्रेरणा पाबए। अही विचारक संग विदेह द्वारा जीवित लेखकपर अपन ध्यान सेहो केंद्रित कऽ रहल अछि जे कि सुपात्र छथि मुदा जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नहि प्रकाशित भऽ सकल। एकर नाम भेल विदेहक "नित नवल सिरीज"। एहि नव विचारक मुख्य बिंदु एना अछि-

1) विदेहक संपादक गजेन्द्र ठाकुर एकटा कोनो जीवित लेखक वा कलाकारपर एकाग्र आलोचना करता मने ओहि लेखक केर उपलब्ध सभ साहित्यपर। एहि पोथीक भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी कोनो एक भाषामे रहत। एहि पोथीक पहिल रूप ई-बुक केर रूपमे आओत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबए जे कि परिस्थितिपर निर्भर करत।

2) लेखक वा कलाकार केर चुनाव संपादक अपन रुचि वा विदेह टीमक रुचि केर हिसाबेँ करता।

3) एहिमे उपरका लेखक वा कलाकार केर चयन संभव हएत जिनकर उपलब्ध हुनक पोथीक PDF रूपमे विदेहक माध्यमसँ सार्वजनिक रूप छनि। कलाकार लेल पुरस्कार एवं आन साइट सेहो मान्य होएत।

4) एहि परियोजनाक लेल चयनित लेखक वा कलाकारपर काज संपादक केर समय केर अनुसार होएत। मुदा एकर समय सीमा करब संभव नहि। नित नवल सिरीजमे:-

(i) सुभाष चंद्र यादवपर केन्द्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव",

(ii) राजदेव मंडलपर केन्द्रित "Rajdeo Mandal- Maithili Writer" आ

(iii) जगदीश प्रसाद मण्डल केन्द्रित "Jagdish Prasad Mandal- Maithili Writer" प्रकाशित भेल अछि। पहिल दुनू पोथीक लोकार्पण ३१ दिसम्बर २०२२ केँ १११म सगर राति दीप जरय म कएल गेल। तेसर पोथीक लोकार्पण २७ मार्च २०२३ केँ ११२ म सगर राति दीप जरय म कएल गेल।

ऐ शृंखलामे:-

(iv) "नित नवल दिनेश कुमार मिश्र" आ

(v) "नित नवल सुशील" जारी अछि आ दुनूक पोथी रूप जल्दिये

आएत।

ई शृंखलाक आगाँक घोषणा लेल http://videha.co.in/investigation.htm देखैत रहू।

5) ऊपरक विशेषांक आ किछु नवल सिरीजक केर अतिरिक्त विदेहक आन विशेषांक केर सूची एना अछि (अंकक लिस्ट ओ देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत)-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

३) विहनि कथा विशेषांक ६१ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

४) बाल साहित्य विशेषांक १० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

५) नाटक विशेषांक १२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

६) समीक्षा विशेषांक

१) नारी विशेषांक ११म अंक ०१ मार्च २०११

८) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य बानगी) ९१म अंक

९) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

१०) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

११) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

१२) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अंक१ १५ अप्रैल २०१६/ २०१ म अंक, १ जुलाई २०१६

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २११ म अंक ०१ जनवरी २०१७

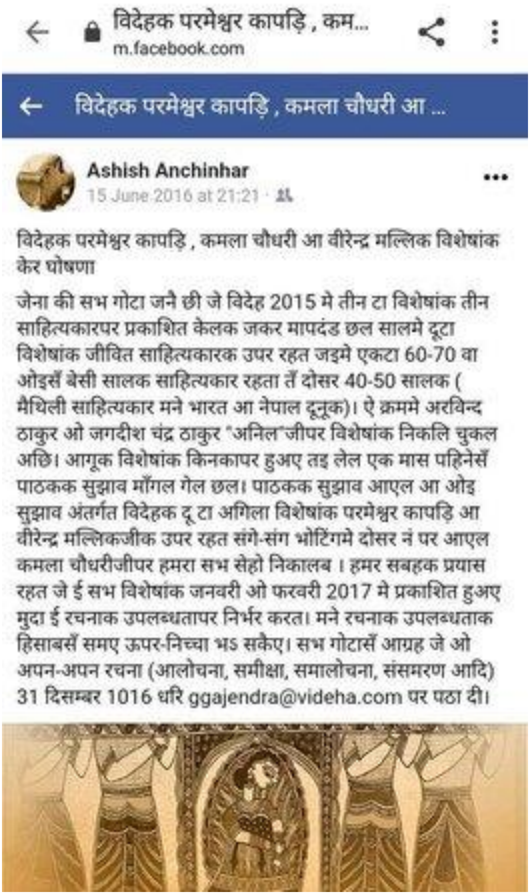
१५) मैथिली नव पत्रकारिता विशेषांक-३१३म अंक १ जनवरी २०२१

१६) मैथिली वीहनि कथा विशेषांक-२, ३१७ म अंक १ मार्च २०२१

१७) कला-विमर्श विशेषांक (सहयोग- संजय दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

अहू संदर्भ किछु एहना घोषणा छै जे कि हम सभ नै कऽ सकलहुँ जेना विदेहक "साहित्यिक अध्यावधि विशेषांक" हमरा लागैत एखन धरि नै प्रकाशित कऽ सकलहुँ अछि। एकर घोषणा हम २०१९ म कएने रही। एहि घोषणाक फेसबूक लिंक देखू।

परिशिष्ट-1



विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कम...
m.facebook.com

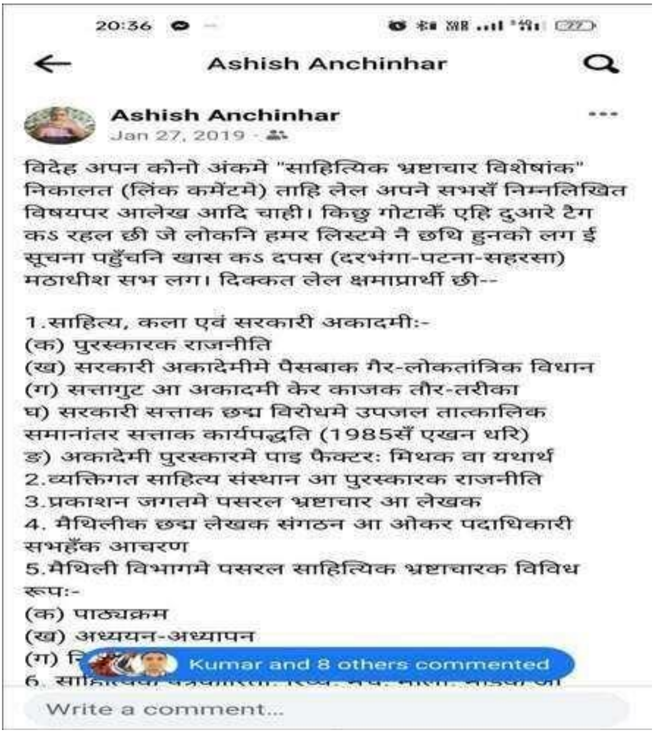
विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कमला चौधरी आ ...

Ashish Anchinhar
15 June 2016 at 21:21

विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह 2015 मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा 60-70 वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर 40-50 सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक दू टा अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि आ वीरेन्द्र मल्लिकजीक उपर रहत संगे-संग भोटिंगमे दोसर नं पर आएल कमला चौधरीजीपर हमरा सभ सेहो निकालब । हमर सबहक प्रयास रहत जे ई सभ विशेषांक जनवरी ओ फरवरी 2017 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना (आलोचना, समीक्षा, समालोचना, संसमरण आदि) 31 दिसम्बर 1016 धरि ggajendra@videha.com पर पठा दी।

यनिशिष्ट-2



20:36

Ashish Anchinhar

Ashish Anchinhar
Jan 27, 2019

विदेह अपन कोनो अंकमे "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" निकालत (लिंक कमेंटमे) ताहि लेल अपने सभसँ निम्नलिखित विषयपर आलेख आदि चाही। किछु गोटाकेँ एहि दुआरे टैग कऽ रहल छी जे लोकनि हमर लिस्टमे नै छथि हुनको लग ई सूचना पहुँचनि खास कऽ दपस (दरभंगा-पटना-सहरसा) मठाधीश सभ लग। दिक्कत लेल क्षमाप्रार्थी छी--

1.साहित्य, कला एवं सरकारी अकादमी:-
(क) पुरस्कारक राजनीति
(ख) सरकारी अकादेमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान
(ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काजक तौर-तरीका
घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति (1985सँ एखन धरि)
ङ) अकादेमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टर: मिथक वा यथार्थ
2.व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति
3.प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक
4. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सभहँक आचरण
5.मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप:-
(क) पाठ्यक्रम
(ख) अध्ययन-अध्यापन
(ग) नि

Kumar and 8 others commented

Write a comment...

परिशिष्ट-3

विदेह अपन कोनो अंकमे "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" निकालत (लिंक कमेंटमे) ताहि लेल अपन सभसँ निम्नलिखित विषयपर आलेख आदि चाही।

1.साहित्य, कला एवं सरकारी अकादमी:-

(क) पुरस्कारक राजनीति

(ख) सरकारी अकादमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान

(ग) सत्तागुट आ अकादमी कर काजक गैर-तरीका

घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति (1985सँ एखन धरि)

ङ) अकादमी पुरस्कारमे पाइ रैकेट: मिथक वा यथार्थ

2.व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

3.प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

4. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सभहँक आचरण

5.मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप:-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

6. साहित्यिक पत्रकारिता, विद्यु, मंच, माला, माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा।

7.लेखक सन्दर्भक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव, कौलंतरवाद आ तकरा पाछूक राजनीति

8.दलित एवं लेखिका सन्दर्भक संग दन्द-फन्द आ ओकर शोषणक विविध तरीका

उपरक विषयक अतिरिक्त सँ कियो साहित्यिक ग्रन्थावाचनक बाद नव विषयपर लिखए चाहथि तँ ओकरो स्वागत रहत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.एम.एस.यू. क संक्षिप्त परिचय

एम.एस. यू. क संक्षिप्त परिचय

एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह मिथिला स्टूडेंट यूनियन पर विचार २०११ म छपल छल जे कि बादमे ओकरा द्वारा कएल गेल काजपर छल। पाठक एकरा एहि लिंकपर पढ़ि सकै छथि- विदेह १५ अगस्त २०११ अंक २३२

एहिठाम प्रस्तुत अछि "मिथिला स्टूडेंट यूनियन" पर संक्षिप्त परिचय। एहि परिचयक अधिकांश तथ्य सार्वजनिक अछि जकरा एहिठाम अपना अनुरूप प्रस्तुत कएलहुँ अछि। एहि संस्थाकेँ "एम.एस.यू वा MSU पर नामसँ सेहो जानल जाइए। नामपर क्लिक कऽ क्रमशः एकर विकीपीडिया आ वेबसाइट खुजत। मिथिलावादी पार्टी नामक संस्थाकेँ MSU नैतिक समर्थन दैत।



चित्र- 1



चित्र- 2

स्थापना- मार्च- 2015

संस्थापक सदस्य- अनुप मैथिल, रौशन मैथिल, गिरीश कर्ण, राजा राय, कमलेश मिश्रा।

वृति- लाभरहित आ गैर राजनीतिक छात्र संगठन

उद्देश्य- मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकास

उपस्थिति- विद्वान एवं दर्शक प्रमुख नाम (मुख्यालय-दिल्ली)

प्रतीक रंग एवं वस्त्र- पीयर रंग, पियरका टी शर्ट-गमछा, पीयर सलवार सूट-जूआ

MSU सँ संबंधित आन चित्र जे कि विभिन्न अवसरक अछि आ विभिन्न माध्यमसँ लेल गेल अछि-



चित्र- 3



चित्र- 4


#MSU_DEMANDS_MDB
MSU
मिथिला स्टूडेंट यूनियन
!! एक डेग, विकास लेल !!
लॉन्ग मार्च मिथिला विकास बोर्ड के लेल
Shot on OnePlus

चित्र- 5



चित्र- 6



चित्र- 7

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.३.चंदना दत्त- MSU



चंदना दत्त

MSU

"मिथिला स्टूडेंट यूनियन" मिथिलाक जागरूक विद्यार्थी सभहक संगठन अछि जे सदिखन निःस्वार्थ भावनासँ मिथिलाक समस्या संग ठाढ़ रहैत अछि। MSU केर स्थापना २०१७ मे भेल। तखनसँ अनवरत ई संगठन अनेक समस्याक समाधान लेल संगठित रूपसँ अपन अवाज बुलंदीसँ उठा रहल अछि। मधुबनी, दरभंगा, पटना दिल्लीमे मिथिला राज्य लेल अपन अवाज दिल्ली धरि पहुँचा रहल अछि।

बाढ़ पीड़ित सहायता, रक्तदान शिविर, दरभंगामे एयरपोर्टक सुचारू संचालन हेतु, मिथिला डेवलपमेंट बोर्ड, चिन्नी मिलक पुनसँ संचालन, नैसी-प्रद्युम्न हत्याकांड लेल भेल आन्दोलनमे MSU सक्रिय रूपसँ काज केलक। MSU सदिखन छात्र एवं छात्राक हितमे ठाढ़ रहैत अछि।

मिथिलावादी पार्टी एखन शासन रूपमे ठाढ़ भेल अछि जकर सहयोगसँ पंचायत चुनावमे कतेक मुखिया-सरपंच बनल छथि। दलित-पिछड़ा संवर्धन यात्रा MSU निकालि रहल अछि।

MSU केर एकटा उद्देश्य अछि जे अपन छात्र आ छात्राक हितमे काज करैत रही। जाहिमे मिथिलाक बहुमुखी विकास, सांस्कृतिक धरोहर आ पर्यटन स्थल केर विकास, अध्यापक नियुक्ति पीड़ित सहायता, अपन छात्रमे रोजगार-स्वरोजगार आदि प्रमुख अछि। MSU एकटा गैर राजनीतिक छात्र संगठन अछि आ अपन उद्देश्यमे लगातार सफल भऽ रहल अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.४.हिमकर रानब्राज- "एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन"सँ "मिथिलावादी पार्टी" धरि



हेमकान्त भारद्वाज

"एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन"सँ "मिथिलावादी पार्टी" धरि

बहुत दुखदायी आ खीज भरल काज होइत छै जखन अहाँक कल्पनाक क्रम बहुत पैघ हो आ अहाँक सामर्थ्य साइज छोटो दs कहल जाए जे छोटो तेना कs लगाए जे छनि दूरसँ देखार भs जाए। हमरा नजरिमे मिथिला-मैथिली आन्दोलनक यथार्थ आ कल्पनामे किछु एहन सन अंतर छैक।

जून मासक पहिल सप्ताहमे मिथिलावादी पार्टीक राष्ट्रीय महासचिव उग्रनाथ झाक फोन आएल जे संगठन सर्वसम्मतिसँ निर्णय लेलक अछि जे अहाँ पार्टीक प्रदेश अध्यक्षक जिम्मेदारी ली। हम साफ-साफ मना करैत रहलियनि। कोरोना आ ओकर प्रभावक कारणे कारोबार एकदम ठप्प भs गेल रहए। आर्थिक तंगीक बीच एहन निर्णय लेब बहुत कठिन आ सब दृष्टिएँ आत्मघाती सेहो होइत। भविष्यमे अपना माटि लेल किछु करबाक अवसरकेँ देखैत राति भरि तनावमे रहलहुँ। भोर पहिलुक चाहक संग पत्नी (कविता)

कहलनि- बाबू (मोहन भारद्वाज) लग की रहनि? सभ दिन दिक्कतिम रहलाह बाबू ठाकुर जँ छुट्टीह साबाथि गँ हमरा अहाँक कत विश्वास। संचालित ठन एवं आशंकाक बीच ठा अखबार दिस नजरि दए रहलीह आ बाद पिबैत रहलीह। हमरा लागल जेना जकठन खुजि गेल हो। बाद पीलाक बाद पहिल काज कएल जे उग्रनाथ झैयाक स्वीकृति मैसज कS देल।

काना याजनायन काज कनवासँ पहिन निसार्स मीयिंग जनूनी हाऽऽग छै। स हम पहुँचि गेलहुँ मधुबनी कार्यालय। जखन हम पहुँचलहुँ ठाग ए गँ एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन कन काना नीगिगा मामिलायन बैठक जानी नहए। एगानह बजसँ शुनु हल मीटिंग चानि बज साँझम समाप्त हल। बैचारिक मगरिन्नाक बानझ्द समाजिक जिम्मदानी कगक महत्वपूर्ण छैक स आऽऽ देखवाम आएल। जखन एकटा गैन नाजनीतिक छात्र संगठनकँ विधानसभा चुनावम कान नुयँ अयन भूमिका गय कनवाक चाही गाहियन निमर्श हS नहल छल।

हमना सभहक समक्ष चुनाव पूर्व सांगठनिक स्नयन निमर्श लल दु टा मुख्य विषय नहए- पहिल जे मिथिलाबादी पार्टीक मूल संगठन एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन जे कि घोषित नुयसँ एकटा गैन नाजनीतिक संगठन छै ठाकन विधान सभा चुनावम कान स्नयन आ कगक भूमिका हाऽऽक, दोसन- जे एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन कन साथी विधानसभा चुनावम अयन उम्मदवानी प्रस्तुत कनथि वा कि नहि।

ओहू विषयपर कोनो संशय नहि जे मिथिलावादी पार्टीक मूल आधार एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन एकटा मजगूत छात्र संगठन छै, जकरा दमपर आ जकरा काजक आधारपर मिथिलावादी पार्टीक परिकल्पना कएल गेल। मिथिलावादी पार्टीकेँ एकटा राजनीतिक पार्टीक रूपमे मान्यता तँ भेटल परंतु चुनाव काल धरि एकर कोनो सांगठनिक आकार-आधार नहि बन रहल।

मिथिलावादी पार्टीक राष्ट्रीय अध्यक्ष हुकुमदेव यादव, महासचिव स्क्रीनिंग कमिटीक प्रधान सदस्य, एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियनक राष्ट्रीय अध्यक्ष, महासचिव, संगठन मंत्री,, जिला अध्यक्षक संग कएक दिन कएक राउन्ड बैसारक बाद तय भेल जे पंचायत, प्रखंड, जिला आ विधानसभा स्तरपर चुनाव प्रभारीक संग बूथ प्रभारी तक पूरा चुनाव प्रचार आ राजनीति एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन कर साथी मिथिलावादी पार्टी आ उम्मेदवारक बाद टीमक संग समन्वय बैसा कऽ निभाएत। समन्वय स्थापित करबाक पहिल जिम्मेदारी प्रखंड अध्यक्ष आ विधानसभा प्रभारीकेँ देल गेल। संगहि बहुत विमर्शक बाद ईहो निर्णय लेल गेल जे ई पद सभ विधानसभा चुनावक मतगणनाक दिन स्वतः समाप्त भऽ जाएत। हमरा सभहक पासन जे निवारणीय विषय रहए ओहिपर निर्णय करबामे बहुत समय नहि लागल। एम.एस.यू (MSU)-मिथिला स्टूडेंट यूनियन एकटा छात्र संगठन छैक, एकटा संगठनक कार्यशैली आ एकटा राजनीतिक दलक कार्यप्रणालीमे बहुत अंतर होइत छै संगहि संग छात्र संघ चुनाव आ विधानसभा चुनावमे सेहो बहुत फर्क छै। तैं अनुभवकेँ देखैत आ संगठनक

साथी सरकारक आर्थिक स्थितिकेँ देखैत सहज निर्णय भऽ गेल जे हमरा सभ चुनाव लड़बाक स्थितिमे नहि छी आ ने अनुभव अछि तेँए विधानसभा चुनावसँ अनुभव लऽ प्राथमिक स्तरक यानी पंचायत स्तरक चुनावमे हम सभ अपन दावेदारी प्रस्तुत करब ताकि संगठनकेँ जमीनी आ राजनीतिक दावेदारी सेहो मजगूतीक संग ठाढ़ भऽ सकए।

जखन एहि दुनू विषयपर निर्णय भऽ गेल तखन नव समस्या ठाढ़ भेल जे विधानसभा चुनावमे मिथिलावादी पार्टी दिससँ के? हम सभ सैद्धांतिक रूपेँ एहि बातपर सहमत नहि जे हम सभ ओ उम्मेदवारक समर्थन करब जे कोनो मिथिला-मैथिलीसँ इतर पार्टी दिससँ ठाढ़ होथि आ हुनकर प्राथमिकतामे एहिलेल नम्बरपर मिथिला-मैथिली होइन। दोसर हमरा सभक सैद्धांतिक समर्थनक आधारपर ओ उम्मेदवार नहोथि जे एहिनसँ हमरा सभक संगठनकेँ नैतिक समर्थन करैत रहलाह। अति विमर्शक दौरान एक 'किंतु' लागल जे कि हम सभ ओहन कोनो दलक उम्मेदवारकेँ समर्थन करब जे एहिन हमरा सभकेँ सभ तरह मदति करैत रहलाह अछि? एकर उत्तर आएल-जँ ओ निर्दलीय छथि तखन अन्यथा नहि।

समर्थन माने की? सामान्य नियम छैक जे विचारधारापर सहमति आ चुनाव प्रबंधनमे एक-दोसराकेँ सहयोग। विशाल छात्र संगठन होबाक कारणेँ मिथिला-मैथिली संगठन तँ छात्रे बहुत रास राष्ट्र स्तरीय संगठन सेहो हमरा सभक सहयोग चाहि रहल रहए। बहुत एहना उम्मेदवार भेलाह जे कोनो पैघ दलसँ संबद्ध छथि, ओ कारवा

मूल्य दऽ टिकट चाहि रहल छलाह मुदा टिकट नहि भेटलनि तँ हुनक इच्छा जे हम सभ हुनका निर्दलीय रूपमे समर्थन कऽ दियौन। इएह मंशा रहैत छलनि। हुनका अनुसार समर्थन माने- ओ हमर दलक सदस्यता नहि लेताह, बैनरपर नाम नहि देताह। हमरा दलकेँ कोनो तरहक आर्थिक सहयोग नहि करताह ताहिपरसँ हम सभ, छात्र साथी हुनका लेल सूक्ष्म काज कऽ दियौन। दू मास मोटरसाइकिलमे तेल दिया भोरसँ साँझ धरि दुख खटब। एकटा छात्र लेल काज करब कोनो संभव छैक से हुनका सोचमे नहि रहनि। जखन कि ओ ओहि दलसँ पचासो लाख दऽ टिकट किनबा लेल तैयार छलाह, जाहि दल लेल ओ पछिला पाँच वर्षसँ ओ भीड़ जुटबैत रहलाह, झंडा ढोइत रहलाह।

एहि मानसिकतामे जखन हम सोचब शुरू करहुँ तँ लागल जेना हम मिथिला-मैथिली आंदोलनीकेँ ओ हँसनी बूझैत छथि। आ बात सही छै किएक तऽ मिथिलाक नामपर हमर पूर्वज सेन्टिमेंट जगा बरपर कखनो भाजपा तँ कखनो कांग्रेस वा कखनो आन दल संग सौदा कऽ मिथिलाक आन्दोलनकेँ दमित कऽ दैत छथिन।

कोनो राजनैतिक संगठनक निर्माण एवं आयु एहि बातपर निर्भर करैत छैक जे ओ वैचारिक रूपसँ कतेक मजगूत संगठन अछि। हमरा सभकेँ एहि विषयपर विचार करऽ पड़त जे भाजपा, आर.जे.डी, कांग्रेस, जे.डी.यू सन राजनीतिक दलकेँ पिछलग्गू भऽ मिथिला विकासक परिकल्पना करी वा मिथिलामे मिथिला लेल मिथिलावादी विचारधाराकेँ आगू बढ़ाबी। कोनो चुनाव लड़बा

लल जाहि नूयम धनक उपयाग रहऽ नहल छै या कही गऽ महन्न वढि नहल छै स दिनानूदिन लाकगांत्रिक व्यवस्था लल वसी खागनाक रहल जा नहल छै। छाट दल धनक अ॰॰ व७का खलकँ खलवाम सउम नहि छैक। ७हना स्थितिम हमना सरट लल नक्षा आन दूनुह लागल। क७क टा ७हन उग्रीय दल हमना सरहक सांगठनिक गागगकँ दखैत समझौता कनवा लल यहल कलक जकना या॰॰ गँ खुव नहै आ सीटक हिसावसँ संगठनकँ मनमाहिक या॰॰ सहा दवा लल गैयान नह७ मूदा उा अपना सूनिधानूसान हमना सरकँ निधानसरा उग्रक चयन कऽ उम्मदनान ठाढ कनवा लल दवाव दवाक मानसिकताम सहा नह७, जाहियन हम सर गैयान नहि। अंतगः वाग दु-तीन नांउतसँ आगु नहि वढि सकल। ख७न धन वला निषय अनूउम्हनित नहि गेल। हमन किछु साथिक मानव नहनि ज यार्टी नन अछि, चूनाव चिह्न नहि अछि गऽ ७हना स्थितिम हमना सरकँ या॰॰ वला उम्मदनानक समर्थनम आगु ७वाक चाही आ या॰॰क तिमांत कनवाक चाही ताकी अहिवन नहि गँ अगिला वन लल मजगूत आधान गैयान रहऽ सक७। अधिकान साथी अ॰॰ निचानसँ असहमत नहथि।

दासन यउकँ मानव नहनि ज हमना उाहन निर्दलीय उम्मदनानक समर्थन कनवाक चाही ज शुनुसँ हमना सरहक संग नहल छथि आ निर्दलीय उम्मदनानी प्रस्तुत कऽ नहल छथि चाह उा धननान हाथि ना गनीव। हमना सर दासन यउयन सहमति वना ललहूँ। काहूँ-काहूँ अनूरहनजय गलतिया रहल। मूदा.... अ॰॰ कम्रम क७क गाट हानसँ चिन्हा जाहिन कलनि ज अहाँक टीमक सदस्य उँ या॰॰

बला संग लगातार दु मास काज करता त' स्वाभाविक तौरपर हुनकर मुकाम ओहि दिस भ' जानि। चिन्ता स्वाभाविक रहनि मुदा सब इएह रहै जे लोकसभा चुनावमे त' हमरा सभहक साथी व्यक्तिगत तौरपर अलग-अलग दलक उम्मेदवारक संग छलखिन तकरा बाद ओ आइ धरि हमरा सभहक संग छथि आ संगे-संग अपना क्षेत्रक उचित मुद्दाक पक्षमे लड़ैत रहल छथि। इएह एहि संगठनक अनुशासन ओ ट्रेनिंग छै।

एक विधानसभा क्षेत्रमे औसतन चालीस पंचायत होइत छैक। एक पंचायतमे औसतन तीन गाम। एहि बेर पछिला बेरक मुकाबले ४७ प्रतिशत बेसी बूथ बनाओल गेल रहै। मॉक टेस्ट टाइम आ नियत भोटिंग टाइमकेँ हिसाबसँ देखू तँ पाँच बजे भोरसँ सात बजे साँझ धरि पोलिंग बूथपर रहबाक चाही। यानी हरेक बूथपर दु पोलिंग एजेंट। बाहर पर्ची काटबा लेल कमसँ कम चारि आदमी यानी जँ हम एक विधानसभा मात्र खजौलीक बात करी त' ४८३ बूथ यानी ४८३X६=२८९८ कार्यकर्ताक भोटक दिन जरूरति छै। एकरा अतिरिक्त रातिसँ अपना भोटरकेँ मोटिभेट क' पोलिंग बूथ धरि पहुँचेबाक लेल अलगसँ कार्यकर्ता आ साधनक जरूरति होइत छै स अलग। अनेक बर्खसँ मिथिला-मैथिलीक नामपर चुनावी राजनीतिक कर' बला नेता सभ आइ मूल बातपर किएक नहि ध्यान देलखिन, किएक ओतेक पुरान संस्था सभ जेबी संस्था बनि क' रहि गेल अछि। कारण तकबा लेल कोनो समुद्र मंथन करबाक जरूरति नै छैक। एक नजरिमे अंदाज भ' जाएत जे हिनका लोकतांत्रिक व्यवस्थाक मध्यम मिथिलाक बदलावकेँ कोनो इच्छा नहि छनि। हिनक

उद्यश्च मिथिला-मैथिलीक नामयन चंदा उगाह्व, अयन नाम चमकाज्व वस अगव छनि।

मिथिलावादी यार्टीक मूल छात्र संग0न ज्म.स.यू लग ॐी गागि छैक ज उा अयना साथी कार्यकर्ताक दमयन ह्न वुथयन अॐसँ वसी संख्याम कार्यकर्ता 0।८ कs सकैग अछि। चूनाव जगवा येसाक खल छै गगवा माॐत (गम सहा। ह्मना संग0नक ॐछा नह्ज ज यार्टी रन दस दिनक यूनाव हा, चूनाव चिह्न नहि रटल हा मूदा उँ ह्न वुथयन ह्म सर यालिंग ज्जंट दs सकलहुँ गँ आन यार्टी सरकँ मनावलयन प्रराव जनुन यज्ञौ, आगु उाकन नाजनीगि सहा प्रसागिग रुगै। मगलव जाहि मकिथिलासँ जिगलाक वादा उागुक्ता जनप्रगिनिधि उागुक्ता सूयन सप्रक्वान ना सप्रक्वानक निकासयन (धआन नहि दैग छलाह ह्नका आव (धआन दवs यज्ञानि। आ स चूनावक वाद सांकगिक नूयसँ दखवाम सहा आज्ला। ज्गक संख्याम अॐसँ यह्नि कहिया मैथिलीम शयथ नहि लल (गल नह्ज। रन ह्मन ह्सवूकिया मित्र सर कखना जागीय आधानयन आ कखना दलगग आधानयन आँकज्ञ प्रस्तुग कs उाकना कमगन कनवाक चेष्टा किज्क न कन हाथि।

ह्म सर आ(0। निधानसरा उग्रम अयन सांग0निक गागग दखवाम सउम रलहुँ। रन सटकँ अयना दिस अनवाम वहुग सरुल नहि नहलहुँ मूदा सर वुथयन ह्म सर कार्यकर्ता दलियै। ह्म, ह्मन नाष्ट्रीय अध्यउ सुजिग यादव, नन्नक्षनजी आ यूना टीम यछिला चूनाव सरह्क आँकज्ञ लs कs वैसल नदी। ह्म सर आँकज्ञ निश्लेषणक

आधारपर अहाँ निष्कर्षपर पहुँचलहुँ जे लगभग तीन हजारसँ पाँच हजार साल पूर्व अवस्थामे मिथिला-मैथिलीक नामपर लगभग सभ विधानसभामे छै। इतिहासक विश्लेषण भविष्यक मार्ग निर्माणमे बहुत सहायक होइत छैक। आब हम सभ अहाँ विषयपर चर्चा करब शुरू कलहुँ जे अहाँ आधार सालसँ आगू बढ़बा लेल कोन रस्ता अपनाओल जाए।

वर्तमानक लगभग सभ मिथिला-मैथिली संस्था समान्यतः दू बिंदुपर काज कऽ रहल अछि एकटा भाषा आ दोसर मिथिला राज्य। हमरा सभकेँ अहाँ बिन्दुसँ कोनो असहमति नै अछि जे मिथिला भाषाक विकास होबाक चाही आ हमरा सभकेँ अपन सांस्कृतिक आ भूगोलक संग राज्य भेटबाक चाही। अहाँपर कोनो असहमति भइये न सकैत अछि। चूनावक क्रममे बहुत लोकसँ गप्प भेल। किछु लोकक आग्रह रहनि जे अहाँक संगठन मैथिली भाषाक विकास लेल बहुत एग्रेसिव नहि अछि, मिथिला राज्यक माँग प्रमुखता संग किएक नहि रखैत अछि।

हमरा सभ अपना संगठनमे बौद्धिक विलासितासँ बची बौद्धिक वैज्ञानिकतापर जोर देलियै। हमरा सभकेँ बुझा गेल जे मैथिली भाषाक सहारे बहुत विशाल संगठन ठाढ़ नहि कऽ सकैत छी। १९१०क मैथिलक महासभाक माध्यमसँ मैथिलक जातीय आधारपर गढ़बाक जे प्रयास शुरू भेल ओ तथाकथित संस्कृतनिष्ठ प्रांजल मैथिलीक सहारे आइयो चलि रहल अछि। वर्तमान राजनीतिक दल जाति-धर्मक आधारपर हमरा सभकेँ समकित प्रतिरोधक क्षमताकेँ कम तँ

कऽ॑ऽ नहल अछि संगहि अयन (गाटी लाल कनवाम सहा सहल रऽ नहल छथि।

हमना सरहक समाज जातीय आधानयन वाँटल अछि आ तँऽ कही तँ रावाऽ॑ आधानयन सहा। हमना सरहक जातीय विषमता प्रयाउ नूयं रावाऽ॑ विषमताकँ सहा वढावा दैत नहल अछि। तँऽ हमना सरहक संगठन ऽ॑ मानैत अछि ज विभिन्न जातीय मनुय वला मिथिला समाजकँ अयन गौनवशाली रावा-सांस्कृतिक आधानयन एक सूत्रम वान्हल जवाक चाही। हम सर अयना संगठनम अऽ॑ विषमताकँ खत्म कनवाक ज प्रयास शुनु कएल उकन साकानात्मक यनिणाम सामन आवि नहल अछि। हम सर अयना संगठनक साथीकँ सदैव अऽ॑ वात लल प्रनित कनैत छियनि ज उा सार्वजनिक नूयसँ वा अयना वीच सामान्य वर्ताक दौनान अयन स्थानीय वालयन कायम नहथि। यानि उा अयना घनम जाहि टान आ शैलीम गय कनै छथि सएह टान आ शैली सार्वजनिक रावष्ठ वा गद्य-सयम सहा जानी नाखथि। तखन हम सर साथी जिनकन जातीय आधान अलग-अलग छनि उाहि अऽ॑ यूनातनयंथी-दकियानूसी व्राह्मणक रावा मैथिली मानसिकातासँ दून हताह आ स्वीकान कनता हज यासवानाक रावा मैथिली, सहनसाक रावा मैथिली, वगुसनायाक रावा मैथिली छै। आ हेन स्वतः रावाऽ॑ आधायन एकसूत्रम वान्हल चलि जाएत। अहिना सांस्कृतिक गौनयन सहा हम सर काज कऽ नहल छी। कएक टा उत्रीय गायक-गायिकाकँ हम सर उाकन अयन गायन शैली आ उा सर सहल रऽ नहल छथि। आ हम सर

एक भऽ रहल छी। एहन अछि प्रयासकेँ व्यापक रूपें देखार होएबामे समय लागत यतेक हएत अनुमान।

मिथिला राज्य आन्दोलन हो वा भाषा आन्दोलन कोनो आन्दोलन तावत सफल नहि भऽ सकैत अछि जावत एकटा स्पष्ट वैज्ञानिक सोचक संग मजगूत संगठनक निर्माण नहि होयत। कोनो आन्दोलन अपन सामाजिक मान्यता तखन पबैत अछि जखन ओकर कोनो कानूनी आधार हो, कानूनी रूपसँ जे अधिकार अछि ओकर व्यावहारिक रूपें मान्यता सेहो भेटैक तेँ सरकार दिससँ सेहो अपेक्षा अछि।

यहिनसँ आ एखन शिक्षा नीति त्रिभाषा फार्मूलापर आधारित अछि। व्यावहारिक गौरवपर हम सभ अपना-अपन रूपमे सरकारसँ माँग भऽ करैत रहल छी जे मैथिली माध्यमसँ पढ़ौनी शुरू हो यतेक हम सभ सांगठनिक रूपसँ ई निर्णय करल जे स्कूल खुजलाक बाद सभ पंचायत युनिट अपना-अपना पंचायतक आँगनबाड़ी आ प्राथमिक सह उत्क्रमित विद्यालयमे का सिझक सभकेँ एहि बातपर सहमत करी जे ई

G = Guava- अमरूद-लताम

R = Rat-चूहा-मूस

D = Dog-कुत्ता-कुकुर

पछबाक अङ्क पद्धतिकँ अपनावथि जाहिसँ शुद्ध रूपं त्रिभाषा फार्मूला व्यावहारिक रूपं गडुग लागू भऽ जाए तँ बिहार सरकार मानुनी रूपं एकरा एखन धरि स्वीकार नहि कर हो। ओना एहन पुस्तकक खगता हमरा सभकँ अनुभव भऽ रहल अछि। लोकनृत्य बला पाठम ताँतिया-भाँगडा भरैत मिमिया नहि ज दुखद अछि। हम सभ सदरिकाल अपना खतिहर संस्कृतिपर गर्व करैत रहलहुँ अछि। माछ-मखान हमरा सभहक संस्कृतिक मुख्य आधार अछि। खेती आ ओहिसँ जुड़ल पावनि-तिहार हमरा सभहक संस्कृति कर मूल आधार रहल अछि। मुदा हमरा सभ एकटा आधार बना र तऽ संपूर्ण मिथिलाकँ एकसूत्रम बान्हि सकलहुँ आ र आर्थिक विकास कऽ सकलहुँ। माछ-मखानपर तऽ गर्व करैत छी मुदा पोखरि भरि कऽ मकान बनबैत छी, चाउमिन खा कऽ झिल्ली-कचरी-मुरही, कंसारकँ छोड़ि जा रहल छी। पटुआक रस्सी छोड़ि प्लास्टिक धेलहुँ तऽ हाट उद्योगपर प्रहार भेल, दलानपर गाए-महिस छोड़लहुँ तऽ सुधा कर दही जगह लेलक। आब तऽ गामक भोजम बहुता गोट नामी लेबा जोगर दही पातपर नहि लैत छथि। जखन कि दही हमरा सभहक संस्कृतिक अभिन्न अंग रहल अछि। हम सभ भाँगडा आ ताँतिया धेलहुँ तऽ मिमिया बिला गेल। मैथिल सभ मिमियापर निर्भर करबा लेल आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीक सहारा लऽ रहल छथि। साबु र धनकटनीक बाद गहुम, मसुरी बाउग करबा लेल जागल खेत भाएकँ बजा कऽ सामा-चकेबा पावनि खेलब सेहो बिलुप्त भऽ रहल अछि।

हम सभ अपना पार्टीक संविधानमे स्पष्ट रूपसँ अइ बातकेँ लिखलियैक जे कोनो धर्मपर हम सभ धार्मिक वा जातीय प्रकोष्ठक निर्माण दलकेँ आधार बनबा लेल नहि करब, उम्मेदवारक चयनक आधार जातीय वा संख्याक आधारपर नहि हएत। हमरा सभ मिथिला क्षेत्रमे आर्थिक गतिविधिकेँ बढ़ावा देबा लेल सर्वप्रथम हमरा सभकेँ सामाजिक आ आर्थिक मिथिलावादक भावनाकेँ विकास करए पड़त तखन हमरा सभ जाति-भाषा-धर्मकेँ आधारपर बँटल मिथिलाकेँ एकसूत्रमे बान्हि सकब आ तँ अही काज लऽ गेल छी सरकार संग नारा अपन हक, अपन मिथिला नारा।

आइ संवैधानिक मर्यादामे रहैत सभ प्रदेश विकासक बाटपर आगू बढ़ि रहल अछि जतऽ भाषाई राष्ट्रीयताक भावना तेज अछि। अपना क्षेत्रक संस्कृतिपर गौरव करबाक भावना बलवती अछि आ एकर रक्षा लेल लड़बाक-मरबाक इच्छा अछि। परती पड़ल उपजाउ जमीन देखि कऽ कोना दुखी होइ छै किसानक मोन तहिना हमरा-अहाँक हाल अछि। आउ वैज्ञानिक खेतीक माध्यमे जोत-कोड़ कऽ खेतमे हरियरी पसारि दी, खेत लहलहा दी।

आशा जगबैत कुलानंद मिश्रक किछु पाँति-

शीत त छँटब करतौ ठाना

किछु धाह अखन जगलैए

किछु धाह अखन बाँकी छै

भान त हेब करी........

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.अजित कुमार झा- घटाटोप अन्हरिया मे उम्मीदक किरण: मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन



अजित कुमार झा- संपर्क-9472834926

घटाटोप अन्हरिया मे उम्मीदक किरण: मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन

भारतवर्ष मे मिथिला मैथिलीक नाम पर कतेक संस्था अछि तकर सटीक जानकारी त' नहि अछि मुदा शायद एहन कोनो शहर अछि जतय एकोटा संस्था नहि हो। कतहु बाबा विद्यापति कँ नाम पर त' कतहु माँ जानकी कँ नाम पर। कतहु मिथिला मैथिलीक संग विकास, त' कतहु संस्कृति सँ जोड़ि कय। मात्र अपन देश मे नहि विदेश मे सेहो मैथिल सब अपन अस्मिताक गौरव बोध कँ जागृत

नाटकक लेल कोनो-ने-कोनो मंच केर गठन केने छथि। विश्व स्तर पर एहेन जागरूकता त' मिथिला मैथिली लेल निस्संदेह शुभ संकेत मानल जयबाक चाही। शायद कोनो मैथिल होएताह जे अहि तरहक संस्था सँ कोनो-ने-कोनो रूप मे जुड़ल नहि होएताह।

केओ अध्यक्ष होएताह, त' केओ सचिव होएताह। केओ संगठन मंत्री होएताह, त' केओ कोषाध्यक्ष होएताह। कोनो संस्थाक कार्यकारिणी सबहक दल सेहो ममटगर होइत छैक। किछु संस्था मे आम सदस्य होएताह त' किछु संस्था मात्र कार्यक्रम धरि सिमित होएताह अर्थात् दर्शक वृन्द। कोनो भी संस्था लेल आम सदस्य आ दर्शक बहुत खास मानल जयबाक चाही किएक त' पदधारी त' सहेज भेटि जाइत मुदा सुच्चा कार्यकर्ता भेटब बड़ कठिन होइत छैक। ओना बहुत संस्था मात्र कागज पर सेहो चलैत अछि। फौज मे कोनो तरहक संस्था नहि बना सकैत छी तखन अपन अपन संस्कृति ओ भाषाक आधार पर समूह बना क' किछु कार्यक्रम जेना कि पिकनिक क' सकैत छी। भारतीय वायु सेना मे नौकरी करबाक कारणे लगभग एहेन समूह सँ निरंतर जुड़ल रहबाक सौभाग्य हमरा भेटल अछि।

कोनो संस्था साल मे एकटा कार्यक्रम करैत अछि, त' कोनो संस्था दूटा। अधिकांश संस्था विद्यापति पर्व समारोहक आयोजन करैत अछि, त' किछु जानकी नवमी केर आयोजन करैत अछि। किछु संस्था नाटकक मंचन करैत अछि, त' किछु साहित्यिक गोष्ठी धरि सिमित रहैत अछि। किछु संस्था अथवा समूह मिथिला चित्रकला कँ क्षेत्र मे कार्य क' रहल अछि, त' किछु मिथिलाक्षर केर प्रचार प्रसार

लल। बाहर मे जखन एहेन कोनो खबरि सुनैत अथवा पढ़ैत छी त' गर्वक अनुभूति होइत अछि। अपन भाषा आ संस्कृति केर प्रति मैथिल सब जागृत छथि त' अहि बात पर गर्व होनाइ स्वाभाविक अछि। ओना ई सिक्का केर मात्र एक पहलू अछि आ हकीकत त' ई छैक जे हर सिक्का कँ दुटा पहलू होइत छैक। ई अपवाद मे लिखी सुपर डुपर हिट फिल्म 'शोले' केर सिक्का छल। एखन अभीष्ट आ सिक्का नहि मुदा आम सिक्का अछि। सिक्का केर दोसर पहलू देखि दुःख केर साथ कहए पड़ि रहल अछि जे असीम पीड़ा होइत अछि।

एकर संस्था अथवा समूहक स्थापना विशुद्ध रूप सँ अपन भाषा आ संस्कृति कँ ध्यान मे राखि क' कैल जाइत अछि जाहि सँ एकर उत्थान होइक मुदा नहि जानि कोना अहि मे राजनीति रूपी दानव प्रवेश क' लैत अछि। अहि सँ कि होइत छैक जे ओ संस्था अपन उद्देश्य सँ भटकि जाइत अछि। एक तरहें कहल जा सकैत अछि जे ओ संस्था किछु लोगक हाथ कँ कठपुतली बनि क' रहि जाइत अछि। बहुत बरख सँ विद्यापति पर्व समारोह मनाओल जाइत अछि। परम आदरणीय हरि मोहन झा जी केर उत्कृष्ट कविता 'विद्यापति पर्व महान एखन' अवश्य पढ़ने होयब। नहि जानि कतेक साल पहिने ई परम्परा शुरू भेल छल आ धीरे धीरे मिथिलाक एकटा अति विशिष्ट पाबनि बनि गेल। नवका बसात कि बहलै बूझू जे ई विशुद्ध रूप सँ एकटा व्यावसायिक आयोजन बनि गेल। आइ पी एल उँका एम पी एल अर्थात् मिथिला प्रीमियर लीग आधुनिकताक चकाचौंध मे बहिआय लागल। परिवर्तन प्रकृति केर नियम छैक मुदा

उम्मीद सँ बेसी परिवर्तन एकर मूल स्वरूप केँ नष्ट क' देलकै। आयोजन कोना करबाक से त' आयोजक सभहक सोच पर निर्भर करैत छैक मुदा वर्तमान मे जाहि रूप मे अहि कार्यक्रमक आयोजन होइत अछि ताहि मे सँ बाबा विद्यापतिक नाम हटा लेबाक चाही। हिनकर ब्रांड केँ नाम पर जेहन एखनुका कार्यक्रमक चलन बढ़ैत अछि से हमरा ई सोचय पर मजबूर क' दैत अछि जे बाबा विद्यापति मंचक एक कोन मे ठाढ़ भ' सिसकि रहल छथि। ई हमर व्यक्तिगत सोच अछि आ जरूरी नहि जे हमर बात सँ सभ लोक सहमत होथि।

संस्थागत ईर्ष्या ताहि त' आम बात अछि। अपन संस्थाक कार्यक्रम मे भीड़ कोना जुटि सकैत अछि आ दोसर संस्थाक कार्यक्रम केँ कोना रोकल जा सकैत अछि तेहि दाव-पेंच चलाबय मे सभ अपस्याँत रहैत छथि। रटल रटायल वैह पुरान ढाँचा, किछु पोथीक विमोचन आ भसकौआ गीत नाद सँ मैथिल जागृत भ' जेताह कि? अहि सँ मिथिला मे विकास भ' जेतैक कि? पूरा भारतवर्ष मे मिथिला मैथिलीक जतेक टा संस्था अछि कमोबेश सभहक स्वाद एक्कहि हएत। कोनो नवीनता नहि हएत सिवाय फूहड़ता केँ। मिथिला मे कोन एहन संस्था अछि जे शिक्षा, स्वास्थ्य आ पर्यावरण लेल जागरूकता अभियान चला रहल अछि? अंधविश्वास एवं कुरीति सँ लड़बाक लेल निरन्तर सूतल लोग केँ जगा रहल अछि? गाम-गाम घूमि नुक्कड़ सभा आ नाटक केँ माध्यम सँ धनात्मक पर काज क' रहल अछि? शायद कोनो एहन संस्था हएत? बस विद्यापति पर्व समारोह

केँ साल भरि मनाओल जा रहल अछि आ दिनानुदिन एकर ब्रांड वैल्यू सेहो बढ़ल जा रहल अछि।

कहाँ कोनो संस्था केँ देखैत छियैक जे अपन समारोह मे रक्तदान कर आयोजन करैत हो? नशा मुक्ति हेतु समाज लेल किछु काज करैत हो? भ्रष्ट आचरण वाला केँ बहिष्कृत करैत हो? गाम गाम घूमि कय शिक्षाक अलख जगबैत हो? अपन सबहक समाज मे जरूर जागरूकता कर प्रयोजन अछि ताहि दिशा मे कार्य्य करैत कहाँ कोनो संस्था नजर आबि रहल अछि?

अधिकार एवं कर्तव्य मे तालमेल जरूरी होइत छैक आ एकर अभाव अछि। अपन अधिकारक प्राप्ति हेतु कर्तव्य करए पड़त। अभिमान एवं स्वाभिमान मे कि अन्तर छैक से बूझय पड़त। रूढ़िवादी विचार धाराक मकड़जाल सँ बाहर निकलय पड़त। मिथिलाक बहुमुखी विकास लेल माटि-पानि तैयार करय पड़त। तीन तिरहुतिया, तेरह पाक सँ काज नहि चलत। मुंडे मुंडे मतिर्भिन्नाक भाव सँ मुक्त होबय पड़त आ निस्संदेह एकजुट होबय पड़त। कोनो भी संस्था अगर जिन्दा अछि त' क्रियाशील रहय पड़तै। सब सँ जरूरी बात ई अछि जे दस बीस वाला संस्था सब सँ ई उम्मीद राखब दिवा स्वप्न थिक। सिक्का कर दोसर पहलू इएह अछि जे निष्क्रियता सँ विनाश करैत अछि। मुदा विनाश होला सँ कि सफलता भेटि सकैत अछि? यात्री जी कर ओ उक्ति मोन पड़ैत अछि- 'नवतुरिए आब आगू आबथु। '

एहन निराशा मे उम्मीदक एकटा किरण नजरि आबि रहल अछि हँ नवतुरिया सबहक दल- मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन। अल्प काल मे ही एम एस यू कर प्रयास एवं उपलब्धि मोनक कोनो कोण मे एकटा उम्मीद जगौने अछि। सन् 2015 मे अस्तित्व मे आयल अहि छात्र संगठन कर नारा- 'एक डेग, विकास लेल' समय कर साथ सत्य होइत प्रतीत होइत अछि। दरभंगा मे एयरपोर्ट मिथिला केँ लेल कोनो वरदान सँ कम नहि अछि। एम्स कर आन्दोलन जारी अछि। बिहार सरकार जगह केँ ल' क' एखनहु भ्रम मे अछि। आन्दोलन कर धार तेज करय पड़तैक।

सन् 2017 मे बाढ़िक विभीषिका झेलि रहल मिथिला मे छाती भरि पानि हेलि क' जाहि ठामहुँ गाम-गाम मे राशन एवं अन्य जरूरी सामग्री सब ल' क' अपन जानक परवाह छोड़ि पहुँचल रहथि एम एस यू कर नवतुरिया सेनानी सब सँ कोनो बिसरि सकैत छी। बाढ़ि क बाद कपड़ा लत्ता आ अन्य सामग्री पठेनाइ एवं बाढ़ि पानि मे हेलि क' राशन सामग्री पहुँचेनाइ मे जमीन आसमान कर अन्तर छैक। मिथिला कर उपजाऊ ग्रामीण क्षेत्र मे बिजली केँ लेल सफल आन्दोलन चलेनाइ कोनो छोट उपलब्धि नहि कहल जा सकैत अछि। दरभंगा मेडिकल कॉलेज मे व्याप्त अव्यवस्था लेल आन्दोलन, मिथिला विश्वविद्यालय मे पढ़ाइ व्यवस्था आ परीक्षा सत्र नियमित करबाक हेतु आन्दोलन, मिथिलाक अनेक शहर मे जामक स्थिति सँ निजात पाबय हेतु ओवर ब्रिज हेतु आन्दोलन, बंद पड़ल चीनि मिल मे थर्मल प्लांट बैसाबय एवं रोजगार हेतु आन्दोलन, मधुबनी मे केन्द्रीय विद्यालय हेतु जमीन लेल

आन्दोलन, मिथिला राज्य लेल दिल्ली मे आन्दोलन, पूर्णिया मे हुनकहि अइ लेल आन्दोलनक सूत्रधार एवं अपन मिथिलाक सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर जन आन्दोलन ठाढ़ करबाक साहस देखि नवतुरिया सबहक प्रति मोन मे उम्मीद जागब स्वाभाविक अछि। हलाँकि एखन आरम्भ छैक आ एखन बहुत मीलक पाथर पार करब शेष छैक। एम एस यू कए नवतुरिया जँ सार्थक प्रयास जारी राखथि, अभिमानी नहि स्वाभिमानी बनल रहैथ, अधिकारक प्राप्ति हेतुआदि कँ अनुनय करैथ पथ पर डटल रहैथ त' अइ समस्त मिथिला मैथिली वाला संस्था सँ हुनकर अपन अलग पहचान बनाबय मे सफल होएत आ मिथिलाक विकास हेतु उठाओल हिनकर डेग एक दिन मंजिल पर अवश्य पहुँचत मुदा यात्री जी केर ई पाँति मोन राखय पड़त -

नवतुरिए आबओ आगाँ!!

उएह करत नृत्यरंजन, आगू मुँह बढ़त उएह...

हमरा लोकनि दिअइ आशीर्वाद निश्छल मोन;

घिचिअइ नहि टाढ़ पाछाँ....

टकी नहि कुटी अपनहि अमरलत्ता'क

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.सच्चिदानंद सच्चु- मैथिल संगठन आ ओकर सामाजिक सरोकार



सच्चिदानंद सच्चू

मैथिल संगठन आ ओकर सामाजिक सरोकार

हमरा सभ कँ स्वतंत्रता संग्राम मादे बूझल अछि। हमरा सभ कँ बूझल अछि जे स्वतंत्रता सेनानी लोकनिक उद्देश्य न मात्र अंग्रेज कँ देश सँ भगाएब छलनि, अपितु हुनका लोकनिक उद्देश्य स्थानीय समाज मे व्याप्त अनेक तरहक कुरीति कँ दूर करबाक सेहो रहनि। सामाजिक कुरीति पैरक सभ सँ पैघ बाधा अछि आ आम जनमानस कँ गुलामीक अन्हार मे धकेलैत अछि। एहि कुरीति कँ दूर कयने विना स्वतंत्रताक लेल आवश्यक धाराक निर्माण नहि भ' सकैत अछि। महात्मा गाँधी सँ ल' क' कतेको छोट-पैघ नेता कुरीति कँ दूर करबा मे दिन-राति लागल रहलाह। फलस्वरूप आइ हम सभ एकटा स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक छी।

जँ एकर चर्चा अहाँ मिथिला आ मैथिलीक संबंध मे करैत छी त' पबैत छी जे मिथिला समाज आइयो कतेको रंगक कुरीति सँ घेराएल अछि। व्यक्ति सँ ल' क' संस्था धरि अतीतजीवी अछि। अतीतक गौरवगान मे एतेक न हम सभ मगन भ' जाइत छी

वर्तमानक ई समस्या छै, वर्तमानक ई आवश्यकता छै, एकर ई चुनौती छै, ओकरा बिसरि जाइत छिऐक। अपन परंपराक गौरव बोध होब नीक बात अछि। मुदा गौरव आड़मे ई जाएब एक तरहक कुनीति अछि जे भविष्यक प्रति आशंका उत्पन्न करैत अछि तँ एहि कुनीति कँ दूर करब सेहो बड्ड बेसी आवश्यक अछि। आइ मिथिला आ मैथिलीक नाम पर काज करयनिहार अधिकांश संस्था आ संगठन गौरव आड़मे रह गेल अछि आ इएह कारण छै जे एकर सबहक कोनो सामाजिक सरोकार नहि रहि गेल छैक।

आइ गाम सँ ल' क' शहर आ शहर सँ ल' क' महानगर धरि मिथिला मैथिली सँ जुड़ल कतेको संस्था सब सक्रिय अछि। साल भरि मे कतेको कार्यक्रमक आयोजन सेहो होइत छैक। मुदा एहि आयोजन सबहक फलाफल की निकलैत अछि, एहि पर विचार होमक चाही। जहिया विद्यापति पर्व समारोहक पनियारी शुरू भेल रहै, तहिया ई सकैत अछि जे एकर आवश्यकता होइक। शहर आ महानगर मे रहल एहन आयोजन सब सँ एतक जनुन होइक जे देशक विभिन्न भागक लोक सब मिथिलाक संस्कृति सँ परिचित होइत मुदा एहि आयोजन सबहक प्रताप मैथिल समाज पर कतेक पड़लैक, अहू बात पर विचार होमक चाही। आइ एहि विद्यापति पर्व समारोह सबहक की स्वरूप नहि भेल छैक? नाच-तमाशा आ भोज-भात सँ बेसी एकर कोनो उपयोगिता त' हमरा देखबा मे नहि अबैत अछि। देश-दुनियाँ मे एहन आयोजनक लेल मैथिल लोकनि लाखो-करोड़ प्रति साल खर्च करैत छथि मुदा एकर बादो ई संस्था सब अपन समाज मे चेतनाक निर्माण करबा मे सर्वथा विफल रहल

अछि। आ एकर कारण हमरा इएह बुझि पड़ैत अछि जे ई सभ संस्था समाजिक सरोकार सँ सर्वथा कटल अछि। गौरव गान करैत-करैत सभ गौरव आह्वान भ' गेल अछि। चेतना समिति सन-सन नामी-गामी संस्था सँ ल' क' अन्य संस्था सभ सेहो एकहि नाव पर सवार अछि।

किछु दिन पहिने मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एमएसयू) सँ हमर उमेद जागल छल। हमरा ई संगठन सामाजिक सरोकार सँ लबरेज बुझाइत छल। एकटा घटना मोन पड़ैत अछि। बरसातक मौसम। समग्र मिथिला बाढ़ि सँ घेराएल छल। लोक त्राहि-त्राहि क' रहल छल। एहन स्थिति मे मिथिला मैथिलीक लेल संघर्ष करनिहार किछु संगठन सभ आगू अबैत अछि आ डूबि-भासि रहल लोकक प्राण रक्षक बनैत अछि। अन्न बिना काहि काटि रहल लोक धरि आवश्यक सामग्री पहुँचाओल जाइत अछि। तहिना मिथिला वासी कें ई सभ देवदूत सन बुझाइ पड़ैत छनि। एना मिथिला मैथिलीक लेल भ' रहल आंदोलनक इतिहास मे पहिल बेर होइत अछि जे कोनो संगठन सभा जुलूस सँ अलग संकट मे पड़ल मैथिलक मदति अपन जान संकट मे द' क' करैत अछि। मिथिला मैथिलीक नाम पर संघर्ष करनिहार संगठन मे आएल सकारात्मक बदलावक प्रशंसा सेहो सभतरि खूब होइत अछि। हेबाको चाही एकर प्रशंसा।

ऐ सँ पहिने मुजफ्फरपुर जिलाक पड़आन गाम मे मिथिलाक छात्र राजनीति मे सक्रिय मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एमएसयू) द्वारा

बिजलीक लेल संघर्ष कएल जाइत अछि। आजादीक बाद अखन धरि एहि गाम मे बिजली नहि पहुँच सकल छल। एमएसयूक कार्यकर्ता पछिआनक घन-घन मे जा क' लोक सभ कें बिजलीक लेल जगबैत छथि। कार्यकर्ता सभ एहि गाम मे कैंप क' क' चरणबद्ध ढंग सँ बिजलीक लेल आंदोलन करैत छथि। परिणामस्वरूप एहि गाम मे बिजली लगेबाक काज सेहो शुरू होइत अछि आ पहिल बेर लोक ई जनैत अछि जे मिथिला मैथिलीक नाम पर संघर्ष करनिहार संगठन जन समस्या कें ल' क' सेहो आंदोलन करैत अछि। स्पष्ट अछि जे ई संगठन छात्रक अछि आ युवा वर्गक सहभागिताक कारणें सोशल मीडिया पर सेहो एकर व्यापकता छै। सोशल मीडिया पर दमदार उपस्थितिक कारणें पछिआन आंदोलन जान पकड़ने अछि आ सफल होइत अछि।

ई संगठन कॉलेज आ युनिवर्सिटी मे छात्रक समस्या सभ कें ल' क' सेहो सक्रिय रहैत अछि। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय मे कतेक बेर एहि संगठन द्वारा छात्र हित मे आंदोलन कएल गेल। एकर किछु सकारात्मक परिणाम सेहो बाहर एलै। मुदा छात्रक समस्या सभ अखन धरि ओहिना अछि। विश्वविद्यालय मे संसाधनक अभाव छहिये। कॉलेज सभ मे पठन-पाठन व्यवस्था चौपट भ' गेल अछि। कॉलेज सभ मे जे संसाधन पहिने सँ उपलब्ध छलै, ओ सभ मृतप्राय भ' गेल अछि। छात्रक भीड़ बढ़ल जा रहल अछि आ संसाधन दिन प्रतिदिन घटल जा रहल अछि। वर्ग संचालन लगभग ठप भ' गेल अछि। एहन स्थिति मे छात्र संगठन सभ द्वारा एकटा जनगन आंदोलनक खगता छलैक, जे नहि

𑒦' 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒦 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒠𑒰 𑒏𑒹𑓀 𑒪' 𑒏' 𑒏𑒞𑒾 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒂𑓀𑒠𑒼𑒪𑒢 𑒏𑒻𑒪 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒻 𑒞' 𑒄 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒥𑒰 𑒧𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒤𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒦' 𑒮𑒏𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒐𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒯𑒙 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒞।

𑒋𑒐𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒧𑒹 𑒋𑒧𑒋𑒮𑒨𑒴 𑒮𑒢𑒏 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒣𑒩 𑒣𑒻𑒒 𑒖𑒱𑒧𑓂𑒧𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒪𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒄 𑒮𑒦 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒧𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒹𑒿 𑒪' 𑒏' 𑒖𑒰𑒑𑒩𑒝 𑒂𑓀𑒠𑒼𑒪𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒂 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒧𑒹 𑒑𑒳𑒝𑒫𑒞𑓂𑒞𑒰𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒬𑒻𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒯𑒾𑒪 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒹 𑒁𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰 𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒋𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒒𑒏 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫 𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒪𑒱𑒞 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢𑒏 𑒠𑒧𑒠𑒰𑒩 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰 𑒧𑒹 𑒂𑒋𑒪। 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖 𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒣𑒠 𑒣𑒩 𑒢 𑒮𑒱𑒩𑓂𑒤 𑒄 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢𑒏 𑒅𑒧𑓂𑒧𑒲𑒠𑒫𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒞 𑒠𑒩𑓂𑒖 𑒏𑒩𑒾𑒪𑒢𑒱, 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢𑒏 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒞𑒰 𑒮𑒿 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒢𑒹𑒬𑒢𑒪 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒮𑒦 𑒧𑒹 𑒒𑒥𑒩𑒰𑒯𑒙𑒱 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒂𑒋𑒪। 𑒄 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒞𑒰𑒏 𑒅𑒠𑒰𑒯𑒩𑒝 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑒢𑒹𑒬𑒢𑒪 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒮𑒦 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒔𑒳𑒢𑒰𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒩𑒱𑒭𑓂𑒚 𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒮𑒦 𑒏𑒹𑓀 𑒅𑒞𑒰𑒩𑒪 𑒑𑒹𑒪। 𑒄 𑒢𑒹𑒞𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢 - 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒅𑒧𑓂𑒧𑒲𑒠𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒲𑒞𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒯𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒏𑒪𑒢𑒱। 𑒞𑒿 𑒄 𑒏𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒻 𑒕𑒲 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒰𑒪𑒹𑒖 𑒧𑒹 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒰𑒬𑒲 𑒯𑒰𑒩𑒱𑒨𑒼 𑒏' 𑒖𑒲𑒞 𑒑𑒹𑒪। 𑒢𑒹𑒬𑒢𑒪 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢 𑒧𑒹 𑒒𑒥𑒩𑒰𑒯𑒙𑒱 𑒋𑒧𑒋𑒮𑒨𑒴𑒏 𑒮𑒤𑒪𑒞𑒰 𑒕𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑒮𑒤𑒪𑒞𑒰 𑒏𑒞𑒹 𑒠𑒱𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒥𑒢𑒪 𑒩𑒯𑒞, 𑒮𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒞' 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒮𑒿 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒼𑓀 𑒁𑒪𑒑 𑒂𑒥 𑒕𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒏𑒹𑓀𑒠𑓂𑒩

मे जेना सत्ता आबि गेल अछि, ओहिना छात्र राजनीतिक केंद्र मे सेहो सत्ता आबि गेल अछि आ जेहन उद्देश्य महज सत्ता प्राप्ति रहि जाइत अछि त' परिवर्तनक गप्प गौण भ' जाइत अछि।

क्षेत्रीय निष्ठा कें ल' क' सक्रिय रहल एमएसयू सँ ई उम्मेद रहैक जे ओ एहि व्यवस्था मे सकारात्मक बदलाव लाओत। किएक त' हालहि मे एहि संगठन द्वारा कएल गेल आंदोलन मे एकर झलकी देखबा मे आएल छल मुदा जेहन एकर सांगठनिक ढांचा आ काज करबार रूप रेखा पर ध्यान दैत छी त' मोन मे ई शंका उत्पन्न होइत अछि जे ई सकारात्मक बदलाव आखिर कतेक दिन धरि सकारात्मक रहत? अहाँ ध्यान देब हएत जे एहि संगठनक निर्माण आ विकास मे सोशल मीडियाक अति महत्वपूर्ण भूमिका अछि। आ जेहन एकर निर्माण आ विकास हम महज सोशल मीडिया सँ होइत देखैत छी त' हमरा मोन पड़ैत अछि अन्ना आंदोलन। दिल्लीक रामलीला मैदान। अहू आंदोलन कें महज सोशल मीडिया सँ ऊर्जा भेटल रहैक। एक्का बन एहन आगि उठलै जे बुझलै आब ई आंदोलन सभ किछु बदलि क' राखि देत। घपला-घोटाला आ भ्रष्टाचार आब इतिहास बनि क' रहि जाएत। पाँच अप्रैल 2011 सँ शुरू भेल एहि आंदोलनक नायक असनि देश भरि मे देखल गेल। अन्ना हजारेक समर्थन मे देश भरि धरना - प्रदर्शन कएल गेल आ जुलूस निकालल गेल। मुदा एकर बाद की भेल? बुढ़िया फूसि। जाहि लोकपाल विधेयक लेल आंदोलन कएल जा रहल छल, ओहि लोकपाल विधेयक कें की भेल? हँ, ई आंदोलन जँ एकटा ठोस वैधानिक धरातल पर आगू बढ़ैत त' ई नायक असनि छाड़ि सकैत छल।

एकर दूरगामी प्रभाव समाज आ राजनीति पर पड़त, ई नहि भ' सकल। सोशल मीडियाक प्रभाव अधिक होइत अछि आ अहू आंदोलन संग सम्बद्ध भेल। सोशल मीडिया सँ ई आंदोलनक धधरा उठल छल ओ किछुए समय मे पसरि गेल। वैचारिक साम्य नहि रहला सँ आंदोलनकारी नेता लोकनि अलग-अलग संगठन मे बँटि गेला। अलग-अलग संगठनक उद्देश्य सेहो अलग-अलग भ' गेल।

अन्ना हजारे 22 मार्च 2018 सँ पुनः दिल्लीक रामलीला मैदान मे अनशन शुरू कयने छथि मुदा एहि बेरक आंदोलन मे पहिल बला समर्थन देखबा मे नहि आएल। कारण? कारण पहिनहि ओही आंदोलन बिखरावक भेंट चढ़ि चुकल छल। अन्ना भले अपना केँ गांधीवादी कहथि मुदा हिनका सभ संग अखन धरि ठोस वैचारिक पृष्ठभूमिक अभाव नजरि अबैत अछि। दोसर सोशल मीडिया पर विश्वसनीयताक संकट पहिने सँ बेसी गाढ़ भेल अछि।

किछु एहन सन कमी हमरा मिथिला मैथिली लेल काज करनिहार एमएसयू आदि संगठन सभ लग नजरि अबैत अछि। एकर सांगठनिक ढांचा मे वैचारिक प्रतिबद्धताक अभाव त' खटकैत अछि, संगहि किछु युवा सभक अति उत्साह सेहो भविष्यक प्रति शंका उत्पन्न करैत अछि। ई संगठनक आलाकमान कोनो व्यक्ति नहि छथि। एकर मात्र 11 सदस्यीय कमांडिंग टीम करैत अछि तेँ हम सभ ई बात स' आश्वस्त भ' सकै छी ई संगठन मे लोकतांत्रिक भावना बनल रहत।

शासन जे मूल कमी रहल नजरि अबैत अछि आ ई अछि जे संगठनक एजेंडा मे छात्र राजनीति कए अलावा क्षेत्रक विकास अछि। ई संगठन क्षेत्रीय समस्या कें ल'क' बेसी आंदोलनरत बुझाइत अछि मुदा रहल हिसाब एकरा भौगोलिक समस्या पर बेसी ध्यान देबाक चाही। क्षेत्रक अन्य समस्या कें एजेंडा बंधन दू मे राखल जा सकैत छल। संगहि क्षेत्रक समस्याक संगहि ई संगठन क्षेत्रीय भाषाक विकासक लेल बेसी जिम्मेदार नहि बुझाइत अछि। कम सँ कम संगठनक कार्यकर्ता सभक गतिविधि सँ त' ई नजरि नहि अबैत अछि।

एकर अतिरिक्त युवा वर्गक किछु अन्य संगठन सेहो मिथिला मे सक्रिय अछि मुदा ई सभ कोनो पार्टी पाछाँ बुझाइत अछि, जकर राष्ट्रीय एजेंडा आ क्षेत्रीय एजेंडा मे निराधारता नजरि अबैत अछि। ईहो कारण भ' सकैत जे एहि सभ संगठनक कोनो विशेष असरि मैथिल समाज मे अखन धरि देखबा मे नहि आबि सकल अछि।

किछु छात्र-हित आंदोलन सभ सँ चर्चा मे आएल ई संगठन आब चुनावी राजनीति मे सेहो सक्रिय होइत देखाय पड़ि रहल अछि। पछिला साल भेल पंचायत चुनाव मे एमएसयूक किछु सदस्य जिला परिषदक किछु सीट जीतबा मे सफल भेलाह। संभावना व्यक्त कयल जा रहल अछि जे ई लोकनि आब विधानसभा चुनाव मे सेहो अपन प्रत्याशी उतारता। मान आ सामाजिक सरोकार जे बाढ़ि आ की अन्य संकट-समस्याक घड़ी मे देखबा मे आएल छल, से

अही लेल ई चुनाव मे कोनो संगठन सभ अपन जनाधार केँ मजगूत क' सकय। हम एकरा व्यावसायिक राजनीति मानैत छिऐ ई निष्ठापूर्ण राजनीति सँ एकदम फराक होइत अछि। क्षेत्रीय विकासक लेल निष्ठापूर्ण राजनीतिक आवश्यकता छैक, व्यावसायिक राजनीति त' पिछला कतेको दशक सँ मिथिला मे भइय रहल अछि। मुदा अहू व्यावसायिक राजनीतिक 'सौदा' मे एमएसयू आ कि एमएसयू सन-सन आन संगठन सभ एकटा गलती क' रहल अछि आ ओ गलती अछि मिथिला राज्यक माँग।

अहाँ मिथिला राज्यक माँग करबै आ मिथिलाक आम जनमानस अहाँ सँ कटैत जाएत आ अहाँ केँ संदेहक दृष्टि सँ देखत। एकर बहुत रास सामाजिक आ राजनीतिक कारण छै। मिथिला राज्यक माँग केँ ल' क' दिल्ली मे भीड़ जुटायब ओतेक कठिन काज नहि छै, जतेक कठिन काज मिथिला राज्यक लेल ई चिह्नित जिला सभ अछि, ओहि जिला सभ मे जनसमर्थन जुटाएब। अहाँ ओहि जिला सभहक त' बात छोड़ू, जकरा मिथिलाक कथित हृदय स्थली मानल जाइत अछि, अहू ठाम मिथिला राज्यक लेल जनसमर्थन नहि अछि। अहू ठाम एकटा व्यापक समाज एहि आंदोलन केँ संदेहक नजरि सँ देखैत अछि। आ मिथिलाक आम जनमानसक कोनो संदेह हमरा निकट भविष्य मे खत्म होइत नहि बुझाइत अछि। आम जनमानसक एहि संदेह केँ दूर करबा लेल एहन संगठन सभ केँ सामाजिक सरोकार सँ जुड़य पड़तनि मुदा कोनो संगठन सभ त' एहिनहि सामाजिक सरोकार सँ दूर भ' चुकल अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१.लक्ष्मण झा सागर- मिथिला स्टूडेंट यूनियन



लक्ष्मण झा सागर, संपर्क-9903879117

मिथिला स्टूडेंट यूनियन

अर्थात् मिथिला छात्र संगठन। जेना कि नामसँ लागि रहल अछि जे ई काना मिथिलाक छात्र सभक जमावड़ा अछि। 1972- 73 ई.म आन क कॉलेजम पढ़ि रहल छलहुँ। एक दिन सी एम कॉलेजक एकटा छात्र नेता श्री विमलानंद झा जी हमरा सभक

कॉलेज मधुबनी आयल छलाह। हुनका कॉलेजमे मीटींग कएलनि। श्री वैद्यनाथ चौधरी जीकेँ बाबा आन्दोलनक शुरूमे बड़ मानि मानैत रहथि आ जहलमे बहुत काल देने रहथि। एकर प्रतिवाद सभा करैत रहथि। हुनक हाथमे गाछ नै उठाओल जाइत रहथि जे सब छात्र लोकनि उत्तेजित भए गेल रहथि। अन्तमे हुनका जे बैद्य जीकेँ पुलिस छोड़ि देने रहथि। हुनक जीवनक ई पहिल अनुभव छल जे छात्र संगठनक राजनीति केँ लगीचसँ देख सकल रही।

शासन प्रसङ्ग अछि असमक छात्र राजनीतिक जकरा हम खूब नजदीकसँ देखने छी। एम एस यू के जनबाक लेल पहिने जानब जरूरी अछि जे सब एखन हम सबहक सकब जे छात्र संगठन समाजक बीचमे बाबा हुलास्त छैक। कारण हुलप्रद हास्त छैक। देशमे मंडल आयोगक जे आन्दोलन लेल सुझाव आयल छल आ एकरा जखन केन्द्र सरकार लागू करए चाहलक तकर बाद जे देशव्यापी छात्र आन्दोलन भेल छल से एकटा अलग इतिहास अछि। जे ई आन्दोलन छात्र लोकनिक सहयोगितासँ लड़ल गेल छल आ सफल भेल छल। अन्तमे भेलैक जे हालत सरकार के काया पलट भए गेल रहए।

हम 1974 ई.सँ 2006 ई धरि असममे रहल छी। ओतुका छात्र राजनीतिकेँ जनमैत, बढ़ैत आ सियान होइत अपना नजरिसँ देखने छी। आ एकर प्रतिक्रिया करैत रहल से आइ समस्त विश्व देखि रहल अछि। असमक जलवायु समशीतोष्ण अछि। उत्तरामक लोककेँ हमे यह खाना एटैक चाही। टेंग माछक भात हटल नाकय। अंडी सूतक गमछा पहीरि कए असम टाइपक घरमे खूब आरामसँ लोक जीवन बसर करैत रहए। जनसंख्या बढ़ल गेल।

लोकक आवश्यकता बढ़य लगलैक। एक समय अयलैक जे शिक्षित युवा सब नोकरी लेल परेशान होमय लागल। ओ सब असम छोड़ि बाहर जाय नै चाहय। जलवायु सेहो एकटा कारण रहय। ओहि युवा सबहक आँखि खुजलैक। तेलक रिफाइनरी असममे। तेल कम्पनीक कार्यालय कलकत्तामे। चायक बगान असममे। टी बोर्ड कलकत्तामे। युवा असमक व्यावसायिक कारोबारी मारवाड़ी समाज। छोट मोट नौआक काज,धोबीक काज,पुरहितक काज, शिक्षक के काज बिहारी आ यू पीक लोक। रेलमे सब जगह बिहारी आ बंगाली जगह छेकने छल। असम के युवा समाजक लोक के उद्वेलित केलक।
हमरा मोन अछि गौहाटीक कॉटन कॉलेजमे एकटा हॉस्टल छल छात्र रहैक। ओहि हॉस्टलमे रहैत छथि श्री प्रफुल्ल कुमार महन्त,श्री भृगु कुमार फुकन,श्री वृन्दावन गोस्वामी,श्री सर्वानन्द सोनोवाल,श्री हेमंत विश्वशर्मा आदि। एहिमे उपरी आ नीचुलकी असमक प्रतिनिधित्व रहल छल। ओही मीटिंगमे आल असम स्टूडेंट यूनियनक (आसू) गठन भेल छल। आ ई आसू पहिने समाजक बीच गेल। समाजक लेल जरूरी काज सब केलक। जेना, लोकक देशी भावक देही सब जगह जगह छल सेहो के नागनाथी छोड़ि देलक। लोक सिनेमा हॉलमे हिन्दीक फिल्म लागल रहय सेहो पोस्टर फाड़ि कऽ फेकि देलक। नोटिस टाँगि देलक जे असमिया फिल्म टा चलि सकैत अछि। हिंदी बदला ब्लाकमे पोस्टर साटल देल रहय जे "मोन अखनो थाकिल मोन राखा लिखित लागिबा"। क्रमश: ई सब सामाजिक काज करैत आसू अपन नीतिनिर्धारण बला छवि बना लेलक। आ तकर बाद गऽ कठिन मुकाम पार करैत (उग्रवादी संगठन अल्फाक रूप अपनबैत) आइ सत्तासीन बनल अछि।

आब एहि परिप्रेक्ष्यमे एम एस युक कार्यप्रणाली आ कार्यपद्धतिक विवेचना करब सहज हएत। हम सबसँ पहिने मिथिलाक लाल आयुष्मान अविनाश भारद्वाज खूब मानसँ आशीर्वाद दैत छियनि। बहुत बहुत शुभकामना रखैत छियनि जे ओ पहिल एहन मैथिल युवा भेलाह जिनका मनमे ई बात एलनि, एहन विचार अंकुरित भेलनि जे अपन माटि-पानि आ मातृभाषा मैथिलीक संरक्षण आ संवर्धन लेल आगू अयलाह। 2015 ईस्वीक मार्चमे एम एस युक स्थापना कयलनि। हिनक सहयोग भेलखिन श्री गोपाल चौधरी,श्री मनीष झा, श्री राज पासवान,श्री अमित आनंद,श्री अनूप मैथिल,श्री सागर नवदिया आ श्री विकास झा आदि एहन बहुत गोटे हिनक सहयोगी बनल छथिन। पिछला सात सालमे एम एस यु लगभग अपन एक लाख सदस्य जोड़लनि अछि। हिनका लोकनिक खातामे एखन धरि जे काज हमरा लोकनिक नजरिपर आयल अछि से बूझब आवश्यक अछि। एम एस यु एक बेर दिल्लीक जन्तर मंतर आ पटनाक मैदानमे मिथिला राज्यक माँग लेल प्रदर्शन कए चुकल छथि। दरभंगा आ मधुबनी जिलाक जिला परिषदक चुनावमे क्रमश: 3 आ 2 टा सीट जीति चुकल छथि। आ मिथिला राज्यक आन आन जिला सबमे अपन उपस्थिति दर्ज करबा लेल राति दिन संघर्ष कS रहल छथि। एकर अलावे आन कोन काज केने छथि से हमरा नजरिमे तS नै आबि रहल अछि। एम एस युक सात सालक संघर्षक नतीजासँ खुश नै भेल जाय सकैत अछि। यदि एक लाख सदस्य संख्या सही अछि त एम एस युक पासा अंक नै भेटक चाही। एक लाख युवा स्वार्थ कम नै होइत छैक। यदि नीति आ नियत साफ अछि तS चमत्कार भS सकैत अछि नारा-नारी

मिथिलामे। यदि अहाँक संग एक लाख लोक छथि तऽ दिल्ली आ पटनाक प्रदर्शनमे एक्को हजार सेहो किएक नै जुटल महाराज? चूँकि अहाँ लोकनिक संगठन क संग मिथिला लागल अछि तेँ एक मैथिल होएबाक नाते हम अहाँ लोकनिकेँ हतोत्साहित नै करय चाहैत छी। मुदा अहाँ लोकनि अपन मिशनमे कामयाब होउ तकर उपाय बताय रहल छी:-

(१) मिथिलाक प्रत्येक उच्च विद्यालय आ महाविद्यालयमे सम्पर्क अपन सदस्य बनाबी।

(२) जे कोनो फरमान जारी हो तकर अनुपालन गाम स्तरीय सदस्य लोकनिक जिम्मा लगाबी।

(३) कोनो संघटन अर्थक अभावमे काज नै कय सकैत अछि। एहि लेल मिथिलाक प्रत्येक व्यापारी समाज आ नोकरी पेशा करनिहार लोक सभसँ न्यूनतम चन्दा उसूल करी। तहि लेल रसीद छपाबी। आय व्यय कर ऑडिट कराबी।

(४) पंचायत स्तरपर, प्रखंड स्तरपर सभा करी। लोक समाज क हितक बात करी। किएक चाही मिथिला राज्य तकर आवश्यकतापर चर्चा करी वा हस्ताक्षर लोक सभसँ कराबी।

(५) गाम गाम देवाल लेखन करबाबी। हमरा चाही मिथिला राज्य। भीख नै अधिकार चाही। हमरा मिथिला राज्य चाही।

(६) गाम शहर आ नगर नगरमे होर्डिंग आ विज्ञापन मैथिलीमे लिखबाबी। संगमे छात्र सभक हुजूम चाही।

(७) जनगणनामे मातृभाषाक कालममे मैथिली लिखबाबी। तहि लेल गाम समाजक लोक केँ जागृत करी।

(८) ह्रिष्टी अखवान ना यत्र यत्रिका क मिथिलाम नै घूसय दी। लाक समाज क गकन दूष्यनिधाम वतावी।

(९) मिथिलाक काना सिनमा ह्रालम ह्रिष्टीक ह्रिल्म नै लागय दी। ओह्रिसँ अयन मैथिली ह्रिल्मक विकास ह्रैत।

(१०) आह्रिस, कचह्री,नलव टीशनयन कर्मचानी लाकनि क आ वस अड्डायन उद्घाषक सरु कँ मैथिलीम वजवाक लल वाध्य कनी।

(११) गाम आ शह्रन क दाकान सवम चानीसँ वचल जाय नह्रल दानु क जव्त कनी आ नष्ट कय दी। गुटका, गाँजा,चनस आदि निसाँ वाला वस्तुक विक्री नै ह्रअय दी।

(१२) काना उत्सव आ त्याह्रानम गाम आ शह्रनम वजैत राजयूनी,ह्रिष्टी गीत क नै वाजय दी।

(१३) गामक प्राइमनी विद्यालय क शिक्षक/ शिक्षिका क मैथिली माध्यमसँ नना सवक यढ़वाक लल वाध्य कनियनि।

आन ज जन उपयागी काज सरु कय सकी स सव कनी यह्रिन गाम घनम। समाजक मान जीतू। समाज क विश्वासम ली यह्रिन। तखन अह्राँ लाकनिक ज मनसूवा अछि स यूना ह्रवाम सह्रुलियत ह्रैत,ह्रमना वूझना। अन्यथा समय श्रम उर्जा नष्ट ह्राइत नह्रत। ह्राथ आयत गाल गाल सून्ना।

उनचनायन **अयन**

मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.८.प्रधान मा- मिथिला स्टूडंट युनियन



प्रणव झा

मिथिला स्टूडेंट यूनियन

मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एमएसयू)सँ हमर परिचय संयोगवश वर्ष 2017 मे भेल छल। ताहि समय मे एहि संस्था कदाचित मिथिलाक समाज मे अपन स्थापनाक प्रारम्भिक दौर मे छल। वर्ष 2017 केर अगस्त मास मे मिथिला क्षेत्र मे भयंकर बाढ़ि आयल छल। ओ बाढ़ि के दौरान एमएसयू के युवा सदस्य सभ अपन सीमित क्षमता मे जमि कऽ राहत आ बचाव कार्य करैत छल जाहि विषय मे हमरा समय समय लोक सब के सोशल मीडिया मे फोटो आ पोस्ट के माध्यम स ज्ञात भेल छल। हमरा याद आबि रहल अछि जे विदेह के कोनो अंक मे आशीष अनचिन्हार जी के एकटा लेख सेहो आयल छल बाढ़ि राहत मे एमएसयू के योगदान शीर्षकसँ।

एमएसयू के युवा टोली ओ काज स (जे सोशल मीडिया द्वारा पता चलि रहल छल) हमहूँ प्रभावित भेलहूँ। हमरा बरीखन सरकारी व्यवस्था पर भरोस नहि अछि आ बाढ़ि या अन्य प्राकृतिक आपदा आदि मे जे कोनो सहयोग करैत स हम सीएम रिलीफ फंड या

पीएम निलीऽ रहल क माध्यमसँ करैत छथि। मुदा एमएसयू सदस्य क युवा जोश आ समर्पण देखि हमरा ऐ संस्था पर विश्वास रहल आ हुनक मनोबल बढ़ाबऽ लेल एकटा अपन छोट छीन सहयोग करय लगलौं।

एकरा बादसँ सोशल मीडियाक माध्यमसँ ऐ संस्था क लगातार मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक मुद्दा पर सोशल मीडिया आ जमीन पर एक्टिव देखि रहल छी। ऐ संस्था क वर्तमान अध्यक्ष आ ओहि समय क मीडिया प्रभारी आदित्य मोहन जीसँ सोशल मीडियाक माध्यमसँ विभिन्न विषय पर कखनो काल चर्चा भऽ जाय। ओहि समय मे धीरे धीरे बढ़ैत एमएसयू लगातार प्रभावी मुद्दा जेना पंचायत स्तर पर अस्पताल आ सरकारी सेवा क ध्वस्त चिकित्सा व्यवस्था, कानून व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य रोजगार आदि मुद्दा।

नवंबर 2017 मे एमएसयू, एलएनएमयू क जर्जर आ ध्वस्त व्यवस्थाक विरुद्ध आ व्यवस्था सुधार लेल एकटा आंदोलन चलल छल जे ग्राउंड पर सैकड़ो एमएसयू क हजारो कार्यकर्ता आ समर्थक द्वारा चलाओल गेल छल संगहि सोशल मीडिया पर सेहो जानदार हैशटैग आंदोलन चलल छल। सब कहै छै हम पहिल बेर कोनो मैथिल संस्था द्वारा मिथिला मे उच्च शिक्षा क जर्जर व्यवस्था क विरुद्ध कमीशनखोरी क संग सशक्त आंदोलन करैत देखि रहल छलहुँ अन्यथा तऽ मैथिल संस्था सब क मंच-माला आ पाग-दोपटासँ आगा बढ़ैत नै देखै छलियै। शिक्षा हमर प्रिय मुद्दा अछि आ हमर मानना अछि जे अपन परिवार, समाज, राज्य आ देश क प्रगति नीक शिक्षा

व्यवस्थासँ संत्रस्त छी, तहि लेल हम ओ आंदोलन क बहुत गर्मजोशी आ उत्साह क संग समर्थन केन नही। ई एकटा सफल आंदोलन कहल जा सकय अछि किए कि एकरा बाद एलएनएमयू क सत्र आ परीक्षा व्यवस्था म सुधार देखल गेल छल।

आब एमएसयू मिथिला क सामाजिक आ छात्र क रूप म अपन विशिष्ट पहिचान बनाब' लागल छल आ दरभंगा एयरपोर्ट, रांची-जयनगर ट्रेन, राजधानी ट्रेन मिथिला, एक्सप्रेस ट्रेन मिथिला, चीनी मिल, दरभंगा एम्स आदि आदि विषय क ल' क' लगातार एक्टिव होमय लागल आ सफल रहल।

अगस्त 2018 म एमएसयू अपन विस्तार अभियान क तहत पंचायत जाउ' क अभियान चलेलक जे म मिथिलाक विभिन्न जिला क पंचायत सब म प्रचार अभियान क' लोक सबकेँ विभिन्न मुद्दा क प्रति जागरूक करबाक आ लोक सब क संस्था स जोड़बाक सफल अभियान चलाओल गेल छल। ओ दौरान एमएसयू क प्रसार आ नव ऊर्जा देखि वर्तमान राष्ट्रीय सत्तारूढ़ दल क नेता, कार्यकर्ता आ समर्थक सब म एमएसयू म एकटा पिछलग्गू संस्था बनबाक संभावना देखायल छल (एना हमरा प्रतीत होइत अछि)। 2019 म आम चुनाव छल। एहन म एमएसयू क ऊर्जा क दोहन क साजिश कएल रणनीति बनि रहल छल। मुदा एमएसयू चुनाव क दौरान अपन इंडिपेंडेंट स्टेटमेंट, आ मिथिला क मुद्दा क आधार पर सपोर्ट या विरोध क रुख देखा क नै सिर्फ हिनकर सबहक उम्मीद पर पानि फेरि देलक अपितु अपन अलग राजनैतिक पहचान आ पथ

के संकट सँ दऽ देत छल। एकर परिणाम स्वरूप ई भेल जे बहुत एहेन लोक सब जे एखन तक ओ संस्था आ एकरा स जुड़ल सदस्य सब के प्रशंसा क पुल बान्हि रहल छलाह से सब आब हिनका सब के गरियाव' लगलाह, पीलिया राग (पीयर रंगक लस्सक कारण) गऽ कि गऽ कहाँ कहुनाइ गुनु कऽ देत छलाह। मुदा एमएसयू अपन अलग बाट धेने रहल।

मई 2019 म एमएसयू एकटा आर ज्वलंत मुद्दा (मिथिला म जल संकट) आ पाखनि सब क अतिक्रमण क लऽ कऽ #पाखनि_बचाउ जन जागरुकता अभियान चलेने छल। ओहो हमर कंसर्न क मुद्दा छल आ ओ अभियान म भाग लेन रही।

अगस्त 2017 क बाढ़ि राहत क बाद एमएसयू क एकटा आर सराहनीय राहत कार्य छल 2019 म चमकी बुखार क दौरान देखल गेल छल। इन कातना आदि काल म शनैः शनैः संस्था मिथिला क किछु क्षेत्र आ दिल्ली-मुंबई महानगर म अपन प्रभाव आ कार्य स सामाजिक आ राजनीतिक दुनू क्षेत्र म अपन हस्तक्षेप देखबा म सक्षम रहल। पिछला पंचायती चुनाव म एमएसयू किछु जिला म बढ़ि-चढ़ि कऽ हिस्सा लेलक आ जिला पार्षद, सरपंच सहित अनेकों पद पर एमएसयू क आ एमएसयू समर्थित दर्जनो उम्मीदवार अपन विजय पताका फहरा कऽ साबित कयलनि जे ओ संस्था क राजनीतिक इच्छाशक्ति सेहो खूब मजगूत छैक आ राजनीतिक जन समर्थन जुटेनाइ चालू भऽ गेल छैक। ओ मसँ धीरज कुमार आ सागर नवदिया सन हमर प्रिय नेता गण सेहो शामिल छथि। ओ प्रकार

नाजनैनिक नूयसँ ॐी संस्था मिथिलाक मुद्दा क लऽ कऽ आगू वढि नहल छथि हमना एकटा उम्मीदक नाशनी लागै अछि यदि हनिश्च म ॐी मिथिलगा, ग्रष्टावान, जानिनाद आदिक वंगुल म नै यउे नऽ।

एमएसयू द्वाना सामाजिक यूनर्जागनध क लल री कॐएक टा सनाहनीय प्रयाग कैल गेल जना मिथिला क ज आॐकनिक ॐगिहास यून्ष, दनगा-यिगन, स्नगंग्रगा सनानी आदि हला हूनका सर क निषय म साशल मीतिया आ जन अरियान क माध्यमसँ समाज म जागनुकगा यैदा कनवाक प्रयत्न। 'जानकी ननमी' उत्सन क आयाजन ए संदर्र म मील क याथन साविग हऽ नहल अछि। ॐी उत्सन मैथिल सर म एकजूटगा, अयन यहिचान आ यूनर्जागनध हगु एकटा नन यूलक निर्माध कऽ सकैए। एहि उत्सनक शुनूआग क गुलना हम लाकमान्य गिलक जी द्वाना महानाष्ट्र म शुनू कैल गधेश उत्सन स कनऽ चाहव।

हम ए संस्था क शुरुआ छी गथायि नर्गमान म ए संस्थाक किछ कमी ज हमना नजनि म अछि स उल्लख कनऽ चाहव:

१) यद्यायि हमना ए संस्था क यदाधिकानी या सदस्य सव क व्यनहान म जागिनादी या सांप्रदायिक हावाक काना लजध नै दखाॐ अछि आ नै हम एहन मानै छी, गथायि ज कानध हॐक मूदा ए संस्था म एखन समाज क निरिन्न नर्ग/संप्रदाय/महिला आदि क नियुजंटशन उाॐ अनूयाग म दृष्टिगाचन नै हऽ नहल अछि ज हवाक चाही। अगः संस्था क ए यन निचान कनवाक चाही ज ए

म समाज क विविध वर्ग क नियन्त्रण करै आ किये एकरा विशिष्ट वर्ग या जातिवादी संस्था हावाक आरोप नै लगावी।

२) ठीक एहिना मिथिला क नियंत्रण करवाक दावा करय वला ई संस्था वास्तव म एखन धरि दरभंगा-मधुबनी-सहरसा आदि जिला तक ही अपन प्रभाव बना सकल अछि। मिथिला क बहुत रास जिला म एखन एकर कोनो प्रभाव नै अछि। हमर गृह जिला बेगूसराय क लल आदित्य मोहन जी बहुत दिन पहिने कहने छलाह ज बेगूसराय लिंक रहि गेल जहीसँ संस्था उतऽ प्रभावी बनत। मुदा एखनो बेगूसराय क गाँव म लोक एमएसयू क नाम तक नै जानै छै। ई मामिला म सेहो एमएसयू क मेहनत करवाक दरकार छैक आ अधिकाधिक जिला म अपन मजबूत उपस्थिति दर्ज करवाक छैक।

३) एकटा आन समस्या ज हमरा नजरि म छैक ओ ई कि कोनो बड़ कोनो गलती होला पर संस्था स्वयं बैक करवा क स्थान पर अपन गलती क डिफेंड करऽ म लागि जाय छैक। उदाहरण क लल किछु दिन पहिने मनीष कश्यप नाम क एकटा यूट्यूबर क द्वारा एकटा फेक वीडियो जे म कहल गेल छल कि तमिलनाडु म बिहारी मजदूर क काटल जा रहल छैक, एमएसयू ई मामला आ तमिलनाडु क विरोध करऽ लल आंदोलनरत होला। जहीसँ ई मुद्दा पकड़ल गेल। आजुक समय म स्थिति ई छैक ज अखनहुँ किये फेक न्यूज क शिकार होऽ सकैए। मुदा एकर वास्तविकता क ज्ञान होला पर स्वयं बैक करवा म कोनो हानि नै छल। मुदा संस्था तथापि नै

सिर्फ गमिलनातु स्वनन क धनान यन अ्ठल नहल अयितु मनीष कथ्यय सन स्वक ग्रुज स्वैलव वला क समर्थन म आवि ल्गल। स्वमना लाग्गे अछि ज संस्था क उसँ ववबाक चाही।

४) किछ कि वर्तमान मिथिला क रूमि जहाँ मिथिला क वास्तविक मुद्दा यन वाग कनय वला वहुग कम संस्था छैक। छमछसयू सन संस्था कदाचिग स्वनिश्च म मिथिलाक नाजनीगि म छकटा साकानात्मकगा लावऽ म सफल सिद्ध स्वऽ सकै अछि आ छही आशा म स्वमना सन लाक सव छकन मुद्दा आधानिग समर्थन कनैग नहैग छी आ स्वनिश्च म वसी वास्तविक वसी सशक्त आ वसी प्रभावशाली आ निजल्व उनिछंस्त स्वाथि गकन शुभकामना दैग छी।

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.९.आचार्य नामानंद मंडल- मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन वनाम मिथिला नाज्य!



आचार्य रामानंद मंडल

मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन बनाम मिथिला राज्य!

राउ स बुझाय कि मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन (एम एस यू)मिथिला यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स के छात्र यूनियन हय। धीरे धीरे जानकारी भेल कि २०१७ स्थापित इ मिथिला क्षेत्र के विद्यार्थी के गैर राजनीतिक स्टूडेंट्स यूनियन हय। परंतु इ यूनियन पूरा मिथिला के आच्छादित त नहिय करैय हय। विशेषकर मधुबनी -दरभंगा म प्रभावित हय। स्टूडेंट्स यूनियन स्टूडेंट्स के लेल कम,राजनीतिक आंदोलन के लेल ज्यादा सक्रिय दिखाइ पडैत हय। उदाहरण के लेल मिथिला राज्य निर्माण आंदोलन।

कुछ महिना पहिले दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कैल रहल। मिथिला के कुछ सांस्कृतिक संघ संगठन बिना बैनर के शामिल भेल रहय। परंतु प्रदर्शन प्रभावकारी साबित न भेल। एकर कारण इ कि एक त यूनियन मिथिला के सब जिला के शामिल न कर पायल। संगठन विस्तार के अभाव खटकल। सर्वमान्य नेतृत्व न दिखाइ

पड़ल। यूनियन मे सर्ववर्ग के प्रतिनिधि के अभाव दिखल। कारण यूनियन के आंदोलन के सफलता सब वर्ग के भागीदारी आ विश्वास पर निर्भर करैय हय। उदाहरणः स्वरूप झारखंड आ तेलंगाना। आंदोलन तब सफल भेलैय जब सब वर्ग के भागीदारी, विश्वास आ सर्वमान्य नेतृत्व मिललय।

भारत के आजादी तब मिललय जब गांधी जी के नेतृत्व मे आंदोलन भेलैय। ओना त आंदोलन १८५७ स शुरू भेलय, परंतु आजादी १९४७ मे मिललय। आजादी के दोसर आंदोलन ज छात्र आंदोलन भेलय। ओहो गुजरात के छात्र सब छात्र आंदोलन। जब १९७४ मे लोकनायक जयप्रकाश नारायण जैसन नेतृत्व मिललय तब जाके आपातकाल के विरुद्ध नासमझनीय संपूर्ण क्रांति आंदोलन १९७७ मे सफल भेलैय।

मिथिला स्वतंत्र यूनियन के नाम निर्माण आंदोलन के सफलता के लेल पुनर्विचार करै के आवश्यकता जान पड़ैय हय। सब स पहिल यूनियन के नाम -द जान कि ले जान पर विचार। ओना ई हिंसात्मक लगैय हय। यूनियन के सब जिला मे प्रखंड स्तर तक गठन करै के आवश्यकता हय। तब सर्वसम्मति स नाम कार्यकारिणी के गठन। मिथिला स्वतंत्र यूनियन के सांस्कृतिक आ राजनीतिक संगठन स मिलके एगो मजबूत मार्चा बनाना आवश्यक हय। तब कार्यक्रम आ सबस महत्वपूर्ण नामस्मरणीय नेतृत्व ज छात्र स निकलै हो सकैय हय। ज सर्वमान्य आ प्रभावकारी व्यक्तित्व के हाय। तब

जाहि मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन के मिथिला राज्य निर्माण आंदोलन के सफलता असंदिग्ध रहत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.डॉ कैलाश कुमार मिश्र-मिथिला स्टूडेंट यूनियन: दशा, दिशा आ भविष्य



डॉ कैलाश कुमार मिश्र-संपर्क-9810326983

मिथिला स्टूडेंट यूनियन: दशा, दिशा आ भविष्य

मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम एस यू) केर प्रयास जहि युवक मैथिल आ प्रवासी मैथिल लोक एक मिश्रित अनुभूति अनलक। अहि पर

किछु लिखबा सँ पूर्व किछु बात स्पष्ट करब अनिवार्य। हमरा अगर पूछल जाय जे मिथिला आ मैथिल लेल कार्य करय बला संस्था सभ मे सभ सँ उत्तम अहाँ ककरा मानै छी, त हमर उत्तर होएत "मिथिला स्टूडेंट यूनियन "। यद्यपि ई उत्तर अहि बातक होयत जे मिथिला आ मैथिली लेल कोनो संस्था बहुत गम्भीर नहि अछि। बीच मे सखी बहिनया समूह सँ आश जागल छल मुदा ओ सभ रचनात्मक शुन्य आ पूर्णकालिक उत्सवजन्य समूह बनल जा रहल छथि। मिथिला स्टूडेंट यूनियन बाढि आ किछु हद तक बिमारी आ कोनाना काल मे यथासंभव नीक काज कर अछि मुदा एकर दिशा जेना गम्भीर नहि रहल हो। व्यक्ति विशेष एकरा पर हावी रहल छथि। व्यक्ति विशेष मे अधिकांश लोक बिना ओनरज स्फर कर छथि। ई विद्यार्थी कर एहन संस्था अछि जाहि मे विद्यार्थी कम आ अन्य लोक अधिक छथि। नीक कॉलेज, स्कूल कर विद्यार्थी, गम्भीर विद्यार्थी आ सभ वर्गक विद्यार्थी एहि संस्था सँ सेहो दूरी बनने रहै छथि। आरो बहुत बात सभ अछि।

चलू प्रारम्भ नीक द्रष्टव्य सँ करै छी। एम् एस यू पहिल बेर एक सेतु बनल प्रवासी मैथिल आ जड़ि मे रहै मैथिल कर बीच। पहिल बेर एहि संस्था कर सदस्य लोकनि मधुबनी, दरभंगा कर सीमा रेखा सं नैमित्तिक सही मुदा मिथिलाक आन सांस्कृतिक सह भौगोलिक उत्तरक लोक के प्रतिनिधि बनलक। पहिल बेर गंभीरता संग छात्र संस्था मे सही मुदा ब्राह्मण आ कायस्थ जाति के अलावे अन्य जाति, अनुसूचित जाति आदि के लोकक समावेश करलक। शनैः - शनैः ई सभ कार्यक निष्पादन सेहो करलक। संस्था कर कार्यकारिणी

संग अनुरागी, उद्योगपति, सांस्कृतिक आ सामाजिक लोक के अपन एडभाइजरी मण्डल मे नीतिगत बात आ विचार लेल रखलक। ई सभ प्रजातान्त्रिक ढांचा के मजबूत करैत ई निर्णय लेलक कारण व्यक्ति एक बेर सँ अधिक अध्यक्ष नहि रहत। नहुँ - नहुँ किछु स्त्रीगण सब सेहो एहि संस्था सँ जुड़ै लगलीह। पहिल बेर ई संस्था समस्त मिथिला भू-भाग केर भाषा, साहित्य, संस्कृति, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, रेल, सड़क, बिजली, हवाई जहाज, रोजगार, बंद पड़ल चीनी मील, जूट मील, वस्त्र मील आदि लेल माउथ पीस बनल। किताबी बात जन -जन लेल जनतब केर विषय बनल गेल। पहिल बेर एकर कार्यकर्ता अपना लेल ड्रेस कोड विकसित कयलक (पियरका) आ पहिलबेर पूरा जोश आ उग्रता प्रदर्शित कयलक। ई दु टा एम् एस पी लेल नामनाथ भेलैक। पहिल बेर किछु करू अथवा मरू विचारधारा केर पूरक एहि संस्था सं जुड़ल जाहि पंडौल सं पटना धरि आ दरभंगा सँ दिल्ली धरि लोक आ सरकारी तंत्र मे एक बात गेलैक जे ई सब अपन धरती, अपन लोक, अपन भाषा, संस्कृति, आ ओकर विकास लेल उग्र रूप धारण करैत बहुत आगा धरि जा सकैत अछि। पहिल बेर एहि तरहेँ मैथिल सबहक चूड़ा दही खाइत आ सुस्त रहैत ईमेज सँ क्रान्तिकारी केर ईमेज केर मेकिंग शुरू भेल। सब ओकर लोक उदार होइत एहि संस्था संग जुड़ै लगलाह। यद्यपि विद्वान वर्ग नहिये जकाँ अएलाह। किछु एक्टिविस्ट सब जरूर आगा अएलाह। एहि संस्था केर कर्णधार सब नहुँ-नहुँ अन्य संस्था सब संग समन्वय बनाबय लगलनि। काज आगा बढ़ैत गेल। ई मिथिला स्टूडेंट

यूनियन केर प्रभाव छल जे दिल्ली आ दरभंगा केर संस्था जे लोक सभ परिवार केर पॉकेट केर संस्था जकाँ सूक्ष्म भेल चलबैत छलाह से सभ एकाएक साकांक्ष भ' गेलाह। अखिल भारतीय मिथिला संघक त बहुत हद धरि जीर्णोद्धार भ' गेलैक। एतबे नहि मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर सेनानी सभ बिहार आ पूर्वी उत्तर प्रदेशक अन्य भाषा आ बोली जेना कि भोजपुरी, मगही, अवधी आदि लेल प्रमाण आ अनुकरणीय दृष्टान्त बनल गेल। किछु लोक एहि कारणे सेहो एहि संस्था केर सेनानी सभ संग ईर्ष्या करय लागल मुदा, मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर काज चलैत रहलैक। समय चलैत रहलैक। समय बढ़ैत रहलैक। चलैत आ बढ़ैत समयक गति सं संस्था गतिमान होइत रहल। बेगूसराय, सहरसा, सुपौल, काशी अर्थात मिथिला केर पार-पार सं अपना आयक जाइत रहल।

आब किछु बात जे हमरा गलत लगैत अछि तकरा दिस ध्यान देब सेहो आवश्यक अछि। मिथिला स्टूडेंट यूनियन बाहिया क ब्रह्मणकेन्द्रित आ ब्राह्मण सँ सम्पोषित संस्था बनल रहल अछि। एखन धरि दरियादिली देखबैत एको टा अध्यक्ष अन्य जाति अथवा वर्ग किंवा समुदाय केर लोक कँ नहि देल गेल अछि। ब्राह्मणेतर जाति केर लोक आ विद्यार्थी मे एखनो ई बात घर केर छैक जे सांस्कृतिक गतिविधि पर ब्राह्मण आ ताहु मे दरभंगा मधुबनी केर ब्राह्मण केर एकछत्र राज्य छनि। दुर्भाग्य सँ एम एस यू एहि मान्यता के निरर्थक साबित नहि क सकल। उलटे स्थापना वर्ष सँ आइ धरि केवल दरभंगा आ मधुबनी जिला केर ब्राह्मण एकर अध्यक्ष बनैत रहलनि। परिणाम ई भेल जे दरभंगा मधुबनी केर

अलावा अन्य जिला कऽ लोक आ ब्राह्मणेतर जाति आ समुदाय एहि संस्था सँ अपना आपके सहजता सँ नहि जोड़ि पाबि रहल अछि। एक बात अवश्य भेल छैक जे साहित्य आ संस्कृति कऽ क्षेत्र मे ब्राह्मणेतर जाति कऽ लोक आब सक्रिय भेल जा रहल छथि। साहित्य अकादमी कऽ संयोजक पत्रिका जी बनल छथि। पहिल बेर सहरसा (सुपौल आदि) कऽ लोक, सब वर्ग कऽ प्रतिनिधि कऽ चयन भऽ सकलनि अछि। जगदीश प्रसाद मण्डल कऽ साहित्य अकादमी भेटब सेहो एक नव सांस्कृतिक उन्नयन कऽ परिचायक अछि। पहिल बेर नव नव कऽ चयन मे लोक सेहो व्यक्तित्व कऽ आगा देख रहल अछि। स्वतंत्र मिथिला राज्य लेल सेहो आब ब्राह्मणेतर जाति कऽ लोक आगा आबि रहल छथि। विशेष रूप सँ जाहि तरहेँ श्री राहुल यादव एवं अन्य युवक मिथिला कऽ गाम गाम घूमि लोक सबहक ध्यान स्वतंत्र मिथिला राज्य लेल जगा रहल छथि से अनुकरणीय लागि रहल अछि। मुदा एहि परिवर्तन मे मिथिला स्टूडेंट यूनियन कऽ बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान नहि छैक।

एमहर दू तीन वर्ष सँ मिथिला कऽ आइडेंटिटी के सीता सँग जोड़बाक प्रयास भऽ रहल अछि। एहि बेर जना अनेक संस्था संग मिथिला स्टूडेंट यूनियन आ गाम घरक संस्था सब जानकी नवमी पर जे कार्य कएलनि अछि ताहि सँ लगैत अछि जे बहुत शीघ्र जानकी नवमी होली आ दियाली कऽ मिथिला लेल कल्चरल आइडेंटिटी कऽ सर्वमान्य उत्सव बनि जाएत जना बैशाखी पंजाब लेल। अपन टेस्ट भेल देखी त एहि कार्य लेल अनेक संस्था संग

मिथिला स्टूडेंट यूनियन सेहो अछि। कोना ई कल्पना एखन मात्र नहि छैक। से जे हो, सहयात्री त बनिए गेल छैक।

मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर जखन निर्माण केर शैशव अवस्था रहैक त संविधान मे प्रावधान रहैक जे एक व्यक्ति मात्र एक साल लेल अध्यक्ष होएत। शासन साल अर्थात प्रति वर्ष नव लोकक चयन (चुनाव) द्वारा होएत। मुदा किछुए दिनक बाद एहि अनुच्छेद मे संशोधन भेलैक आ लोक आब 2 वर्ष धरि चयनित भ' रहल छथि। ई कोनो उपलब्धि बला बात नहि भेल।

सभी बहिनया केर निष्प्राण आ महिला वर्ग मे उत्साह देखैत लागि रहल अछि जे मैथिलानी आगा आबि रहल छथि। मिथिला स्टूडेंट यूनियन मुदा एक एहन महिला केर चयन नहि क सकल अथवा नहि करय चाहैत अछि जे मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर भार वहन क सकथि। अगर कोनो महिला एकर अध्यक्ष भ' जाथि त महिला वर्ग मे क्रान्ति आबि सकैत अछि संगहि संस्था केर काया पलट भ' सकैत छैक।

मिथिला मैथिली केर एक विडंबना रहल अछि जे मैथिली साहित्य क छोड़ि अन्य विद्वान वर्ग जेना कि दर्शन शास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, अंग्रेजी (भाषा आओर साहित्य) प्रबंधन आदि कोनो तरहक साहित्यिक आ सांस्कृतिक गतिविधि सँ उदासीन रहैत छथि। दुर्भाग्य सँ कोनो संस्था हुनका सभक अनबाक विशेष यत्न नहि कएलक अछि। अगर दिल्ली केर बात करी त 56 साल सँ अखिल भारतीय मिथिला संघ काज क

रहल अछि। दिल्ली कर प्रथम उपराज्यपाल छलाह आदित्यनाथ झा। हुनकर मैथिली प्रेम सब जनैत छी तथापि अखिल भारतीय मिथिला संघ कहुना ढंग कर स्थान एत संस्था लेल जमीन नहि आवंटित करा सकल। कॉमनवेल्थ गेम्स मे शुरू सँ अंत धरि अखिल भारतीय मिथिला संघ क पॉकेट कर संस्था बना मजदूर यूनियन जकाँ चलबैत रहलनि। दिल्ली यूनिवर्सिटी, जे एन यू, आई आई टी आदि कर विद्वान सभ अहि संस्था लेल कहुना उपयोग कर प्राणी नहि बूझल गेलाह। बाद मे की स्थिति भेल आ एखन कोना अछि तकरा सभ कियाक जनैत छी। गलती यद्यपि दूनू पक्ष सँ अछि। अपन झारखण्ड, उत्तराखण्ड आदि कर स्वतंत्र राज्य मे आबय कर इतिहास पढब त आश्चर्य लागत जे कोना विद्वान, मीडियाकर्मी, विद्यार्थी, प्रवासी आ देशी, स्त्री आ पुरुष सभ किया 100 प्रतिशत मनोयोग सँ लागल छल। मुदा एहन एकाग्रता हमरालोकनि मे नहि अछि। इएह कमी अथवा दोख मिथिला स्टूडेंट यूनियन मे सेहो स्पष्ट दृष्टिगोचर भ रहल अछि।

एक प्रवृत्ति इएह लागल जे मिथिला स्टूडेंट यूनियन सेहो राज्य आ केंद्र सरकार कर विरोध आ खास राजनैतिक दलक विरोधी रहल अछि। इएह कर गंभीर मसला थिक। मैथिली आ मिथिला कर विकास क ध्यान रखैत एहन बात सँ हमरा जनैत परहेज होबाक चाही। अपन अहाँ कहुना राजनैतिक दल सँ विरोधी तरह रखबैक त भ सकैत अछि जे ओहि दल अथवा आइडियोलॉजी संग साम्य राखयवला विद्यार्थी आ लोक अहाँ सँ दूरी बना ले।

मिथिला स्टूडेंट यूनियन मिथिला मूल केर उद्यमी संग सेहो बड्ड सुन्दर नेटवर्क बनि स्थापित भ' सकल अछि। एहि पर पोस्ट गंभीर रूपें एकरा सुधारल जा सकैत अछि। परामर्शदाता सभ प्रेरक छथि से ध्यान राखक चाही। अध्यक्ष बड्ड गंभीर, तेज स्वाभिमत, नेतृत्व क्षमता सँ पूर्ण, सहिष्णु, सभ संग मेलमिल रखनिहार, विनम्र छथि। सभ सिखबाक आकांक्षी छथि त ई संस्था आगाँ बढ़ि सकैत अछि।

ई सभ हमर विचार अछि। सहमति आ असहमति पाठक लोकनि क ऊपर छनि। अंततः हमर त एतेक साफ अछि जे ओकर कमी क बादो मिथिला स्टूडेंट यूनियन सभ संस्था सँ नीक अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.लालदेव कामत- एम एस यू कान हृश्र



लालदेव कामत, संपर्क-०७६३१३९०७६१

एम एस यू कान हृश्र

सन् २०१७ ई० मेँ दिल्ली स्थित कम्युनिस्ट खेमामे बैठ ज्ञान-ध्यानसँ दीगर दीगर एक चर्चा छलैक - एकटा छात्र संगठन मिथिला नाम यन हुअय। स किछु कामरेड लोक युवा वर्गमे एहि गप्पकँ पसारयम

लागि (गलाह। संगहि ओ्हो मनम नायलनि ज यनिवान आ सनकुटमसँ किछ नव यीठीक नतृव निकसित कनी। ओहि संदर्भ उागयसँ घाषणा यत्र जानी रल, घाषणायत्र गँ प्रायः वनावन निकलैग छैक। मिथिला स्टुडंट युनियन नामसँ संगठन अनुय मैथिल, आदित्य मारुन,गौगन मैथिल आ नीगीश कर्ण आदि विद्यार्थीगण कँ ओ्ही संस्था चलवाक दायित्व रटलनि। ओ्ही छात्रक विशाल संगठनक नुयम विदान - मानखण्डसँ उरनि समउ आयल। ओहि छात्र संघम (गैन-छात्र शवक लाक सहा शटल नहला। जखन कम्युनिस्ट कन छात्र रुतनगन मिथिलाम कमजान यडल गँ ओ संगठनक कर्णधार लाकनि क वीच किछ सदस्यता वढल आ (थाउक छीजना रल नहैक। ओहि संगठनक उगागन विकास हाऽ्ग (गल। कानण विद्यार्थीगणक शिक्षा समस्यासँ ल' कs शिक्षा प्रणाली , नाजगान, मिथिला - मैथिल विषयक हन कालज-युनिवर्सिटी धनि चर्चाकँ अरियान यूर्वक चलाउल जाऽ्ग नहलैक। आम (गौनव वाध सहा जन जनम जगलैक। ओहि संगठनक प्रराव दख किछ राजयाऽ्ऽ सहा अयन वाल वच्चाकँ विद्यार्थी हैसियासँ ओ मूहिमम ढुकलक। आव दीगन दीगन छात्र - छात्राक वीच दु नाजनीगिक दलक सिद्धांग सहा यूनगैग नतृव उमगाक वल आन संस्था जँका वच्चा वहनी दिश उन्मूख हाऽ्ग दखल (गल। काना संघ सासायटी चलवाक लल गँ आर्थिक सहयाग चाहव कनी। ओहूम किछ छात्र प्रवीण र' (गला ज सार्वजनिक हिग लल चंदा चूटकी कनैग अयन निजी लाह वर्षी कमलनि। सवसँ यैघ उयलब्धि रलैक ज यूनना जिलूसँ अलख जगवाक गथाकथिग धन वटानवाक काज उानिया (गलनि। ओहि प्रसाद निजी प्रसिद्ध आ नीक कन्न्रट स्कूल विदानम चलैग नहलैन अछि। मूदा ओ्ही सव अप्रयउ काज सुकार्यम

तखन आबि गेल जखन बच्चा-बच्चाक काजकेँ मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन अपना हाथमे लेलक। दि० २१-८-२०२२ केँ पछिला साल संसद मार्गमे जन्तर मन्तरमे एक दिवसीय महाधरनाक कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न कयल। एहन तरहक " पृथक मिथिला राज्य निर्माण" लेल आन्दोलन धरि कतेक नव - पुरान समिति आयोजन कहि क' सकल छलैक। एखनो नहुँ एहि गैर राजनीतिक संगठन केर नेतृत्वकर्ता गणमसँ सक्रिय राजनीतिमे नेता बनय लेल तत- तत जान अजमाइश कय रहलैक अछि, से २०२४ केर लोकसभा आ ०२५ क' विधानसभा चुनावमे आगू देखमे आओत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर समस्त टीम केँ हार्दिक शुभकामना आ बधाय दैत छीयैन जे मिथिलाक समस्याक समाधान लेल सेयान छथि। भावी पीढी छात्रक भाग्य आ परिजनक छियैन,तहीमे सहायक होय लेल एहि तरहक संस्थाक उपयोगिता सराहनीय कहाओल जायत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.आशीष अनचिन्हार- MSU केर काज एवं हमर अपेक्षा



आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

MSU कर काज एवं हमर अपेक्षा

विदेह वर्ष जनवरी २००८सँ प्रकाशित भऽ रहल अछि आ एहिठाम हरेक लेखक अपन रागिनी, भाषा, टानम रचना लीखि पठबैत छथि। आ एही कारणसँ विदेह हरेक वर्गमे पहुँचल अछि। विदेहक १७० अंक १७ मार्च २०१४ (पत्रिका लिंक) मे हमर एकटा आलेख छपल छल "तीन टा बिंदु" (फेसबुक लिंक) जाहिमे हम भाषाक मनोविज्ञानक सहारे ई साबित कएल गेल जे मिथिला-मैथिलीक टुटबामे पुनस्थानक की भूमिका छै ताहि हिसाबसँ ई मैथिलीमे पहिल प्रयास छलै। एहिसँ पहिने कोनो लेखक-विचारक एहन तथ्य उजागर नहि कएने छलाह। बादमे पता चलल जे राजद केर नेता मनोज झाजी २०१८ मे एही बातकेँ उठौलाह तँ खुशी भेल हमरा जे काहुँ ने काहुँ हमर विचार जिंदा छै। ईहो खुशी भेल जे भने लोक क्रेडिट नहि दिअए मुदा सही विचार पसरित छै। आब तँ ईहो देखि रहल छी जे विगत किछु वर्षसँ विदेहक विरोधी लोकनि सभ सेहो यत्र-कुत्र लीखि रहल छथि जे पुनस्थानक कारणे मिथिला-मैथिली टूटल।

MSU एकटा छात्र संगठन अछि जकर स्थापना मार्च २०१७ मे भेलै मुदा उपरक बात केर कोन संबंध छै MSU सँ? आ ओकर संबंध बनबाक लेल MSU केर काज ओकर तौर-तरीका जानए पड़त से हम निच्चा दऽ रहल छी-

१) एल एन.एम.यू. मे नियमित शैक्षणिक सत्र लेल आगू बढ़ब- बिहारक सभक विश्वविद्यालय केर सत्र ३-३ रहैत छै जाहि कारणसँ छात्रक उम्र, पाइ आदिक नाश होइत छै। MSU मिथिला विश्वविद्यालयक सत्र ठीक करबाक लेल आगू बढ़ल आ वर्तमानमे सत्र पहिनेसँ बेसी नियमित अछि।

२) दरभंगा एयरपोर्टसँ हवाई सेवा लेल आगू बढ़ब- दरभंगामे एयरपोर्ट बनला लेल हो से बात बहुत पहिनेसँ छलै मुदा ओ मात्र राजनीति बनि छलै। MSU एहि मुद्दापर आन्दोलन केलक आ ताही बल जनता लेल एयरपोर्ट सेवा २०२० मे शुरू भेल। ओना ओकर कहब आसान छै जे सरकार केलकै। मुदा प्रश्न तँ ओकर छै जे सरकार एतेक बर्खसँ की कऽ रहल छलै। अस्तु ओकर खातिर MSU केर खातामे अछि।

३) मखान केर जी०आइ० टैगिंग 'मिथिला मखान'क नामपर- बिहार सरकार "बिहार मखाना" केर नामसँ जी.आइ. टैगिंग करबाक प्रस्ताव देने छल। MSU एहि मुद्दापर आन्दोलन केलक आ वर्तमानमे ओकरा "मिथिला मखाना" केर नामसँ देल गेलै।

४) मिथिलाक मूलभूत समस्या-आवश्यकतापर चरणबद्ध आंदोलन :-

चिन्नी मिल आंदालन, ययन मिल आंदालन, गमाम वंद यठल उद्याग धंधाकँ वालु कनवा। मिथिला निकास वाउ लल आंदालन लल एखना ऌ्ी संस्था आह्यलन कऽ नरुल अछि।

उयनक किछ्र प्रमूख काजक संग रुनक दिन किछ्र न किछ्र ऌ्ी संस्था कनिग नर्हेग अछि जाहि कानणसँ जनगाक नजनिम रुगासा एलैए आ सफा सरुा एकन आह्यलानकँ गंरीनगासँ लैए। ऌ्ी काज ज उयनम दलहुँ ज काना रुलै? ऌ्ी की एक उप्रक लाकक काज छै ना कि एक राषाक काज छै ना कि एक जागिक काज छै। अर्हाँ जखन MSU कन संनवनायन (धआन दवै गँ लागग ज कम्म स्यीउम सर्ही एकन संगOनम रुनक जागिक लाक आवि नरुल छै आ गँऌ्ी रुनक राषा उा उप्र सरुा छै। आ ऌ्ीएरु चीज एकना निदरुसँ संवंधिग कनैग छै। आ गँऌ्ी MSU कन निणेषांक नहिगा यहिन रुम निदरुक चर्चा कलहुँ।

ऌ्ी गँ छ्रल MSU कन काज आव रुमना सरुकँ MSU सँ ज अयउा अछि स दऽ नरुल छै-

१) राषा संवंधी अयउा- MSU यन ऌ्ी आनाय छै ज उा मैथिली राषाक स्थानयन उा वसी हिंदीक प्रयाग कनैए। रुमना एहि आनायम दम नै वूमाऌ्ग अछि कानण ऌ्ी आनाय लगेनिरुान सरु अयन साहित्यम मैथिली-हिंदीम लिखै छथि अथवा दु राषाम लिखए वला संग संवंध नाखै छथि जाहिसँ हुनका मंच-पुनस्कान रुटैग नहिनि। उाना MSU सँ रुमन अयउा अछि ज उा रुनक जिलाक राषायी टान सीखए, उाकन शद्यानली सीखए

आ ओहि जिला बला सभकेँ भाषा देत जे अपन मैथिली छी। एहिसँ भाषाक विस्तार तँ हएत मुदा संग-संग आन राजनीतिक समस्याक समाधान सेहो हएत।

२) अकादमी आ पुरस्कार संबंधी अपेक्षा- जेना कि हम अपन आलेखमे लिखने छी जे साहित्य अकादमी मिथिलाकेँ खंडित कएलक। तँ मिथिलाक एकीकरण लेल जरूरी अछि जे तँ अकादमी कोनो पुरस्कार लाय कऽ देल जाए अथवा मिथिलाक उपजिला जिला सभमे लगभग १०० वर्ष धरि पुरस्कार देल जाए (दरभंगा-मधुबनी सहित आन प्रमुख जिलाकेँ एहि १०० वर्षमे साहित्य अकादमी पुरस्कार नहि देल जाए)। जा धरि एहन नै हएत ता धरि MSU वा कि आन संगठन आदि जेँ मुदा मिथिलाक एकीकरण नै हएत। हमर सुझाव MSU अकादमी प्रसंगमे मंथन कऽ उचित कदम उठाबए।

३) MSU अपन कार्यक्रममे मुख्य शिक्षा, व्यस्क शिक्षा एवं स्वास्थ्यकेँ सभसँ उपर राखए।

जँ MSU एहि तीन अध्ययन काज कऽ लेलक तँ मिथिला-मैथिली-मैथिलक जे समस्या छै से लगभग ८०-९० प्रतिशत खतम भऽ जेतै। आ उम्मीद अछि जे ओ सभ करिया न करिया हएत करतै।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.प्रवीण कुमार झा- जनहित याचिका म



प्रदीप कुमार झा

जनहित परिप्रेक्ष म

प्रिय मैथिल, रोजी-रोटी आ रोजगार के तलाश में हम मैथिल दिल्ली मुंबई सन शहर में अपन घर स हजारों किलोमीटर दूर दोसर दर्जा के जीवन जीवय लेल मजबूर छी आ पैसा कमाय में लागल छी, आई पलायन के अभिशाप हर... particle of Mithila. स्थिति ई अछि जे हमर गाम के 95% युवा गाम छोड़ि शहर में पलायन क गेल छथि, एकर पाछू मुख्य कारण अछि मिथिला में पूर्ण रोजगार, समुचित शैक्षणिक व्यवस्था आ समृद्ध स्वास्थ्य व्यवस्था के घोर अभाव।

मिथिला दशकों स राजनीतिक रूप स उपेक्षित रहल अछि, एहि स पूर्व कोनो पार्टी मिथिला के हित कए प्राथमिकता नहि देलक आ एकर कायाकल्प लेल जरूरी लागू नहि केलक, जाहि कारण स देश के अन्य राज्य विकास के धारा म आगू बढ़ैत रहल, जखन कि... उल्टा मिथिलाक समृद्धि घटैत गेल।

समस्त मिथिलाक कागज मिल, चीनी मिल, जूट मिल, कपास मिल

जेना दर्जनों बंद उद्योग एकर जीवंत उदाहरण अछि, ई सब ओ उद्योग अछि जाहि माध्यम एक समय मे युवा मिथिला पलायन रोकल छल आ एहि ठामक लोक किसान आओर समृद्ध भ' रहल छल . समय क साथ राजनीतिक उपेक्षा क कारण सब उद्योग बंद भ' गेल, जखन अन्य क्षेत्र में नव उद्योग क स्थापना भ' रहल छल, ओहि समय मिथिला औद्योगिक पिछड़लता क तरफ बढ़ि रहल छल आ आइयो स्थिति ओहिना अछि ।

एहन स्थिति मे ई सोचबाक आवश्यकता अछि जे देशक राजधानी आ सत्ताक केंद्र बिंदु दिल्ली सन शहर मे ई नहि भ' सकैत अछि, जतय 30-35 लाख प्रवासी मैथिल छथि, जाहि मे दिल्ली में सेहो 20- 25 हजार लोक जमा भ' जाइत छथि, क नॉर्थ साउथ ब्लॉक में पावर कॉरिडोर स युद्ध, हमर इलाका क अधिकार कतय अछि, हमर मिथिला क अधिकार कतय अछि ।

2015 स मिथिला स्टूडेंट यूनियन नामक संस्था क स्थापना भेल जे क्षेत्र आ छात्र क बात करय लेल ई एहन सेना बनि गेल अछि शिक्षित युवा क, जे हाल क समय में एक-एक समस्या क प्रमुखता स उठबैत आबि रहल अछि आ एहन तरहक विभिन्न सफलता सेहो प्राप्त भेल अछि | .ओना त हम सब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जेना ट्विटर, व्हाट्सएप, मैसेंजर, फेसबुक, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम, आदि पर सक्रिय छी मुदा जरूरत अछि।
कि हमरा सब के संगठन क हित मे, संगठनात्मक गतिविधि, संगठनात्मक विचार क प्रसार लेल ई मंच क अधिकतम उपयोग

करबा चाहियऽ, हमरा ओही काम करबा चाहियऽ ताकि हम्मं अपनऽ विचारधारा, दृष्टि, मिशन आरू एजेंडा पं स्मार्ट तरीका सं काम करी सकियै ।

-प्रवीण कुमार झा, जिला प्रधान महासचिव, मिथिला स्टूडेंट यूनियन दरभंगा संग संस्थापक सदस्य:- मिथिलावादी पार्टी, praveenjhakeoti1997@gmail.com, 8507875442

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

ऐ अंकक अन्यान्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

३.२.जगदीश प्रसाद मण्डल-अपछा टूटि गेल (लघुकथा)

३.३.नन्द विलास राय-आवश्यक आवश्यकता

३.४.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- ३६-४० म खण्ड

३.५.कुमार मनोज कश्यप-आकाश-कुसुम

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२०)

३.७.आचार्य रामानन्द मण्डल-भयानक दीप/ बाल वैरागी

३.८.डा. किशन कारीगर-मैथिलीक गाँधियागिनी

३.९.लालदेव कामत-महा प्रलयक लगीच ठाढ़ जनजीवन/ सामाजिक समाधान कँ नव दिशा दैत उपन्यास/ कविवर बद्रीनाथ राय जीक मादे

३.१०.रामानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य

३.११.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)



जगदीश प्रसाद मण्डल

सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धारावाहिक रूपेँ छपब प्रारम्भ भेल 'मिथिला दर्शन'मे, जे पहिने प्रिंटमे छपब बन्द भेल आ मात्र पी.डी.एफ. मे ई-प्रकाशित होमए लागल आ फेर सेहो बन्द भऽ गेल। आ तेँ 'सुचिता'क सेहो छपब/ ई-प्रकाशित होएब बन्द भऽ गेल। एही आलोकमे ई उपन्यास धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि।-सम्पादक।

गमन पथ

गुरुनक्षत्र भेला राधारमणक आइ पचपन दिन छी। जहियासँ राधारमण कमलपुरसँ निकलला तहियासँ एखन धरि गाम बिसैर गेल छला। जे स्वाभाविको अछिए। किए तँ नव-नव जगहक संग नव-नव काजोक व्यवस्था छलैन्हि।
जखन राधारमण घरसँ निकैल दम्पूपन अपनाकेँ सवार कलैन तखनसँ मनक विचार वर्तमान वास करए लगलैन, तँए घरक सभ किछु बिसैर अपन जीवन-यात्रा प्रारम्भ कलैन। ओना, नव नायक नव

जगह भुवनेश्वर छैक, मुदा ओहिना नव जगह भुवनेश्वर नहियेँ अछि जकरा कमलपुरक लोक नहि जनैत रहथि। किछु गोँ छओ मास पूबक छली नव गाम-गामक लोक जगन्नाथिया गीत गबैत पीढ़ी-दर-पीढ़ी जगन्नाथ जाइत-अबैत रहला अछि। तेँए कमलपुर छोड़ल रहल सहज बाट नहियेँ अछि। तेँ भुवनेश्वर अपरिचित जगह कमलपुर-ल नहियेँ अछि। मुदा राधारमण-ल स नहि छैन, तकरा करा रकारल जा सकैछ। गय-सम्यक क्रमम कमलपुरवला एते जनैत छैथ जे भुवनेश्वर उड़ीसा राज्यक जिला मुख्यालय छी आ राजधानियोँ छीह। तही जिलाम जगन्नाथपुरी सहज अछि आ समुद्रक कातम सूर्य मन्दिर कोनार्क सहज अछिए। ओहिना कबीरदासक खम्बी समुद्रक कातम सहज गाड़ल छैन। जगन्नाथो बाबा रहल छैथ जे सभ दिन नव अन्नक प्रसाद ग्रहण करैत छैथ।

भुवनेश्वर पहुँच राधारमण अपन विधिवत जीवन धारण कएलैन, जइसँ सरकारी सभ सुविधा रहब कएलैन, तेँ कोनो असुविधा नहियेँ रहलैन। मुदा सभ व्यवस्था कऽने राधारमणकेँ एक पख लगिये गेलैन। आइये पछिला दिन राधारमणकेँ गाम मोन पड़लैन।

हाय, जीवैतम लोक माए-बापकेँ किछु ने बिसैर जाइ, मुदा कोना बाट लगला कि अनघोर रहलायन वा आफद-असमानी एलायन लोक सभ किछु बिसैर जाइए, एते तक कि नइका रहवासकेँ सहज बिसैर जाइए, मुदा माए-गाइ-माए, बाप-बौ-बाप मुहसँ छूटब कठिन।

गाम दिस निशान बढ़िते राधारमण पत्नीयन नजैर खिरौलैन। पत्नीक नव रूप नव चहुनाम देखि पड़लैन। अपन बैसानीक महत्-केँ देखैत, पत्नी जेठाम बच्चा-ल दूध ऊँठ रहल छली, तेँ लगम पहुँचला।

सुनासिनीक, दु सालक वच्चा सुचिणा ल, दिन रुनिक दुध गेयान हा॰॰ण मन (निवान कनैक) सए छान-वान गाटि निवनध कनैण अयन जन्मसँ आ॰॰ धनिक जीननम दो७७ लगलैन। मुदा जहिना उा॰॰ दिन मान यिणाक मृत्यु दिन, सुनासिनी ७णव वूमन छली ज माणा-यिणाक मृत्युम वटा-वटी कना कानै७; णहिना कानि धीन-धीन विसन७ लगली। उाना, आ॰॰ सुनासिनी उा॰॰ घटनाकँ जीननक ७कटा घाट वूमि जीनन-वाट वनव७ चाहि नहली अछि, गँ७ निवानक अयन धून मनक निवानकँ मथि नहल छलैन...। गेवीव यत्नीकँ अयन निवानी वूमि नाधानमध वजला-

"गामसँ वहना गेलौं मुदा गामक किछु न कलौं..! समाजा अटियाणि कS निदा कलैन मुदा ७णवा उयनाग किया न दलैन ज गामम अहाँक क७ल किछु न अछि। ज णा-जिनगी मन नहैण जा॰धैन जिनगी नहैण। सहा न रुल। आ॰॰ मनक वाण मान मनमंत्र कह७ चाहि नहल छी स सुनव?"

जहिना अकसनहाँ लाककँ (0ानयन वनी यकल नहै छै णहिना सुनासिनीक (0ानयन यकल नहैन। वजली-

"अहाँक वाण हम कहिया न॰॰ सुनलौं ज ७ना शंकालु रुल वजै छी..?"

उाना, जहिया सुनासिनी आ॰॰ी.७.क छाया छल णहियसँ नाधानमध चिहलैन। सुनासिनीक यिणासँ, कौलजक शिउक (प्राहसन) आ छायक वीच ज सम्बन्ध हा॰॰७, वस णाव नाधानमधक सम्बन्ध छलैन। नाधानमधक मनम ७काएक उठO गेलैन ज गानिह वावुक टूटैण यनिनान दखि निवान जगल आकि हुनक मृत्यु? गँ७ मिनगा। जकाँ मन नाचै छलैन। उाना, नाववा दु नंगक हा॰॰७। यहिल हा॰॰७

सुर-तान मिला गाबए आ दोसर होइत अनघुन गाबए। मुदा राधारमणक मनक गाब दुनूमे सँ कोनो नहि छलैन। किए तँ अखन तक मात्र (गोविन्द बाबू ओठाम जाइ तक, राधारमणक मनमे कोनो एहन विचार नहि छलैन जे केहन परिणाम छैन आ कोन स्थितिमे पहुँचत। आ ने एहो छलैन जे अपनामे कोनो तरहक बल (सबल) अछि जे किछु मदैत कऽ सकबैन। अइठामो जकाँ घटना छल जे एकाएक परिस्थितिक सूत्र राधारमणकेँ अराधक बना देलकैन।

आराधना (संकल्प) सेहो दू रंगक दू परिस्थितिमे कएल जाइए। एक परिस्थिति होइ जे शान्तिचित्तसँ कोनो संकल्प (अराधना) करब आ दोसर होइए अशान्त परिस्थितिमे संकल्प (अराधन) करब। राधारमणक दोसर श्रेणीक छलैन।

पत्नीक मुहसँ मात्र सुहासिनीक मुहसँ खसल शंकालु शब्द सुनि राधारमण बजला-

"कोनो शंकाक निदानक कहिया कलौं जे शंकालु नहि रहब?"

ओना, विचारक दोसम, जे जीवनक संग दोसैए, तइ दृष्टिएँ राधारमण आंशिक परिपक्व होइए गेल छथि जे सुहासिनी नहि छथि। तकर कारणो दुनूक अपन-अपन छैन। विद्याध्ययनक क्रममे धरि जकाँ राधारमण अपन मनकेँ संकल्पित कऽ लेने छला जे प्रशासनिक पद तँ गनथारिक पटब छी मुदा एम.ए. करब तँ धारल अछिए, तँए कोनो कौलेज वा हाइस्कूल शिक्षक बनब तँ गनथारिमे नहियेँ अछि। जखन कोनो काजक होइ आ उठै काजक प्रक्रियाक बाध ककरो होइ जाइ छै तखन उकरो अपन बल जगैत छै जइसँ संकल्पक अनुकूल परिस्थिति सेहो निर्मित होइत अछि, जकर उपयोग होलासँ सहलगाक सीढ़ी सेहो होइत अछि। मुदा स

सुहासिनीक जीवनमे घटित नहि भेल छलैन। ओना, परिवारमे ओहेन घटना घटित भेल छलैन जइसँ परिवार मेटा जाइत। कहैकाल समाजमे हजारो समाजसेवी आ हजारो धर्मात्मासँ गाम भरल रहैत, मुदा परिवारो आ बखरियो कते मेटा रहल अछि, से देखनिहार किओ ने...। ई बात-विचार राधारमणक मनमे नाचि रहल छलैन, तँए अनुरक्ती आ अनअनुरक्तीक बीचक दूरी मनमे बनल छलैन। तँए शंकालु हएब स्वाभाविक हुअए जाइत, मुदा सुहासिनीक मनमे सामान्य पति-पत्नीक जे जीवन अछि से छलैन। ओना पतिया बूझै छैथ जे कमजोरसँ कहलापर मान कतौ आदर दैलापर, जँ नहि करती मान पत्नी नहि मनौती तँ गलमा कऽ मान जोरसँ कहलापर मनाएब करती, तेहिना पत्नियोँ बूझैत छैथ जे जखन दुनू प्राणीक जीवन एक संग-संग रहैक अछि, तेँ बीच जँ कतौ तीत-कसाइन होइत ओकरा सहि लेबा चाही। लोक तँ कतौ संकल्पक (व्रतक) पाछू एक-एक दिन सहि लइत, तहूमे अपन मिथिला तँ सहनमा देश छी जे हरिवासर सन पावैन, जइमे तीन दिन सहल जाइत, सेहो लोक करैत अछि।

ओना, सुहासिनीक विचारकेँ राधारमण सेहो मने-मन मानि रहल छला जे अखन धनिक जे दिनकर जीवन रहलैन, तेहो अनुकूल ने विचारक सभ प्रक्रिया निर्मित भेल हेतैन...।

अपन चिन्तन-मननमे राधारमण ओझराए लगला। राधारमणक मनमे उठलैन जे विचारक ओझरी तँ अमती काँट जकाँ सोझराएब होइत आ खट-मधुर होइत देखैबला होइत। तेँ तँ तहन ने बनि कऽ रहल पात-घाट लगि सकैत, नहि तँ धानक कोरमे असगर बैसल रहब।

अपन आ पत्नीक विचारक दुनू राधारमणकेँ एना मींसिया देलकैन जे किछु करबा-ले आ किछु सीखबा-ले बाध्य कऽ देलकैन। ओना, राधारमण एक नम्हरसँ बाटी (आई.ए.एस.) पर पहुँच गेल छैथ मुदा जिनगीक दासन-एसन रहबाक बात उठैत अछिए जकरा बाटी धरि पहुँचबाक सामर्थ एँ छैन, मुदा से बूझल-गमल नहि छलैन। ओना, राधारमण विद्यालयक विद्यार्थी कहियो ने रहला, बस ओतब रहला जतऽ हाइस्कूल एक सामान्य स्थानक विद्यालय अछि। मुदा एतक एँ पढ़ल छैथ। एहिसँ ओ मनमे गनिय गेल छैन जे कला (आर्ट) आ विज्ञानमे अन्तर बनहानसँ अछि। तेँ काना बात ना विचार बनहानिक नूपम देखल जाए एँ ओहिमे ओत अनुपात अन्धविश्वासक जगह विश्वास लैत अछि...।

एकाएक राधारमणक मन मनुखक जीवन लग पहुँच गेलैन। जीवन लग पहुँचते अपन कार्यालय मन्दिर जकाँ देखि पड़लैन। कते लोकक जीवन ओहि मन्दिरसँ मात्र कार्यालयसँ संचालित भऽ रहल अछि? मन आगु घुसैक ओहि सीमा लग पहुँच गेलैन जहि सीमापर कार्यालयक कार्यकर्ता ०।८ छला। जिनका माध्यमसँ कार्यालय चलि रहल अछि। सबहक अपन-अपन कार्यालय, सबहक अपन-अपन काज...। एहिठाम अपना एँ असगर छी? हँ, एकटा उपलब्धिक रूपम थून अछि। जे काजम आ अपन जीवनम सहयोग करैत अछि। जखन बाहर बजक दुपहरियाम नीदक तापसँ तपित भऽ मन घूमए लगैए आ काज करैसँ अनिच्छा होइए, तखन ओकरा माध्यमसँ मात्र थूनक माध्यमसँ ने एकटा दवाइयक गोली मंगा खाइत छी...।

जना काना ओकैनीक सूनाक एटन पूलिसक मन खुशी होइए तहिना

नाधानमधर्कं सङ्ग खुशी भेलैन। खुशी भेलैन मान नाधानमधर्कं मनम एलैन जे जइ कार्यालयम छी तइम सहरसँ जयन भेलौं, जे एक स्थान भेल, मूदा एकन दासन स्थान तँ बएह न हएत जे डाकन नियनीत अछि। मान जहिना सहरसँ जयन आइ.ए.एस. अहसन भेला, तहिना सहरसँ निचाँ चयनासी भेल। दनमाहा तँ वीचम कातका नंगक अछि, मान एनक हिसावसँ नंग-नंगक। जे अन्तिम सीमा चयनासी लग यहुँच सहरसँ काम भऽ जाइए..।

अयन युन मनम अविन नाधानमध सुनासिनीकँ कहलैन-

"आइ यएन घूमेक मन होइए, स चंगे चलव?"

डाना, विनू विचान कनहि सुनासिनी लगल-मूँह कहि दलकैन-

"किए न चलव..!"

वजला यछाइत सुनासिनीक मन याछू हटकए लगलैन। हटकैक कानध भेलैन जे यूनूखकँ की छै, एकटा लुँगी, एकटा गंजी वा कूनना यहीनि कतौ चलि जैत, मूदा अयन कना जाएव।

नाधानमध सुनासिनीक मनक अस-विसयन धियान नहियँ दव नीक वूसलैन। ३0 कऽ 0।८ होइत वजला- "अहूँ चलू आ सुचिताकँ सङ्ग नन चलियौ। यएन-यएन दस उग तँ डाहा चलित अछि।"

जाव सुनासिनी निदा होइक नियान-तास कली गैवीच नाधानमधक मन अयन युन हिम्मतलालयन यहुँच गेलैन।

हिम्मतलाल आदिनासी यनिनानक अछि। जहियसँ कार्यालय खुजल तहियसँ हिम्मतलालक यनिनान डाइ कार्यालयसँ जुड़ल नहल अछि। हिम्मतलालक यिता विसवासलाल नाकनी शुनू कलैन, जिनकन असामयिक निधनयन अनुकंसाक आधानयन हिम्मतलालक वहाली भेल छल। जहिया यिताक गानजनीम हिम्मतलाल छल तहिय तीनटा

𑒡𑒱𑒨𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒻, 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒳𑒙𑒰 𑒂𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒻, 𑒏𑒳𑒪 𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒏𑓄, 𑒁𑒐𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒍 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩-𑒢𑒱𑒨𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒩𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒍𑒞𑒹𑒏 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒥𑒢𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒠𑒳𑒃 𑒂 𑒞𑒲𑒢 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒕𑒻।
𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒍𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒒𑒩𑒏 𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒏𑒩𑒲𑒥 𑓓𑓘 𑒏𑒱𑒪𑒼-𑒧𑒲𑒙𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒑𑒳-𑒂𑒑𑒳 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝, 𑒥𑒲𑒔𑒧 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒣𑒰𑒕𑒳-𑒣𑒰𑒕𑒳 𑒮𑒳𑒯𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒲। 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒒𑒩 𑒪𑒑 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒋𑒏 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒻𑒢-

"𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒒𑒩 𑒏𑒼𑒢 𑒕𑒱𑒋𑒢?"

𑒞𑒯𑒱 𑒥𑒱𑒔𑒧 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒒𑒰𑒮𑒏 𑒥𑒼𑒗 𑒧𑒰𑒟𑒣𑒩 𑒢𑒹𑒢𑒹 𑒐𑒹𑒞𑒮𑒿 𑒒𑒩𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪। 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒨𑒋𑒯 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒦𑒹𑒪।" 𑒏𑒯𑒱 𑒒𑒰𑒮𑒏 𑒥𑒼𑒗 𑒩𑒰𑒐𑒱 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒱-𑒠𑒾𑒛𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒥𑒯𑒰𑒩𑒋 𑒪𑒑𑒪। 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒞𑒲𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒁𑒣𑒢, 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒂 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒩𑒯𑒪𑒰। 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒥𑒯𑒰𑒩𑒱, 𑒏𑒳𑒩𑒮𑒲 𑒮𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏 𑒥𑒰𑒿𑒯𑒱 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒱 𑒏𑓄 𑒂𑒢𑒱 𑒏𑒳𑒩𑒮𑒲𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒾𑒪𑒏𑒻𑒢। 𑒮𑒳𑒯𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒔𑒱𑒞𑒰 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒡𑒱𑒨𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒂𑒚𑒼 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪 𑒕𑒪।
𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒱𑒨𑒼𑒿 𑒂 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒰-

"𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒱𑒨𑒾𑒢। 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣 𑒮𑒦 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒨𑒋𑒯 𑒕𑒟𑒱।"

𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒋𑒩 𑒕𑒳𑒥𑒱 𑒑𑒼𑒛𑓃 𑒪𑒑𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒯𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒑𑒼𑒛𑓃 𑒪𑒑𑒪𑒏𑒻𑒢। 𑒍𑒢𑒰, 𑒩𑒳𑒏𑓂𑒧𑒱𑒝𑒲𑒏 𑒋𑒏𑒕𑒰𑒯𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒥𑒠𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒮𑒳𑒯𑒰𑒮𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒢 𑒟𑒼𑒛𑓃𑒹𑒏 𑒐𑒙𑒏𑒪𑒻𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒹। 𑒞𑒹𑒥𑒲𑒔 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒩𑒧𑒝 𑒏𑒳𑒩𑒮𑒲𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒩𑒳𑒂𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒱𑒧𑓂𑒧𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒧𑒰𑒋𑒏𑒹𑒿

सङ्गे गोड़ लगैत छला। ई बात हिम्मतलाल बुझि गेल आ सुरेन्द्र सङ्गे बुझि गेली। आगू बढ़ि सुरेन्द्र सङ्गे घूमिकऽ राधारमणक पएर छूबए चाहली मुदा बाँहि पकड़ि राधारमण बजला-
"जहिना अहाँ हिम्मतलालक माए छिऐ तहिना ने हमरा भेलौं। हमर हुजी बनैए ई हम पएर छूबी।"

ओना, विचारक क्रममे राधारमणकेँ अपन क्रम छलैन मुदा सुहासिनीक क्रम तहूसँ भिन्न छलैन। राधारमणक विचारक्रम मनुक्खक सीमापर ठाढ़ छलैन, जखन कि सुहासिनीक विचारमे जाति आ रंग-भेद थोड़ेक दूनी बनल छलैन। ओहूसँ सुहासिनीक मन कठमठाए लगलैन ई कखन छोड़मसँ छोड़ि दिया भऽ जाऊ। मुदा राधारमणक मनमे जहिना अपन ससुर मात्र पत्नीक पिताक परिवार दुर्घटनावश बिलटैक कगारपर पहुँच गेल छलैन तहिना हिम्मतलालक परिवार सङ्गे पिताक (बिसनासलालक) अकालमृत्युसँ भेल छल। ओहू कार्यालयमे बिसनासलाल काज करैत रहथि, दू मंजिलाक सीढ़ीपर सँ खसने मृत्यु भेल छलैन। सात गोरेक परिवारमे छओ गोरे बसहारा भऽ गेल छलैन। जखन कि सुहासिनीक परिवारमे, पिताक मृत्युक समय मात्र तीन गोरे सुहासिनी, भाए- मनोज आ माए छली। राधारमणक मनमे दुनू परिवारक बात एकसंग नाचि रहल छलैन। मनमे उठलैन- दुनू परिवार करा-करा आइक सीमापर पहुँचल अछि, तैँ विचारकेँ सबहक सामे राखी, जइसँ एक-दोसर परिवारक सुख-दुख देखा-देखीसँ सीखा-सीखी करए। भाय, परिवार तँ परिवार छी, चाहे मनुक्खक परिवार, जकरा माल-जाल जकाँ छान-पगहा नहि लगल छै।

सुहासिनीक मनोभावकेँ नाथानन्द आँकि नहि छला। मुदा शंका हुनका उठि गेल छलैन जे वर किएक नै जेठुक क लग मुदा हुनका जे जेकरा सुहासिनीकेँ हिम्मतलालक पतिव्रताक संग-संग देखि मन टुटैक गेल अछि से उठबए पतिव्रताक सुख-दुखकेँ अपन सुख-दुख बुझि अङ्गेज करा सकैए? आ जँ से नहि हएत तँ काल्हि एतौ तँ कतौ ने सएह हएत...।

एहीबीच हिम्मतलाल पीनहा प्लेट जलखै अनलक। नाथानन्द दुनू पतानीक प्लेट एकसंग सजल छल आ सुचिताक शासन संग। दुनू पतानी नाथानन्दक प्लेट जहिना स्वादक हिसाब मी०-नमकीनसँ सजल तहिना सुचिताक प्लेट मी०-मधुनक हिसाबसँ सजल छल। तहूमे विभ्रम हिम्मतलालक पत्नी सासु-ल मुदा हिम्मतलाल माए ल, सहए आ पाँचो धिया-पुता-ल सहए बहका थारीए-म आनि राखि देली। एहए तँ दुनियाँक खेल छी, जहिना हिम्मतलालक पुत्र पतिव्रता दुनू पतानी नाथानन्दमे देवत्वपन देखि रहल छलैन तहिना नाथानन्द हिम्मतलालक पतिव्रतामे की मजमा अछि, एकरा पजरीज कऽ रहल छला। एक दिस बैधव्य माए अपन पोता-पोतीक संग आ शासन दिस नाथानन्द अपन पतिव्रताक संग...। मुदा सुहासिनीक मन उखड़ल-उखड़ल सन छलैन।

अपन नवयुगिक नवकोशलकेँ नाथानन्द असहल हाहुक प्रक्रियाम देखि रहल छैथ। मुदा हुनका जे जिनका (पत्नीकेँ) जिनगीक एद बुझबैत एतौ सहए एहन उखड़ल-उखड़ल सन एऽ गेली जे बुझि करा पोती? मनक विचारनाध छुटिए नाथानन्दक मनम नव बात एलैन। नवबात हुनका एलैन जे पहिने सुहासिनियक पतिव्रताक बृहान्द उठौलासँ उठा एकाग्र हरी आ अपन प्रतिक्रिया बुझैत हिम्मतलालक पतिव्रता

दिस नजैन उ(Oगी। जखन स एल गखन हिम्मणलालक यनिवान सङ्ग अयन जीवनक गुलना कनैग प्रणिक्रिया दव कनगी। वीचम दुनू (गोन एलौं, मान अयन आ हिम्मणलाल, हमहुँ सए अयन-अयन यऊ नखैग सामंजसक सीमायन यहुँचव।

नाधानमध नमकीन खा नहल छला आ सुनासिनी नमकीनक क0 कम कनैल मिOाळ्ळ खा नहल छली। दुनूक नियनीग दिशा दखि हिम्मणलाल वाजल-

"साहैव, हमना सवहक यनिवान गँ सहज सवदिनसँ गनीव नहल आ अखना अछि। अहाँ सन नाजाकँ कना दुआनयन सुआगण कS सकै छी, मुदा मिथिलाक धनधीधनक यूथ्र कर्म नहलैन ज चाह निदुनक साग हुअ७ आकि शवनीक वैन, दुनू वनवनि नहल अछि। गँ७ मनम नळ्ळ वहुग गँ नगिया एनि खुशी गँ एळ्ळय नहल अछि।"

उाना, हिम्मणलालक हाथक छूअल प्लटक एाफ्र नियासमँ नाधानमधक मन गृप्ति एS चूकल छलैन जळ्ळसँ मनाएानम (थाउक दलदली जनून आवि (गल छलैन। जलखै कलाक यछाळ्ळग हिम्मणलाल घासक वासम सँ ७कटा सूखल ख८ निकालि नहसँ खनिका वना दुनू (गोनक हाथम दैग वाजल-

"चाह यीव लिअ् यछाळ्ळग दिन-दुनियाँक गया-सय्र हगै आ नागुक नहैक वनस्था सङ्ग हगळ्ळ।"

नैगुका नहैक नाउां सुनि सुनासिनीक मनम म७कनाहि उOलैन मुदा मिOा७ल मुँह नहन शट्टु वदैल मुहसँ खसलैन-

"जहिना मिथिलाक धनधीधनक चर्च कलौं गहिना चाहक यछाळ्ळग यान सङ्ग नहल अछि।"

उाना, जहियासँ नाधानमध कार्यालय यक७लैन गहियासँ कार्यालयक

सभ किछु देख-सुनि-गुनि रहल छला ओ हिम्मतलालकेँ गुनल छल; किए तँ साल भरिसँ ड्यूटी हिसम कार्यरत अछि। ओना, दुनियाँक खेला विचित्र अछिए ओ किया दुनियाँकेँ देख-सुनि-बूझि छोड़ए तँ किया बिनु देखनहि छोड़ि दैए। नाथानमल अपन कार्यालयकेँ ड्यूटी नूयँ गुनलैन गड्डीसँ नियतीग नूयँ हिम्मतलाल देख-सुनि कऽ अँकन छला। मुदा अपन मन कहै ओ जे कार्यालयम हमर डाव भेल जे उपयोग करै छी, एकटा स्थूल कार्यालयक मूँहक देनबज्ञायन लगल अछि, गैयन वैसै छी। वस अपन गाव भेला।

कार्यालयक सभ वस्तुकेँ गुनन-मनन कलाक पछाड़ि नाथानमल जखन फेरयन वैसल हिम्मतलालक गुनन-मनन करए लगला गखन मनम जगलैन ओ जहिना एकटा खसैग यनिवानकेँ सांगन वनि, कहुना ०।८ कलौं, डाकन डौम्युका नुय की अछि गकन साउी यत्नी छैथ। गहिना कार्यालयक ओ चयनासी अछि जकन वगन कार्यालयम सभसँ कम अछि गकन साउी तँ हिम्मतलाल अछि...। मुदा यनिवानक तँ (०कान नहि अछि ओ दुनुम भीन अछि कि गनहु। यएह जिज्ञासा नाथानमलक मनकेँ उग्प्रनित कलकैन जड्डीसँ एकाएक छुट्टी दिनक कार्यक्रम वना हिम्मतलालक घनयन एला। रााय, ककरा डे०।म, विना दिन-(०कान वनैन जखन जाड़ि छिडे गखन अपना मनम ड्डीहा अवधानि लिअ यड़ग किन ओ फेला पछाड़ि मान डाड़ि०।म पहुँचला पछाड़ि उँ धननानी अपन दुआन-देनबज्ञा माड़ए-वहानए लगैथ तँ वगेल कऽ कागम ०।८ भऽ जाड़ि। ड्डी नहि ओ अपन ०।८ छी आ घननानी डानियान कऽ नहुला अछि तँए अपमान भेला। देनबज्ञाक वनस्था वनग, जखन डाड़ि०।म वैस यनिवानक धानाक आदान-प्रदान हुएग। रााय, दुनियाँ छी किन, नंग-नंगक नाच-

गमाशा, नंग-नंगक मंचयन ०।८ एऽ गमसगीन अयन गमासा दखैवा अछि आ आगुआ दखव कना।

सुनासिनीक यान सुनि दिअन जकाँ हिम्मागलाल अन०। दलक। अन०वैक कानध एलै ज ज्ञ मिथिलांचलम चाह यीआक वसी अछि ग्ञ मिथिलाम चाहक उयज (उत्पादन) नञ हूअ७ गखन अनका एनास का दिन चलव? अयन उ७िया चाह यम्मीक चाह वना नुक्षिधी दूनू यनानी नाधानमधक हाथम कय यक७वैा वजली-

"मम सहा७व, उ७िया चाह छी।"

उाना, यानसँ यहिन चाहक यूर्ति एन सुनासिनीक मनम ननवा एलैन। ननवा ञ्ञी एलैन ज मिथिलांचल, ज अंग्रेजक चाह वगन छल आ यान हथियौन नहल, गै०ाम यानक अयन उयजनानी सहा न छला हिम्मागलालक यन्नीक मूहसँ सुनल मम सहा७व अंगनजीक प्रशाव छी, ज वदैल आञ मैउम एऽ (गला

यान एला यछाञ्ञा हिम्मागलाल, दूनू (गानक वीच मान नाधानमध आ सुनासिनीक वीच वैसला हिम्मागलालक याछू यन्नियाँ आ माञ्ञ्या आवि वैसली। उाना, दीगन-दीगन जहिना नाधानमध हिम्मागलालकँ दखि नहल छला गहिना हिम्मागलाल सहा अयना नजनिय नाधानमध दूनू यनानीकँ दखैा नहैना दूनू यनिवानक सम्मलिग नुय दखि नाधानमध वजला-

"हिम्मागलाल, यनिवानम क सए छैथ?"

हिम्मागलाल वाजल- "सन, जहिना अहाँकँ यननह दिन □हिस-प्रवशक एल अछि गहिना हमहूँ काना यूनान नहि छी, यैछल सालसँ हमहूँ छी। जहिया नाकनी एल गहिया आ० (गानक यनिवान छल आ अखना अछि।"

हिम्मतलालक बात सुनि सुहासिनी बजली-

"बच्चा कतेटा अछि?"

हिम्मतलाल-

"पाँचटा अछि। तीनटा बेटा आ दूटा बेटी। तैसंग पत्नियोँ अछि आ माइयो अछि।"

हिम्मतलालक परिवारसँ सटैत सुहासिनीकेँ देखि राधारमणकेँ अनुकूल परिस्थिति बुझि पड़लैन। जइँ अनुकूलताकेँ जीवनदायगी बनबैत राधारमण बजला-

"हिम्मतलाल, नोकरी केना भेल?"

ओना, राधारमणकेँ पछुआरसँ पता चलि गेल छलैन जे हिम्मतलालक बहाली, पिताक मृत्युक पछाइत अनुशंसापर भेल अछि।

हिम्मतलाल बाजल-

"सर, जहियासँ कार्यालय बनल तहियेसँ पिताजी नोकरी करैत छला। करीब बीस-पचीस बर्ख नोकरीकेँ भेल रहैन। कार्यालयक दू-मंजिलाक सीढ़ीपर सँ खसर मृत्यु भेलैन, पछाइत हमरा नोकरी भेल।"

अपन बरहालिक अनुभवकेँ सबहक सामने अनेक खियालसँ राधारमण बजला-

"अनुशंसाक बहालीमे बड़ लफड़ा-पंच लगैत। स न त भेल?"

ओना, सुहासिनी सभ सुनबो करै छली आ मन-मन अपन माइपर नजैर राखि सोचियो रहल छली। मुदा मुहसँ किछु बाजि नहि रहल छली। हिम्मतलाल बाजल- "सर, देखै छिऐ जे घर अदहपर लसैक गेल छल। पिताक मृत्युक पछाइत जे नगद भेटल ओइसँ घर बनबाक विचार केलौं। पजबा तँ कीन लेलौं, मुदा नोकरीक दौड़-बरहा आ घूस-पंचम तत चलि गेल जे घर बनाएब पहाड़ जकाँ

भऽ गेल।"

राधारमण बजला-

"मायानगरीकेँ ई फैशन भेटैत छैक?"

हिमांशुलाल-

"हँ सर, आइ काल्हिसँ तीनटा कालनी आ दनबज्ञा करबाकऽ ०।८ करौं हना। नहि आकन भऽ गेल, आगू बूझल जाउ।"

बैसल बातिक अन्त गोटी जकाँ सुहासिनीक मनमे सेहो अपन परिवारक कथा-बथा सुनबैक विचार आबए लगलैन। आबेग कहाँ रोकितैन, सुखकेँ ने लोक बाँटए चाहैत मुदा दुख बँटि लैत छथि। ई बँटबाक मनकेँ दुखबैत नहि जे दोसरकेँ देखल-सुनल आ कहल-सुनलासँ कमैत। ताबत सुहासिनीक हाव-भावसँ राधारमण बूझि गेला जे हुनका मनमे (पत्नीक मनमे) अपन परिवारक घटना सेहो आबए लागि रहल छनि जँ अपन आ हिमांशुलालक विचारक प्रवाह जे अछि तकरा हिमांशुलाल आ सुहासिनीक माझक मुँहमिलान किए ने कऽ दिऐन जइसँ परिवारक एकरूपताक बोध होइन। मनुख काजेँ परिवार बा करता परिवारमे किए ने हुअए, अपन ताकतिक अनुकूल परिवारक रहन-सहन किए ने होउ, मुदा जीवन तँ जीवन छी। चाहे ओ मनुखक अपन जीवन मात्र असगरुआक, होउ आकि पारिवारिक होउ, तकर तँ अपन बुनियाद छै। जकरा पूर्वक बन्हु वा अन्य रूपकेँ लोक बुनियादी जनुना बूझैत, से तँ सभकेँ छइहे। खेत-बसातक प्रकार होउ आकि पानि-पाथरक प्रकार होउ, मानवीय होउ आकि दैवीय होउ, ओ तँ सभकेँ छइहे। क्रियाशील राधारमण सुहासिनी आ बुच्चिबीक मुँह-मिलानी करैत बजला-

"हिम्मति, ओहीम गाहुन माइंया छथुन, जिनका यंच मानि लहुन, ओहुन गाहुन यन्नी हलखुन आ ओहुन कार्यालयक हिसावसँ होसी आ ओमनक हिसावसँ हावा सुनासिनी हलखुन, वीचम हम हलँ ज हाइ मुदा हलौं गँ गाना आगुम वाल-वाध किन, गँउ वजै छी, गाहुन होजिया हमना सउकायन हहल छली।"

ओना, नाधानमध गाना मानि वाजल छला, मुदा सुनासिनीकँ गकन मिसिया हनि कुनाथ नहि हलैन। विहुसैत वजली-

"वीआ, मान हिम्मतलाल! कना अहाँ दिअना हलौं आ हैंसुना हलौ?"

अयन जतियाउल माटनीक हान उगानि हिम्मतलाल वाजल-

"जखन यिगातुल्य हाय सहाउव वैसल छैथ गखन हमन वाजव उचित नइ हउत। उचित उगव हउत ज जिनगीक वीसम वर्खम नाकनी शुनु कलौं।"

हिम्मतलालकँ महिला जगगसँ हनाक हाइत दखि नाधानमधक मनम उठलैन ज नाँहकम हम हँसि जाउवा जखन गुलसी वावा हानि मानि कहलैन ज -सवै नवावै नाम गोसाइ- गैहीम अयन कान खाक मुँउ छी..! अयन यनिवानयन नजैन गउय कS यहुँच गेलैन। यहुँचत मनम उठलैन ज कत सुहन यनिवान हिम्मतलालक अछि। हान-मुक्त माउ छैन, दुनु यनानी हिम्मलाल यनिवानक याछू चौवीसो घन्टा लागल नहैउ, गैहीम अयन यनिवान की अछि! दिन-नाति यिगाजी अधला छाति नीक नहियेँ कहैत हगा। मुदा स कि अयनटा वूसन हउत। मुदा ओहीम गँ सहसँ श्रेष्ठ हमहीं छी। उँ अयन यनिवान जकाँ ना अयना जकाँ हिम्मतलालकँ मानै छी, गखन गँ यनिवाना न अयन जकाँ हला दु यनिवानक न समागम हल अछि।

मनमे अबिते रामानन्दक मनक विचार फुराइते निकललैन-

"अपना मनक मौजी आ बहुकेँ कहलौं रोजी।"

बजैत काममे रामानन्द पत्नी दिस ध्याना कर छला मुदा हिम्मतलाल तँ कार्यालयक चपरासी सएह छीह। एलैँ ओकर विचारक मानि कार्यालयमे नहि होउ, मुदा कानौं प्रश्नकेँ जँ हलसँ बूझैल जाए तँ ओ ओहिना नहि बूझि सकै, सएह कना नइँ कहल जाएत। विजलाका जकाँ विचमानि रऽ हिम्मतलाल लोकैत बाजल-

"स कना यौ राय सहाएब?"

ओना, रामानन्द कता दिन ए पाँतीक प्रयोग कऽ चुकल छला, तँए मनकथा सहा एक दिन ताहीमे, मात्र द्वनम बैसल-बैसल तहि ललैन। सएह बजला-

"हिम्मत राय! हम सभ, मात्र मिथिलामे रहनिहार ए सूत्रकेँ मानै छी जे अपनासँ जे जेठ जीवित छैथ, ओ एक सीमा भेला आ अपन आगू बढ़ैत पीढ़ी जे अछि, ओ भेल दोसर सीमा, मुदा अखन तँ जगन्नाथ बाबाक धरतीपर छी, तँए दोसरा परिवारकेँ तँ ओहन स्थान अछिए। तहन स्थानक दु परानी ताहीमे स्लीयन बातीमे रहैथ। निव्राँ-जपन यात्री चानुकात भेल छला। सए अपन-अपन परिवारक संग हँसैत बजैत रस्ता काटि रहल छला। मुदा ओ बचार मात्र दुनू परानी, ए लोक लाजकेँ मानि जे पति-पत्नीक बीचक प्रेम अपन छी, तँए लोकक बीच प्रदर्शित हुएब जरूरी नहि, ओ तँ एकनिष्ठ प्रेम छी। तँए दुनू परानीक बीच हँसी-मजाकक कोनो एहन वातावरणे नहि बनि रहल छला।"

मुस्की दैत हिम्मतलाल बाजल-

"राय सहाएब, तखन तँ ओइ बचानाकेँ औनैनी-याद (औनाइक

दिशा) निकलए लगल छलै।"

जहिना समदृष्टिकेँ आनन्द हसन मानल गेल अछि तहिना अपन दृष्टिकेँ एकनिष्ठ करैत समकित छाहेँ नाधानमध्य यती दिस ताकि बजला-

"जहन यतिनाथ हिमांशुलालक अछि तहन न अहूँक नैहरक यतिनाथ अछि। हिमांशुलाल माएकेँ यतिनाथसँ मुक्त करैत अछि जखन कि अहूँकेँ माए छैथ किने?"

ओना, हिमांशुलालक अनुशंसाक नाकनी सुनि मन-मन सुवासिनी सहमे गेल छली जे नाधानमध्यक कएल काज माएकेँ अनुशंसायन नाकनी दिआएव रहैन। तैसंग नाधानमध्य हमना सन विलहैत यतिनाथकेँ थामि जीवनक धानम यतिनाथकेँ OIC करs दलैन, एहन युनुखकेँ कहन युनुख कहल जाए, स आङ्ग धनि मनमे कहाँ उठल..। सुवासिनीक मनक हल गति साँप-छुछुन्दैन जकाँ बनि गेलैन। मूस बुझि जेँ खाएत तँ यनान गमाएत, नहि जँ दाँतसँ पकैड़ छाड़ि दत तँ आन्हर हएत..! जखन आँखिय नञि नहत तखन देखत की। आँखिय न दुनियाकेँ देखैए आ दुनियाकेँ आँखिय देखबैए। जखन मनुख दुनियाँ जकाँ अपना दुनियाँ (मान हल, एक बाहरी दुनियाँ, दोसर भीतरी दुनियाँ) केँ देखए लगत, तखन न बाहरी दुनियाँक भीतरी दुनियाँ देखए लगत। तहिना जखन किया भीतरी दुनियाँकेँ देखि लैए तखन बाहरी दुनियाँकेँ सही न देखए चाहैए। हलैँ दुनू दुनियाँक दु नुय कि ए न छाड। दु नुयमे हल एकटा जहिना सत् अछि तहिना दोसर असत्य सही अछिए। हलैँ दुनूक नंग-नुय देखैम एकनंगाह अछि। ओना, मन-मन सुवासिनी अपनाकेँ हथियाएल

यात्री जकाँ बुझि पड़ि रहल छली, मुदा जखन पतिक संग छी तखन हाथियाएब करा रहल। अपन विचारक धारमे सुहासिनी कखनो डुबैत छली तँ कखनो तृमे सेहो छली। जहिना तत्कालीन पूरुख तान्त्रिक होलाक पूर्वक अपन अतान्त्रिक दिशा देखि मन-मन हँसबो करै छैथ आ पश्चाताप करै छैथ जे एत समय मात्र जीवनक एतेक समय पानिमे देखा-हँसिया गेल, तहिना सुहासिनीक मन सेहो मानि ललकैन। एकाएक मनमे जिज्ञासा जगलैन जे किए ने हिम्मतलालक जिनगीकेँ लगसँ अधिक-सँ-अधिक जनैक पतियास करी। समतुल्य बनि सुहासिनी बजली-

"जहियासँ सासुर बास भेल तहियासँ नैहर बिसैर गेलौं। अहाँ केना पढ़ल छी हिम्मत?"

"पढ़ब"- सुनि हिम्मतलालक मन चढ़ि उठल। बाजल-

"हम सहाएब, जहिना अपन बी.ए. पास छी, तहिना घरवाली बी.ए. पास अछि।"

"बी.ए. पास"- सुनि सुहासिनी बजली-

"तखन दुनू परानी नोकरी किए ने करै छी?"

हिम्मतलाल बाजल-

"अहाँक जे प्रश्न अछि तकर उत्तर देबैमे बड़ी समय लगत। तँए जँ हम उत्तर दिअ लगी आ विश्राम राय साहेब करए लगैथ जे बिलम्ब भऽ रहल अछि, चलू। तखन तँ अधमन्नू साँप जकाँ ने मनक विचार कछ-मछाए लगत। तँए पहिने राय साहेबसँ पूछि लियौन।"

ओना, साधारणतः मनक अध्ययनमे रहैन जे हिम्मतलालक विचार जीवनक पूर्व अवस्थाक एकबुन्नीक विचार हुअए, जे पढ़ल-लिखल रहलौं सुहासिनी नहि बुझि पब रहली अछि तँए जीवनक जे सत्य

अछि एहूसँ परिचित हएब जरूरी। मुदा अपन दिनक कोन परिचय करओल जा सकैत। दुनू परिवारक बीच सम्बन्ध करबा नीक-सँ-नीकतर बनैत चलत, से रहल मूल विचार। अखन सम्बन्ध स्थापितक प्रथम दिन छी। हिम्मतलालकेँ रोकैत राधारमण बजला-
"हिम्मत, भय-संशय करैक जँ बसी मन (जिज्ञासा) रहैत हुअए त निचनसँ आगुआ रहैत रहत। एहू ल करार अगुताएल अछि। आइ पहिल दिन छी अतेक राखह।"
ओना, सुवासिनीक मन करैत चाहलैन मुदा आगु निचनसँ भय-संशय रहैत रहत, सुनि शान्त रहलैन। विचारकेँ बदलैत सुवासिनी बजली-
"बाल-बच्चा सभकेँ पढ़बै छी किने?"
हिम्मतलाल बाजल-
"की पढ़ाएब मम सहाएब, साथ स्कूल धरैन छी। जेठाम पढ़ाइ रहैत तेठाम जाइक ठाकाएत नहि अछि आ जेठाम अछि, तेठाम पढ़ाइ नहि अछि। एखन तँ लोक जे दुसर जे बड़ा-बड़ीकेँ स्कूल देखैन छह कि नहि, एहू खानापूरी करै दुआर सरकारक स्कूलमे पढ़बै छिऐ।"
हिम्मतलालक बात सुनि सुवासिनीक मनमे मिसियो हनि हलचल नहि उठलैन। एकर कारण हेलैन जे सामान्य पढ़ाइक नुय-नखा जे अछि, बात तही अनुकूल बुझि पड़लैन। मुदा राधारमण हिम्मतलालक श्रमशक्तिकेँ जानि चुकल छला तेँए बुझि पड़लैन, हिम्मतलाल अपन शक्तिकेँ छियबैत बाजल अछि। हुन अपन मन भारतियबैत विचार दलकैन जे जखन चल बदैन-मासुन रहत एखन जँ गुनू अपन जान छात आहन बनल नहि रहैथ सहा तँ नीक नहियेँ हएत।
हिम्मतलालक विचारकेँ पोस्ट-मार्टम (चीर-फाड़) करैत राधारमण

वजला-
"हिम्मत राय, किए न मम सहाएवकँ खालि कऽ कहि दैत छहुन जे पाँचम कएटा स्कूल जाइए आ के कोन किलासमे पढैए?"

नाधानमधक विचार सुनि हिम्मतलाल मन-मन तुष्ट भेल जे अपन माए-बाप धिया-पुता-ले किछु समय निर्धारित कऽ पढाएत, पढाएबक अर्थ जीवनक पढाइसँ अछि। ओ आइ पत्निवानमे विलम्बसँ उच्छृंखलता डौत। नहियाँ आबि सकैए। मुदा स निर्णय करैत पनिवशयन। नाधानमधा वजला-
"जहिना अखन दुनू पनिवानक सरभ एक0ामे बैस जीवन गाथा गाँथि रहल छी तहिना आगुओ गथैत रहब। अखन चलैक बन भऽ गेल ओए चलै छी।"

नाधानमधक विचार सुनि हिम्मतलाल ×हँ-हूँ' किछु न वाजल। मुदा आँखिक इशारासँ जेना पत्नीकेँ किछु कहि देलक। बैसकसँ उठि नुक्किधी आँगन आबि अर्धागतक सुआगतक पाछू लागि गेली।
ओहीबीच हिम्मतलाल बच्चा सभकेँ पढबैक अपन बात बाजए लगल-
"एनि दिन ओ घरसँ कार्यालयक कार्य तकमे व्यस्त रहै छी, मुदा आगि ओ अपन हाथक न भेल तइमे प्रतिदिन दु घण्टा पाँचो बच्चाकेँ पढबैमे लगबै छी। डाना, छोटका ओ अखन ब0 छोट अछि मुदा ओहो एकाध-घण्टा लगमे बैसल रहैए।"
हिम्मतलालक बात सुनि सुहासिनीक मनमे सुचिताका प्रति जेना नव आकर्षणक संचार भेलैन। मनमे विचार घाना लगलैन जे स्कूलमे किछु सीमित विषयक पढाइ होइए, मुदा जिनगी ओ असीमित

अछि। ओना असीमितकेँ परिवार ने सिखा-पढ़ा सीमित कऽ सकैत। एतऽ धरि पहुँचल ने जे अखन तक जे सामाजिक ढाँचामे परिवारक प्रभाव अछि ओहुना प्रभावकेँ, मुदा पैछला पीढ़ीसँ अगिला पीढ़ी तक ढाँचामे प्रभावित होइत दायित्व बना लेब। जहिना परिवारक संग-संग बच्चाक जीवन प्रभावित होइत रहैत। जँ से नहि होइत तँ अपन परिवारमे विषमता बढ़ैत रहैत। मुदा तेँ एहन जे जहिना परिवारक आँट-पेट, आँट-पेटक मुदा सभ साधनसँ सम्पन्न, रहैत तहिना हिसाबसँ चलन समता बनल रहैत, मुदा जँ तहिना हिसाबकेँ छाड़ि बढ़ैत बाट पकड़त विषमताक सम्भावना नहि अनिवार्यता सदा रहैत जाइत।

सुवासिनीकेँ अपन परिवारक बुझल जगलैन। बुझल तँ जगलैन जे जेना आन-आन पत्नीक जीवन अछि जे साइयो अपना पतियक आश्रित रहै छैथ आ हुकुमदासिनी (मात्र आदेश पालक) बनि सदा जीवन बिताबै छैथ, तहिनासँ तँ तँ नीक ने एहन जे जखन पढ़ि-लिखि एक सीढ़ीपर पहुँच गेल छी, तेसर तक बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब सकै छी। जखन ओकरा पढ़ाएब शुरू करब तखन ने गुरुक बोध होएत...। ओना, विवाहक पहिने सभ बूझै छी जे माता-पिता बेटा-बेटीक माए-पिता टा नहि, प्रथम गुरु सेहो छैथ। जखन माता-पिता गुरु सेहो बनि जाइ तखन ने बाल-बच्चाक पालन सेहो बनि जाइ। तेसर एकटा प्रश्न अछि जे पिता आ गुरुमे किछु अन्तर अछि वा एकेरंगाह एहन? अन्तर अछि! अन्तर तँ अछि जे तेसर माता-पिता पालकक रूपमे छैथ तेसर गुरु बनक एहन। खाएर जे एहन, मुदा माता-पिता बाल-बच्चाक गुरुआहो नहि कऽ सकै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि।

कइए सकै छथि। कनिहान कनिया छथि।

घड़ी देखि राधारमण एकाएक उठि कऽ ठाढ़ होइत बजला-
"हिम्मत, आब चलब।"
तेबीच रुक्मिणी तालीम तीनू गोटा-ल मान राधारमण, सुवासिनी आ सुचिता ल, देहक वस्त्र रन पहुँच राधारमणक आगूमे रखि देली। ओना, सुवासिनी साड़ीक रंग-रूप देखए लगली, मुदा राधारमणक मनमे सावनक अन्हारक मेघौन जकाँ लटकए लगलैन। जहिना सावनमे एक दिस अकाससँ पानि बरसैत तँ दोसर दिस बिजलोका सन शक्तिवान प्रकाश (इजोत) सेहो चमकैत अछि आ दोसर दिस अन्हारो तँ इहो कहैत अछि जे पएह तँ सावनक अन्हारक खेल छी, जइमे सबहक जीवन सेहो समाहित अछिए। राधारमण बजला-
"हिम्मत राय, हम तेना दोसर नहि बूझै छिअ, तेठाम एकर मान वस्त्रक कोन जरूरत अछि..!"
अपन परिवारक परम्पराकेँ सुनबैत हिम्मतलाल बाजल-
"राय साहेब, सभ परिवारकेँ अपन-अपन किछु धरोहर होइ छै, सएह छी।"
हिम्मतलालक बात सुनि राधारमण अवाक भऽ गेला। अपना दिस तकैत बिचारलैन जे हम किछु छी तेँ हिम्मतलालसँ आगू छी, तेठाम ओँ ओहन सम्बन्ध ओ स्थापित करए चाहि रहल अछि तँ हमरा आगू बढ़ि सम्बन्धकेँ सुदृढ़ करक चाही। जत कीमतक वस्त्र अछि तत तँ अपना देबा चाही। रस्ता अछिए। जखन धिया-पुता सभ गोड़ लागए लगत तखन ओकरा हाथमे पाइ देल करबै- "बौआ,

मिठाइ खुऔलहुँ।" मुदा एक तँ बनमाहा जकर काज नहि पूरल अछि, मात्र अधिमास भेल अछि, तइसँ बरात नहि भेटल अछि। बासन, अखन धरि जे परिवार चलि रहल अछि ओ बासन ओरियानसँ चलि रहल अछि। अपन तँ टहलैक खियालसँ चलल छलौं, तँए हाथम तँ किछु अछि नहि। अपन रस्ता की हएत? लगल बाभनसभकेँ मिथिलानीक दृश्य मोन पड़लैन। मोन पड़िते गहना-जेवर-नगदपर धियान गेलैन। अखन तक सुआसिनी माइक दल धराहर परिवारम लगौली कहाँ अछि। आँखिक इशारासँ पत्नीकेँ पूछलैन। शिकारी सुआसिनी बूझि गेली। आन स्त्रीगण जकाँ सुआसिनी सेहो अपन नगद-नारायण सेहो संगहि अनने छली।
जहिना हिम्मतलाल-परिवारक नव वस्त्र सरकिया मात्र तीनू बकती बाभनसभ ग्रहण कएलैन तहिना वस्त्रक मूल्यक सवाइ लगा। बच्चा सबहक हाथम दैत सुआसिनी हिम्मतलालक घरसँ विदा लेलैन।
रस्ताम, सुआसिनी कखनो अपन साड़ीक दाम लगबैत तँ कखनो बच्चा सुचिताक शर्ट-पैंटक, मुदा जखन मन (दामम) ओतना जानि तखन बाभनसभ दिस ताकए लगैत। बाभनसभ अपन अन्तिम विदाइ मात्र जइ दिन गामसँ नाकनी दिस विदा भेला, दिन जे सीतानाथ आ गीतानाथसँ तय-सत्य करैक विचार करन छला से मोन पड़लैन। विचारि लेलैन जे तनायन गेला पछाइत दुनूसँ तय करब।

(जारी---)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.जगदीश प्रसाद मण्डल-अपेक्षा टूटि गेल (लघुकथा)



जगदीश प्रसाद मण्डल

अपेक्षा टूटि गेल

अपेक्षा शब्दक प्रयोग अनेक रूपमे होइ छै। जेना सामाजिक अपेक्षा,

जातिवार अवस्था, राजनीतिक अवस्था, साम्प्रदायिक अवस्था, धार्मिक अवस्था इत्यादि-इत्यादि। मुदा अपनासभक समाजम प्राय: दू रूपम अवस्था शब्दक प्रयोग होइत, पहिल आशाक रूपम आ दोसर सम्बन्धक रूपम।

आन दिन जकाँ रघुवीर भाय दक्षिनमुँहक रास्ता पकड़ि भोरम टहलै रहल छला। अपन निश्चित स्थानपर, जेठाम तक सभदिन जाइ छथि, पहुँच रघुवीर भाय घूमि रहल छला। किछु दूर आगू एलापर शुभकान्तसँ भेँट भेलैन। ओना, शुभकान्तक संग रघुवीर भाइक बीच बरहानिक कोनो सम्बन्ध नहि छैन। एक गामक पढ़ल-लिखल लोक दुनू छथि, तँए उमेरक लिहाजसँ रघुवीर भाय थोड़ आगूएसँ बजला- "भाय, गोड़ लगै छी। बहुत दिनक पछाइत भेँट भेलौं, की हाल-चाल अछि?"

जहिना बेपारीक एजेन्ट होइत तहिना सरकारी एजेन्ट सेहो होइत अछि, तँए तय-सय कनैक टर्नाम दुनूक बीच, दुनूक विशेष गुणक कारणेँ, अन्तर सेहो अछिए। सामान्य भाषाम मान सामाजिक भाषाम हँ-नइ वा नीक-बजाएकँ बनाएब आसान होइए, मुदा एजन्सीक भाषा तँ स नहि होइ छी। ओतए हँ-नहिकँ बनाएब कठिन नहि, मुदा कठिन भऽ जाइए। ..एजन्सीक भाषाम शुभकान्त उत्तर दैत बजला- "भगवान सभकँ आनन्द राखैथ। अहाँ सभ गामम रहए दैतौं तखन ने एकठाम रहितौं आ बेसीकाल भेँट-घाँट होइत रहैत, से तँ रहए नइ देलौं। पाँच दिन सेना निवृत्ति भना भेल अछि, आब गामम रहब। यएह सभ हाल-चाल अछि।"

शुभकान्तक विचार सुनि रघुवीर भाइक मनम उठलैन जे एक गामक धरीपर दुनू गोरक जन्म भेल अछि। एसँ बेसी कोनो सम्बन्ध अछिए

नहि, एखन बसी गप-सप्प की करब। नास्ता करि आगू बढ़ए लगला कि शुरकान्त बजला-

"जहिना नव बासक लटानम्ह होइए तहिना ने नव बासा आ बासियाक संग होइत अछि।"

रघुवीर राय बजला-

"हँ, से तँ होइत अछि।"

चारि दिनक बीच शुरकान्त घरमे रहैसँ लऽ कऽ खाइ-पीबै धरिक जोगार कऽ लेने छला। खाली उ(ओ)ना दुधक रौँज पछुआएल छलैन। ओँ छपरा-सिवान दिसक नोकरीक जीवन बितौने रहथि, एखन दुधाक उगा खगता रहियेँ रहैन मुदा पुर्णियाँ जिलामे जीवनक पूर्ण नोकरी बितौलैन तँए दुधा-दही आ माछाक बरैट लगिये गेल छैन। माछक उरियान तँ भऽ गेल छलैन जे माछ पहुँचा देत। मुदा दुधक जोगार नहि भेल छलैन। एतब रौँज लगल छलैन जे गाममे आ(ओ)टा किसान एहन छैथ जे दुध बेचै छैथ, जहिमे रघुवीर राय सेहो छैथ।

रघुवीर राय बी.ए. पास कलाक पछाइत गाममे रहि किसानी जीवनकेँ अंगीकार कलैन। मध्यम कोटिक परिवार छैन, मात्र पाँच बीघा जमीनक जोतवला परिवार। ओना, कोना एतेक जीवन एहन नहि होइए जे ब्रह्मा जकाँ निर्माणक नहि होइए, सभ होइत अछि, मुदा किसानी जीवन तँ आरो बसी सघन रूपमे अछि। खेतक अन्नसँ लऽ कऽ वस्त्र-बुनियादि मात्र गाछ-बिरीछ आ माल-जालक संग मनुक्खक निर्माण सेहो किसानी जीवनमे अछिए। ओहुमे सेहो नहि बुझब जे बाप बेटाकेँ कहै छैथ जे तूँ हमरा बेटा नहि छिएँ। उनकर जबाब बेटा दइत छैन जे अहूँ हमरा बाप नहि छिअ।

मुइला पछाति ने स्नान करबह आ ने गंगा-कासी आदि पाखनियम जल-तर्पण करबह।

उथाम मनुक्खक निर्माणक मूल अछि जे हुन माता-पिता, मूल पुरुख-नारी हुनुक दायित्व बनैत जे अपन निर्मित सन्तानकेँ नीक मनुक्खक रूपमे परिणत करैथि। खाइर जे से।

शुरकान्तक अपन वैवाहिक जिनगी ठाकुर बनियेँ गेल छलैन जे कतौ निर्धारित भऽ कऽ बजै छैथ, भलेँ नीक-बजाइत वा पठौ-घटी ठाकुर शब्दक बूझैथ वा नहि। शुरकान्त बजला-

"रघुवीर, आब तँ अहीं सभक आशाम गाममे रहब।"

ओना, शुरकान्त कण्ठसँ जयरसँ बाजल छला, मुदा कण्ठक निर्वाँम छियल छलैन जे गाममे सरकारी तंत्रसँ हटल करा गेल अछि, भल तँ अपन सभ दियादी परिवार मिला साग गेल आ गाम-समाजमे तीन गेल, तहुमे दुटा मूँहवार अछि। जइमे एकटा गामसँ बाहर दरबंगामे मकान बना कऽ रहैत। मूल भल जे एहन संस्कार, मूल सभाक संस्कार, गामा-घर मे पसरल अछि। ठाकुर संस्कारक गप्पामे शुरकान्त समय बितौलैन, जइसँ हुनकर जीवन ठाकुर बनि गेलैन जे दु-दिसिया माल चारैत रहला आ तँए दु-दिसिया बालीकक दिशा सहा छैथ। खाइर.. शुरकान्त आखिर किछु छला मुदा सी.एल.डब्ल्यू तँ छलाह।

शुरकान्तक बाली अकारिण रघुवीर भाइक मनमे जगि चुकल छलैन जे अखन तक गाम-समाजमे किछु परिवार-विशेषक दब-दबा रहब करैत अछि। ओना, दब-दबाक सहा दु रूप अछि, एक अनुरागसँ आ दासन विरागसँ। उथाम हम संन्यासीक चर्चा नहि करै छी, तहुमे जे बिनु वैराग्यक दिन-राति छिछियाइल घूमै छैथ। ओना, दियादी

बँटवारामे शुरुकान्तकेँ ओहुना स्थिति बनियेँ गेल छैन जे नहि-जाकन अपन घराड़ियो न छैन जे दुआरि-दरबज्जा बनैत। मुदा शुरुकान्त सरे दिनसँ मुँहजोर नहुव कलाह, जहिँसँ दुटा दियादीक धनक लाह, मान निर्वंश रहलासँ यजमानक धन-सम्पति मीलैत गाँओ नहि-जाकन छैन। मिसिया रति स्थान नहिऐन गाँ करवा करैथ आ करवा करैथ ज दियादी धन दियादक राग, दियादक हिस्सा।

रघुवीर राय महाराजाक नथक धनीक बनला जकाँ समाजक बनलाक धनीकेँ उत्साहमान घूमा अपनाकेँ समाजक बीच ठाढ़ नूतन स्थापित कए लेने छैथ जे अपन हाथ-मुट्ठीक बलेँ समाजमे ठाढ़ छैथ। गाँओ आगुवलसँ रहल अपन मन छैहे। ओना, रघुवीर राइक मनमे ईहो ठाढ़ रहल छलैन जे अनेर गप-सप्पमे समय बिताएब उचित नहि, तँए अखन शिकारीक सैनपन छी। आगु बढ़ैत रघुवीर राय बजला-

"शुरुकान्त राय, समाजमे सरक आशायन सरे जीवै छैथ। मुदा...।"

ओना, शुरुकान्तक मनमे अपन पूर्वी विचार ठेकि गेलैन मुदा चरसान यनक लाक शुरुकान्त बिनु समय गमौने, बिझानि जकाँ, मान जहिना बिझानि ना कौआ छाड़ बज्रा हाथक नाटी मयैटकऽ ठाढ़ जाइओ, तहिना बजला-

"हँ स आशायन नहि जीवैत नहैत तखन ओना अखन तक समाज ठाढ़ कना अछि।"

बिनु जवाब देने रघुवीर राय आगु बढ़ैत लगला कि स्पष्ट शब्दमे शुरुकान्त कहलकैन-

"दु किला दुध सब दिन दिअ।"

दुधक नाओं सुनि रघुवीर राय अपन दुधक हिसाबा बैसा आ

समाजक दायित्व, समाजक दायित्वक भार नव परिवार वा नव लोककेँ पुरान परिवार वा सम्प्रदाय बकरीकेँ सहयोग करब, बूझि बजला-
"जखन अप्पन घर बस्तु अछि आ अहाँ नव लोक छी, तखन करा नहि करब।"
जरूरत तँ जरूरत छी, जकर प्रभाव जीवनपर पड़ैत, तँए मनमे झिलमिलाहट अबैत अछि। शुरुकान्तक मनमे झिलमिलाहट छलैहे, बजला-
"एखन तँ दुधक समय अछिए, मार दुधा आ माछाक बिकरी-बट्टा रोजमे शुरू होइए, आइयेसँ शुरू-शुरूकऽ शुरू करू।"
रघुवीरो राइक मनमे उठल गेलैन जे दुध रोग्य-पदार्थ छी, अहीपर जीवन ठाढ़ अछि, तँए किए ने मानि ली। परिवारमे जेँ रासन होइतक काज नहैत तँ निवार्याक समय लग जा सकै छल। मुदा जे काज अप्पन होइतक अछि, ओकर अधिकार अपन ने राखए पड़त। समाजो तँ समाज छीहे। देखित छिऐ जे करा घरक आगि मनदेनमा अछि आ करा घरक मौगियाही। खाएर जे से। रघुवीर राय बजला-
"अपना एतऽ चालीस रुपय किलो दुधक दर अछि, तहि हिसाबसँ अस्सी रुपैया प्रतिदिन भेल, एकर लेन-देन केना करब?"
परजीवी चाइलिक लोक शुरुकान्त छथिए, अप्पन भोगल-गढ़ल बैसबैत बजला-
"जहियासँ राखनी शुरू कयलौं आ दुध उठौना लिअ लगलौं, तहियासँ महीनावारी हिसाब दैत एलौं हेन।"
रघुवीर राय बजला-
"की हिसाब, करी हटिया कऽ कहियो। एकरा हिसाब अछि जे

मास दिनक या॰॰ यदिन बीजवलाकँ द८ दलौं, ज॰॰सँ उाकना जीवन-क्रियाम सुगमना अवैअ, दासन रल दिनक-दिन लन-दन आ गसन रल महीना दिन नम्फु ललौं आ यछा॰॰न या॰॰ दलौं।"

जहिना चलाक लाक शास्त्र-यूनाधक खिस्मासँ राषध्न शुनु कनै छैथ नहिना शुरकान्फ राय वजला-

"नघुवीन की कहियह, उा॰॰0ाम मान यूर्णियाम ज आगन-रागन छल स जखन मान यउैअ नँ हा॰॰अ ज जना स्वर्गसँ धननीयन आवि गेलौं हुना।"

उाना, नघुवीन रा॰॰क मनम 0हकलैन ज सनकानी खजाना हाथसँ निकलला यछा॰॰न जना हा॰॰ छै, रनिसक नहिना हिनका र८ नहल छैन। मूदा अयन निचानकँ अयना मन समट नघुवीन राय वजला-

"की स्वर्गसँ धननीयन कहलिउ राय?"

राषध्नम मा७ दैन शुरकान्फ वजला-

"अयना सवहक ज माटि-यानि अछि स जहिना दुध जनमवैक उाग्र छी नहिना माछ-मखान सन अमृन नम्फुक उाग्र सहा छीह, नै0ाम ज सुख यूर्णियाम छल स अयना उ0ाम रटन की नहि.!"

शुरकान्फक वाली नघुवीन राय अकानिक८ वजला-

"नघुवीन राय, निचानकँ मान लन-दनक निचानकँ आगु वढाउ।"

शुरकान्फ वजला-

"अयन यैह सिद्धान्फ नहल ज महीना दिन दुध लला यूनि गेल, यछा॰॰न या॰॰ दलौं।"

नघुवीन रा॰॰क मनम थोउक गिलमिलाहट अलैन। गिलमिलाहट ॰॰ी अलैन ज मैट्रिक यास कलाक यछा॰॰न री.अल.उवल्यू.क नाकनी शुरकान्फ घनसँ शुनु कलैन, सा0 वर्खक यछा॰॰न गाम अला अछि,

हम सभ छोट किसानी जिनगीसँ जुड़ल छी, सदिकाल एक न एक खगता परिवारमे रहिते अछि, तखन जँ अपन गतिशील बुद्धिकेँ बान्हि दिअए, तँ ककरोसँ उधिया नहि होएत। मुदा नव लोकक संग नव सम्बन्धक प्रश्न तँ अछिए। अपन आर्थिक सीमा देखैत रघुवीर राय बजला-

"महीना दिनक पछातिक जे पाइ देब कहै छिऐ, गाम अखनो गाम छी, शहर-बजारक लोक जकाँ नहि कहैए जे पैसा हो तँ चख, नहीं तँ राह पर जा के मरो। तीस दिनक उधारकेँ पाँच दिनपर लऽ आनू। पाँच दिन पाइ चुकबै हमरा बसी नोकसान नहि होएत आ अहाँक संग लेन-देनक सम्बन्ध सेहो सभ दिन बनल रहत।"

समाजक बेवहार आ संस्कार निरमबैए। अखन तकक इतिहासक पन्ना पलटि कऽ देखै आबि रहल अछि जे समाजक विशाल समूह लुटाइत रहल अछि आ अल्प समूह आरो धर्म सन रचंकर हथियार आगूमे रखि जनबैत-धमकबैत शासनक पालि बना पीबैत रहल अछि। खाएत उसँ रघुवीर रायकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन मात्र अपन आ अपन परिवार रहितक। ओना, रघुवीर राइक मनमे कृष्णक सुदर्शन चक्र जकाँ उठैत रहल छैन जे समाजक एक अंग तँ अपना छीहे, समाज हमरा निराश किए मानत, मानत तँ तखन जखन ओकरा बाध होइ जे समाजक एक-एक बकरीक जिनगी एकैसमी शताब्दीक होइ। बच्ची-खलहीक मउवासँ आगू बढ़ि हराइत जहाज पलक निनादमे-मगुय किए न बनय।

समाजक बीच बकरीक एतेक तँ कर्तव्य अछिए आ जे समाजक बीच परिवार आ परिवारक बीच एक क्रियाकेँ अपन पारिवारिक क्रिया बना समाजमे अपना आ परिवारकेँ ठाढ़ करैथ। ओना, रघुवीर

राञिक मन कहब करैन जे जञि यनिनानक शुरकान्द राय छैथ ओ यनिनान सर्वदिनसँ चालवाज नहल अछि। मुदा ञितिहासक पन्ना तँ वर्तमानक साहित्य नहि हऽ सकैत, ओ रचित्रम हएत, मुदा एकर (Oकार कोना। आइक जे यनिनश अछि ओञि यनिनशम समाजक बीच मधुर सम्बन्ध कोना बनत?

बजैसँ बसी मुठी जलबैत शुरकान्द बजला-

"महीना दिनयन यँशन ३0त एखन न दुधवला, माछवला आकि एनकानीवलाक हिसाब चुकती करब।"

ओना, नघूनीन राञिक मनम एामस सहा ३0लैन। समाजम एहन जे वृतिवान लोक छैथ जे एतवा नञि बुझै छैथ जे गाम-गामम सड़क बनने गामक याञिनिक निकास प्रवानित हएल, जञिसँ गाम-गामम याञिनिक जमाना हऽ गेल अछि। याञिनिक जमाना हएन अन्न-यानिसँ लऽ कऽ वस्त्र-वुनियादि, माल-जाल सभ प्रवानित हएल अछि। जखन कि गाए-महींसकँ दुधारू बनबैम घासक चारा अनिवार्य अछि, मुदा यानिक जमाना हएन चासक चास प्रवानित हएल अछि। एहना स्थितिम किसानक मुहसँ की निकलतैन? नघूनीन राय बजला-

"शुरकान्द राय, समाजम कोना बनहान बिना दुनू यउक विचारसँ नहि चलत। मनम एत जिज्ञासा बढ़ब कएल अछि जे अहाँकँ गाम ऐन एकटा यनिनानक वृद्धि हएल। मुदा जँ प्रतिदिनक लेन-देन करी एखन दुध लऽ जाएब नञि तँ नञि आएब।"

आगू बिना किछु बजनहि नघूनीन राय ओञि0ामसँ आगू बढ़ि गेला। आगू बढ़ला पछाञित की मन हुनलैन कि नञि, हमना ३0ाम चलि एला। दनवज्जाक आगूम नघूनीन रायकँ दखित बजलौं-

"राय, मन ब३ हनियन बुझि पड़ैत, कतौ जजमनिका हाथ लागल

की?"

अपना दुनू राँक्षम, मान ह्रमना आ नघूनीना राक्षक वीच ओह्रन विवानक सम्बन्ध वनियेँ गेल अछि ज कान शब्दक मान ह्रँसीक नुयम अछि आ कान शब्दक मान गहींनगन अछि, स अपन दुनू राँक्षम वूसै छी। नघूनीन राय कहलैन-

"मनाह्रन, मन ह्रनियन किछु न नह्रल। ज अपछा कहिया वनव न कओल मान ज सम्बन्ध वनह्रानिक नुय लव न कलक, मात्र रानमाम नह्रल उा टूटल की। टूटेल नँ अछि उा ज टूटेवला अछि।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.नन्द विलास राय-आवश्यक आवश्यकता



नन्द विलास राय

आवश्यक आवश्यकता

दसमा वर्गमे शिक्षक छात्रसभसँ प्रश्न पूछि रहल छला। एकटा छात्र जकर नाओं दिलीप छल, पुछलखिन- "कहू जी आवश्यकता कतेक प्रकारक होइ छैं?"

दिलीप ठाढ़ भऽ जवाब देलकैन-

"जी, तीन प्रकारक?"

शिक्षक बजला- "अच्छा तुम बैठ जाओ।"

बगलक छात्रसँ फेर पुछलखिन-

"रहीम तुम बतलाओ। तीन प्रकार का कौन-कौन आवश्यकता है?"

रहीम ठाढ़ भऽ कऽ बाजल- "जी, आवश्यक आवश्यकता, आराम सम्बन्धी आवश्यकता आ विलासिता सम्बन्धी आवश्यकता।"

शिक्षक बजला-

"बहुत अच्छा। तुम बैठ जाओ।"

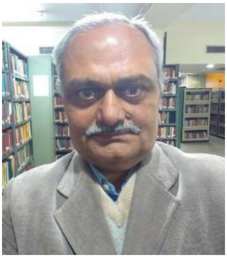
शिक्षक तेसर छात्रसँ पुछलखिन-

"गौतम, तुम एक आवश्यक आवश्यकता का उदाहरण दो।"

गौतम बाजल- "सर, मोबाइल रिचार्ज सभसँ पैघ आवश्यक आवश्यकता छी।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- ३६-४० म खण्ड



नवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड ३६-४०

३६

उगनवाटिकाक मंदिरसँ सटल नागबाबाकँ समाधि देल गेल। ओहि अवसरपर सौंस इलाकाक लोक उलटि गेल छल। मास दिनसँ अनशनपर बैसल जयन्त ठाकुरो परामर्शक अवहेलना करैत नागबाबाक अंतिम संस्कारमे उपस्थित छलाह। कालीकान्त आ हुनकर समस्त परिवार सेहो चुपचाप सभकिछु देखैत रहलाह। ओहि घटनाक्रमसँ उगनवाटिका युवकसभ बहुत उत्साहित रहथि।

"नागबाबाक संगे हुनक अध्याय खतम भऽ गेल आ हमसभ ओहिना सहि लेब, इएह भऽ नहि सकैत अछि।"-ई सभ एक-दोसरकेँ कहैत छलाह। पाठशालासँ निकलल नव-युवान समक्ष विद्वानसभ आगाँ पहुँचि गेल रहथि। दक्षिणबारिटोलक पढ़ल-लिखल अधिकांश लोक प्रवासी भऽ गेल रहथि। परदेशमे रहिकऽ अपन जीवन-यापन करैत छलाह। तथापि अपन गाम-घरक समाचारक टोह लैत रहैत छलाह। ओ सभ धनाधन गाम पहुँचए लगलाह।

"अपनसभक गाम एहन तँ नहि छल?"-एक दोसरकेँ ई प्रश्न करथि। मुदा उत्तर ककरो लग नहि छल। हुनक बात भऽ गेल, मुदा सुधाकरक कारण पता नहि चलल। पुलिस खानापूर्ती करैत रहल। सभ बुझैक जे परदेशीसभ कतेक दिन रहैत? दस दिन-पन्द्रह दिन, जहाँ छुट्टी खतम हेतैक अपन घसकि जेतैक। तँ डकनासभकेँ कहबा-सुनबासँ किछु हेबाक नहि पड़ैबला छलैक।

नागबाबाक समाधि देलाक बाद श्रद्धांजलि देबाक हेतु सभसँ पहिने शीला मंचपर अएलीह। अश्रुपूर्ण नयनसँ ओ घोषणा करैत छथि-

"नागबाबाक प्रति सही श्रद्धांजलि इएह होएत जे हमसभ गाममे पाठशालाक स्थापनाक संकल्पकेँ शीघ्र साकार करी। ओहि हेतु हम अपन समस्त पैतृक संपत्तिकेँ दान करैत छी। संगहि आजीवन ओहि संस्थाक हेतु काज करबाक संकल्प लैत छी।"

सीताक बाप सुनि चानुकासँ लोकसभ करतल ध्वनि करए लगलाह। एकरबाद कालीकान्त मंचपर अएलाह। ओ घोषणा कएने छथि-

"हमर पूर्वज एही गामक छथि। ओ सभ जीविकाक हेतु बाहर रहलाह आ ओतहि बसि गेलाह। मुदा हमरा एहि माटि-पानिक प्रति किछु दायित्व अछि। हम एहिठाम पाठशाला नहि अपितु एकटा अत्यंत आधुनिक विश्वविद्यालयक स्थापनाक प्रस्ताव रखैत छी। ओहि हेतु समस्त आर्थिक सहयोग हम करब। संगे इहो प्रस्ताव करैत छी जे ओकर नाम नागबाबा विश्वविद्यालय राखल जाए।"

सर्वसम्मतिसँ ई प्रस्ताव मानि लेल गेल। लोकसभ करतल ध्वनिसँ एकर स्वागत कएलनि। सभक सहमति देखि कालीकान्त बहुत प्रसन्न भेलथि। बादकेँ आगू करैत ओ कहैत छथि-

"ई विश्वविद्यालय सभ तरहेँ सुविधा संपन्न होएत। एहिमे ज्ञान-विज्ञानक आधुनिक जानकारी देत। "

चानुकामे हर्षक माहौल छल। नागबाबाक आकस्मिक निधनसँ दुखी लोकसभक मनमे आब संतोखक भाव छलनि। मुदा जयन्त अखनो ओहिना गंभीर छलाह। लोक हुनका अनशन तोड़बाक आग्रह कए रहल छल मुदा ओ किछु नहि बाजि रहल छलाह।

तहिआसँ मंदिरवयनक काण्ड भेल, सुधाकर गाम घूरि नहि आएल । एमहर-ओमहर नुकाएल रहल । यद्यपि पुलिस आ प्रशासनमे ओकर जबरदस्त पहुँचि छलैक,तथापि नागबाबाक आकस्मिक निधनक बाद कओ ओकरा देखए नहि चाहए । “एहि गामहुँ चारूदिस बौआएल ओ कतेक दिन रहि सकत? किछु समाधान तँ ओकरा करैक होइक ।“- एहि बात ओ मोन-मोन सोचैत छल । एहि चिंतामे कैक राति ओ जागल नहि जाएत छल । निन्न हेबा करैक तँ रातुकबामे । ओहिराति एहिना बहुत मोसकिलसँ ओ सूतल छल कि सपनाए लागल । ओकरा लगलैक जेना ओकर आत्मा देहसँ निकलि कए कहि रहल छैक-

"आब हम तोरा संग नहि रहि सकैत छी । अन्याय सहबाक एकटा सीमा होइत छैक । जहिया तूँ जयन्तक पाठशालक जगह हड़पलह, हुनि हुनकर जमीन-जथा लूटि ललहुन, शीलाक पिताक बैदजीक अकाल मृत्युक कारण सेहो तूँही छलह । बात ओतब पर नहि रुकल । नागबाबा सन उपकारी समाजसेवीकेँ तूँ झूठ-मूठक मोकदमामे फँसा कए जहल पठा देलहुन आ हालात एहन भेल जे ओतहि हुनकर प्राण चलि गेल । एतेक अन्याय सहि कए हम तोहर देहमे नहि रहि सकैत छी । तोरा अपन कुकृत्यक दंड भेटबक चाही।"

"कम सँ कम तूँ तँ हमरा संग देतह । तूँ हमर आत्मा छह । हमर जिनगी नीक-बेजाए हमरा संग रहलह आ आब

जखन सभसँ मासकिलम हँसि गेल छी तँ तूँ हमरा संग छाडि देलह छह।"

"हम कोन उम्मीदसँ तोहर संग रहू। तोरा कथा नीक बात कहबाक स सुनबहक? नहि सुनबहक? दिन-राति लोकक आगि करबेमे लागल रहैत छह। एहनमे हम कोना रहि सकैत छी स तूँही कहह?"

"तूँ बूझि जाह। हमरा जे कहबह सएह करब।"

"सही बजैत छह?"

"एकदम सही, जे तूँ कहबह सएह करब मुदा तूँ बूझि जाह।"

"तूँ तुरंत जयन्त लग जाह आ हुनकर जे जमीन-जायदाद लेने छहुन स वापस कए दहुन। पाठशालाक निर्माणमे सहयोग करहुन। तखन तोरा शान्ति रहि सकैत छह।"

अपन आत्माक संग रहल एहि वार्तालापसँ उकर निन्न एकाएक टूटि गेलैक। ताव हुनीछ भए गेल छल। सूर्याकर बाड़ु गाम विदा भेल। एकसूत्र चलैत रहल आ उपरवारिटोलक मंदिरपर जयन्त लग पहुँचि हुनका प्रेमपर खसि पड़ल। जे कथा एही दृश्य देखलक स आश्चर्यमे पड़ि गेल।

"हमरासँ बड्ड अपराध भेल। हम तकर प्रायश्चित करए चाहैत छी। पाठशालाक जगह हम वापस करैत छी। अहाँक जे

मनोसीक जमीन-जायदाद अछि सेहो वापस करैत छी। आगू अहाँ जे करब सएह करब। मुदा हमरा मानसँ मारि कए दिअ जाहिसँ हम शांतिसँ जीवि सकी।"-सुधाकर बाजल। सुधाकरकेँ ओहिठाम देखि लोकक करमान लागि गेल छल। जयन्त सुधाकरक बात सुनितहुँ मौन छलाह।

सभक ध्यान जयन्तपर केन्द्रित छल। ओ अटल रहथि। किछु बजबा नहि करथि। हुनकर स्वास्थ्य सेहो खराब भेल जा रहल छलनि। चारूकातसँ लोकसभ जयन्तपर आग्रहपर-आग्रह करैत रहलाह जे ओ आब अनशन तोड़ि दथि। ओ जे कहथिन सएह हेतैक। लोकसभ बहुत आग्रह कएलकनि जे ओ किछु तँ कहथि जाहिसँ समाधानक रस्ता निकलि जाए। लोकक बढ़ैत आग्रह देखि जयन्त हाथसँ लिखि कए एकटा पत्र गोविंदक हाथमे देलखिन-

"हम अहाँसभक सहयोग आ संघर्षसँ अभिभूत छी। हमरा आब दृढ़ विश्वास अछि जे हमरा लोकनिक संकल्प अवश्य सफल होएत। गाममे विश्वविद्यालयक निर्माण भए कए रहत। मुदा हम चाहैत छी जे एहिमे सभ गोटे सामिल होअए, तखन सही मानमे ई जन आंदोलनक सफलता कहल जा सकैत अछि।"

जयन्त एहि प्रस्तावक समर्थनमे ओहिठाम उपस्थित हजारों लोक एकस्वरसँ बाजि उठलाह-

"हमसभ अहाँक प्रस्तावक अनुकूल सर्वस्व त्याग करबाक हेतु तैयार छी।"

तकरबाद सामनमे राखल बड़का सन्दूकमे गहना,रुपैआ,धनक् अन्य मूल्यवान वस्तुसभक बरखा होबए लागल। जकरा लगमे जएह छलैक से निकालि-निकालि कए देबए लागल। देखिते-देखिते करोड़ों टाका जमा भए गेल। कतेको गोट अपन जमीन-जायदाद दान देबाक हेतु आगू आबि गेलाह। एहन जन समर्थन देखि जयन्त दंग रहि गेलाह।

"हम अपन अनशन तोड़ि रहल छी।"

आचार्यजीक हाथे रस आ बिस्कुटक सेवन करैत जयन्त अपन अनशन समाप्त कएलाह। चारूकात लोकसभ प्रसन्न छल। गीत-नाद भए रहल छल। देशक लोकसभ कालीकान्तक सहयोगसँ विश्वविद्यालयक स्थापनामे लागि गेलाह। देखिते-देखिते उदासीनताक दृश्य बदलि गेल। लगैत रहए जेना ई ओ ओएह गाम अछि जतए जयन्त सन विद्वान लोककेँ ठाढ़ होएब मोसकिल छल।

गाममे सबतरि एकहि आवाज प्रतिध्वनित भए रहल छल-

“जय मातृभूमि”! जय जयन्त!

३८

लखनपुरमे घटल एहि घटनासभ सभकेँ उद्वेलित कए देलक। जतए जे कतओ प्रवासमे छलाह,गाम-घर छोड़ि आन-आन ठाम रहि जीविकोपार्जन करैत छलाह, सभ गामक रुखि केलाह। सुधाकर काका

असगर उदाहरण नहि छलथि। गाम-गाम एहन लोकसभ भेल छथि। कतेका प्रवासी लोकनिक हुनका अपन लोक धन-धनाढी,जमीन-जायदादसभपर वक्रदृष्टि तखन रहैत छथि। कतेका कतेक रहैत छनि जे जे गेला से गेला,आब गाम घूमि कऽ नहि आबथि। भेल बाहर छथि। एहि बातक कनेको मात्सर्य नहि जे ओतए एहो माटि-पानिक छथि। मिथिलाक संस्कार आ संस्कृतिसँ ओकरा संतानक दुराव बनल रहैक,तकर कोनो चिन्ता नहि। जखन जतेए खगता भऽ जाइक,बाप-पितामहक ओकरा संपत्ति हिस्सा हुनहि जएबाक हुए अपन लोक लागल रहैक, तखन ओ कथी लऽ कऽ ताक रहत। गामम ककरा लग जाएत,कोन रहत?

पहिलुका गाम भेल जे प्रवासी लोकनिक गाम आबाजाही क्रमशः समाप्त जकाँ भऽ गेल। धीया-पूताकँ तँ गामसँ कोनो चिन्हबो नहि करैत छैक। ककरा लग बैसत,ककरा संग खेलाएत। सही मानसँ आब गाम ओकरासभक हुए पतनशील भऽ गेल छैक। गाम गेलाक बाद मोन उबिआए लगैत छैक,होइत छैक जे कखन भागी। आखिर एना भेलैक किएक? किछु लोकक दोख,किछु लोकनाक। जाबे लोक नौकरी करैत रहल,ताबे ओहीमे लागल रहल। मुदा समय तँ बैसल नहि रहत। समय चक्र आगू बढ़ल। मानवीय संबंध शिथिल होइत गेलैक। एहन परिस्थिति गाम-गाम पसरि गेल।

लखनपुराक सेहो हाल-चाल। मुदा एही घटनाक्रमसँ सभक मानस जबरदस्त आघात भेलैक। प्रवासी सभ जाइत जे रहए सभ

अपन-अपन गाम आएल। पाठशालाक लगाइत जयन्तक व्यक्तिगत नहि नहि गेल। ई समाजक अस्मितासँ हटि गेल।

सरसँ कमाल करैत नाजीर। हुनकर पूर्वज लखनपुर उत्तरवारिटोलक छथि। हुनकर बाबा नेनम गाममे गरीबीसँ तंग भऽ भागि गेलखिन। तकरबाद कोनो गेलाह,की करैत ककरा किछु पता नहि चललैक। तकरबाद हुनकर पिता दिल्लीमे रहि जिनगी काज करलखिन आ ओतहि घर बनाए बसि गेलखिन। ओतहि नाजीर पढ़ि-लिखि कलक्टर भऽ गेलाह। गामक बारेमे सुनल करथि, कहियो गेल नहि रहथि,किछु देखल नहि रहथि। तथापि अपन माटि-पानिक सिनेह तँ रहबे करनि। संयोग एहेन जे हुनकर पोस्टिंग लखनपुरक जिला मुख्यालयमे भऽ गेलनि।

नाजीरकेँ सुधाकरक खिस्सा नीकसँ बूझल रहनि। ओखन धरि ओ जेना-तेना बचैत रहल छल। पुलिस आ सरकारी महकमामे अपन जोगार बैसा कऽ गामक लोकसभकेँ परेसान करैत रहैत छल। मुदा कहबी छैक जे कर्मक फल भोगहि पड़ैत छैक। सएह भेलैक। नाजीर एसपीसँ गप्प कऽ सुधाकरक फाइलकेँ निकलबौलथि। ओहिमे लिखल रहैक" सुधाकर नामक आदमी कहि नहि कोनो चलि गेल अछि, बहुत प्रयासक बादो ओकरा नहि ताकल जा सकल। अतः,एहि मामलाकेँ फिलहाल बंद राखल जाए। जखन ओ भेटताह तँ आगूक कारवाइ कएल जाएत।" नाजीरकेँ एसपी स बात करलखिन।

"ओ तँ अखनो गाममे अछि। पुलिसकेँ नहि रोकबाक सवाल नहि छैक। जरूर कोइ ओकरा बँचा रहल अछि।"

"अहाँक अनुमान सही अछि श्रीमान! -एसपी साहेब बजलाह।

"के थिकाह ई व्यक्ति जे एहन दुष्ट व्यक्तिकेँ बचा रहल छथि?"

"अपन इलाकाक मंत्रीसँ सुधाकरक बड्ड घालमेल छैक। सुनै छी ओएह एकर मामलामे पुलिसकेँ दबाव दैत छथि।"

"आब अहाँसँ ककरो नहि सुनु। जे उचित छैक से हेबाक चाही।"

"सही कहलिऐक श्रीमान! सएह हेतैक।"

तकरबाद तँ एसपी साहेब ओहि मामिलाकेँ अपना हाथमे लए लेलथि। तीन मास नियमित ओहि मामिलाक सुनवाइ कोर्टमे भेलैक। जज साहेब सेहो छगुन्तामे रहथि जे आखिर एहन अपराध कएलाक बादो पुलिस किएक ओकरा बँचौने छल। मामिलामे फैसला दैत जज साहेब कहलाह-

"सुधाकरक अपराध बड्ड पैघ अछि। ओ एकटा एकदम निर्दोष व्यक्तिकेँ सरेआमहुँ तंग कएने रहलाह। हुनकर जान बँचनाइ मोसकिल भए गेल। अफसोसक बात अछि जे एहना मामिलाकेँ पुलिस आ नेताक घालमेलसँ दबाओल जा रहल छल। एहि मामिलामे सुधाकरक खिलाफ पर्याप्त सबूत अछि। न्यायक माँग अछि जे हुनका कठोर दंड देल जाए जाहिसँ काल्हि फेर कोइ एहन

करबाक हेतु सोचबो नहि करए। अस्तु, सुधाकरकेँ दस सालक सश्रम कारावासक दंड देल जाइत अछि। संगहि हुनका आदेश देल जाइत अछि जे दोषी पुलिससभक खिलाफ निर्णायक कारबाइ कएल जाए।"

ओहि दिन साँझ लखनपुरमे एहि बातक चर्चा होइत रहल। सभ एतबे कहए जे सुधाकरकेँ अपन करनीक फल भेटलैक। साँझमे उगनबाबाटोलक लोकसभ सबामान लड्डू मंदिरमे प्रसाद चढ़ौलक। सौंसे गाम लड्डू बाँटल गेल। मुदा जयन्त दुखी रहथि। ओ तँ अपना दिसि सुधाकरकेँ माफ कऽ देने रहथि। मुदा कानून अपन काज कएलक। गाममे एहि बातसँ लोक प्रसन्न छल।

३९

जयन्तकेँ अपन गाममे नागबाबा विश्वविद्यालयक स्थापनाक बादो मनमे चैन नहि रहनि। "जाधरि एहि इलाकाक एक-एक व्यक्ति सुशिक्षित आ सभ तरहेँ संपन्न नहि भऽ जाएत ताबत विश्राम करबाक कोन औचित्य अछि?"-ओ मने-मने सोचथि। सोचबे नहि करथि अपितु ताहि उद्देश्यक प्राप्ति हेतु ओ संपूर्ण शक्ति सँ लागि गेलाह। एहिबातक ओ पूरा प्रयास कएलाह जे-जे कष्ट हुनका भेलनि से आन ककरो नहि होइक। लखनपुर आ लग-पासक कोनो नेनाकेँ आर्थिक/पारिवारिक कारणसँ परेशानी नहि होइक।

गाम-गामसँ प्रतिभाशाली विद्यार्थी सभकेँ विश्वविद्यालयक छात्रावासमे रहबाक निःशुल्क व्यवस्था कएल गेल। जकनाम जे गुप्त छलैक ओकर निकास हेतु पर्याप्त इन्तजाम रहल। । हुनकर एही प्रयासक चमत्कारिक परिणाम रहल । देखैत-देखैत इलाकाक लोकक स्थिति बदलि गेल । युवकसभ सुशिक्षित भए परिवारक नक्शा बदलि देलनि । ई इलाका विद्या आ धनसँ परिपूर्ण भए गेल । लखनपुर नहि लग-पासक इलाकाभरिमे जयन्तक जयगान होबए लागल । एक आदमी कोना हजारों लोकक भाग्य बदलि सकैत अछि ओकर ई उदाहरण बनि गेलाह ।

जयन्त एतब पर नहि रुकलाह । प्रवासी लोकनिक समस्यापर हुनकर ध्यान बहुत दिनसँ रहनि। ओकर निदानकरण हेतु ई सही समयक प्रतीक्षा कए रहल छलाह । आब ई समय आबि गेल छल । संयोगसँ राजीव सन उच्च सरकारी अधिकारी सेहो एहि काजमे जुटि लए रहल छलाह । लग-पासक लोकसभ सँ लागल रहए। एहि विषयपर ई राजीवसँ चर्चा कएलनि । राजीव स्वयं सेहो भुक्तभोगी छलाह। कैक पुस्तसँ हुनकर पूर्वजसभ बाहर छलाह। परिणाम गामक घराडीक नामो-निसान नहि नहि गेल छलनि । एहन खिस्सा बहुत रास प्रवासी लोकनिक छलनि ।

जयन्त सोचल करथि जे आखिर एहि समस्यासभक जड़ि कतए अछि । हुनका नीकसँ बूझा गेलनि जे जीविकाक प्रयासमे लोकसभकेँ अपन गाम-घर छोड़ि देलासँ एही समस्या बढ़ल । जयन्त

आउन प्रवासी लोकनिक संग एहि समस्यापर विचार-विमर्श कएलनि। ओ सभ आपसमे बैसार कए गाम लौटि जएबाक निर्णय कएलाह।

"लखनपुरक लग-पासक जे कोनो गाम वापस आबए चाहैथि सबकेँ स्वागत छनि। हुनकासबकेँ आवासीय जमीन उपलब्ध कराओल जाएत। "- जयन्त आश्वासन देलखिन।

असलम विश्वविद्यालयक निर्माणक बाद बहुत रास चंदा फाजिल बचि गेल छल। ओहि टाकाक उपयोगसँ चालीस बिघा आवासीय जमीन कीनल गेल। ओकरा नीकसँ विकसित कए सुविधा संपन्न कएल गेल। एहि तरहेँ निर्मित छोट-छोट दुखंड प्रवासी लोकनिकेँ उपलब्ध कराओल गेल। किछुए दिनमे ओहिठाम पूर्ण विकसित समाज आधुनिक सुख -सुविधा संपन्न टोल बसि गेल जकर नाम जयन्तपुर राखल गेल।

लखनपुर दछिनबारिटोलक बहुत रास प्रवासी लोकनि एहि सुविधाक लाभ उठबैत गाम वापस आबि गेलाह। हुनकासबकेँ अपन-अपन घर बनि गेलनि। ओ सभ फेरसँ अपन पूर्वजक गाममे बसि गेलथि। दियाद-बादसभ हुनकर जमीन-जायदाद वापस कए देलखिन। गाममे स्थापित विश्वविद्यालयमे इलाकाक हजारो लोककेँ छोटसँ पैघ सभ स्तरक जीविका भेटलैक। बहुत दिनक बाद लगलैक जे गाममे पुरान समय लौटि गेल अछि।

गामम संपूर्ण आधुनिक सुविधासँ संपन्न विश्वविद्यालयक स्थापना भऽ गेलाक बाद जयन्तक प्रसन्नताक अंत नहि छल । संगहि प्रवासी लोकनिक जयन्तपुर टोल सेहो बसि गेल छल । कौक युवकसँ गाम-घरसँ बाहर नहि रहल लोकसभ अपन माटि-पानिसँ हुनसँ जुटि गेल रहथि ।

सभ किछु जखन भऽ गेल तँ चंद्रिकाक विआह किएक लटकल रहैत? कालीकान्त बहुत दिनसँ एहि समयक प्रतीक्षा कऽ रहल छलाह । ई सभ काज भऽ गेलाक बाद कालीकान्त आचार्यजीक आगाँ पहुँचलाह आ चंद्रिकाक जयन्तक संग विआहक दिन तकबाक आग्रह कलथि । बसंतपंचमी लगीच छल। ओहीदिन दुनु गोटेक विआह होएब तय भेल ।

देखिते-देखिते बसंतपंचमीक दिन आबि गेल । चारुकात बसनबौकी बाजि रहल छल। लोकक प्रसन्नताक संगहि प्रकृति सेहो मुस्कि रहल छल । जयन्तक विआह चंद्रिकाक संग धूमधामसँ संपन्न भेल। नवविवाहित दंपत्ति भगवतीकँ गोड़ लगबाक हेतु उठि विदा भेलाह। हुनकर समस्त परिवार संग-संग गीतनाद करैत पाछू-पाछू चलि रहल छलाह । एहि आनंदमय अवसरपर लखनपुरक लोकसभक प्रसन्नताक अंत नहि छल ।

(समाप्त)

-नवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र,

माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वएस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अरेर डीह, मातृक: सिम्हिआ घाटी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), रक्षा मंत्रालयमे मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. रुसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.ई थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक प्रात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.७.कुमार मनोज कश्यप-आकाश-कुसुम



कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

आकाश-कुसुम

नाधावावू आ ᷊रिसक राऽ᷊ील म गरुन न प्रगा᷊ अत्यानाश्रय संवंध छल ज हुनका घन-यनिनान क वान म सावनाक यलखणि करौँ! रान म ज आ᷊ वज घन सऽ वरुनाऽ᷊ीण छलाह स नाणि म नौ वज सऽ यहिन विनल कादिया हिनौण छलाह। हुनसऽ गऽ ᷊रिस सऽ राऽ᷊ीलक यूलिंदा वहून घन अवौण छलाह आ घना म ᷊रिसक काजा संयाग सऽ कादिया यलखणि रटलनि गऽ दु यल याना-याणी संगे हँसि-वाजि लला आ हुन टीनी यन समाचान दखवा म निमग्न! छुट्टिया क दिन म या गऽ ᷊रिस जाथि ना राऽ᷊ील घन लऽ आवथि। मूदा निटायनमंट क वाद हुनकन दिनचर्या गऽ वदलौक छलन्हिया। आव घन म नहौण छथि गऽ यरुन रनि अखवान य᷊व, वा᷊-मा᷊, याना-याणी क वैसा कऽ य᷊ायव ओहि सर म दिन गुदस्त राऽ᷊ीण छनि। हुनका म ओकाओक आयल ᷊ी यनिवर्तन हुनकन याणी क ननमणि वूमि नहिं यावि नहल छल। ओहि दिन अयन दादी सऽ सूणवा काल खिस्सा सुनैण यूछलकै - 'दादी! वावा आव याया जकाँ ᷊रिस किये नै जाऽ᷊ी छथिन?'

- 'गरुन वावा आव नाकनी सऽ निटायन रऽ गेल छथून्ह --- गैं घन म नहौण छथून्ह।'

- 'निटायन की राऽ᷊ी छै दादी?'

- 'जखन लोक बूढ़ भऽ जाइ छै.... काज करबाक नहिं रहै छै तखन ओकरा घर मे आराम करै ले कहल जाइ छै। एकरा कहै छै रिटायर। '

- 'बाबा तऽ कहिया चलि गेल छौ, तहूँ तऽ बूढ़ भेलौं। तँ कहिया रिटायर हेबही दादी? '

- 'दूर जा! हम कोना नोकरी करै छी जे रिटायर हेबा। जही सुन। बड़ काज पसरल अछि हमरा। '

ओहि अबोध के ओ कोना बूझबितथि जे गृहिणी के काज सँ कोन छुटकारा !

-कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति: भारत सरकार के उप-सचिव, **संपर्क:** सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-२०)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर,दरभङ्गा, सासुर - गोढियारी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।
मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग- २०)

पूर्व कथा:
राजा पुरूरवा अमरावती जाइ क क्रम मे उर्वशी आ चित्रलेखा क अपहरण कऽ लऽ जाइत दानवराज केशि सँ असगर युद्ध कयल

ओकरा पराजित कऽ दुनू अप्सरा के रक्षा करै छथि। पुनः इनका लऽ कऽ ओ अमरावती पहुँचै छथि।

आब आगू:

वैजयंत प्रासाद मे नाच-गान मे डूबल इन्द्र! स्वर्ग के कोन भाग मे कथि भऽ रहल छैक एहि सभ सँ अनभिज्ञ छलथि। इनका एहि सभ बात सऽ कोनो मतलब कहाँ छलनि! इनका चाही मात्र नाच-गान आ उत्सव! सोमरस आ सौंदर्यक मेला!

देव सभा मे पुरुरवा एकटा सिंहासन पर विराजमान छलथि। इन्द्र के पुरुरवाक आगमनक सूचना पठाओल गेल। किछु कालक बाद मंद मंद मुस्कुराइत पुरंदर देव सभा मे आबि बैसबा हेतु अपन सिंहासन के दिशा मे बढलथि। पुरुरवा के साथ अभिवादनक आदान-प्रदान भेलनि। गंभीर स्वर मे पुरुरवा कहलथि -

"देवत्व के अपमान न स्वर्ग लोकक मर्यादा देवत्व के सभा मे प्रस्तुत कएल जाए"।

एक सभासद उठि कऽ पुरुरवा के आदेशक पालन तुरंत कएलक। उर्वशी एवं चित्रलेखा के सभाकक्ष मे आनल गेल। पुरंदर प्रश्नवाचक मुद्रा मे पुरुरवा के देखलथि।

"इनका दुनू के दानवराज केशि अपहरण कयने जा रहल छल। संयोगवश हमर दृष्टि मे आबि गेलथि। हम दानवराज केशि के यमपुरी पहुँचा कऽ अपनेक प्रतिष्ठा पुनः आहाँ के पहुँचाबय आबि गेलहुँ। "

सम्पूर्ण वस्तु स्थिति सऽ अवगत भेला के बाद इन्द्र लज्जावनत भऽ

गेलाह। ओ पुरुरवा क एहि असामयिक सहायता क लेल धन्यवाद ज्ञापित कयलनि। मुदा पुरुरवा अत्यंत दु:खी आ क्रोधित छलाह। ओ किंचित काल पूर्व स्वर्ग मे कहलथि पुरन्दर सँऽ-

"अपनेक लापरवाही क कारण कहियो हमरहु लज्जित होमय पड़ि सकैत अछि स्वर्गाधिपति।"

"अर्धासन क संचालन क नीक आ अधलाह हेतु पउ क उत्तरदायित्व मात्र हमर नहि। समान रूपें हम आहाँ हेतु प्रतिभागी छी। तहि कारण ई निश्चित रूप सँऽ संभव भऽ सकैत छैक" - इन्द्र लापरवाही सऽ कहलथि।

"मुदा अपन स्वर्गक सुरक्षा क कोनो चिंता नहि करैत छी। एना मे स्वर्ग कोना आ कोना सुरक्षित रहत,अहीं सोचू कनी। हम एकसरि भूमंडल एवं स्वर्ग हेतु पर लगातार ध्यान कोना राखि पाएब ? हम सम्पूर्ण धरतीक शासन सम्हारि रहल छी,आहाँ स्वर्ग तऽ कम सऽ कम सम्हारि लिय । हमरा लेल संभव अछि कि धरतीक शासन देखैत अपनहु क सम्पूर्ण देखभाल करी"?

"ई बात तऽ आहाँ क अर्धासन ग्रहण करबाक पूर्व विचार करनाई उचित छल राजन्!" -इन्द्र क स्वर निर्लज्जता सँऽ परिपूर्ण छल।

" बहुत नीक बात अछि देवेंद्र,हम तखनि विचार नहि कएलहुँ तऽ आब कऽ लैत छी। हम स्वर्गक एहि अर्धासन क परित्याग कऽ रहल छी। हमरा एहन राज्य क आवश्यकता नहि अछि । हम स्वर्गक एहि राज्य क परित्याग कऽ रहल छी। हमरा आवश्यकता नहि अछि स्वर्गक ओहि अर्धासनक जकर शासक एहन निकम्मा एवं दम्भी होय । आई सऽ स्वर्ग क पूर्ण शासन व्यवस्था अपनहि क हाथ मे रहत । एहि पर हमर उत्तरदायित्व आई सँऽ समाप्त

भऽ गेल,किएक तऽ हम कुला प्रधानक उच्छृंखलता एवं अव्यवस्था सहन नहि कऽ सकैत छी।" - अपन पैर पटकैत पुरूरवा सभाकक्ष सँऽ निकसि गेलाह ।

सभ देवगण आश्चर्यचकित भऽ देखैत रहि गेलथि राजा पुरूरवा के ।

उर्वशी इन्द्र के एहन असभ्यता पूर्ण व्यवहार सँऽ अत्यंत दुःखित भऽ गेल छलीह। हुनक दृष्टि मे पुरूरवा महान!अत्यधिक महान भऽ गेलथि। इन्द्र के व्यवहार हुनका अत्यंत लज्जा जनक प्रतीत भेलनि। अपन प्रियतम पर ओ एक प्रकार सँऽ प्रसन्न छलीह। मुदा संगहि ओ दूसर दिशि दुःखी सेहो छलीह,एहि विचार सँऽ कि आब पुरूरवा सऽ मिलन के मार्ग अवरूद्ध भऽ गेलनि। ओ प्रिय वियोगक सोचि अत्यंत दु:खी भऽ गेलथि।

उर्वशी अधिक देर तक सभा भवन मे रूकि नहि सकलथि। मेनका एवं चित्रलेखा के संग ओ निकलि गेलीह सभा कक्ष सऽ । बाहर ओ एम्हर-ओम्हर चारू दिशा मे देखलथि पुरूरवा के रथ कतहु नहि छल । आब ओ राजा पुरूरवा सऽ भेंट करबा हेतु व्यग्र भऽ गेलथि। आब ओ शीघ्र अपन एहि दुनू सखी सँऽ विलग होयबाक प्रयास करबा मे लागि गेलथि जाहि सँऽ पुरूरवा सऽ भेंट कऽ सकथि। हुनक हृदय मे आशा-दीप प्रज्वलित छलहि,हुनका सँऽ बिना भेंट कएने पुरूरवा एतक शीघ्र आपस नहि भऽ सकैत छथि।

राजा पुरुरवा हिमवंदन जंगल मे एकटा गाछक नीचा हरियर घास पर उदास भ' बैसल छलाह। हुनकर मन किछु दूर पर अनिश्चित छल। घास सब मुक्त भs कs हिमवंदन गाछक पात खयबा मे व्यस्त छल।

उर्वशी धीरे-धीरे कुनो प्रकारें अपसियांत भेल आगs बढ़लीह। राजा पुरुरवाक हृदय कमल फूल जकाँ फूलि गेलनि हुनका देखि । आँखि सेहो चमकि उठलनि ।

साँस तेजगति सँs चलि रहल छलनि उर्वशीक । सूरजक तीव्र इजोत मे मुख पर श्वेद कण चमकि रहल छल । अव्यवस्थित साँसक तीव्र गति ! रक्तन कारी केश ! उर्वशी एहि रूप मे बहुत सुन्दर लागैत छलीह।

पुरुरवा आगू दौड़लाह आ हुनका अपन बाँहि मे लपेटि लेलथि । उर्वशी केँ कान्ह पर ल' क' उर्वशी केँ गाछ लग अनलथि,फेर स्वयं बैसि गेलाह । हुनकर खिलल चेहरा पुनः अपान पीड़ा सँ लिप्त भय गेल। ओ उर्वशीक नाकक बुंद केँ हाथक आँगुर सँ पोछलथि,फेर चुम्बन लेलथि हुनक केश, गाल, कपार आ गरदनि मे असंख्य ! उर्वशीक सिसकब रुकि गेलैन ।आब ओ एकदम शान्त बुझाइत छलीह । हुनकर चेहरा आब साफ आ शान्त छलनि जेना बरखाक बाद आकाश साफ स्वच्छ भ' जाइत छैक।

"अहाँ जा रहल छी प्रिय" - उर्वशी राजा पुरुरवा सँs बहुत शान्त स्वर मे पूछलखिन।

"हँ, हम एतेक अपमान सहन क' एत' नहि रहि सकैत छी" - पुरुरवा गंभीरतापूर्वक उत्तर देलथि ।

"मृदा हमना ककना हमास छाति जाञ्न छी?" उर्वशी युनुननाक वहना यन नजनि टिकवौन वजलीह ।

"अहाँ - अहाँ स्वर्गक थाती छी उर्वशी। हम अयन स्वार्थक लल ओहि सौन्दर्यक धन सँऽ स्वर्ग कँ निक्त नहि क' सकौन छी" - नाजा युनुननाक गहन गंरीन स्वन गुँजि उठल।

"अहाँक विना हम ओयय जीवित नहि नहि याओव"।

"प्रिय,अहाँ कहन वात कनौ छी,अहाँक संग हमन यवित्र प्रेम अछि। हमन प्रेम आहाँक सम्बल नहन उर्वशी"।

"नहि,आव अहाँक अनुयस्थितिक कल्पना नक नहि क' सकौन छी हम" -कहि मौन धानण क' ललीह उर्वशी। नाजा सहो मौन ह' गेलाह। हुनकन हृदय मँ तूफान जना हिलान मानि नहल छलनि। अयाँन कठिनाञ्ची सँऽ ओ अयना क संयन नखन छलाह। किछु ऊण उयनांन उर्वशी अयना यन नियंत्रण कनौन वजलीह -

"की अहाँ हमना हुमण्डल मँ नहि ल' जा सकौन छी"?

"नहि उर्वशी नहि,हम स नहि क' सकौन छी"।

"कियैक! ञ्ची किओक नहि क' सकौन छी"?

"अहाँ कियैक नहि वूझौन छी हमन कठिनाञ्ची ! हँ उर्वशी! हमहुँ अहाँक विना जीवऽ म असमर्थ छी! मृदा ओँऽ हम अहाँ कँ ओहिना लऽ जायव नखन कवि आउान हमना म की अंगन हायन? हम अहाँ कँ लऽ जयवा म असमर्थ छी! हमन स्थिति क वूसु प्रियतमा! अहाँ छी 'नन-नानायण' ऋषि द्वाना नचल गेल ओक गोट अनुयम नत्न! आ अहाँ स्वर्गलाक क लल उयहान स्वनुय प्राप्त हलहुँ ऋषिवन 'नन-नानायण' क द्वाना! ओहि मर्यादाक सीमा क उल्लंघन कओ हम पृथ्वी क माथ यन सदा-सर्वदा क लल कलंकक ओकटा धव्वा वनि

जाएत। त्रिभुवन मे हमर आ अहाँक यशगाथा नहि बल्कि कलंक-कथा पसरल जाएत। आहां की कलंक-कथा सहन कऽ सकब ?"

"हम अहाँक प्रेम क छाति कारा नीक-बजाय बाग बुझबाक स्थिति म नहि छी प्रियतम ऽ"-उर्वशी अत्यंत व्याकुल छलीह।

पुरुरवा चुप नहि भेलाह,उर्वशी सेहो चुप रह' गेलीह। किछु काल धरि दुनू प्राणी अहिना मौन नहि एक दोसर क स्पर्श क अनुभव करैत रहलथि। किछु समयक बाद उर्वशी उठि गेलीह,उठ पुरुरवाक उन्नत वक्ष पर चुम्बन ललनि। एखनि हुनकर साँसक गति अत्यंत तीव्र रह' गेल छलनि।

"हम धरती पर अहाँ लग अनन्त जायब प्रिय। मुदा तखन जखन हम अहाँक विरहाग्नि मे झुलसि राख होयबा क अवस्था मे आबि जाएब। एहि सँ अहाँ कँ कोनो कलंक नहि होयत। जँ प्रेम करब पाप अछि तखन हम की पाप कऽ चुकलहुँ। एहि पाप क हम भागीदार छी,तखन जिम्मेदारी किएक नहि लेब! हमरा कोनो मतलब नहि अछि त्रिभुवन मे हमर यशगाथा गाओल जायत अथवा अपयश कथा क प्रसार होयत"।

"एना अहाँक इच्छा प्रिय। हम सदिखन अहाँक धरती पर स्वागत करबाक प्रतीक्षा मे रहब" - राजा पुरुरवा उर्वशी कँ आश्वासन देलनि।

पुरुरवा क केशगुच्छ क अपन हाथ सँऽ सोझरबैत उर्वशी बजलीह - "की एहि सँ उत्पन्न अहाँक अपयश नहि होयत?"

"उत्पन्न हमर यश होय अथवा अपयश! ज कोनो गति होय,हम उत' स्वतंत्र रहब। प्रेमक लेल अपयश सेहो स्वीकार करब। मुदा इच्छ सँ कोनो बैनराव तऽ नहि होयत। पृथ्वीवासी स्वर्ग सँ दुश्मनी

कहिया बर्दाश्त नहि क' सकैत अछि । हम अपन प्रजा के जीवन के कष्टप्रद नहि करय चाहैत छी। राजा होबाक कारणे हमरा अपन व्यक्तिगत जीवन सऽ बढ़िकऽ अपन प्रजा के सुख एवं प्रसन्नता के ध्यान राखऽ पड़त"।

एकर बाद दूनू गोटे बहुत काल धरि एक दोसराक हृदय केर धड़कन सुनैत रहलाह। वातावरण हुनकर संभावित वियोग के दुःख सँ स्तब्ध दुःखी छल! शीतल पवन मन्द-मन्द गति सँ विचरण करय अपन दुःख प्रकट कऽ रहल छल। जाहि कारण वातावरण मे पूर्णतः शांति व्याप्त छल। कोमल सुगंधित समीर पर्यन्त जाहि दूनू प्राणी के दुःख मे दुःखी भय वातावरण कें शांति भंग करबा मे असमर्थ छल।

उर्वशी के गाल के अंतिम चुम्बन लेला के बाद पुरुरवा ठाढ़ भऽ गेलाह आ बजलाह -

"आब हमरा जाय के अनुमति दिय प्रिय" |

उर्वशी निराशाक घटाटोप मेघ मे डूबल छलीह। ओ दुःखित भय रुद्ध स्वर मे बजलीह -

"की हम अपन हाथ सँ अपन प्रेम कें मारि देब! अपन प्राण अहाँ कें अपन हाथ सँ दऽ देब। हम अहाँ के जएबी के अनुमति कोना दिय! ई बात कोना कहलहुँ अहाँ !"

"हमरा कमजोर नहि बनाउ प्रिय, हमरा रोकाउ नहि। अहाँ हमर प्रियतमा छी!पुरुरवाक प्रियतमा ! पृथ्वी के चक्रवर्ती सम्राट पुरुरवाक प्रियतमा! ओहिना व्यवहार करू प्रिय"।

किछु क्षण उपरांत संयमित स्वर सँ उर्वशी बजलीह - .

"ठीक छै, प्राणेश्वर जाउ! हमर आत्मा कें संग लऽ जाउ! जखन

ओहि निर्जीव शरीर कँ आत्माक आवश्यकता होयत तखन ओ अहाँ क निकट पहुँचि जायत"!

यूनुनता उर्वशी क आँखि क लाल रंगल आँखि क चुम्बन ललथि। ओहि तरह ओ उर्वशी क बहुत लाल क यौवन क कामिश कलथि। उर्वशी सेहो राजा क हाथ कँ चुम्बन लऽ ललनि। राजा यूनुनता अपन रथ मं सवार भय हुनका दिशि देखऽत कृत्रिम मुस्कान क संग हाथ हिला देलखिन। उर्वशी क उदास मुख पर अधिक मुस्कान रखा कायि उठल। ओहो जवाब मं हाथ हिला देलखिन। धीरे-धीरे रथ दूर होइत उर्वशीक दृष्टिसँ ओझल भऽ गेल।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.१.आचार्य रामानन्द मण्डल-अह्वानक दीप/ बाल बैरागी



आचार्य रामानंद मंडल

अह्वानक दीप/ बाल बैरागी

१

अन्हारक दीप 

तमसो मा ज्योतिर्गमय क उद्घोष करैत अन्हारक दीप मैथिली कविता संग्रह कुमार विक्रमादित्य विरचित अछि ।

कोशी नदी क बालुका राशि बनल सोना बन टिमटिमाइत दीप मृत्योर्मा अमृत गमयं क संग तमसो मा ज्योतिर्गमय क उद्घोष करैत अछि।

एक एक टा दीप'क अंतसक ज्वाला जगमगाइत आ

एकहि बन धधैक उठत अग्निशिखा आ दूर करत अन्हार कें

-अन्हारक दीप कविता स

अंहारक दीप एकटा दीर्घ कविता अछि। अइ कविता म कोशी क विनाशलीला क वर्णन क साथे समाज आ देश मं होइत विनाशलीला पर कटाक्ष प्रहार अछि। कोशी माय आ रुद्रीश्वरनाथ नम्र क शब्द मं कोशी जइन क विनाशकारी लीला कोरोना काल क प्रयाग राज स्थित मानव लाश स पटल बालुका गंगा तट क याद करावैत अछि।

आजादी क अमृत महोत्सव उपलक्ष म अपन १६ कविता संग आजादी क १६साल पर विभिन्न कविता माद विचार प्रकट कैलन हय। जेना -आजादी,रूसिक गठन, गांधी मैदान आदि।

हमर खवास पूछलक

मालिक अपन देश आजाद कहिया हाएत्

-आजादी कविता स

हालांकि खवास आ मालिक वार्ता आजादी क लेल अप्रासंगिक लगैय हय परंतु आजादी पर प्रश्न चिह्न उठबैत हय।

रूसिक ढन पर बैसल संसद

नचैत अछि

रूसियाका पुलिस

रूसियाका न्यायक आस

रूसियाका संविधान

- -रूसिक ढन कविता स

गांधी मैदानक उपस्थिति

जगय ०१८ तथा इगयूनुष

आ मान राखैत छथि

अपन उक्ति राखब मं

-गांधी मैदान कविता स

दीर्घ कविता म बदलैत सन गाम हमर आ टीस हय।

बदलैत सन गाम हमर क माध्यम स सामाजिक ताना-बाना, सामाजिक प्रेम आ समाज पर राजनीतिक प्रभाव क निक शब्द चित्रण हय।

मंडल कमिशनक असर हमरा गाम म पड़

गुमान कं आब गुमान करब पसिन नहि

आब रहल ऊ पाबन

आ बादला करय लागल पनहड उक्ति शब्द स

सामाजिक समरसताक खातिर

- बदलैत सन गाम हमर कविता स

कविता संग्रह मं प्रथम कविता भगवान मं कवि भगवान क खोजैत धार्मिक पाखंड पर प्रहार करैत हथ।

जौं किनका भगवान टकराय त

त विनती अछि हमरा सं मिलायब।

ग मालिक रुगवान मं देश क लोकतांत्रिक आ प्रशासनिक व्यवस्था क खामी यन ॠशाना कर्ते रुगन।

30। नहुल अछि

लोकतंत्र सं लोकक विश्वास

असली रुगवान मं खराव चिकित्सा व्यवस्था यन प्रहान

विन पैसा दन लाश नहि रुटल

गं अहां वूसू

अहांक समझ 0।८ अछि साऊाग असली रुगवान।

नारी क दुर्दशा व्यथा यन शानुया,प्रसववी७ा आ रुया।

विधवा कविता स दर्शायल गेल रुया।

ऊंगली जानवन आवि नहुल अछि

यछा७ धनन रुयकउक लल

शानुया लागि नहुल अछि

-शानुया स

७कटा छटयटाॐग स्री

0।ढ छलीरु अयन दर्द क नाकन

-प्रसन्न पीड़ा स

ओ पियाक सांस टूटित

उठि गेल देह सं

हाथक चुड़ि टूटि गेल

-विधवा स

कविता संग्रह में हकमौन शब्द,कानौन शब्द,रागौन शब्द क माद बदलौन शब्द आ विभिन्न विसंगति पर प्रकाश डालैत हुए त रचनौन समाज,पितृराज,सृजनिक माद सामाजिक चित्रण कैल गेल हुए। मजदूर वर्ग क पीड़ा पर अर्द्ध मजूरी,स्त्रीट उघंनी आ महंगी क माद शब्द चित्रित हुए।

अंतिम कविता हम लऊत छी में कवि हुन समस्या स लऊत हुता।

हम नित लऊत छी

अपना सं

अपन कऽल गेल

गली सं

चाहे ओ सामाजिक, राजनीतिक आ आर्थिक कैल गेल गलती काहे न हो।

कविता संग्रह अन्हारक दीप बाड़ि सऽ आयाम के अँधियारा पर प्रकाश डालैय हय। नवकवि अन्हार के अध्यन दीप स प्रकाशित करय म सफल हतन। बधाई संगे शुभकामना।

२

बाल बैरागी

रामपुर गाँव में एगो युवा साधु आयल रहे। लोग सब उनकर नाम पूछलक त साधु बोलल-हमर नाम बाल बैरागी हैय। हमर घर यूपी के एगो गाँव हरिपुर में रहे। हमर बाबू माय बाल कालि में स्वर्गीय हो गेल। त हम एगो साधु के संग अयोध्या धाम चल गेली। बीस बरस तक एगो मंदिर में रहली। बाल बैरागी नाम हमर गुरु जी के देल हैय। गुरु जी हमरा आदेश देलन कि गाँव-गाँव में जाकर सीताराम नाम का प्रचार-प्रसार करा। सीताराम नाम के यज्ञ करावा।

बाल बैरागी देखे में २६-२७ साल के सुदर्शन युवक लागे। वा अपन माथा आ दाढ़ी में खूब हवा। उजर रंग के सूती चौबंदी पहन रहे। उजर रंग के धोती लुंगी लखा कमर में लपटल रहे। बम्मा हाथ में घड़ी आ पैर में खड़ाम पहन रहे।

लोग सब कहलक-साधू जी,चलू हमरा गाम मे एकटा मंदिर छैक। ओहीं रहब आ अपन पूजा-पाठ करब। बाल बैरागी कहलन-हम मंदिर मे न रहब। हम अलगे कुटिया बना क रहब। हमरा सीताराम नाम जप यज्ञ करै क छैक। तै क जगह लेल पांच बीघा जमीन चाही। एकटा सीताराम भगवान क मंदिर,एकटा यज्ञ मंडप,जैमे नौ दिवसीय चौबीसों घंटा सीताराम नाम क कीर्तन होतै। एकटा साधू निवास कुटी,जैमे हम रहब। आ एकटा बड़का पांडाल जैमे कीर्तनीया मंडली सब रहतै। हुनका खाकरा सब क खाय पीय क व्यवस्था। लोग सब कहलन- सब व्यवस्था हम सब करबैय। पहिल मंदिर पर चलू आ महंथ जी स बात करू। जगह क लेल जमीन त महंथ जी देता। बाल बैरागी कहलन-चलू। मंदिर पर अपना पर मंहथ जी आ बाल बैरागी मं दंड प्रनाम भेल। बैरागी जी अपन परिचय दऽ सीताराम नाम यज्ञ क लेल सब बात विस्तार स बतेलैन। महंथ जी बाजलन-बैरागी जी, मंदिर क आगे क पांच बीघा जमीन यज्ञ क लेल दैय छी। आ जैन हम यथाशक्ति मदद करब। परोपटा स सेहो लोग सब क मदद क लेल कहब। ई त भगवान क काज छैक। आशा छैय सब समाज क मदद मिलत।

बैरागी जी कहलन-महंथ जी,सब स पहिल एकटा भगवान् सीताराम क लेल एकटा मंडप आ एकटा साधू निवास क लेल एकटा कुटिया बनावे मे सहयोग कैल जाय। महंथ जी अपना करपरदाज क कहलन कि जाक बैरागी जी क काज सब करै दा। लोग सब सेहो लगहीन क मंडप आ कुटिया बना देलक

दासन दिन स ७ग। जीय हाउ कनक हाउ यनकं लाउतथीकन स प्रवान हाय लागल। ७क महिना मं सए गैयानी हा (गल। ठीक नामनवमी क नाज स सीतानाम नाम जय यज्ञ शुनु हा (गल। नौ नाज क वाद यज्ञ समाप्त ए (गल।

अ्ॐ नौ नाज कै यज्ञ मं गांव क ७ग। अ्थानह वनस क ननयुवती सहा नाज यज्ञ दखै अवैत नह। उ सीता नाम मंतय मं री यूजा कनैत नही। श्लोत कमल नंग क दह, चननमा सन मुखना, नानंगी क हांकि सन हांठ, चांदी सन चमकैत दांत, सुग्गा क चांच सन नाक, खंजन सन आंखि,वादल सन कनिया कमन गक कश, कमल युष्प सन कुच,कायली सन वाली आ हिननी सन चाल नह।

वैनागी जी क नजन वाॐ ननयुवती यन यउल त कनिका दन गक दखत नह (गल। कनिका सैयलन!हन युछलथिन-ताहन नाम कि हो। ननयुवती वाललक-नंत। हमन घन यही गांव मं हैया। जग त समाप्त ए (गल हैया यनंच यूजा कन हम नाज दिन आयव। हमना यूजा कनै मं मन लागैय हैया। वैनागी जी वाललन-यूजा त मानुस क कनिउ क चाही। वउ कठिन स लाग मानुस क दह यावै हैया। यही क लैल हम जगह जगह सीतानाम नाम जय यज्ञ कनवै छी कि लागक मन मं एगवान क प्रति प्रम आ श्रद्धा वढै।

नंम्रा क ॐ सए सुनि क एगवान क साथे वैनागी जी क लल री प्रम आ श्रद्धा मन मं उठ लागल। नम्रा वाललक-साधु जी। अव हम घन जाॐछी। काल्हि स नाज यूजा कन आयव। वैनागी जी कहलन-अछा ।

नम्रा फूलतलिया मं युजा क समान ध क सीतानाम मंतय मं युजा कन आव लागल। युजा मं वैनागी जी सँ साथ दवै लगनन। नंरा आ वैनागी जी क हाथ आयस मं छूआओ लागल। करी करी दह मं दह सँ सट लागल। दुनू मं भगनान नाम आ सीता क प्रम प्रसंग सुनैत सुनैत नंरा आ वैनागी जी मं प्रम अंकुनित हाय लागल। प्रम अयन नंग वढाव लागल। अव प्रम क अंतिम यनिनति दह की कामना सँ जगे लागल।

एक दिन वैनागी जी नंरा स कहलन-नंरा अव ऊँहा नहनाऊँ ठीक नै हैया। दुनू गोटे आऊँ नात नात भाग चला। नंरा वाललक-हाँ। यहिल साँझ मं हम घन स आ जायव। भगनान क सामन हम दुनू गोटे यहिल विआह क लैव त नात नाति भाग जायव। वैनागी जी कहलन -अच्छा। दन न कनिहा। नंरा वाललन-जी।

नंरा यहिल साँझ मं सीतानाम मंतय मं आ गेल।

वैनागी जी सनून लक गैयान नहत। यहिल नंरा क माँग मं याँच वन सनून भन दलन। दुनू गोटे भगनान क यननाम कैलन। दुनू गोटे एक वान एक दासन क आलिंगन कैलन। एक दासन क अधनयान कैलन। तकन वाद वैनागी जी कहलन-नंरा अव दन न कना। चला!भाग चला!

अव दुनू गोटे एम यी क एगो हाटल मं नूम वूक कना क नह लागल। वैनागी जी भाटा दाढी यहिल ही कटा क सामान्य यूनक लका लूक कना लैलै नह। नूयया यैसा क त कमिय न नह।

गांव मं हल्ला हो गेल बाबाजी गांव के लड़की के लेक भाग गेल। लोग तरह तरह के बात करै लागल। लेकिन आश्चर्य ई कि लड़की के बाप बालक भाग गेल त भाग गेल। यतेंव अपन जाति के छी बाबा जी नहि। आ बूढ़ न नहि। एकदम जवान बाबा जी नहि। बुझाए होय भगवान जानि बनैल नहि। एक दम सीता आ राम जेसन।

बैरागी जी गांव के अपन खास चेला सब स माबाइल संपर्क बनैल नहि। (0ाह लौग नहि। ईहा चेला सब कहां। गुरु जी यजम कैलथिन आ शादी कैलथिन । त काना बूना कनम नै कलथिन। बाबा त बाबा जी सब नखेल नखै छथिन। लेकिन हमन गुरु महाराज बाबा न कैलथिन। भगवान के दरबार मं शादी कैलथिन। बा गा लाकक आकाश के ऊन स भाग गेलथिन। कि आकाश मं लाग जान मान दय छैया। अब जौं बा शादी कै ललथिन। त बा हमना सब के गुरु माता भलथिन। हमना गुरु माता आ गुरु जी स काई घृना न हैया। अई बात के असन भेल। लाग सब के बैरागी जी आ नंगा के लल सहानुभूति प्रेम आ श्रद्धा जागे लागल। चेला ई सब सूचना बैरागी जी के देने नहि।

दो बनस के बाद अनुकूल समय देखि के बाल बैरागी नम्रा सहित गांव मं अईलन। बैरागी जी त अपना बस मं नहिंत नहि। यनंव नंगा के वेष कौतुहल के विषय नहि। एक दम उजन भेस मं। नंगा बैरागिन (माईनाम) लागे। चेला सब नंगा के गुरु माता कहै चनन

छन्हि आ बाद मे बैरागी जी का। नम्रता आ बैरागी जी आशीर्वाद के मुद्रा मे हाथ उठौने खड़ा रहै।

आइ नम्रता आ बैरागी जी वाही कुटिया मे गृहस्थ रीति परंपरा मे रहैत रतन राम के साथ गैया के सेवा करैत छैथ।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व0 राजधन मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी 1950 योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह रोसा के त बांटिया। 2022 प्रकाशित रचना - समिधा कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। 2022 पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, रुन्नी, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-बकमाहिला जिला-सीतामढ़ी राज्य-बिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ईमेल-*
ramanandmandal001@gmail.com

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.८.डा. किशन कारीगर-मैथिलीमे जोगियागिरी



डा. किशन कारीगर

मैथिलीमे जोगियागिरी

आइ जोगियागिरी करनाहार सब त मैथिली भाषा के खंड विखंड मे बांटि सुताइ के देलकै आ मिथिला मैथिली के नाम पर ई सब अपन पेट पोसै मे लागल रहल. परिणाम की भेल मैथिली अपन मे बंटा गेल आ एकरा बंटनाहार कोइ पेटपोसुआ मैथिल सब छै जे अपना फायदा लेल मैथिली के देहातन रहल आ मैथिली साहित्य के कहिया समाज स नै जोड़लक आ नै एकरा कहियो वेगरता बुझलकै?

मैथिली भाषा के शुद्ध-अशुद्ध, पछिमाहा-दछिनाहा, मधेश-कोसिकन्हा, बाभन-सोलकन, अगुआ-पिछलगुआ, पुनुस्तानी-हाइकानी के

लोकतंत्र मे बाँटि देलकै आ आब स्वतंत्र करैत जे सबटा मैथिली छियै? आ लेखनी पुनुस्थान आयोजन बन मे मानक छैक?
अनका नाओ सालकेँ बना दुकानि दै छै किएक??
आस्ते आस्ते अंगिका, बज्जिका सब अलग भेल जा रहल अछि आ हेबाक कारण जनैत छी कि ने? ककरा बोली के ओही प्रयाससँ मैथिल भाषा नै देलकै? मात्र अकादमी पुनुस्थान, मैथिली विभागक नोकरी लेल, संयोजक पद दुआरे ओही सब मैथिली मानक के अपनी लेल। मैथिली भाषा के खंड खंड मे बँटैत गेल? आ सब दिन ओही प्रयाससँ सब गोधियागिनी खेला क भाषा साहित्य पर जबरदस्ती अपन कब्जा करने रहल? आ मिथिलाक जन समाज मैथिली सँ दूर हटैत गेल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.९.लालदेव कामत-महा प्रलयक लगीच ठोंक जनजीवन/ सामाजिक समाधान कँ नव दिशा देत उपन्यास/ कविवर वद्रीनाथ राय जीक मादे



लालदेव कामत-महा प्रलयक लगीच ठोंक जनजीवन/ सामाजिक समाधान कँ नव दिशा देत उपन्यास/ कविवर वद्रीनाथ राय जीक मादे

१

महा प्रलयक लगीच छैक जनजीवन

अपन बात कँ गद्य सँ अधिक राज किशोर मिश्र जी पद्य मे खूब मजगूति सँ राखैत छथि। हुनकर 2023 मेँ कहुना राखि प्रदूषण पर आधारित 20 गोट विभिन्न शीर्षक सँ कविता संग्रह "प्रलय - पाश " मैथिली पोथी 'क प्रकाशक - रचियता स्वयं छथि। ओहि 132 पृष्ठक रंगीन कागत मे बनल पोथीक दाम 250 टाका अछि। 62 वर्षीय कविवर श्री राजकिशोर मिश्र साकिन - अन्ठ ठीह (मधुबनी) भारत संचार निगम लिमिटेड कर मुख्य महाप्रबंधक (बिजली) पद सँ सेवानिवृत्त भेल छथि। ई अनेकों पुरस्कार प्राप्त कय चूकलाह अछि। हिनक मैथिली साहित्यमे दर्जनहनि पोथी छपल छन्हि। विशेषता: ई काव्य नवीस छथि,जे कि दसगोट पोथी छपा चूकल छथि। ओना एक पोथी " मंथन" आलेख संग्रह आ एक पोथी "अष्टदल " गल्प संग्रह प्रकाशित सेहो भेल रहैन। हिन्दी जगतमे श्री मिश्रा जी कविता विधाम अपन दसटा सँ बेसिय पोथी सेहो निकालने छथि। उर्जा-वर्धन ' खंड काव्य - 2019 मेँ वर्ल्ड बुक आफ रिकार्डस द्वारा 'उर्जा' पर पहिल हिन्दी काव्य घोषित कयल गेल छैक। तहिना सन् 2020 मेँ प्रदूषण ' खंड काव्य ' हिन्दीक इण्डिया बुक आफ रिकार्डस द्वारा - काम्प्रहिन्सिव टेक्स्ट आफ पाल्यूशन पर प्रथम हिंदी काव्य घोषित भेल छन्हि।

ओ बीच हिनक लिखल किछु मैथिली पोथी पढबाक सुअवसर भेटल हमरा। जाहिमे हम 'प्रलय - पाश' क चर्चा करय चाहैत छी। ओहि

पाथीक करैत, पृष्ठ सज्जा आ आउन नाक्ष शुद्धता लल हुनक पत्नि श्रीमती अनीता दती आउन सुपुत्री सुश्री शिउ मिश्रक कला आ टंकण कार्यक प्रति विशेष आकर्षण अनुराग कँ पतेख सकलौंह अछि। अपन भूमिका लिखेत कविवर महादय धनि ओ तनहुक सनाहनीय सहयोग लल प्रशंसा कयन छथि। ओहि भूमण्डल पन जनक जीव - जन्तु छैक ; सएक समउ एकटा महा विनाशकारी संकट अर्थात् खतना मंडना नरलोक अछि। प्रकृतिक असंतुलन सँ ओहि तनहुक जटिल समस्या एक प्रलयक नुयम प्रयउ हाइत जाइ छैक। एकन आरुट अकानि नाजकिशोन बाबू अपन कलमक नक्षान वढावेत माय मैथिलिक अउय रंतान कँ आता रनेक काज ब्यूयन्न तनहुँ कयलहि अछि। आ नव संदेश देत समष्टिक पनिशुद्धता ल आकुल दखाइत छथि। जौं समय सँ ओ संसान प्रदुषण मुक्त नहिं हायत ग मानवक संग- संग समस्त चन- चनाचन प्रताबित हाइत आक्रान्त रs उठत। ओ ज रयानहता स्पष्ट नुप सँ हिनक काव्यम पनिलक्षित रल हन् स समय सँ पूर्व समाजम एक गंरीन चतौनी करहल जा सकैछ। विश्व मानवकँ एक छातातन मानि ली ,आ छाताम तुन ठाम-ठाम हुअय ग नौदक किनीण अथवा वनखाक जलक चूबौठ सँ सगतन काना बाँचि पाएव? गहिना आकाश कन उाजान यनत ज अंगनीउक कनच सहित धनती कँ अपन दुष्यनिणाम पनावैगनि कीनीण कँ छिनयवेत जीव - जन्तु पन प्रतिकूल असैन पसानि नहलैक,जाहि सँ अनका तनहक ब्याधि उत्पन्न रं' नहलैक हुया। कवि चिन्तित नहि पाठक क सजग करैत सतत् जागनुक नहवाक खगोट बूमेत छथि। ओहि माद हिनक काव्य नचना अत्यन्त सौष्ठव आ शब्दक चयन निठाह दशज हाइछि। यथा- पाँति द्रष्टव्य अछि -:

..... ऐक्टनी सँ जरुन - मारुन वाला धूआँ ,
यसनल जाऽऽछ , प्रदुषक धुथुनमूरुँ ।
छागी रुाति - रुाति निकालऽ गल ,
यगालक ' यानि, कटु कप (गल ?
रुनक साहित्यिक याँगि समकालीन अर्थात् अजाद यद्वगिक रुाऽऽीग
छहि, ज सरुज वूमैम याOक नर्गकँ अवैग छहि। मौसम यनिनर्गनिक
कान(ढँ आव असमय वनखा वनसैग या आव समूहुना स्नेष्ठ नहिँ
नरुलैक । कवि रानधानाम गवैग छथि -
..... यियासल घांघा , सिगुआ , ताका
गाकि नरुल छै मघक नाट ,
यूना सूखल नरुलैक अनदना
नूसल छै मघ, (धन छै खाट ।
कवि ओरि गनरुक जर्जन कृय्यनसा दखि विक्कान क' उ(Oग छथि।
याँगि दखल जाओ -:
...... रुमना सरुक समयम सरुटा छलै शुद्व ,
रुवा, वसाग ,गुमि, जल , अन्न - यानि ,
कान सूख कँ अछि गाकि नरुल मनूक्क ?
सरुटा गs उनट वना नरुल अछि वानि ।
यर्यावनधक खुन यिवयम , लागल अछि ,नव सयगा ,
ओना म गs वाँचव मासकिल ,
काना क' जीव - जन्तु जीगा ?
मानव शनीनम 70% जल आ 30% दुनू नंगक नकक आंकआ या।
स ऽऽीनान - यारवनि ,धान - नदी ,नाला सवूटा प्ररुगनिग रुल छैक
। वानींन - वायाकलक ज यगाल सँ जलस्राग छैक ; कगीरु - कगीरु

ययजलम आर्सनीक ,स्लीक आ आयनन कन अधिक मात्रा सँ ययजल अशुद्ध छैक, ज नुक्षा वनद्दावेछ।
दुर्वाजा क अजा दखिजी, स्s गेल अछि मिनदिन्नी ,
शुद्ध यानि लल स्लिचन ,नहि गँs मिननल नाटन कीनी।
पृथ्वी दिनस यन स्मसव स्नसाल चिन्दा कनेग छी। खग - यथान आ गकन उयज लल खाद आ किटनाशक'क प्रयाग कयक किसान अधिक येदानान लल आशान्वित नस्छ। मूदा सविकस्ा सूआद आ गनकानी 'क गमक खम्र स' गेलैक अछि।
नसायन खाद खा - खा कय , वादल माटिक यट,
शक्ति साआद घटल जाऽ्गा अछि,अन्न स्sल ,आखट।
नव सयगा मँ घनलू कूटीन उद्याग,जगा-ठकी , सिलौ0 - वड़्ौटाक जगस् आव औद्योगिकनध,मशीनीकनध लन अछि।ओहि क सुख साधन अयनाओ कँ लाक सूस्त सस्ा स्लैक।
0ंठा कनय लल ओसी मशीन,
कs दैछ उाजान यनगम सून,
विनाश नूकाओल विकास म,
वनदान लन अछि स्मासून।
आऽ्ी नन प्रान्दन ,यस्ा७-य0ान ,सूगर्स आ पृथ्वीधनि यर्यावनध प्रनदूषध सँ कनाहि उ0ल छैक। आजक यनिवशम नगन सँ दस्ागधनि छ किछु दृष्टिम अवैग अछि,स प्रदूषध सँ प्रसगानित छैक।
गँ कनिक ऽ्ी याँगि मानवीय संवदनाक लल अपील कनेग छैक।
ओखनहू, प्रदूषध नाकल जाओ,
ज सृष्टि क' अनुदा खन जाओ।
मनूखक प्रदूषध वानग क0घानाम 0।८ कयल छैक। अन्नषधकर्ता आ

वैज्ञानिक बल विश्व मानव आधुनिक सग्राम स्वयंक रोगी व्यक्ति बनल छै। एन बन्दूक उपयोग आ उपयोक्ता'क नाते मनुष्य विज्ञान युगमे नीक तरहेँ जीवन यापन करैत अछि। ई विज्ञान जे एक चुटकी रोति माँटि नैंय बना पबैत अछि। विश्व आ मानवताक उद्घाषक कविवर श्री मिश्रजी ई धराधाम पर अवस्थित जड़ चेतन आ जलीय जीव जन्तुक ऊपर सन्निकट अवघात करय वाला पैघ-पैघ नाग सबहुँ के म अपन काव्य माध्यम नूतन ढंगे अनुप्राणित कयलाह। आस्था आ विश्वास क' तथ्यक गायन सँ हिनक काव्य अनुगुंजीत अछि। एहन अद्भुत परियास ल हुनक स्तुत्य अछि। आक्रान्त रोड उठता। इहो जे रोयानहता स्पष्ट रूप सँ हिनक काव्यमे परिलक्षित होइत हुए स समय सँ पूर्व समाजमे एक गंभीर चौनी कहल जा सकैछ। विश्व मानवकेँ एक छातातर मानि ली ,आ छातामे पुन ठाम-ठाम छुअय तँ चौदह किरीच अथवा बरखाक जलक बुँदो सँ सगतर काना बाँचि पाएब? तहिना आकाश कर उजास परत जे अंतरीक्ष करत सहित धरती कँ अपन दुष्परिणाम परावैगनि कीरीच कँ छिनयबैत जीव - जन्तु पर प्रतिकूल असैत पसारि रहलैक,जाहि सँ अनेकाँ तरहक व्याधि उत्पन्न भ' रहलैक हुआ। कवि चिन्तित नहि पाएक क सजग करैत सतत् आगन्तुक रहवाक खतरोटा पूर्णत छथि। एहि मादे हिनक काव्य रचना अत्यन्त सौष्ठव आ शब्दक चयन निठाह देखल जाइछ। यथा- पाँति द्रष्टव्य अछि -:

..... ऐङ्गनी सँ जहन - मादुन वाला धूआँ ,
पसरल जाइछ , प्रदुषण धुधुनमुहाँ ।
छाती फाटि - फाटि निकालए तेल ,

यगालक ' यानि, कद्दू कप्न (गल ?
हिनक साहित्यिक याँगि समकालीन अर्थात् अजाद यद्धगिक हां्ङीग छथि, ज सहज वूमेम या0क नर्गकँ अवैग छथि। मौसम यनिर्नगिक कान(ढँ आव असमय वनखा वनसैग या। आव समूहना स्नेह्न नहिँ नहलैक। कवि हानधानाम गवैग छथि -
..... यियासल घांघा , सिगुआ , उका
गाकि नहल छै मघक नाट ,
यूना सूखल नहलैक अनदना
नूसल छै मघ, (धन छै खाट ।
कवि ओहि गनहक जर्जन कून्यनस्था दखि विक्षान क' उ(0ग छथि। याँगि दखल जाओ -:
...... हमना सरक समयम सरटा छलै शुद्ध ,
हना, वसाग ,गुमि, जल , अन्न - यानि ,
कान सूख कँ अछि गाकि नहल मनूक्ष ?
सरटा गs उनट वना नहल अछि वानि ।
यर्यावनक्ष'क खून यिवयम , लागल अछि ,नव सयगा ,
ओना म गs वाँचव मासकिल ,
काना क' जीव - जन्तु जीगा ?
मानव शनीनम 70% जल आ 30% दुनू नंगक नकक आंकउा या। स ङीनान - याखनि ,धान - नदी ,नाला सवूटा प्रदाषित हल छैक । वानींन - वायाकलक ज यगाल सँ जलस्राग छैक ; कगौह - कगौह ययजलम आर्सनीक ,हलीक आ आयनन कान अधिक मात्रा सँ ययजल अशुद्ध छैक, ज नूक्षा वनहावैछ।
दूर्नाजग क अजग दखिऊ, हs (गल अछि मिनहिन्नी ,

शुद्ध यानि लल स्किुन ,नहि गँs मिननल नाटन कीनी।
पृथ्वी दिनस यन स्मसव स्नसाल चिन्धा कनो छी। खग - यथान
आ गकन उयज लल खाद आ किटनाशक'क प्रयाग कयक किसान
अधिक येदानान लल आशान्वित नस्छि। मुदा सविकल्प सुआद आ
गनकानी 'क गमक खम्र स' गेलैक अछि।
नसायन खाद खा - खा कय , वादल माटिक यट,
शक्ति साआद घटल जाऽऽग अछि,अन्न स्sल ,आखटा।
नव सयगा मँ घनलु कुटीन उद्याग,जगा-ढकी , सिलौ0 - वद्धीटाक
जगस्व आव औद्योगिकनध,मशीनीकनध लन अछि। ओहि क सुख
साधन अयनाओ कँ लाक सुस्फ सस्प स्लैक।
0ंढा कनय लल ओसी मशीन,
कs दैछ उजान यनगम स्न,
निनाश नृकाओल निकास म,
ननदान लन अछि स्मासुन।
आऽऽी वन प्रान्धन ,यस्ा७-य0ान ,स्गर्स आ पृथ्वीधनि यर्यानिनध
प्रनदुषध सँ कनाहि उ0ल छैक। आज्ञक यनिवशम नगन सँ
दस्गाधनि छ किछ दृष्टिम अवो अछि,स प्रदुषध सँ प्रस्गानित छैक।
गँ कनिक ऽऽी याँगि मानवीय संवदनाक लल अयील कनो छैक।
ओखनहु, प्रदुषध नाकल जाओ,
ज सृष्टि क' अनुदा खन जाओ।
मनुखक प्रदुषध वानग क0घानाम 0ाढ कयल छैक। अन्नषधकर्ता आ
वैस्नानिक नल निश्व मानन आधुनिक सयगाम स्नयंक स्गगी द्यक्ति
वनल छी। स्न नस्फुक उयस्गग आ उयस्गक्ता'क नाग मनुष्य निस्नान
युगम नीक गनहुँ जीनन यायन कनो अछि। उा निस्नान ज ओक

चूटकी भरि माँटि नँय बना सकै अछि। विश्व आ मानवताक उद्घोषक कविवर श्री मिश्रजी ओ धराधाम पर अवस्थित जड़ चेतन आ जलीय जीव जन्तुक ऊपर सविकट अवधारण करय वाला घोघ-घोघ भाग सन्दर्भ मे अपन काव्य माध्यम नूतन ढंगे अनुप्राणित कयलाह। आस्था आ विश्वास क' तथ्यक गायन सँ हिनक काव्य अनुगुंजीत अछि। एहन अद्भुत परियास ल हुनक स्तुत्य अछि

२

सामाजिक सरोकार कें नव दिशा दैत उपन्यास

सद्यप्रकाशित श्री नरेन्द्र नारायण मिश्र जीक सामाजिक उपन्यास " हम आबि गेल छी" हालहिमे पढ़लौंह अछि। एहि 140 पृष्ठक मैथिली भाषाक पोथी कें डा स्वयं प्रेरक नाथ (उ०प्र०) सँ 2021 ई०मेँ प्रकाशन कयलन्हि,जाहिक दाम 200 टाका छैक। पोथी 'क आवरण आकर्षक य ज पर्यावरण कर मनोरम दृश्य वृक्षादि छ। आखरि करैत पर नरेन्द्र बाबूक रंगील हाथ स्पष्ट लागल छै,आ एहिठाम उपन्यास मेँ महत्वपूर्ण तथ्य कें अंश पाठकक अपन आवरण दिश ध्यान खिंचैत अछि।
मधुबनीक अन्तर तीर सँ दु गोटय सेवानिवृत्त नरेश मातृभाषा'क प्रति विशेष कय लेखन-रचना उपक्रम खूब वेश सक्रिय छथि। एक श्री राजकिशोर मिश्र जीक काव्य सौष्ठव बड़ दिव्य भाय छन्हि,तँ दोसर श्री नरेन्द्र नारायण मिश्र जीक कथात्मक अभिव्यक्ति। 70 शालक

अशोथकिन उमनम जेवन वृद्धयुवानक प्रति कलयुगी पुत्र -पुत्रीक व्यवहार पर कलम चलावैत सामाजिक तानावाना कोना टूटि रहलैक से आख्यासलनि अछि। सब सँ वेशी प्रवीण करैत छैक, शिर्षक कन छी नाञ्ज " हम आबि रहल छी " ! उपन्यासक नामकरण कँ सामर्थ्यं करबाक जे अद्भुत सलकैत छै,एकरा पाँति पाकब सहज नहिं। यठाकु लल उत्सुकता बढ़ावैत ननिहु नानायक जी पहिल पनान सँ बढ़वैत-बढ़वैत पनान 27 धरि घींचलनि अछि। डाना औपन्यासिक जाना पाठक अंतिमम मूर्धन्य विद्वान प्रारूसन (डॉ ०) रीमनाथ साक मनादगान धनिक कथन पृष्ठ 138-139 पढ़ला पर संतोष पाठकक होइछी छैन। ओहि दुखान्त कथाक आनंद आ अन्त अप्रान्द संवेदनशील छैक। ननिहु बाबूक दर्जनां मैथिली उपन्यास वहना चूकल छथि। अनकां मैथिली रामाक उपन्यासकार रूलाह अछि ; मुदा हिनक कथ्य शिल्प सबसँ पृथक रहैत छथि। उपन्यासक नावकनाक सौंदर्य बाध दहाती आ शहरी जीवन मँ आयल उतान - चढ़ाव सँ व्यक्तिगत नूयँ सब पात्र मँ निखान आनैत छैक। उपन्यासक विन्यास नीक लगैत आगुक तथ्य जानवाक उत्सुकता पाठक बीच पैसैन रहनाछी ननिहु नानायक जीक विशेष कला थीक। सहज समान्य पाठक जे नाञ्ज कँ एकवास अथवा क किनका लल छी नाथी रखै छथि, से गहींनयन सँ पता कनव 'हम ए अहीं लग आबि रहल छी' जीवटपन होउना। दुखित कथाक आनंद सहदनजंग अस्पताल सँ आ समाप्ति गंगोत्री मँ त्रिवि छुहलीला खतम होइछी सँ छै। दनरंगा लगक हनिआनी गामक बावा सनानिवृत्त हृतमासुन आ सकनवान निवासी गंगा - आउटा बालक जे दिल्लीम शंकन,उाकन संगी दीया आ दीपहु क तनीघटी पूर्व सँ जनैत छैक। उा तीनू एक

कम्पनीक स्थारु थिकैक। शंकर पिताजी कँ गाम सँ रानम वजा लेन छै आ अपन दुपहनम गोआ जाऽऽी ल तना सँ निकैल जाऽऽीअ। नूमम असकन वूढ़ाक हर्निया कन दर्द उखैन जाऽऽीछ। वहाश हालगिम पूष्य निहान सक्रन अक सँ सरूदनजंग हॉस्पिटल किया ऽऽलाज ल वत यन यूंगेन नरुया। उानय रुान यन वावूक यूप्र खवन कनैन छैक ,जहाजक उआन नइ रुलासन्धा गाम आवि गेलौंरु। स उा गँ अक वरुन्ना वनाअल गेल छलैक। गामक मूखिया सँ दस लाख टाकाम तीरु सहिग सव जछा जगरुक यकिया ववनामा कागज जाली रुस्फाउन सँ वनौन नरुया। यनाकय गंगा संगे गाम आवि वूढ़रुा वटी ताक्रन निशा कँ कलकफा रुौन सँ सव खनरुा वनावैन छथि। रुनकन यिगियौन रुाय उाकिल सारुव सान्फनना अनथ दैछ , यनंव उाकना मानम मूखिया आ उे सनानिवृफ मास्टन सारुव सँ 0कयनी कनवाक उक्कं0। प्रनल रुखवाक दृश्य स्पष्ट रुखल गेल अछि। गामक नीर्थ जात्री सव संगे ज गंगोत्री क' चर्चा कलनि स आना यनिष्कान हाऽऽग। उागय खनाव मौसम सँ यरुाउी ऽऽलाकाम संकट उयस्थित हाऽऽछ। धूऽऽनिम गंगोत्री नहागि वूढ़ी 0ढि सँ थनथाऽऽग जल वार्मिकाल खसि यनैन छथिन,जलधाना सँ अगमम रुासैन जाऽऽीन सव रुखलक। धनि यूनौरु ल अक निशानीयटी यगिदन कँ ऽऽीमानग द' गेलथिन। वटा विन् वियारु धौनवी नूयं अक निशा क्रिश्चियन कँ तनाम नखैन या। स निदश (अमनिका) जा नौकनी कनैन य, आ शंकर कँ सहा उागय वजाकय धाखा दैन अक अंग्रेज क नियदृगि कनियाँ वनि जाऽऽछ। वटा गँ वटा ,वटिया सँ यान लगाउल सक्र नहिं हाऽऽीछ। कलकफा मँ अपना तना यन रुंटघाट गकम वटी - जमाय आ नातीन सँ कमारुैन। स लनय - लनय

मनापागी हास्पीटलमे राखि दैछ। ओतुका डाक्टर साहेब हुनका स्वस्थ पाबि एक मास पर छुट्टी करैत, गंगाक संग धराबैत गाम पठा दैछ। गामक पुश्तैनी घर आ ओसारा पर वकील कँ अधिकार पूर्वक विराजमान देखि अचरज मे मुखियाजी पड़लाह। बूढ़हा पत्निक कहेब कँ मान पाति पुत्र माहेम पड़ैछ। गंगा अपन माय बाबूक श्राध कर्म ,राजसाग सम्पन्न कय हान कएला गँ बाजि आइ नहुन बाग र' जाए छैन। मान हलुक नहुन नीक जाइग हुनाए छैक। ओङ्गिन र' छनी हाथ म लैग आवश्यक कागपात संग नखैग तीरुथन सँ निकैल पठैग छैथ। पराकागम गंगा सँ रंटनार्गा 'क दृश्य अबैछ। किया बजा नहुल अछि ई बजैग मास्टर जी मटकानिक आगु बढ़ बाहैग छै, गँ गंगा सह नायकक नूपम पाठकक दृष्टिगोचर हायग। संग दुनू गोटय कँ ओहि गंगोत्री धनिक यात्रा देखाओल गेनाई मिथिलाक संस्कृति आ संस्कार कँ परिलक्षित कयल गेल छैक। पंटी कँ जलप्रवाह करय सँ पूर्व मनाहुन जी दु लिहाहा जबी सँ निकालि सुमम्माबैग गंगा कँ कहैग देखाएल गेल जे दस लाख टकाक बैंक ड्राफ्ट मुखिया लल आ अपन जगहजमीनक सहमति पत्र नूतन प्रराग वृद्धाश्रम ,बंगलागढ़ दनिरंगा ल लल जाऊ। अहाँक सनारान आ ईमानदारी पर गर्व होइछ। स्नान करैत बूढ़हा त्रिवेणी संगम मँ धसधसाए गेलाह। एकरक निहारैत गंगाधन कँ हठात् एक महात्मा जी माथठाकि आशिष देग संतोष देग छैन-जाऊ हिनक गंगालाए सँ सद्गति सबसँ नीक रहलनि। सैकतां वृधाश्रमक लोकम ई जनाब पराऊनूयँ हाई सँ पहिल ,निऊिफ मालिक कँ एकमन ओगनाधिकारी नारीन दीयाक मारन दुर्घटना मँ दुखद अंग रहल छलैक। आइक पूनानगी ना प्रौढ़ अपन रागरंगिमाक स्मिता

जनिजाग हाथे बहुकि नाखि, जन्मदाता कँ काना आयग्दिजनक ग्रवहार करैत अछि; ई सूचनात्मक संदेश मैथिली साहित्य आन्दोलन सँ मिश्र जी उपन्यास गढ़ि क देलनि।हम हुनक हार्दिक अभिनन्दन करैत छियैन।

३

कविवर बद्रीनाथ राय जीक मादे

कविवर बद्रीनाथ राय " अमात्य" जीक पाँच दर्जन काव्यक मैथिली पाथी " टटका गेयात्मक कविता" मेँ एक शिर्षक ' गेयात्मक नव कविता ' सँ अधर्ङ्गाक धनि देखलौं_पढलौंहे। श्रीराय जीक कविता वस्तुत: मंचीय - गेयात्मक बुझाइछ। मिथिलाक किछु गीतकार अपना अंदाजमे एहि सँ गौरव छथि। हुनक काव्य रचना अत्यन्त सौष्ठव रहल छन्हि। प्रस्तुत पाथी 'टटका गेयात्मक कविता ' संग्रहमे रागक अविरल आउर अजस्रधारा प्रवाहित रहल या। कलाक विचार राग नैयका आ मौलिक दृष्टिगत हाइछ। हुनक कविता कँ सम्पूष्टि देत अनका कविजनक लघु आ दीर्घाकार कविता सँ मूलरूप तुलना कयल जा सकैछ। एक शिर्षक सँ दीर्घ अथवा खंड काव्य अनकां कविजीक छन्हि,यनंच साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता प्राप्तसन (डा0) ऽछु कान्त मा जीक कोका कविताक शिर्षक 'क नाउ एक छन्हि। मुदा ताहु सँ दु डेग आगा आगु बढि हुनक रहल अछि। पाठक कँ विविध शिर्षक सँ कविता पढहय मे आउत , जाहिमे रस अलंकार आ छंद लालित्य बुझाएत। एहि पाथीक हाथ

लगेवाक मान रहल ज आश्च:उयनान्द मिश्र यठजेय विना नूकि नै सकैत छी। ओहि निहितार्थ ननथ साहित्यकान श्री नह्न विलास नाय जीक समीजात्मक गथ्य सङ्ग यृष्टि कनैत छैक। स्वयं वद्रीनाथ वावू अयन अहिमत सँ कविताक नवना संदर्भ मँ सांगोयांग व्याख्या कयनहि छथि।गाहि सँ या0कवर्ग कँ कविताक नावकता सङ्ग सहजं वुझिम आवि जाएत। समसामयिक विषय यन याँति गनहैत नायजी निमग्न र' गवैत छथि। यथा याँति रखल जाउ :-

यालक यनम क(0ान रहल अछि,
मूदा विकासक (गान रहल अछि।
अयन नाहल गीसी गीमन ,
नानगन कनूगन जान रहल अछि।।

मिथिलाक समृद्धि गखन हाएत जहन एतुका सर्वहाना वर्ग 'क लाकक वनाजगानी खम हाय :-

हकन कनऽऽए मिथिला धनगी ,
जनमानस लाचान वहैत छै ।
वाउ विकाश विलम्ब झनि कनियौ ,
खाली हाथ वकान वहैत छै।।

मिथिलाम मैथिली'क नाम यन किछ जनदगन अयना वर्ग आ जाति'क नहिँ ,ननन् विन् यनवाह कयन अयन (गातिया आ (गाधिंयायनिक चलाकी सँ एक गुट 0ाठ कन छैक।गाहिक नर्वस्ननादी संस्कृति यन व्यंग कनैत कवि याँति लिखन छथि -:

माला मंच माऽऽकम मिथिला,
माथम चाही ललका याग ।
आव सुधनि जा निर्लज्जा गूँ ,

गन्हन गन्हन लगलौ दाग ।।

मंच- माइक- माला यहिन खुव निगनाइग, यशस्री वनैग ,दीयक इजाग यसानवाक आकर्षक यनी दखु गँ अन्हान आ हहाकान कन छै । स व्यक्तिगग जीवनम कनक यश वटानन नहनाय मनूखग हैग! गँ कनि कटाऊ कनैग इी यांगि दलनि -:

लाग खाइगम उमन विगल छौ

गानि सूनैम यकलौ कस ।

गङ्गा क गुँ ग्याग यगिहा

दहम नऊ छौ लाजक लश।।

स्थानीय नागनिक कँ विशेष कय लखकीय काजमँ लागल कलमवीन कान दु गुट - एक नामयंथ गँ दासन दक्षिण यंथम वँटल दखल जाइछ,स हृदयनी मानसिकगा आधान यन वँटल वृक्षाइछ। मूदा संगुष्टि कगौ नै न छैक? यथा-:

नाजनीगिक दलदल क कानण,

सवहक मनम नान वहूग छै ।

अयना मनसँ सव सिद्ध छै ,

दखलहुँ सुस्खल धान वहूग छौ।।

मिथिलांचल प्रायः नौंदी (अकाल) आ नाढिम ग्रस्ग नहैग छैक। सनकान दिशसँ सनकानी कर्मी आ ग्रि-स्गनीय यंचायगी नाज क' जनप्रगिनिधि नाहग सूची लाभार्थी लल वनावयम धान अनियमिगगा कनैग खुव धन उकानैग छैक। निगनानी जाँच दल सहा नायम मालामाल हाइीछ,आ हाथी गँ दहा जाइछ मूदा चीनै दु वुँन जल विना वंचिग नहि जाइछ। एहि मार्मिक दृश्यक चित्र खींचैग कवि समानगाक लल वकल दखाइीछ। यथा-:

चास वास संसाधन नहिएहुँ
सब कनहायन रान वहुन छै।
यीय७ याखनि क माजन नञि
छाँनहीनटा गान वहुन छै ।।
छै समाजम वहुन निषमता
ग्रष्टाचान निकान वहुन छै ।
किछ्७ क चूननी मलमल छै
वाँकि लाक उघान वहुन छै ।।

अयन कनिताक उययागिता माद कनिजी घाषणा कनैत छथि। यथेष्ट यढल- लिखल आ अरुसन वनल मिथिलाक वटा ज शहुन नगनम नहि यैघोन माउन छथि स आव गाम घनक मैथिल सन मैथिली वजनिहान नहिँ छथि। उा आव अयन यनिवानिक धियायुता सँ अंगनजीय हिन्दीम वार्तालाय कनैत अयना कँ श्रेष्ठ वूसैछ आ मिथिला मंच यन मैथिली लल नान वहुवैत नंगल नढिया वनल दखाञ्छीछ,स ज यांतिम स्यष्ट लौकैत य -:

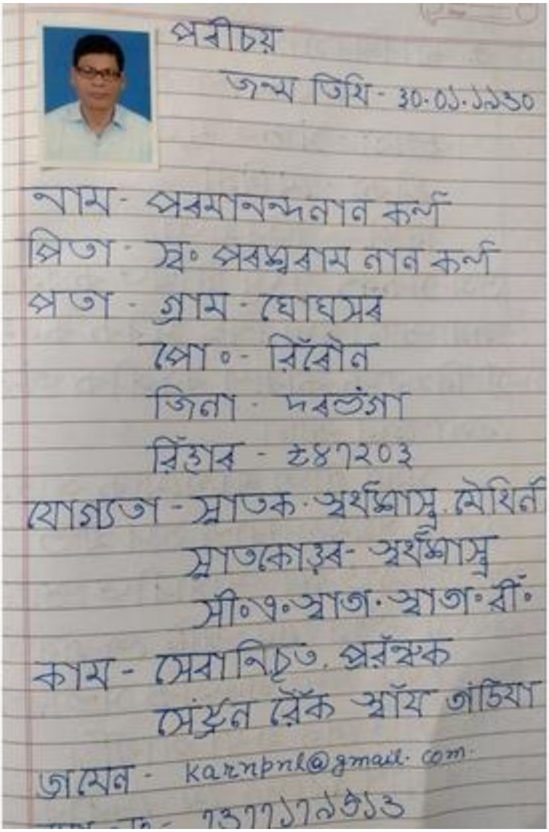
माँ मैथिली हमना कहलनि -
ज यून छथि यढल - लिखल नञि,
खुव उा दलनि सम्मान ।
यून हमन ज यढल लिखल छथि ,
माँ नँय वूसलनञ्छ , वूसलनि आन।।

मैथिली साहित्य आन्दालन मेँ हिनक यागदान लल हम अहिदुन छी। दिव्य - दृष्टि मैथिली राषा यथीम सहा हिनक काव्यक वर्चा हम कयन नहा ; सहा हुनक जन्मदिन 'क सुअनसन यना ञ्छनि।।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.१०.परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य

परमानन्द लाल कर्ण- गीता माहात्म्य

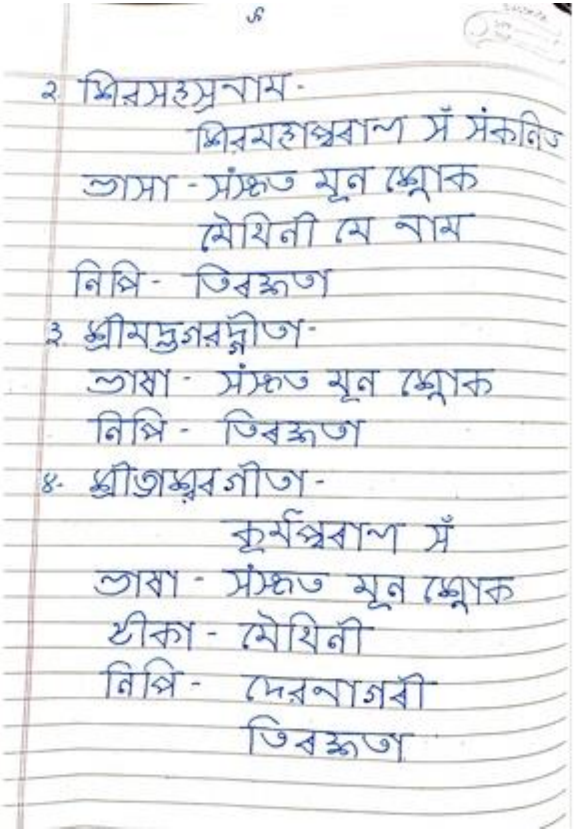

karnpnl@gmail.com

ॐ

আদৰণীয় সম্পাদক গণ
বিদেহ
সপ্রেম নমন

হম অপনেক আভাৰী ছী জে অহাঁ
বিদেহ পাক্ষিক পত্রিকা ভেজৈত ছী।
সেৱানিবৃত্তিক উপৰান্ত কিছু আধ্যা-
ত্মিক পোথী পঢ়বাক ইচ্ছা ভেল।
তিৰহুতা মে একৰ অভাৱ মহসুস
ভেল। তইঁন হম কিছু সংকলন
কৰবাক প্রযাস কএনহু অছি জে
নিম্নবৎ অছি।

১. শিৱ স্তুতি সংকলন-
স্তুতি সং০-৪১.-মহাপুৰাণ সঁ
ভাষা- সংস্কৃত মূল শ্লোক
লিপি- দেৱনাগৰী, তিৰহুতা


२ शिवसहस्रनाम -
शिवमहापुराण सँ संकलित
भाषा - संस्कृत मूल श्लोक
मैथिली मे नाम
लिपि - तिरहुता
३. श्रीमद्भगवद्गीता -
भाषा - संस्कृत मूल श्लोक
लिपि - तिरहुता
४. श्रीईश्वरगीता -
कूर्मपुराण सँ
भाषा - संस्कृत मूल श्लोक
टीका - मैथिली
लिपि - देवनागरी
तिरहुता

৩. শ্রী শিব গীতা

- পদ্মপুরাণ উত্তর খণ্ড

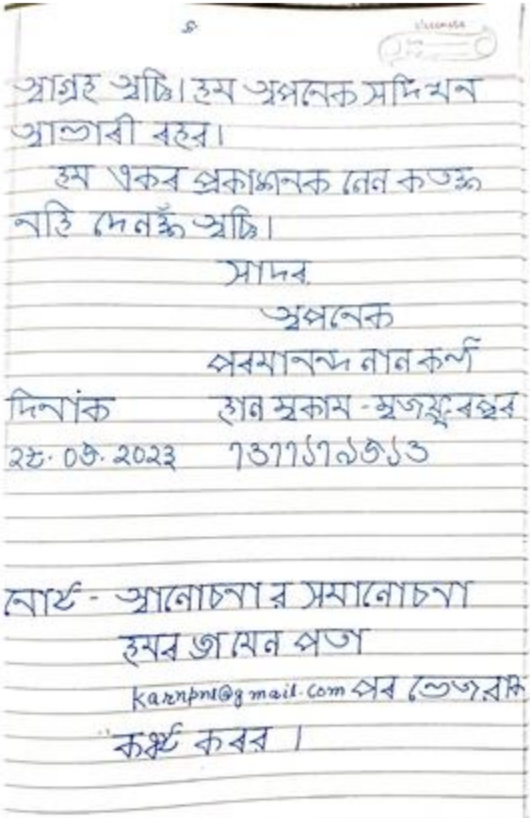
ভাষা - সংস্কৃত মূল শ্লোক

টীকা - মৈথিলী

লিপি - তিরহুতা

উক্ত সংকলন সুহস্তু লিখিত কএল গেল অছি। মুদা নিম্ন সুবক কলম সঁ লিখবাক কারণে কাপীক অংক লেপা গেল অছি।

সংলগ্ন গীতা মাহাত্ম্যক পহিল অধ্যায় পদ্মমহাপুরাণ উত্তর খণ্ড অধ্যায় ১৭৬ পর আধারিত অছি। প্রয়াস কএল গেল অছি জে গলতী নহি হোয় মুদা গলতীক সংভাবনা অছি তাহি লেল ক্ষমা প্রার্থী। একর শ্রেয় বিদেহ মে দেবাক



আগ্রহ অছি। হম অপনেক সদিখন
আভারী রহব।
হম একর প্রকাশনক লেল কতেক
বতি দেনহুঁ অছি।

সাদর
অপনেক
পরমানন্দ লাল কর্ণ

দিনাংক — হাল মুকাম - মুজফ্ফরপুর
২৫.০৫.২০২৩ — ৭৩৭৭১৭৯৫১৩

নোট - আলোচনা র সমালোচনা
হমর জামেন পতা
karnpml@gmail.com পর ভেজবাক
কষ্ট করব।

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒑𑒝𑒹𑒬𑒰𑒨 𑒢𑒧𑓁

𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨

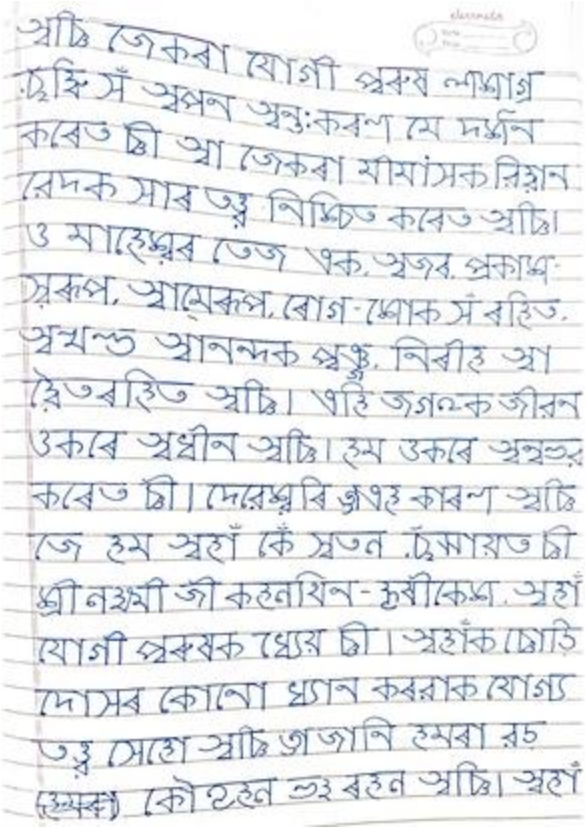
𑒣𑒰𑒩𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒖𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒁𑒯𑒰𑒿
𑒮𑒥 𑒞𑒞𑓂𑒫𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒞𑒰 𑒕𑒲. 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏 𑒏𑒵𑒣𑒰
𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒮𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒱𑒞 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼
𑒡𑒩𑓂𑒧 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒧𑒱𑒪𑒪 𑒖𑒹 𑒮𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒏
𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒃𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒹𑒫𑒹𑒬 𑒂𑒥
𑒯𑒧 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒞𑓂𑒧𑓂𑒨 𑒮𑒳𑒢𑒋 𑒔𑒰𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲
𑒖𑒹𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰 𑒮𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒯𑒩𑒱 𑒧𑒹 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱
𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

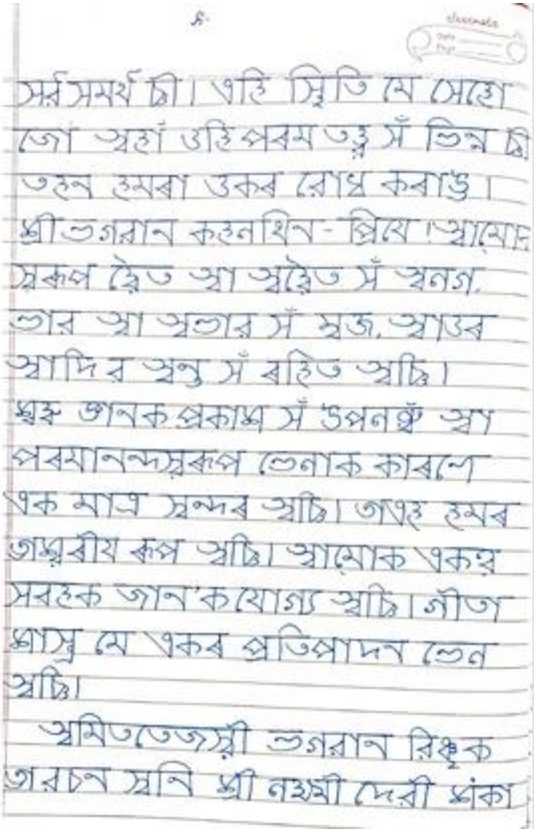
𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒫𑒱𑒑𑓂𑒩𑒯
𑒁𑒪𑒮𑒲𑒏 𑒤𑒴𑒪 𑒮𑒢 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒁𑒕𑒱.
𑒣𑒏𑓂𑒭𑒲𑒩𑒰𑒖 𑒑𑒩𑒳𑒛𑓃 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒫𑒰𑒯𑒢 𑒁𑒕𑒱
𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒮𑒿 𑒏𑒐𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒔𑓂𑒨𑒳𑒞
𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒬𑒹𑒭𑒢𑒰𑒑𑒏 𑒬𑒨𑓂𑒨𑒰
𑒣𑒩 𑒬𑒨𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢
𑒧𑒯𑒰𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳𑒏 𑒯𑒧 𑒅𑒣𑒰𑒮𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲।

𑒋𑒏 𑒥𑒹𑒩𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒥 𑒠𑒻𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒢𑒰𑒬𑒏 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒭𑓂𑒝𑒳 𑒬𑒹𑒭𑒢𑒰𑒑𑒏 𑒩𑒧𑒝𑒲𑒨 𑒂𑒮𑒢 𑒣𑒩 𑒮𑒳𑒐𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒰𑒖𑒧𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒞𑒰 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒂𑒠𑒩𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒏𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢।

𑒬𑓂𑒩𑒲𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒖𑒲 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 - 𑒦𑒑𑒫𑒢, 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒥 𑒖𑒑𑒞𑒏 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒌𑒬𑓂𑒫𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒅𑒠𑒰𑒮𑒲𑒢 𑒦𑓄 𑒋𑒯𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒲𑒩𑒮𑒰𑒑𑒩 𑒧𑒹 𑒢𑒲𑓀𑒠 𑒪𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒕𑒱?

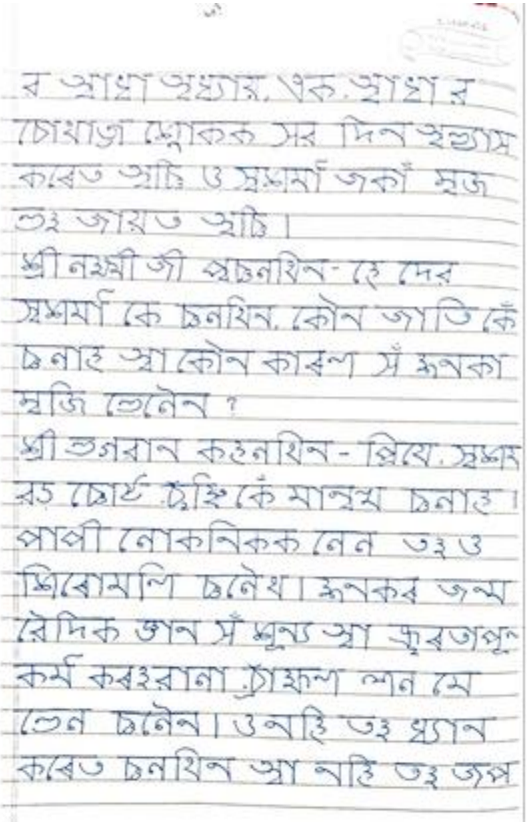
𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒢 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒮𑒳𑒧𑒳𑒐𑒱! 𑒯𑒧 𑒢𑒲𑓀𑒠 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳 𑒞𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒩𑒝 𑒏𑒩𑒨𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒯𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒞𑒹𑒖𑒏 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒠𑒹𑒫𑒱 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒞𑒹𑒖

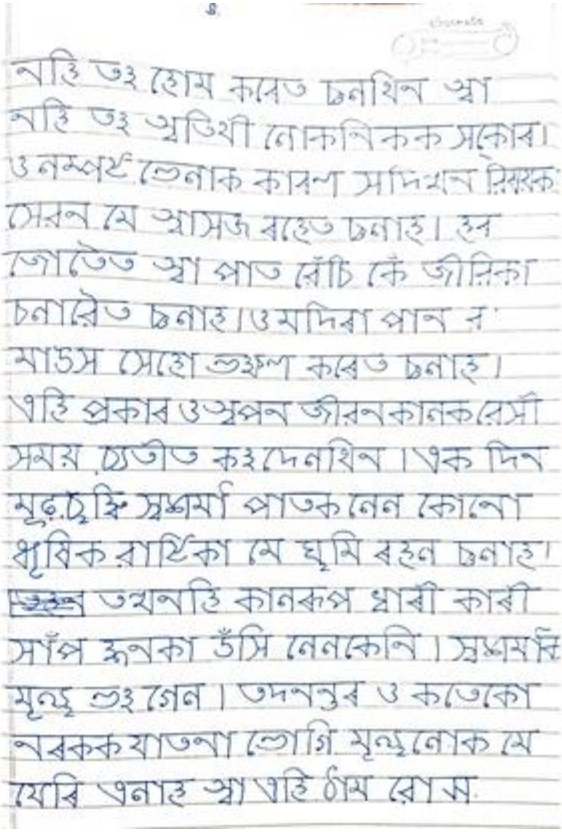


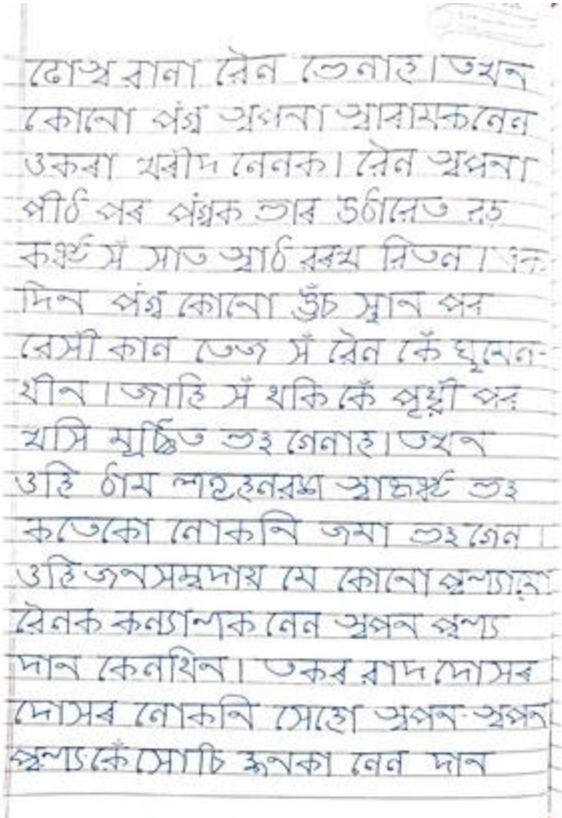

সর্বসমর্থ ছী। এহি স্থিতি মে সেহো
জো অহাঁ ওহি পরম তত্ত্ব সঁ ভিন্ন ছী
তহন হমরা ওকর বোধ করাউ।
শ্রীভগবান কহলথিন- প্রিয়ে! আমার
স্বরূপ দ্বৈত আ অদ্বৈত সঁ অলগ,
ভাব আ অভাব সঁ মুক্ত, আওর
আদি ব অন্ত সঁ রহিত অছি।
শুদ্ধ জ্ঞানক প্রকাশ সঁ উপলব্ধ আ
পরমানন্দস্বরূপ ভেলাক কারণে
এক মাত্র সুন্দর অছি। অওহ হমর
ঐশ্বরীয় রূপ অছি। আমোক একত্ব
সবহক জানক যোগ্য অছি। গীতা
শাস্ত্র মে একর প্রতিপাদন ভেল
অছি।
অমিততেজস্বী ভগবান বিষ্ণুক
বচন সুনি শ্রী লক্ষ্মী দেবী হুনকা

𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢-𑒦𑒑𑒫𑒢, 𑒁𑒣𑒢𑒹𑒏
𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠𑒧𑒨 𑒂𑒋𑒩 𑒧𑒢-
𑒫𑒰𑒝𑒲𑒏 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒢
𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒋𑒏𑒩 𑒥𑒼𑒡 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒞
𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩 𑒉𑒯𑒱 𑒮𑒢𑓂𑒠𑒹𑒯 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒠𑒴𑒩
𑒏𑒩𑒴।

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢- 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒴, 𑒯𑒧
𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞
𑒕𑒲। 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒧𑒳𑒿𑒯
𑒠𑒬 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒬 𑒦𑒳𑒖𑒰, 𑒉𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨
𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒠𑒩 𑒂 𑒠𑒴 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒩𑒝 𑒏𑒧𑒪
𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒴𑒣 𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒢𑒴। 𑒉𑒯𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒚𑒰𑒩.
𑒁𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒰𑒓𑓂𑒧𑒨𑒲 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲𑒨 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱
𑒮𑒧𑒗𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒄 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒿 𑒧𑒯𑒰𑒢
𑒣𑒰𑒞𑒏 𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒰𑒬 𑒏𑒩𑒨𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱।
𑒖𑒹 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒑𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒉𑒏

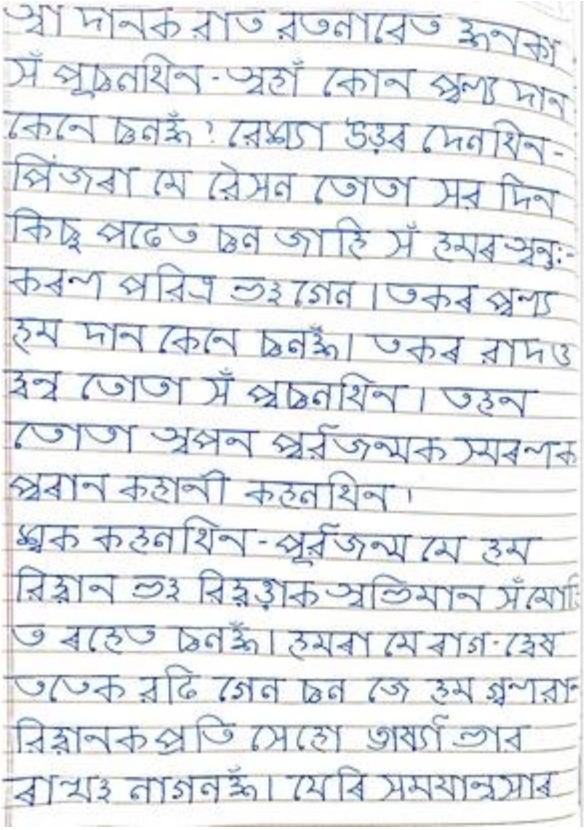




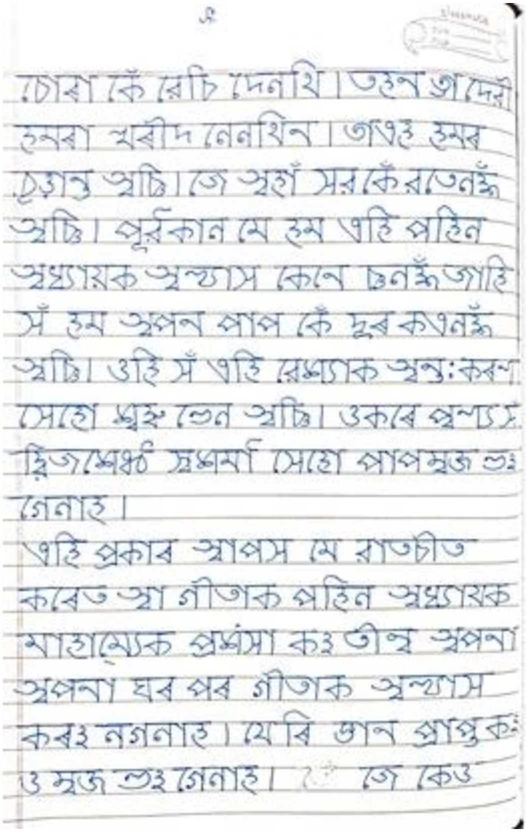


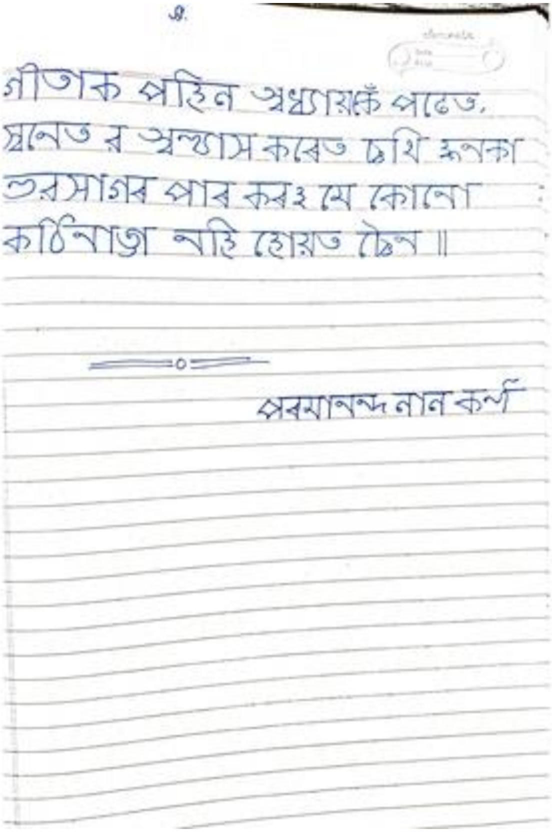
ঢোখি ৰানা ৰৈন ভেলাহ। তখন
কোনো পংখ অপনা আৰামকলেল
ওকৰা খৰীদ লেলক। ৰৈন অপনা
পীঠ পৰ পংখক ভাৰ উঠৌলে ৰহু
কষ্ট সঁ সাত আঠ বৰখ বিতল। এক
দিন পংখ কোনো ঊঁচ স্থান পৰ
বেসী কাল তেজ সঁ ৰৈন কেঁ ঘুমেল-
থীন। জাহি সঁ থকি কেঁ পৃথ্বী পৰ
খসি মূৰ্চ্ছিত ভই গেলাহ। তখন
ওহি ঠাম লগ্হইলৰম্ভ আকৃষ্ট ভই
কতেকো লোকনি জমা ভই গেল।
ওহি জনসমুদায় মে কোনো প্ৰত্যাৰা
ৰৈনক কল্যাণক লেল অপন অংশ
দান কেলথিন। ওকৰ বাদ দোসৰ
দোসৰ লোকনি সেহো অপন-অপন
অংশকেঁ সোচি ৰুনকা লেল দান

কেলথিন। ওহি বীচ মে এক গোট
বেশ্যা সেহো ঠাঢ় ছলথিন। হুনকা
অপন পুত্রক প্রতি নহি ছলনি জেহো
সব লোকনি কেঁ দেখা-দেখী বৈনক
লেল কিছু ত্যাগ কেলথিন।
তদনন্তর যমরাজক দূত মরল প্রাণী
কেঁ পহিনে যমপুরী লঽ গেলথিন। ওহি
ঠাম বিচার কএল গেল জে ওহি বেশ্যাক
দেল গেল পুণ্য সঁ পুণ্যবান ভঽ গেল
অছি তেঁ হুনকা ছোড়ি দেল গেল। ফেরি
ও ভূলোক মে উত্তম কুল আ শ্রীনযজ
ব্রাহ্মণক ঘর মে জন্ম লেলাহ। তখনহু
হুনকা অপন পূর্বজন্মক বাত স্মরণ
মে ছলেন। কিছু দিনক বাদ অপন
অজ্ঞান কেঁ দূর করবাক লেল কল্যাণ
তত্ত্বক জিজ্ঞাসু ভঽ ও বেশ্যা লগ গেলথিন



हमर मृत्यु भऽ गेल आ हम कतेको
घृणित लोक मे भटकैत रहलहुँ।
तकर बाद एहि लोक मे अएलहुँ। सद-
गुरुक निन्दाक कारण तेलिक घर मे
हमर जन्म भेल। पापी भेलाककारने
छोट अवस्था मे हमर मायबाप सँ
वियोग भऽ गेल। एक दिन हम गरमीक
समय मे धीपल बालु पर गिरल छलहुँ।
ओहि ठाम सँ किछु श्रेष्ठ मुनि लोकनि
उठा कँ महात्मा लोकनिकक आश्रम मे
एक पिंजरा मे राखि देलथिन। ओहि
ठाम हमरा पढाओल गेल। ऋषि लोकनिक
बालक बड़ आदर सँ गीताक पहिल
अध्यायक आवृत्ति करैत छलाह। हुनके
सँ सुनि हम सेहो बेरि-बेरि पाठ करए
लगलहुँ। एहि मध्य एक बहेलिया हमरा



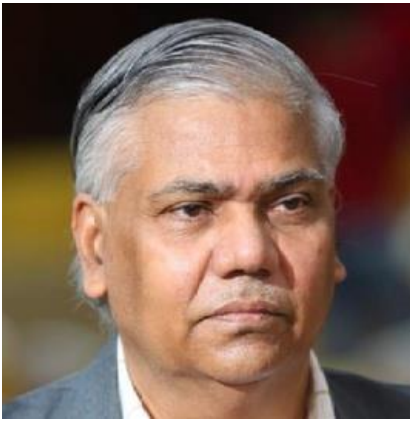


अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓔.𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓔.𑓑.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰-𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒢

४.१.राज किशोर मिश्र-पिंजरा-चिड़िकिन



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (इंजी), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अन्धरा ठाढ़ी, पो. अन्धरा ठाढ़ी, मधुबनी

पिंजरा-चिड़िकिन

चिन्ता -गाछ पर की रहैत अछि ?
डर, अनिश्चय, संशय,
नाच करैछ मोन, घिरनी सन,
बैसल डारि कहुना रहय ।

[illegible]

कहु, कनेक की उना ७ल मा न?
अयन वsल हा नल यदि न सँ ,
टि नहा रsल जा ञ्ञा अछि सा ना

उमा ह- उर्जा क सुउकौ अछि ?
सिं ह का ना नढि आ वनौ अछि ?

मा नक सा नि ग, यी जा ञ्ञा अछि वि न्हा ,
यछगा ,ज नहि शपु क वि ह्रगा ।

अनवि ह्रा न रनि थ लल,
ज अछि ७खन नस्क म,
मनगढन्ह वा ग उकना दs,
उमना रौ अछि , सस्क मा

अयन गs अछि नर्मा न,
कि ७ सा चु ,कहन रनि थ?
यदि न सँ कि ७ उनि कs वैसु,
ज आव वा ला अछि दृथा

ज आ७ल नहि ,कि ७ उग मा नदा न?
आ, नि स्रिक्र य रs नहअउा नर्मा ना

शकि क सा नि ग यी वि जा ञ्ञा अछि ,

मा न म यैसल वि न्धा ,
वि ना गल क ज७ा न टमी ,
७हि वा गक कि ७क ह्रगुनगा ?

क वृधि ओान ओयन घन म,
वसा डाग का ना यि शा च?
विं गा जाग७ नव्हा ,ङ्ठा ७ा नहि ,
डा गs नवा डाग ना चा।

जाँ क नरेष्ठ वृयवा य सटल,
मूदा ,यी वि नव्हल नहि ओष्ठि डा खुन?
वका न वना रैंग ओष्ठि डाहि क,
यका७ लैंग ओष्ठि जा हि म घूना।

वि न्धा नहि ककना कि ह्र दलक,
मगन मि कलक, डाकन सरः गुध्र,
जकन मा थ म वैंसि ९गल जा कs ,
मन म डाकन,रनि दलक ,गुनधूना।

का ह्लक रहि कि न म ९गल ओाॐ,
ज या सलक वि न्धा ,गकन खा ॐ।

७नल ह्यथि ग ओा वि न्धि ग मा न,
डी गल जि नगी क यूह्व का न ?

ह्रा नल मा न, ह्ना उाग ककना ?
वि न्का ,शक्ति क' कउलक वखना ।

उा नहि ठ्ठा ७ग, अयनहिँ ठ्ठा ऱ्,
मा नक वक्राग्यूह क गा ऱ्।

वि न्कन सँ ,मा नक' समा वि ,
वि न्का ह्नेग अछि अगव आवि ।

ज ठ्ठे रा वी , ह्व कनगे,
उा गs अछि दूर्वा न,
वि न्का रनव उँ मा थ म,
वनकग अयन कया न।

कि उा टा नि सकेठ उँ रा वी क,
गs, कनल कर्म, यून्षा थं,
उनटा सा व दग न कहि उा,
सो रा ञ्र, कि नी क यदा थी।

जह्य कs सकेग ठ्ठी उाह्य कथमयि न कs या ७व,
ज सरद वि न्का -ह्रि कि न क ,वा ङून म यक७ा ७व ।

ह्रि कि न सँ ग्रसि ग मा न वमा न ,

𑒅 𑒏𑒱 𑒥𑒠𑒪𑒪 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒟𑒰 𑒢?

𑒔𑒱𑓀 𑒞𑒰 - 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 ,𑒅 𑒮𑓂𑒫𑒮𑓂𑒟 𑒧𑒰 𑒢 ,
𑒮𑓂𑒫𑒞𑓁 𑒅𑒙𑒱 𑒧 𑒋𑒢𑒾 𑒅𑒮𑒰 𑒯,
𑒔𑒜𑓃𑒪 𑒅 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒞𑒱 𑒏 𑒬𑒵𑒓𑓂𑒑 𑒣𑒩,
𑒧𑒰 𑒢 𑒖𑒏𑒩 𑒚𑒲𑒏, 𑒥𑒰 𑒠𑒮𑒰 𑒯।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

१. अनुलग्नक

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

५.विदेह स्त्री कोना

६. विदेह ई-लर्निङ्ग

७.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

८.विदेह मिथिलाक खोज

९.विदेह मिथिला रत्न

𑓑.𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒁𑓀𑒏 Videha e journal's all old issues

𑒫𑒱 𑒠𑒹 𑒯 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 Videha বিদেহ http://www.videha.co.in 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒄 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒄 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒢𑒫 𑒁𑓀𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒱𑒤𑓂𑒩𑒹𑒬 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒐𑒴। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search within Old Issues of Videha

https://books.google.com/

Videha Archive of Old Issues 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒁𑓀𑒏𑒏 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫 (𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒞𑓁 𑒁𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑒰𑒨𑒱𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒬𑒻𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒪𑒹𑒪) 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒣𑒲.𑒛𑒲.𑒋𑒤. 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱। All the old issues of Videha e journal are available for pdf download at the respective links below.

....

𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰, 𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒂 𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒤𑒼𑒢𑓂𑒙 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 Google's Noto Fonts project/ GitHub

𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰 𑒢𑒰𑒙𑒼 𑒤𑒼𑒢𑓂𑒙	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒓𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒙𑒲𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒓.𑒙𑒲.𑒋𑒤.	𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒙𑒲.𑒙𑒲.𑒋𑒤.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

१

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

<table>
<tr><td colspan="2">विदेह-सदेह १-२१ www.videha.co.in
विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन</td></tr>
<tr><td>देवनागरी</td><td>मिथिलाक्षर</td></tr>
<tr><td>विदेह१ सदेह:</td><td>विदेहमिथिलाक्षर १ सदेह :</td></tr>
<tr><td>विदेहसदेह: २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना</td><td>विदेह: सदेह २ मिथिलाक्षर</td></tr>
<tr><td>विदेहसदेह: ३ मैथिली पद्य</td><td>विदेह: सदेह ३ मिथिलाक्षर</td></tr>
<tr><td>विदेहसदेह: ४ मैथिली कथा</td><td>विदेह: सदेह ४ मिथिलाक्षर</td></tr>
<tr><td>विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]</td><td>विदेह: सदेह ५ मिथिलाक्षर</td></tr>
<tr><td>विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५२-संस्करण -[</td><td>विदेहसदे :ह ५ संस्करणमिथिलाक्षर २-</td></tr>
<tr><td>विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६[</td><td>विदेह: सदेह ६ मिथिलाक्षर</td></tr>
<tr><td>विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७[</td><td>विदेह: सदेह ७ मिथिलाक्षर</td></tr>
<tr><td>विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८[</td><td>विदेह: सदेह ८ मिथिलाक्षर</td></tr>
<tr><td>विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९[</td><td>विदेह: सदेह ९ मिथिलाक्षर</td></tr>
<tr><td>विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०[</td><td>विदेह: सदेह १० मिथिलाक्षर</td></tr>
</table>

विदेह११ सदेह:	विदेहतिरहुता ११ सदेह :
विदेह१२ सदेह:	विदेहतिरहुता १२ सदेह :
विदेह१३ सदेह:	विदेहतिरहुता १३ सदेह :
विदेह१४ सदेह:	विदेहतिरहुता १४ सदेह :
विदेह१५ सदेह:	विदेहतिरहुता १५ सदेह :
विदेह१६ सदेह:	विदेहतिरहुता १६ सदेह :
विदेह१७ सदेह:	विदेहतिरहुता १७ सदेह :
विदेह१८ सदेह:	विदेहतिरहुता १८ सदेह :
विदेह१९ सदेह:	विदेहतिरहुता १९ सदेह :
विदेह२० सदेह:	विदेहतिरहुता २० सदेह :
विदेह२१ सदेह:	विदेहतिरहुता २१ सदेह :
विदेह२२ सदेह:	विदेहतिरहुता २२ सदेह :
विदेह२३ सदेह:	विदेहतिरहुता २३ सदेह :
विदेह२४ सदेह:	विदेहतिरहुता २४ सदेह :
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता
विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ- थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अरुण कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रविभूषण पाठकक आन रचनासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह) २८ सदेह:अनूदित गद्य आ पद्य-१ अंक -३७० सँ(	विदेह: सदेह २८ तिरहुता

विदेह:सदेह २९ (नवि रूखक पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३७० सँ)	विदेहतिरहुता ३० सदेह :
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह ११	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

२

विदेहक सदेह पुरान अंक (अंक १ सँ ३७४ आ आगाँ)

विदेह अंक १-१४९ (देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेल)

देवनागरी	मिथिलाक्षर	ब्रेल
Videha_01_01_08	Videha_01_01_08_Tirhuta	1
Videha_15_01_08	Videha_15_01_08_Tirhuta	2
Videha_01_02_08	Videha_01_02_08_Tirhuta	3
Videha_15_02_08	Videha_15_02_08_Tirhuta	4
Videha_01_03_08	Videha_01_03_08_Tirhuta	5
Videha_15_03_08	Videha_15_03_08_Tirhuta	6
Videha_01_04_2008	Videha_01_04_2008_Tirhuta	7
Videha_15_04_2008	Videha_15_04_2008_Tirhuta	8
Videha_01_05_2008	Videha_01_05_2008_Tirhuta	9
Videha_15_05_2008	Videha_15_05_2008_Tirhuta	10
Videha_01_06_2008	Videha_01_06_2008_Tirhuta	11
Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12
Videha_01_07_2008	Videha_01_07_2008_Tirhuta	13
Videha_15_07_2008	Videha_15_07_2008_Tirhuta	14
Videha_01_08_2008	Videha_01_08_2008_Tirhuta	15
Videha_15_08_2008	Videha_15_08_2008_Tirhuta	16
Videha_01_09_2008	Videha_01_09_2008_Tirhuta	17
Videha_15_09_2008	Videha_15_09_2008_Tirhuta	18
Videha_01_10_2008	Videha_01_10_2008_Tirhuta	19
Videha_15_10_2008	Videha_15_10_2008_Tirhuta	20
Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21
Videha_15_11_2008	Videha_15_11_2008_Tirhuta	22
Videha_01_12_2008	Videha_01_12_2008_Tirhuta	23
Videha_15_12_2008	Videha_15_12_2008_Tirhuta	24
Videha_01_01_2009	Videha_01_01_2009_Tirhuta	25

Videha_15_01_2009	Videha_15_01_2009_Tirhuta	26
Videha_01_02_2009	Videha_01_02_2009_Tirhuta	27
Videha_15_02_2009	Videha_15_02_2009_Tirhuta	28
Videha_01_03_2009	Videha_01_03_2009_Tirhuta	29
Videha_15_03_2009	Videha_15_03_2009_Tirhuta	30
Videha_01_04_2009	Videha_01_04_2009_Tirhuta	31
Videha_15_04_2009	Videha_15_04_2009_Tirhuta	32
Videha_01_05_2009	Videha_01_05_2009_Tirhuta	33
Videha_15_05_2009	Videha_15_05_2009_Tirhuta	34
Videha_01_06_2009	Videha_01_06_2009_Tirhuta	35
Videha_15_06_2009	Videha_15_06_2009_Tirhuta	36
Videha_01_07_2009	Videha_01_07_2009_Tirhuta	37
Videha_15_07_2009	Videha_15_07_2009_Tirhuta	38
videha_01_08_2009	videha_01_08_2009_tirhuta	39
videha_15_08_2009	videha_15_08_2009_tirhuta	40
videha_01_09_2009	videha_01_09_2009_tirhuta	41
videha_15_09_2009	videha_15_09_2009_tirhuta	42
videha_01_10_2009	videha_01_10_2009_tirhuta	43
videha_15_10_2009	videha_15_10_2009_tirhuta	44
videha_01_11_2009	videha_01_11_2009_tirhuta	45
videha_15_11_2009	videha_15_11_2009_tirhuta	46
videha_01_12_2009	videha_01_12_2009_tirhuta	47
videha_15_12_2009	videha_15_12_2009_tirhuta	48
videha_01_01_2010	videha_01_01_2010_tirhuta	49
videha_15_01_2010	videha_15_01_2010_tirhuta	50
videha_01_02_2010	videha_01_02_2010_tirhuta	51
videha_15_02_2010	videha_15_02_2010_tirhuta	52
videha_01_03_2010	videha_01_03_2010_tirhuta	53

videha_15_03_2010	videha_15_03_2010_tirhuta	54
videha_01_04_2010	videha_01_04_2010_tirhuta	55
videha_15_04_2010	videha_15_04_2010_tirhuta	56
videha_01_05_2010	videha_01_05_2010_tirhuta	57
videha_15_05_2010	videha_15_05_2010_tirhuta	58
videha_01_06_2010	videha_01_06_2010_tirhuta	59
videha_15_06_2010	videha_15_06_2010_tirhuta	60
videha_01_07_2010	videha_01_07_2010_tirhuta	61
videha_15_07_2010	videha_15_07_2010_tirhuta	62
videha_01_08_2010	videha_01_08_2010_tirhuta	63
videha_15_08_2010	videha_15_08_2010_tirhuta	64
videha_01_09_2010	videha_01_09_2010_tirhuta	65
videha_15_09_2010	videha_15_09_2010_tirhuta	66
videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67
videha_15_10_2010	videha_15_10_2010_tirhuta	68
videha_01_11_2010	videha_01_11_2010_tirhuta	69
videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70
videha_01_12_2010	videha_01_12_2010_tirhuta	71
videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72
videha_01_01_2011	videha_01_01_2011_tirhuta	73
videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74
videha_01_02_2011	videha_01_02_2011_tirhuta	75
videha_15_02_2011	videha_15_02_2011_tirhuta	76
videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77
videha_15_03_2011	videha_15_03_2011_tirhuta	78
videha_01_04_2011	videha_01_04_2011_tirhuta	79
videha_15_04_2011	videha_15_04_2011_tirhuta	80
videha_01_05_2011	videha_01_05_2011_tirhuta	81

videha_15_05_2011	videha_15_05_2011_tirhuta	82
videha_01_06_2011	videha_01_06_2011_tirhuta	83
videha_15_06_2011	videha_15_06_2011_tirhuta	84
videha_01_07_2011	videha_01_07_2011_tirhuta	85
videha_15_07_2011	videha_15_07_2011_tirhuta	86
videha_01_08_2011	videha_01_08_2011_tirhuta	87
videha_15_08_2011	videha_15_08_2011_tirhuta	88
videha_01_09_2011	videha_01_09_2011_tirhuta	89
videha_15_09_2011	videha_15_09_2011_tirhuta	90
videha_01_10_2011	videha_01_10_2011_tirhuta	91
videha_15_10_2011	videha_15_10_2011_tirhuta	92
videha_01_11_2011	videha_01_11_2011_tirhuta	93
videha_15_11_2011	videha_15_11_2011_tirhuta	94
videha_01_12_2011	videha_01_12_2011_tirhuta	95
videha_15_12_2011	videha_15_12_2011_tirhuta	96
videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97
videha_15_01_2012	videha_15_01_2012_tirhuta	98
videha_01_02_2012	videha_01_02_2012_tirhuta	99
videha_15_02_2012	videha_15_02_2012_tirhuta	100
videha_01_03_2012	videha_01_03_2012_tirhuta	101
videha_15_03_2012	videha_15_03_2012_tirhuta	102
videha_01_04_2012	videha_01_04_2012_tirhuta	103
videha_15_04_2012	videha_15_04_2012_tirhuta	104
videha_01_05_2012	videha_01_05_2012_tirhuta	105
videha_15_05_2012	videha_15_05_2012_tirhuta	106
videha_01_06_2012	videha_01_06_2012_tirhuta	107
videha_15_06_2012	videha_15_06_2012_tirhuta	108
videha_01_07_2012	videha_01_07_2012_tirhuta	109

videha_15_07_2012	videha_15_07_2012_tirhuta	110
videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111
videha_15_08_2012	videha_15_08_2012_tirhuta	112
videha_01_09_2012	videha_01_09_2012_tirhuta	113
videha_15_09_2012	videha_15_09_2012_tirhuta	114
videha_01_10_2012	videha_01_10_2012_tirhuta	115
videha_15_10_2012	videha_15_10_2012_tirhuta	116
videha_01_11_2012	videha_01_11_2012_tirhuta	117
videha_15_11_2012	videha_15_11_2012_tirhuta	118
videha_01_12_2012	videha_01_12_2012_tirhuta	119
videha_15_12_2012	videha_15_12_2012_tirhuta	120
videha_01_01_2013	videha_01_01_2013_tirhuta	121
videha_15_01_2013	videha_15_01_2013_tirhuta	122
videha_01_02_2013	videha_01_02_2013_tirhuta	123
videha_15_02_2013	videha_15_02_2013_tirhuta	124
videha_01_03_2013	videha_01_03_2013_tirhuta	125
videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126
videha_01_04_2013	videha_01_04_2013_tirhuta	127
videha_15_04_2013	videha_15_04_2013_tirhuta	128
videha_01_05_2013	videha_01_05_2013_tirhuta	129
videha_15_05_2013	videha_15_05_2013_tirhuta	130
videha_01_06_2013	videha_01_06_2013_tirhuta	131
videha_15_06_2013	videha_15_06_2013_tirhuta	132
videha_01_07_2013	videha_01_07_2013_tirhuta	133
videha_15_07_2013	videha_15_07_2013_tirhuta	134
videha_01_08_2013	videha_01_08_2013_tirhuta	135
videha_15_08_2013	videha_15_08_2013_tirhuta	136
videha_01_09_2013	videha_01_09_2013_tirhuta	137

videha_15_09_2013	videha_15_09_2013_tirhuta	138
videha_01_10_2013	videha_01_10_2013_tirhuta	139
videha_15_10_2013	videha_15_10_2013_tirhuta	140
videha_01_11_2013	videha_01_11_2013_tirhuta	141
videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142
videha_01_12_2013	videha_01_12_2013_tirhuta	143
videha_15_12_2013	videha_15_12_2013_tirhuta	144
videha_01_01_2014	videha_01_01_2014_tirhuta	145
videha_15_01_2014	videha_15_01_2014_tirhuta	146
videha_01_02_2014	videha_01_02_2014_tirhuta	147
videha_15_02_2014	videha_15_02_2014_tirhuta	148
videha_01_03_2014	videha_01_03_2014_tirhuta	149

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓕𑓐𑓓𑓔𑓔-

VIDEHA_150	VIDEHA_151	VIDEHA_152	VIDEHA_153	VIDEHA_154
VIDEHA_155	VIDEHA_156	VIDEHA_157	VIDEHA_158	VIDEHA_159
VIDEHA_160	VIDEHA_161	VIDEHA_162	VIDEHA_163	VIDEHA_164
VIDEHA_165	VIDEHA_166	VIDEHA_167	VIDEHA_168	VIDEHA_169
VIDEHA_170	VIDEHA_171	VIDEHA_172	VIDEHA_173	VIDEHA_174
VIDEHA_175	VIDEHA_176	VIDEHA_177	VIDEHA_178	VIDEHA_179
VIDEHA_180	VIDEHA_181	VIDEHA_182	VIDEHA_183	VIDEHA_184
VIDEHA_185	VIDEHA_186	VIDEHA_187	VIDEHA_188	VIDEHA_189
VIDEHA_190	VIDEHA_191	VIDEHA_192	VIDEHA_193	VIDEHA_194
VIDEHA_195	VIDEHA_196	VIDEHA_197	VIDEHA_198	VIDEHA_199
VIDEHA_200	VIDEHA_201	VIDEHA_202	VIDEHA_203	VIDEHA_204
VIDEHA_205	VIDEHA_206	VIDEHA_207	VIDEHA_208	VIDEHA_209
VIDEHA_210	VIDEHA_211	VIDEHA_212	VIDEHA_213	VIDEHA_214
VIDEHA_215	VIDEHA_216	VIDEHA_217	VIDEHA_218	VIDEHA_219
VIDEHA_220	VIDEHA_221	VIDEHA_222	VIDEHA_223	VIDEHA_224
VIDEHA_225	VIDEHA_226	VIDEHA_227	VIDEHA_228	VIDEHA_229
VIDEHA_230	VIDEHA_231	VIDEHA_232	VIDEHA_233	VIDEHA_234

VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238	VIDEHA_239
VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249
VIDEHA_250	VIDEHA_251	VIDEHA_252	VIDEHA_253	VIDEHA_254
VIDEHA_255	VIDEHA_256	VIDEHA_257	VIDEHA_258	VIDEHA_259
VIDEHA_260	VIDEHA_261	VIDEHA_262	VIDEHA_263	VIDEHA_264
VIDEHA_265	VIDEHA_266	VIDEHA_267	VIDEHA_268	VIDEHA_269
VIDEHA_270	VIDEHA_271	VIDEHA_272	VIDEHA_273	VIDEHA_274
VIDEHA_275	VIDEHA_276	VIDEHA_277	VIDEHA_278	VIDEHA_279
VIDEHA_280	VIDEHA_281	VIDEHA_282	VIDEHA_283	VIDEHA_284
VIDEHA_285	VIDEHA_286	VIDEHA_287	VIDEHA_288	VIDEHA_289
VIDEHA_290	VIDEHA_291	VIDEHA_292	VIDEHA_293	VIDEHA_294
VIDEHA_295	VIDEHA_296	VIDEHA_297	VIDEHA_298	VIDEHA_299
VIDEHA_300	VIDEHA_301	VIDEHA_302	VIDEHA_303	VIDEHA_304
VIDEHA_305	VIDEHA_306	VIDEHA_307	VIDEHA_308	VIDEHA_309
VIDEHA_310	VIDEHA_311	VIDEHA_312	VIDEHA_313	VIDEHA_314
VIDEHA_315	VIDEHA_316	VIDEHA_317	VIDEHA_318	VIDEHA_319
VIDEHA_320	VIDEHA_321	VIDEHA_322	VIDEHA_323	VIDEHA_324
VIDEHA_325	VIDEHA_326	VIDEHA_327	VIDEHA_328	VIDEHA_329
VIDEHA_330	VIDEHA_331	VIDEHA_332	VIDEHA_333	VIDEHA_334
VIDEHA_335	VIDEHA_336	VIDEHA_337	VIDEHA_338	VIDEHA_339
VIDEHA_340	VIDEHA_341	VIDEHA_342	VIDEHA_343	VIDEHA_344

विदेह सदेह अंक सम्बन्धी किछु आवश्यक बात/ जानकारी

Learn Maithili Sign Language- Gajendra Thakur (2009/ 2023)
मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

Learn Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn IPA through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Braille through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

Learn Kaithi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)
कैथी लिपि (मैथिली साहित्य संस्थान डाउनलोड लिंक)

Learn Newari- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Urdu Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Tibetan Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Japanese Script for Haiku- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Brahmi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Kharoshthi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

स्थायी स्तम्भ जेना मिथिला-रत्न, मिथिलाक खोज, विदेह ई-लर्निंग, विदेह स्त्री-कोना, विदेह पटान (विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक; विदेह पोथी डाउनलोड; विदेह मैथिली क्रिया-नीतियाक संकलन आ विदेह शिशु, बाल आ किशोर साहित्य) आ सूचना-संपर्क-अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement) सभ अंकमे समान अछि, ताहि हेतु ई सभ स्तम्भ सभ अंकमे नै देल जाइत अछि, ई सभ स्तम्भ देखबा लेल क्लिक करू विदेहक ३४५ म, ३४७ म, ३५५ म आ ३७१ म अंक। ओ बादक अंकमे सम्मिलित नूतन ई सभ स्तम्भ देल गेल अछि।

विदेहक ३४५म आ आगाँक अंक

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल
VIDEHA_345	VIDEHA_345_Tirhuta	VIDEHA_345_IPA	VIDEHA_345_Braille
VIDEHA_346	VIDEHA_346_Tirhuta	VIDEHA_346_IPA	VIDEHA_346_Braille
VIDEHA_347	VIDEHA_347_Tirhuta	VIDEHA_347_IPA	VIDEHA_347_Braille
VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille
VIDEHA_349	VIDEHA_349_Tirhuta	VIDEHA_349_IPA	VIDEHA_349_Braille

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल	कैथी
VIDEHA_350	VIDEHA_350_Tirhuta	VIDEHA_350_IPA	VIDEHA_350_Braille	VIDEHA_350_KAITHI
VIDEHA_351	VIDEHA_351_Tirhuta	VIDEHA_351_IPA	VIDEHA_351_Braille	VIDEHA_351_KAITHI
VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI
VIDEHA_353	VIDEHA_353_Tirhuta	VIDEHA_353_IPA	VIDEHA_353_Braille	VIDEHA_353_KAITHI
VIDEHA_354	VIDEHA_354_Tirhuta	VIDEHA_354_IPA	VIDEHA_354_Braille	VIDEHA_354_KAITHI

नागरी	तिरहुता	आइपीए	ब्रेल	कैथी	रंजना	नेवारी	खरोष्ठी	ब्राह्मी
355	Tirhu	IPA	Brail	KAI	Ran	Newa	Kharo	Brahmi

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	तिब्बती	तिब्बती-उमे

356	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume
357	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	तिब्बती	तिब्बती-उमे
358	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
359	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
360	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	नेवारी	आइ.पी.ए.	ब्रेल
361	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
362	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
363	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
364	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
365	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
366	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
367	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
368	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
369	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
370	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

....

३

विदेहक विशेषांक

𑓑) 𑒯𑒰𑒃𑒏𑒴 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12

𑓒) 𑒑𑒖𑒪 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21

𑓓) 𑒫𑒱𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67

𑓔) 𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70

𑓕) 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72

𑓖) 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74

𑓗) 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77

𑓘) 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 (𑒑𑒠𑓂𑒨-𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯)

videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97

𑓙) 𑒥𑒰𑒪 𑒑𑒖𑒪 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111

𑓑𑓐) 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒑𑒖𑒪 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126

𑓑𑓑) 𑒑𑒖𑒪 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰-𑒮𑒧𑒰𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰-𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142

𑓑𑓒) 𑒏𑒰𑒬𑒲𑒏𑒰𑓀𑒞 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒧𑒡𑒳𑒣 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

Videha_01_01_2015

१३) अरविन्द ठाकुर विशेषांक

Videha_01_11_2015

समीक्षा- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप]

१४) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

Videha_01_12_2015

१५) विदेह सम्मान विशेषा क

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

साक्षात्कार/ समारोह

साक्षात्कार	videha_15_12_2011	videha_15_01_2012	videha_01_02_2012	videha_01_03_2012
videha_01_09_2012	videha_15_01_2013	videha_01_03_2013	Videha_15_04_2016	Videha_01_07_2016

१६) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक

Videha_01_01_2017

१७) मैथिली नव कविता विशेषांक

VIDEHA 313

१८) मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२

VIDEHA 317

१९) रामलोचन ठाकुर विशेषांक

VIDEHA 319

२०) रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

VIDEHA 320

२१) राजनन्दन लाल दास विशेषांक

VIDEHA 333

२२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille

२३कदान नाथ चौधरी विशेषांक (

VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI

२४ प्रेमलता मिश्र ('प्रेम' विशेषांक

Videha_357	Videha_357_Tirhuta

२५शनिदेव चौधरी विशेषांक (

Videha_358	Videha_358_Tirhuta

२६संजु दास -सहरंग) विमर्श विशेषांक-कला (, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, ज्योतिसुमन .सी. (आ श्वेता झा चौधरी

Videha_368	Videha_368_Tirhuta

२७नवनाकान अशोक विशेषांक (

Videha_369	Videha_369_Tirhuta

२७ नाम स्वास कार्यठ ('ज्ञमन' विशेषांक

Videha_370	Videha_370_Tirhuta

२८विशेषांक (.यू.ओस.ओम) मिथिला स्टूडेंट यूनियन (

Videha_371	Videha_371_Tirhuta

....

४

लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१कामिनीक पांच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी.

Videha_01_09_2016

२यन गजब्ब 0ाक्नक िटप्पणी"माटिक वासन" क"मनु" जगदानन्द झा.

VIDEHA_353

३आ उत्ल्यन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी "जिन्दगीक माल" मुन्नी कामतक एकांकी.

VIDEHA_354

४टा कथा आ उत्ल्यन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी ओ कपिलेश्वर नाउतक.

VIDEHA_356

ओ टा कथा आ ओ उमेश मण्डलक.उत्ल्यन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी

Videha_357

६टा कथा आ उत्ल्यन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी ओ नाम विलास साहूक.

Videha_358

७सुरेश बब्ब यादवक समक्ष सािहत्य आ उत्ल्यन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी -निन नवल सुरेश बब्ब यादव.

निन नवल सुरेश बब्ब यादव

निन नवल सुरेश बब्ब यादव (मिथिलाउन)

८नाजदेव मण्डलक सािहत्ययन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी.

Rajdeo Mandal - Maithili Writer

९टा कथा आ उत्ल्यन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी ओ आचार्य नामानन्द मण्डलक.

Videha_360

१0नन्द विलास नायक चानिटा कथा आ एकटा एकांकी आ उत्ल्यन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी.

Videha_361

११जगदीश प्रसाद मण्डलक सािहत्.्ययन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

१२दुर्गानन्द मण्डलक पाँचटा कथा आ उत्ल्यन गजब्ब 0ाकुनक िटप्पणी.

Videha_363

१३नागेन्द्र यादवक पाँचटा कथा आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी.

Videha_364

१४दि -लिंक नवल दिनेश कुमार मिश्र .नेश कुमार मिश्रक समस्त लेखन आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

लिंक नवल दिनेश कुमार मिश्र (जारी)

१७सुशीलक समस्त साहित्य आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी -लिंक नवल सुशील .

लिंक नवल सुशील (जारी)

....

५

"पाठक हमन पाथी किञ पढथि/लेखक द्वारा अध्ययन पाथी -" नवनाक समीक्षा सीरीज

१२०२१ अगस्त ०१ आशीष अनचिन्हार .

१).a) आशीष अनचिन्हार ०१ मार्च २०२३

२२०२२ सितम्बर ०१ गजेन्द्र ठाकुर .

....

६

राइटर्स वाइस सीरीज

राइटर्स वाइस सीरीज१-

विदेह बलात्कारयन मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित रहल छल। १६ दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल।

उाना ई अनुदित नवना छल, गलगुम यस्युलटी गीताक कविताक हिन्दी अनूवाद कन छलीह आनन्दांता सहनी आ हिन्दीसँ मैथिली . अनूवाद कन छलाह विनीत उत्पल। हमन जानकानीमे ऐसँ पहिने सिहनावैवला कविता ओ विषययन काना रायाम नै नवल गेल अछि। कनाक सालक वाद ई समस्या उाहन अछि। ई कविता सहकैँ यढवाक चाही, खास कS सह वटीक वापकैँ, सह वहिनक हाथकैँ आ सह यतीक यतिकैँ। आ विवाहवाक चाही जे हम सह अपना वच्चा सह लल कहन समाज वनन छी।

एडिटर्स चाइस सीनीज१- (ताउनलाउ लिंक(

एडिटर्स चाइस सीनीज२-

विदेहमे ब्रज कैसनक समस्यायन विदेह म मीना मा कन एकटा लघु कथा प्रकाशित हएल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रज कैसन पन लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो तावति ओ विषययन कथा नै लिखल गेल छल, कानण ओ कथाक ई-१ प्रकाशित हएलाक-२ सालक वाद हिन्दीमे दू गोटेम घांघाउज हS नहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दुनूक तिथि मैथिलीक कथाक यनवर्ती छल। वादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित हएल।

एडिटर्स चाइस सीनीज२- (ताउनलाउ लिंक(

एडिटर्स चाइस सीनीज३-

विदेहमे जगदीश चन्द्र ठाकुन अनिलक किछु वाल कविता प्रकाशित हएल। वादमे हुनकन ३ टा वाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित हएल

ज॰॰म २ टा कनिना ववी वा॰॰लुयन छला यढ॰ ॰॰ी गीनू कनिना, वादक दूनू ववी वा॰॰लुयन लिखल कनिना यढव टा कनू स ञाग्रह।

ञतिटर्स वा॰॰स सीनीज३- (ताउनलाउ लिंक(

ञतिटर्स वा॰॰स सीनीज४-

निदहम जगदानड्ड मा दीर्घ वाल कथा कदि लिञ वा क ञकटा"मनू" उयन्यास प्रकाशिन रल, नाम छल वानहा। वादम ॰॰ी नवना निदह शिशु उसनम संकलिन रल, ॰॰ी नवना वाल मनानिस्नानयन ञाधानिन मैथिलीक यहिल नवना छी, मैथिली वाल साहित्य काना लिखी नकन प्लनिंग कार्सम ञे उयन्यासकँ नाखल जवाक वाही। काना मौतर्न उयन्यास ञागाँ वरै छै, स्नय वा॰॰ स्नय ञा सहा वाल उयन्यास। यढव टा कनू स ञाग्रह।

ञतिटर्स वा॰॰स सीनीज-४ (ताउनलाउ लिंक(

ञतिटर्स वा॰॰स सीनीज५-

ञतिटर्स वा॰॰स ५ म मैथिलीक मान कूमान यवनक "उसन कहा था" । हिन्नीक या0क (सारान ञंगिका) "य॰॰0" दीर्घकथा, ज उसन " यढन हगा "कहा था, कँ वूसल छहि ज काना ञहि कथाकँ नवि वड्डधन शर्मा ञमन रs (गलाह। हम ववी कs "गुलनी" नहल छी, कूमान यवनक दीर्घकथाक। ञकना यढलाक वाद ञहाँकँ ञकटा "य॰॰0" निचित्र, सूखद ञा मान होल कनैवला ञनूरव रटन, ज समकालीनिञन प्रजती सँ मिलिना लागन ञा रुनाका। मुदा ञे नवनाकँ यढलाक वाद

गामस, घृणा सत्यन नियंत्रणकँ आ सामाजिकयानितानिक दायित्वकँ / सद्दा अहाँ आन गंदीनतासँ लवे, स धनि यक्का अछि। मुदा ओकान ओकटा शर्त अछि जे ओकना समे निकालि कऽ ओक्क उखडाहाम यढि जाऊ।

ओतिरर्स वाक्स सीनीजग- (ताउनलात लिंक(

ओतिरर्स वाक्स सीनीजड-

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा क अकालम ४३-१९४२ :"विसाँढ" लाख लाक मूक्ला १७ वंगालम, मुदा अमर्थ सन लिखो छथि जे दुनकन काना सनसम्बद्धी ओ अकालम नै मनलहि। मिथिलाम अकाल - म आ ऊ्हिना गाँधी जखन ओ उम्र अओली गँ .ऊी १९६१ आओल दुनका दखाडाल (गल जे काना मूसदुनजागिक लाक विसाँढ खा कऽ ओ अकालकँ जीगि ललहि। मैथिलीम लखनक ओकरगाद स्थिगि निददुक आगमनसँ यहिन छला। मैथिलीक लखक लाकनि सद्दा अमर्थ सन जकाँ उाहि महानिरीक्षिकासँ प्रदानिा नै छला आ गँ विसाँढयन कथा नै लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल ओयन कथा लिखलहि जे प्रकाशिा दल चाना समिगिक यत्रिकाम, मुदा कार्यकानी सम्पादक छाना नर्गनी यनिर्गनिक कानध उा मैथिलीम नै ननध् अनदुछम लिखल वूसा यठल, आ उागक प्रदानी नै दऽ सकल कानध निषय नदे खाँटी आ नर्गनी कृत्रिमा। स ओकन यूनः ऊीप्रकाशन अयन असली नूयम दल निददुम - गामक" आ ऊी संकलिग दल जिनगीलघुकथा संग्रहमा। ओ याथीयन " जगदीश प्रसाद मण्डलकँ टेगान लिटनवन अनाते दटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लखनी मैथिली कथाधानाकँ ओकरगाद दवासँ वचा ललक,

ञा मैथिलीक समानान्दन ॐगिहासम मैथिली साहित्यकँ दु कालखण्डम बाँटि कऽ य८७४ जा७ लागलजगदीश प्रसाद मण्डलसँ - पूर्व ञा जगदीश प्रसाद मण्डल ञागमनक बाद। गँ प्रस्तुग अछि लघुकथा विसाँ८अयन - सुब्रा स्रनुयम।

७तिटर्स चाङ्स सीनीज६- (ताउनलाउ लिंक(

७तिटर्स चाङ्स सीनीज१-

मैथिलीक यहिल ञा ७कमात्र दलिग ञात्मकथासन्नीय कुमान सान्ही। : दलिग ञात्मकथा ज अहाँकँ अयन लघु सन्नीय कुमान सान्हीक ञाकानाक अछैग हिलाउ दग ञा अहाँक ॐ स्थिगि कऽ दग ज समानान्दन मैथिली साहित्य कावा य८ु अहाँकँ अछौं नै ह७ग। ॐ बे" प्रकाशिग रलाक बाद लखकक याथी-ञात्मकथा निदहम ॐशाखम दलानयनम संकलिग रल ञा ॐ मैथिलीक अखन धनिक ७कमात्र " दलिग ञात्मकथा थिक। गँ प्रस्तुग अछि मैथिलीक यहिल दलिग सन्नीय कुमान सान्हीक कलमसँ :ञात्मकथा

७तिटर्स चाङ्स सीनीज१- (ताउनलाउ लिंक(

७तिटर्स चाङ्स सीनीज८-

नना गुटकाकँ नागिम सुनवा लल किछु लाककथा।(निदह यटानसँ)

७तिटर्स चाङ्स सीनीज८- (ताउनलाउ लिंक(

७तिटर्स चाङ्स सीनीज९-

मैथिली गजलयन यनिचर्चा।(निदह यटानसँ)

एडिटर्स चाॅइस सीरीज- (डाउनलोड लिंक(

....

विदेह सम्मान: सम्मानसूची- (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत /नाटक अकादमी सम्मान- (पुनस्थान नामसँ विख्यात

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रभावित बुझाइत अछि, से एकर एकटा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, गाम धनि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क **मैथिली (कम्पलसरी) पपेर लेल सेहो इग्नू पर्याप्त अछि,** से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पपेर लेने छथि से एकर एकटा आन भाषा-नीतिंग दासन-उदाहरणमे करथि|

IGNOU इग्नू **BMAF-001**

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

विदेह पोथी

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Books (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Books 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫 (𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒞𑓁 𑒁𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑒰𑒨𑒱𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒬𑒻𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒪𑒹𑒪) 𑒮𑒿 𑒣𑒼𑒟𑒲 𑒣𑒲.𑒛𑒲.𑒋𑒤. 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏 𑒮𑒦𑒣𑒩 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰, 𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒂 𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒤𑒼𑒢𑓂𑒙 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 Google's Noto Fonts project/ GitHub

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒼𑒙𑒼 𑒤𑒼𑒢𑓂𑒙	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒍𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒙𑒲𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒍.𑒙𑒲.𑒋𑒤.	𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒙𑒲.𑒙𑒲.𑒋𑒤.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒔𑒩𑓂𑒨𑒰𑒣𑒠

𑒔𑒩𑓂𑒨𑒰𑒣𑒠

𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒛𑒰𑒏

𑒛𑒰𑒏𑒫𑒔𑒢

𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒩𑒲𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒡𑒴𑒩𑓂𑒞𑒮𑒧𑒰𑒑𑒧

𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱

ञ्यातीरकि गनङ्गिधी

गोरक्षविजयम्

शंकरदत्त

पारिजातहरण

रामविजय

दैत्यारि ठाकुर

श्यामंत हरण यात्रा (अंकिया नाट)

लक्ष्मीदत्त

कुमारहरण नाट आग स्कंध रावण वध (अंकिया नाट)

जगत्प्रकाशमल्ल

प्रभावतीहरण नाटक

सिद्ध नरसिंहमल्ल

गीतावली सिद्धि

जगज्ज्योतिर्मल्ल

हरगौरी विवाह नाटक कुञ्जविहार नाटक

हर्षनाथ झा

माधवानन्द नाटक

उषाहरण

हर्षनाथ काव्यग्रन्थावली (संकलन अमरनाथ झा १८४७-१८९८)

रत्नपाणि

उषाहरण नाटक

श्रीकांत

श्रीकृष्ण जन्म रहस्य

नन्दीपति

कृष्णकेलिमाला

गीतमाला

कान्ह रामदास

गौरीस्वयंवर

𑒪𑒰𑒪

𑒑𑒾𑒩𑒲𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀𑒫𑒩 𑒢𑒰𑒙𑒏

𑒅𑒧𑒰𑒣𑒞𑒱

𑒣𑒰𑒩𑒱𑒖𑒰𑒞 𑒯𑒩𑒝

𑒦𑒰𑒢𑒳𑒢𑒰𑒟

𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒞𑒲 𑒯𑒩𑒝

𑒯𑒩𑓂𑒭𑒢𑒰𑒟

𑒅𑒭𑒰𑒯𑒩𑒝

𑒩𑒧𑒰𑒣𑒞𑒱

𑒩𑒳𑒏𑓂𑒧𑒱𑒝𑒲 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒨

𑒅𑒣𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒩𑒰𑒧𑒠𑒰𑒮

𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒖𑒨𑒰𑒩𑒱𑒮𑓂𑒠𑒰𑒢 𑒢𑒰𑒙𑒱𑒏𑒰

𑒬𑒱𑒫𑒠𑒞𑓂𑒞

𑒑𑒾𑒩𑒲𑒣𑒩𑒱𑒝𑒨 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀𑒫𑒩 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒫𑒱𑒖𑒨
𑒣𑒰𑒩𑒱𑒖𑒰𑒞 𑒢𑒰𑒙𑒏

....

𑒏𑒟𑒰 𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒯𑒟𑒨𑒰 (𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒼𑒭𑓂𑒚𑒱) 𑒧𑓀𑒯𑒟𑒧 𑒩𑒞𑓂𑒪 𑓘𑓒 𑒧 𑒮𑒑𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒲𑒣 𑒖𑒩𑒨𑒧 𑒣𑒚𑒱𑒞 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢

𑒏𑒟𑒰 𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒯𑒟𑒨𑒰

𑒮𑒐𑒳𑒂𑒢𑒰𑒪𑒲 (𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬 𑒏𑒼𑒭𑓂𑒚𑒱) 𑒮𑓂𑒨𑒩𑒱𑒙𑒨𑒰𑒯𑒲𑒧 𑒩𑒞𑓂𑒪 𑓘𑓓 𑒧 𑒮𑒑𑒩 𑒩𑒰𑒞𑒱 𑒠𑒲𑒣 𑒖𑒩𑒨𑒧 𑒣𑒚𑒱𑒞 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢

𑒮𑒐𑒳𑒂𑒢𑒰𑒪𑒲

𑒧𑒳𑓀𑒬𑒲 𑒩𑒒𑒳𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒠𑒰𑒮 (𑓑𑓘𑓖𑓐-𑓑𑓙𑓔𑓗) (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒩𑒰𑒡𑒰𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑓂 𑒠𑒰𑒮)

𑒮𑒳𑒦𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒯𑒩𑒝

𑒩𑒰𑒮𑒫𑒱𑒯𑒰𑒩𑒲 𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒰𑒮 (𑓑𑓘𑓗𑓒-𑓑𑓙𑓔𑓐) (𑒮𑒾𑒖𑒢𑓂𑒨- 𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 "𑒩𑒧𑒝")

𑒮𑒳𑒧𑒞𑒱

हरिनन्दन दास (सौजन्य- राधाकृष्णन् दास)

सुदामा चरित

पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) (सौजन्य- श्री श्रीमोहन चौधरी)

विविध रचनावली

आचार्य रामलोचन शरण (१८८९-१९७१) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान)

जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ

धनुषधारी दास (१८९५-१९६५) (सौजन्य- यशोकान्त मिश्रानन्द झा)

मैथिली मे विहारी

हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान/ (गौरीनाथ)

अभिनन्दन ग्रन्थ

आँगिका (हरिमोहन झा विशेषांक)

....

डॉ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (सौजन्य- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर')

महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (१९९७)

लोक नाट्य: जट जटिन (२००१) (शोध)

हुगली ऊपर बहैत गंगा आ आन कथा (कथा संग्रह) (२००८)

भ्रमर मैथिली दीर्घ कविता (हिन्दी अनुवाद-अब बस नहीं) (२००९)

मैथिली लोक संस्कृति (नेपाली भाषाम) (२००९)

पैया अड़लै अपन समाज (नाटक संग्रह) (२०१०)

घरमुहाँ (उपन्यास) (२०१२)- ई बुक वर्जन

घरमुँहा (उपन्यास) (२०१२)- प्रिंट वर्जन

अन्हरियाक चान (गजल संग्रह) (२०१३)

चीन जे हम देखल (यात्रा संस्मरण) (२०१४)

सूली पर इजोत एवं अन्य नाटक (२०१५)

सीमाक आर-पार (यात्रा संस्मरण) (२०१६)

युद्धभूमिक एसगर योद्धा (कविता संग्रह) (२०१७)

एंटीनायकत्व (कथा संग्रह) (२०१९)

कोरोनाक संत्रासमे डगमगायल जिनगी (लकडाउन डायरी) (२०२०)

मिथिलाक लोकजीवन लोकसङ्घर्ष (२०२२)

साहित्यक गवेषक अन्वेषी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

स्मारिका (२०१०)

आँगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँगन (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सामदेव विशेष

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०७-२०१९

गामघर-२१-०६-२०१९

रामस्वास कायथ "अमन"क किछु नाटक

मुन्नाजी द्वारा साक्षात्कार पृ. ३२१-३२८

देसिल बयनाक वरेण्य रामलोचन ठाकुर प्रसंग पृ. ३४१-३७१

हमर ज्ञान-पिपासाक स्रोत: शरदिन्दु चौधरी पृ. ३१-३४

जट जटिन पृ. ७६८-१०७

रैया, अन्जौं अयन सोनाज पृ. ७६८-१०७

आलेख कथा-फ्लैशबैक पृ. ८४-८८

आलेख पृ. पृ. ११७-१२७

आलेख पृ. १२१६-१२९०

आलेख पृ. ९१-९८

नागपुर यात्रा प्रसंग पृ. १७०-१७४

सलहेस पनिवर्वा रिपोर्ट पृ. ४१-४७

रिपोर्ट पृ. २३१-२४३

रिपोर्ट पृ. ४४७

रिपोर्ट पृ ७६८-६०७

रिपोर्ट पृ. ७८३-७८७

गंगा प्रसादक स्वायत्ता आ हुगलीयन वरौन गंगा पृ. २२३-२२६

गीत पृ. १४४९-१४७०

गजल गीत पृ. २११

अज्ञानक विन्दु आ आजाद गजल पृ. ६१९-६२१)

विदेह राम स्वास कायथ 'अमन' विशेषांक

वृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- वृषेश चन्द्र लाल)

आह्वान (कविता संग्रह)

ढालक (बाल कविता संग्रह)

सुष्मिमा (अनूदित उपन्यास)

मोदिआइन (बी.पी.कोइरालाक कथा)

माल्हा (कथा संग्रह)

(गालवा (कथा संग्रह)

यनमश्वन कार्कि (सौजन्य- यनमश्वन कार्कि)

धूआ-धजा

अंक १

अंक १४

अंक १७

अंक १६

अंक १८

अंक १० जून २०१२

अंक २४ जून २०१२

२७ जुलाई २०१२

०७ अगस्त २०१२

२३ फरवरी २०१५

आसिन २०१३

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

नियार्टन डायरी (नियात्राज)

बिउ (लघुकथा-संग्रह)

जिद्दी (लघुकथा संग्रह)

कोइली घुनि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

गन्ध (लघु कथा संग्रह)

खजनीवाली (लघु कथा संग्रह)

बुलबुल (कथा संग्रह)

दुधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

निश्वन ठाकुर

नेपालक नाच मनुभूमिम

विनीत ठाकुर (सौजन्य- विनीत ठाकुर)

बाँकी अछि हम्मान दुखक कर्ज

संतोष मिश्र (सौजन्य- संतोष मिश्र)

यासयूत (लघुकथा-संग्रह)

उदास मान (लघुकथा-संग्रह)

धुना-कित (कविता-संग्रह)

अधुना (संपादन- कविता-संग्रह)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद नुया धीनु आ धीरेन्द्र प्रमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रमर्षि)

हगता वढक दश-प्रसंग

Ayodhyanath Choudhary (Courtesy- Ayodhyanath Choudhary)

Varied Verses (Maithili Verses in English Translation)

...

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया देवी कुमारी

भूकम्प (पृ. ६३८-६७४)

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

ऊल्लारानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनुदित नाटक)

अनुश्री देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

सुष्मिता पाठक (सौजन्य- कदम्ब कानन)

पनिबिरनि (कविता संग्रह)

कनागति (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (सौजन्य- कदम्ब कानन)

पाथरक शब्द (कविता संग्रह)

पन्ना झा (सौजन्य- नन्दू झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह(

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सुखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सुखल मन तरसल आँखि (कविता)

अंतः (कविता संग्रह)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृतान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा आकाश (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विनम्र चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-बाड़ी

आर्या कॉकपिट मे

दीया करमाकर- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

फूल छथि आकाश मे

रैया के मुस्कान के चॉकलेट

बीज संचयक

अवंतिका करय "रिक्शावाली"

शौचालयक किस्सा

लाल बनसाती

गुल्लीक जादुई छड़ी

समीनाक विकठ राजन

बिबाह मे जाऽ छी

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कैया सकै छी, नदिया कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बड़ी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सरसँ नीक संगी

स्मारिका ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुरा नाचल नै छाऽ छै

तूलिका (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा डा चाही!

मधुलिका मिश्र (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

डांघाऽन रीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सर संग रैंट-घाँट

पूनम मण्डल

सूगे कालक खिस्सा

....

राधाकृष्ण चौधरी (१९२१-१९८५) (सौजन्य- प्रकाश कुमार चौधरी/ IGNCA)

मिथिलाक इतिहास

A Survey of Maithili Literature

The Political and Cultural Heritage of Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

रामदेव (१९३४-२०२२) (सौजन्य- राम स्नेह कायथ 'अमन')

आँगन रामदेव विशेष

प्रकाश कुमार चौधरी (१९४१-१९९८) (सौजन्य- अशोक)

सम्मान प्रकाश विशेष

ललन प्रसाद ठाकुर (१९५३-१९९५) (सौजन्य- कुसुम ठाकुर)

लौंगिया मिरचाइ

नाटककार ललन प्रसाद ठाकुर समग्र रचनावली (५ टा नाटक, ४ टा एकांकी आ ३ टा गीति नाटिका सहित)

सुभाष चन्द्र यादव (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

निग नवल राजकमल

बनैत बिगड़ैत (लघुकथा संग्रह)

गुलो

गुलो (हिन्दी अनुवाद- रमेश कुमार सिंह)

रमता जोगी

मतन

घाट

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादक तारानन्द वियोगी आ केदार कानन)

निग नवल सुभाष चन्द्र यादव (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

निग नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

अशोक (सौजन्य- अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास)

चक्रव्यूह (कविता संग्रह) (१९८६)

त्रिकोण (कथा संग्रह) (१९८६)

ओहि रातिक रंग (कथा संग्रह) (१९९१)

मातवन (कथा संग्रह) (२००१)

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००१)

आँखिम बसल (यात्रा कथा) (२०१३)

बात-विचार (आलोचना) (२०१७)

ऊँतीगाम (कथा संग्रह) (२०११)

अशोक-सलक्कास (विविध)

अशोक-नव कविता

नीक दिनक वाट्सआय (व्यंग्य संग्रह) (२०१८)

कथा-पाठ (मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन) (२०२२)

प्रतिमान (सम्पादन)

विमर्श (प्रतिमान गोष्ठी- सम्पादक मारुन रानल्लाज)

सन्धान १ (सम्पादन)

सन्धान २ (सम्पादन)

सन्धान ३ (सम्पादन) प्रवास विशेष

सन्धान ४ (सम्पादन)

मुन्ना जी द्वारा साक्षात्कार (पृ. ३८२-३८७)

बनौत कम बिगाड़त बेसी (पृ. २०२३-२०३१)

सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत (पृ. ११९-१२२)

रामलोचन ठाकुरक कविता यात्रा (पृ. ३२१-३४१)

केदार नाथ चौधरीक उपन्यास (पृ. १०१-१०६)

शरदिन्दुजी (पृ. १०-१३)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

रामदेव झा (सौजन्य- शंकरदेव झा/ योगानन्द झा)

सव्यसाची (अभिनन्दन ग्रन्थ)

मैथिली शब्द संचय

दन्त-नवीक वस्तु कौशल

संकल्प अंक-७ (सम्पादक डॉ रामदेव झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य १९८६

संकल्प अंक-७ (सम्पादक डॉ रामदेव झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

आलेख सञ्चयन २००२

मैथिली शाक्त साहित्य- शास्त्रीय भगवती गीत (सम्पादन) २००२

मैथिली पत्रकारिताक सौ वर्ष २००६

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा २००७

गहवर गीत (संकलन-सम्पादन) २००७

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

कथा-लोककथा २०१०

कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता' कृत सीतारवानन्द (सम्पादन) २०११

मंगल-प्रभात गाँधीजी (अनुवाद) २०१३

भात-भात (डॉ ए. कीर्तिवर्द्धनक हिन्दी कविता संग्रहक अनुवाद) २०१४

तारानन्द वियोगी (सौजन्य- तारानन्द वियोगी/ सुभाष चन्द्र यादव)

प्रलय रहस्य (कविता संग्रह)

धराशायी होबाक समय (कविता मे कारावास काल)

दुनिया घर मेहमान (प्रेम कविता)

अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह)

ठियानत (कथा संग्रह)

बहुवचन (आलोचना)

गुला: कला आ भाषा (सम्पादन)

सुधांशु शेखर चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

शेखर रचित गजल ओ गीत

शरदिन्दु चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

ॐ हम जनितहुँ (२००२)

बउ अजगुत देखल (२००३)

गोबरगणेश (२०११)

कनिया कक्काक करामात (२०१६)

बात-बातपर बात खण्ड-१ (२०१९)

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२) (२०२०)

हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३) (२०२१)

साओत् (बात-बातपर बात-४) (२०२१)

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

काशीकान्त मिश्र मधुप

विदेह काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

राजनन्दन लाल दास

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

प्रेमलता मिश्र प्रेम

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

मायानन्द मिश्र (सौजन्य- केदार कानन)

अवांतर (गजल-गीतल)

कलानन्द भट्ट (सौजन्य- केदार कानन)

कान्ह पर लहास हमर मैथिली गजल संग्रह

अनुलक्षक-कासी कॉलोनी सँ किशन कुटीर धरि

रामकृष्ण झा 'किसुन' (सौजन्य- केदार कानन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

किसुन समग्र-२ (सम्पादक केदार कानन आ रमण कुमार सिंह)

मैथिलीक नव कविता (सम्पादन)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादक महेन्द्र आ केदार कानन)

केदार कानन (सौजन्य केदार कानन/ CIIL/ सुभाष चन्द्र यादव)

अउ पर नवोन (संस्मरण: जीवकान्तक पत्रक बखान)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

गुल्ला: कला आ रेखा (सम्पादन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादन)

किसुन समग्र-२ (सम्पादन)

अपना नगरि म (सम्पादन)

सृजन केर दीप पर्व (सम्पादन)

रानी मंडन अंक-१६ (सम्पादन)

महेन्द्र (CIIL/ केदार कानन)

झआयल कनकनी

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

बाबा वैद्यनाथ (सौजन्य- बाबा वैद्यनाथ)

यहुना ॐमानयन (गजल संग्रह)

अरविन्द ठाकुर (सौजन्य- अरविन्द ठाकुर/ CIIL)

परी टूटि गेल अछि (कविता संग्रह)

अन्हारक विरोध मे (लघु कथा संग्रह)

बहुरूपिया प्रदेश मे (गजल संग्रह)

सबद मितानथ धारा

रंगनाट्यक लोकयज्ञ (कथेतर गद्य)

जड़ताक प्रतिवाद मे (सामूहिक-दीठक आपातकाल गाथा- दीर्घ कविता)

सृजन केर दीप पर्व (सम्पादन)

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

सर्जना- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप]

नरेन्द्र झा (सौजन्य- नरेन्द्र झा)

वयल वनन विना वंचल रान

विकास आ अर्थतंत्र

राजेश्वर झा (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

मिथिलाक्षरक उद्भव आ विकास

सुरेन्द्र झा सुमन (आर्काइव डॉट कॉम)

दत्त-वती (मूल)

गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा (आर्काइव डॉट कॉम/ CIIL)

परिचय निचय

मैथिली गद्य संग्रह- सं

रमानाथ झा (CIIL Site आर्काइव)

प्रबन्ध संग्रह

रमानाथ मिश्र "मिहिर" (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश

आनन्द मिश्र (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

श्यामानन्द झा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मैथिली गीत चन्द्रिका

मैथिली संदेश (विभिन्न कविक कविता-सम्पादित)

पं. लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

रत्नग्रीवानन्द ओझा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

पदावली

गणनाथ-विश्वनाथ पदावली (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

गणनाथ-विश्वनाथ पदावली

रुपनारायण झा "राकेश" (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मनमोहन लड्डू

हला लाल दास (आर्काइव डॉट कोम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

खड्ग बल्लभ दास 'स्वजन' (सौजन्य- हेमन्त दास "हिम")

सीता-शील

डॉ. मदनेश्वर मिश्र (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

एक छलीह महारानी

यात्री (नागार्जुन) (सौजन्य- मिथिला सांस्कृतिक परिषद)

बलचनमा

कालीकान्त झा "बुच"

कलानिधि- कविता-संग्रह

उपेन्द्रनाथ झा "व्यास" (सौजन्य- मयंक झा)

रुबाइयात-ए-उमर खैयाम (मैथिली पद्यानुवाद)

प्रतीक (कविता संग्रह)

संन्यासी (काव्य)

रमेश नारायण (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

पाथरक नाव (लघुकथा संग्रह)

गोपालजी झा "गोपेश" (सौजन्य- गोपालजी झा "गोपेश")

गुम्म रहल ०१८ छी

विजय नाथ झा (सौजन्य- विजय नाथ झा)

अहींक लेल (गीत-गजल संग्रह)

कामायनी (अनुवाद)

नरेन्द्र कुमार (सौजन्य- प्रसन्न कुमार झा)

ससरहानी

प्रबोध नारायण सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

अग्नि नगरी (अनुवाद)

चयनिका (सम्पादन)

वैजयन्ती (कविता)

हाथीक दाँत

टटका गप (सम्पादित कथा संकलन)

प्रेमक बाग (नाटक)

अमरनाथ (सौजन्य- अमरनाथ)

ऊर्मिका- विहनि कथा संग्रह

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

पंचदेवोपासक भूमि मिथिला पृ. १००१-१०६०

डॉ. गंगेश गुंजन (सौजन्य- गंगेश गुंजन)

राधा (१-३०) पृ. १३१३-१७६०

प्रथम-चौबटिया-नाटक *(बुधिबधिया)*

नाटक आ[illegible] रान

कथा-संग्रह उचितवक्ता

गीत-गजल दुखक दुपहरिया

कमलधर दास (सौजन्य- कमलधर दास)

मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध

कीर्तिनारायण मिश्र (सौजन्य- कीर्तिनारायण मिश्र)

ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप

सीमान्त

आदमीक जाहेत

अयन ठकान्द म

स्मृतियात्राक ठकान्दम

राजनाथ मिश्र

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

प्रेमशंकर सिंह (सौजन्य- प्रेमशंकर सिंह/ मिथिला दर्पण प्रकाशन)

मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

विद्यापति कृत ग्याठीरकिनानङ्गिनी (सम्पादन)

डॉ. रमण झा (सौजन्य- रमण झा)

मैथिली काव्य अलङ्कार

अलङ्कार-भास्कर

मैथिली काव्य शास्त्र

भिन्न-अभिन्न

अहिनानय-वध (खण्ड काव्य)

पारिजात-मञ्जरी

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण"/ CIIL Site आर्काइव)

हिआउल

भगन नाति दीय जनय

नाङ्ग आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

अखियासल

केदार नाथ चौधरी (सौजन्य- केदार नाथ चौधरी)

चमेलीरानी

माहुर

करार

अबारा नहितन

अयना

हीना

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बतकही

विज्ञानक बतकही भाग-२

जनक विजय (सम्पूर्ण)

जनक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

पितामितक दशम

अकरा मिसिया (कथा संग्रह)

नावार (अनूदित सार्त्र-रिल्कान नाटक)

किछु गीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)

सुशील (सौजन्य- सुशील)

घनाठी (उपन्यास) (१९७३)

गामवाली (उपन्यास) (१९८२)

रामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३)

अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६)

कामेश्वर झा 'कमल' (सौजन्य- नवोनारायण मिश्र)

कमल-ताल (गीत संग्रह)

गामलोचन ठाकुर (सौजन्य- गामलोचन ठाकुर)

उ कहब साँच कहब

आँखि मूनने आँखि खोलने (संस्मरण)

स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण)

अपूर्णा (कविता संग्रह)

इतिहासहन्ता (कविता संग्रह)

देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता संग्रह)

लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता संग्रह)

प्रतिध्वनि (विदेशी भाषाक कविताक मैथिली अनुवाद)

पद्मानदीक माझी (अनूदित उपन्यास)

मैथिली लोककथा

आजुक कविता (सम्पादित कविता संग्रह)

बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य)

देसिल बयना (अखबार)

विदेह गामलोचन ठाकुर विशेषांक

डॉ. देवशंकर नवीन (सौजन्य- देवशंकर नवीन)

आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

डॉ वचेश्वर झा

निबन्ध-निकुञ्ज

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुरल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

आँखिम चित्र हो मैथिली कर (आत्मकथा- जानी)

धारक ओहि पार (दीर्घ कविता)

गीत गंगा (गीत संग्रह)

गजल गंगा (गजल संग्रह)

गाम अंगना म (गीत संग्रह)

गाम अंगना म (गीत संग्रह)- मूल

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

राज किशोर मिश्र

बानगि (कविता संग्रह)

समर्पण (कविता संग्रह)

रवीन्द्र नारायण मिश्र (सौजन्य- रवीन्द्र नारायण मिश्र)

भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा)

प्रसंगवश (निबंध)

स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग)

प्रसाद (कथा संग्रह)

नमस्तस्यै (उपन्यास)

विविध प्रसंग (निबंध)

महराज (उपन्यास)

लजकाटर (उपन्यास)

सीमाक ओहि पार (उपन्यास)

समाधान (निबंध संग्रह)

मातृभूमि (उपन्यास)

स्वप्नलोक (उपन्यास)

शंखनाद (उपन्यास)

ओहन थिक जीवन (संस्मरण)

ढहैत दवाल (उपन्यास)

पाथेय (संस्मरण)

हम आबि रहल छी (उपन्यास)

प्रलयक परात (उपन्यास)

बीति गेल समय (उपन्यास)

प्रतिबिम्ब (उपन्यास)

बदलि रहल अछि सभ किछु (उपन्यास)

राष्ट्र मंदिर (उपन्यास)

संयोग (कथा संग्रह)

नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

गामघर (कथा संग्रह)

सुजाता (उपन्यास)

महारानी कैकेयी (प्रवचनात्मक निबन्ध)

गुदरीक लाल (उपन्यास)

अनठिया कुकुर (उपन्यास)

आत्ममन (कथा संग्रह)

दिल्लीक पार्क (शब्द चित्र)

सुकन्या (उपन्यास)

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

काव्य सरिता (मैथिली काव्य संग्रह)

परिवार (संस्मरणात्मक उपन्यास)

पावक क नोर (मैथिली शब्द-चित्र)

सत्यानन्द पाठक (सौजन्य- सत्यानन्द पाठक)

हमर गाम (उपन्यास)

डॉ. उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (सौजन्य- नचिकेता)

नो एण्ट्री : मा प्रविश

आन्दोलन

एक छल राजा

जनक आ' अन्यान्य एकांकी

नाटक क लेल

नायक क नाम जीवन

प्रत्यावर्तन

रामलीला

प्रियंवदा (एकांकी)
मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)
मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाई १९६९)
मिथिला दर्शन मार्च २०२१
मिथिला दर्शन नवम्बर २०२१

रवि भूषण पाठक

निहर्सल (नाटक)
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)

कुमार मनोज कश्यप

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)

डॉ. शम्भु कुमार सिंह

(तुकाराम नामा (शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद डॉ शम्भु कुमार सिंह द्वारा) पाखला
विदेह:सदेह २५ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनूप कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)

डॉ. अनूप कुमार सिंह

विदेह:सदेह २५ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनूप कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)

कुमार पवन (सौजन्य- अँणिमा)

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)
डायरीक खाली पन्ना

केशव भारद्वाज

अजगुत अफ्रीका (अफ्रीका डायरी) पृ. २१४-४६६
किछु पढल आ किछु सुनल- हुसैनी अमीन पृ. ४८८-७४८
खलौना पृ. ४६१-४८१
पैवन्द पृ. ७४९-१९८
किछु कथा ७०-४६३

गोपाल झा 'अभिषेक' (सौजन्य- गोपाल झा 'अभिषेक')

आउ स्वप्न साजी कनी (कविता संग्रह)

आनन्द कुमार झा (सौजन्य- आनन्द कुमार झा)

विस्मृत यथार्थ (कविता संग्रह)

किशन कारीगर (सौजन्य- किशन कारीगर)

किछु फुरा गेल हमरा

आशीष अनचिन्हार

संदर्भ सहित (गजल-आलोचना)

कुमारि इच्छा (गजल संग्रह)

जंघाजाठी (गजल संग्रह)

अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह)

मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

मैथिली नव पत्रकारिताक इतिहास (अनुलग्नक: अंतिका आलेख:अंतर्जाल आ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर)

मैथिली गजलक शती सम्मान

शब्द-अर्थ-शक्ति

समालोचना- गजेन्द्र ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (विदेह गजेन्द्र ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप)[सम्पादन]

मुन्नाजी

मकाम दिस (वीहनि कथा संग्रह)

प्रतीक (विहनि कथा संग्रह)

माँझ आँगनमे कतिआएल छी (मैथिली गजल संग्रह)

हम पुछैत छी (साक्षात्कार)

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

घाव (हाइकू-टंका संग्रह)

सन्दीप कुमार साफी

वैशाखमे दलानपर

ओम प्रकाश झा

किछु बुझि नै सकल हमरा (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह)

अमित मिश्र

नव अंशु (गजल-हजल, रुबाइ संकलन)

चन्दन कुमार झा

मानक बाट (गजल, हजल,बाल गजल, रुबाइ आ कताक संकलन)

डॉ. अनमोल झा

समय साक्षी थिक (विहनि कथा संग्रह)

एली ई समय अछि (विहनि कथा संग्रह)

विनय भूषण (सौजन्य- आशीष अनचिन्हार)

उगना पननाक खोज (कविता संग्रह)

आनन्द कुमार झा

टाकाक मोल (नाटक)

कलह (नाटक)

बदलैत समाज (नाटक)

धधाइत नवकी कनियाँक लहास (नाटक)

हठात् परिवर्तन (नाटक)

मुक्ति यात्रा (नाटक)

शिव कुमार झा "टिल्लू"

क्षणप्रभा-कविता-संग्रह

अंशु-समालोचना

देवांशु वत्स

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कॉमिक्स)

डॉ. विनीत उत्पल

हम पुछैत छी (कविता संग्रह)

रेहन पर रग्घू - काशीनाथ सिंह हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद

मन्त्रद्रष्टामृत्युशृङ्ग- लेखक हरिशंकरश्रीवास्तव "शलभ" (हिन्दीसं मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल द्वारा)

मोहनदास- उदय प्रकाशक हिन्दी उपन्यासक विनीत उत्पल द्वारा मैथिली अनुवाद

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी) मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर) मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

नदिया पुछैए हमर घनाछीयन (गजल संग्रह)

गामक काक रंग (विहनि कथा संग्रह)

चानहो- (बाल उपन्यास)

व्यथा- (कविता-गीत संग्रह)

राजदेव मण्डल

अम्बरा-कविता-संग्रह

हमर टोल (उपन्यास)

बसुंधरा(कविता संग्रह)

जाल (पटकथा)

लाज (एकांकी)

जल रंगल (उपन्यास)

त्रिवेणीक रंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

पंबेरी (लघु पटकथा)

नायसी

Rajdeo Mandal- Maithili Writer by Gajendra Thakur

दुर्गानन्द मण्डल

संचयिका

कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

चक्षु

राम विलास साहु

अंकुर- लघुकथा संग्रह

रथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह)

कर्म विनु भग सून्ना (हासन कविता/ टनका संग्रह)

मूलक खिचड़ी (विहनि/ लघु कथा संग्रह)

दुखवचनी (लघु कथा संग्रह)

मनक मैल

रामायण यादव (सौजन्य- उमेश मण्डल)

खाली घर

रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"

हमरा विनु जगत सूना छै

गीतांजलि झारू

कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह)

नंद विलास राय

सखानी-पटानी(लघुकथा संग्रह)

मदन अमन (वासन लघु कथा संग्रह)

मनजादक राज (गसन लघुकथा संग्रह)

रनदुगिया

छ0क ताला

हमन चानुधाम

असल पूजा

ललन कुमान कामत (सौजन्य- उमेश मण्डल)

किछु विहनि आ लघुकथा

उमेश पासवान

वर्णित रस

बेचन 0कुन

बेटीक अपमान आ छीननदवी (नाटक)

बाप रल पिम्ही आ अधिकान (नाटक)

विसवासघात (नाटक)

ऊँच-नीच (नाटक)

रौंट (नाटक)

डॉ. उमेश मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसान (अनुसन्धान विश्लेषण)

अपन्दन (संकलन-सम्पादन)

हनुवक सँ रुसवक धनि (संकलन-सम्पादन)

जाग न जाग कवि जाग जाग अनुरनी (संकलन-सम्पादन)

निर्विकल्प (संकलन-सम्पादन)

समस्या सँ समाधान धनि (संकलन-सम्पादन)

निश्चुकी- कविता संग्रह

मिथिलाक संस्कान गीत, विध-व्यवहान गीत आ गीतनाद (संकलन)

मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो

Mthila_Painting-Modern Art-Photos

सगन नाति दीय जनय- इतिहास

सगन नाति दीय जनय- आनती कुमानी राहुल

दूध-पानि हुनाक-हुनाक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)-(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

हिन्दुस्तानी मुसलमान और हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल

उमेश मण्डल द्वारा मैथिली लेखकक रचना संसारसँ बीछल विचारक पोस्टरक पोथी

जगदीश प्रसाद मण्डल राजदेव मण्डल डॉ. शिव कुमार प्रसाद रामदेव प्रसाद मण्डल "झारुदार" राम विलास साहु नन्द विलास राय कपिलेश्वर राउत प्रीतम कुमार निषाद

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (उमेश मंडल : सौजन्य)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

अन्तर्ध्वनि (उमेश मण्डल -चयन एवम् सम्पादन -गोट बीछल कथा १७ जगदीश प्रसाद मण्डलक)

....

जगदीश प्रसाद मण्डल

गामक जिनगी (लघुकथा संग्रह)

मिथिलाक बेटी (नाटक)

मौलाइल गाछक फूल (उपन्यास)

जिनगीक जीत (उपन्यास)

उत्थान-पतन (उपन्यास)

जीवन-मरण (उपन्यास)

जीवन-संघर्ष (उपन्यास)

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

पंचवटी (एकांकी-संचयन)

अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुरेन्द्र.. राइक सिनेह इत्यादि (लघुकथा संग्रह)

कम्प्रोमाइज (नाटक)

झमेलिया बिआह (नाटक)

इन्द्रधनुषी अकास (पद्य संग्रह)

शंभुदास (तीनटा दीर्घ कथा मइटुअन, शंभुदास आ हाँसी)

गीतांजलि (गीत संग्रह)

राति-दिन (कविता संग्रह)

यंवदन सीनीज

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेह २३३ (Videha_01_09_2017) सँ २५० (Videha_15_05_2018) धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

VIDEHA_233	VIDEHA_234	VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238
VIDEHA_239	VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244

VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249	VIDEHA_250

पंगु (उपन्यास)- साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार 2021 सँ सम्मानित पोथी

पंगु (हिन्दी अनुवाद नारायण प्रसाद मण्डल)

अप्पन साथी (लघुकथा संग्रह)

माड़यन (उपन्यास)

सुचिता (उपन्यास)

सरहद सरहद नहि भेल (लघुकथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उड़ि न सकी पर चिड़ै छी हम (भाग १-२) (पृ. १०७४-१०९७)

किस्सा अण्टार्कटिका केर (पृ. १०७४-१०९७)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१७)

बाल कविता (पृ. १००४-१११३)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४१-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८७०)

....

गजेन्द्र ठाकुर

तेलुगु कथा आ ओड़िया, तेलुगु, गुजराती, राजस्थानी आ कश्मीरी कविता

तेलुगु कथा आ ओड़िया, तेलुगु, गुजराती, राजस्थानी आ कश्मीरी कविता (मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-१

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक-२)

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (भाग-२, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-८) (सजिल्द)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (मिथिलाक्षर)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (कैथी)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (नेवारी)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (IPA)

दुखद पक्षी- The Black Book

दुखद पक्षी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

पर्यटन उपन्यास रचना ज सूत्र (वीरहनि, लघु आ दीर्घ कथा संग्रह)

पर्वत उपर रमना ज सूतल (मिथिलाक्षर)

पर्वत उपर रमना ज सूतल (कैथी)

पर्वत उपर रमना ज सूतल (नेवारी)

पर्वत उपर रमना ज सूतल (IPA)

स्वप्नम मिश्रान श्लोक

The_Science_of_Words

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (हिन्दी अनुवाद नामश्वर प्रसाद मण्डल)

गंगा ब्रिज (नाटक)

उल्कामुख (नाटक)

संकर्षण (नाटक)

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (नूतन, कथा आ गजल संग्रह)

सहस्रजित् (पद्य संग्रह)

सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह)

प्रबन्ध आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध)

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)

सहस्रबाढ़नि_ब्रेल-मैथिली **(मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी)**

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

देवनागरी वर्सन मिथिला वर्सन ब्रेल वर्सन

Learn Maithili Sign Language

Learn Mithilakshar Script

Learn Braille through Mithilakshar Script

Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script

Learn Kaithi

Learn Newari

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)

Learn Urdu Script

Learn Tibetan Script

Learn Japanese Script for Haiku

Learn Brahmi

Learn Kharoshthi

मिथिला नृत्य/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पारम्परिक गीत (कथा) आ मिथिलाक संगीत

जलदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अञ्जनशलाका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाढ़क बढ़ौना (बाल-पद्य संग्रह)

नानाशंसी (गीत-प्रबन्ध)

मचन्दु (नाटक)

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

रेड जाइन्ट छी *(मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक रंगा

गजेन्द्रिम पनीलाक

बसी छुट्टी काम इस्कुल

बउद कनैय दाउन न यौ

बाल गजल

हिनिश लाइन

अनुदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ नवि ऱ्खेध पाठकक आन भाषासँ अनुदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाइली कन पनिवर्णिकानी नवका

(शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुगु	घन सर	एकटा नीक दिन	चलू हम सँ ठीक छी ना!	की अहाँ ई चिड़ै सभकेँ देखने छी?
टास्क	बड़ीटा! कनियटा!	एहि हम सर नहि छी	राजमहलक राजकुमारी	राजमहलक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
नुआ	कचकच- कचाक	चुलबुलक- नचनाइ	नना ज बेलुनसँ उड़ाइत छल	अद्भुत दिवालाची अंक-शृंखला

हानु	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव भोज	माट नाजा यागन-दुब्बउ कुकुउ	वचिया ज अयन हँसी नै नाकि सकैत छलि
अंग्रेजी	हम सुधि सकै छी	छोट लाल-टुहटुह जनी	कनु नीक, भागु नीक	ऌी सस्ता विलाडिक दाख अछि!
वाह आम!	हमन टालक वाट	जखन ऌकउ स्कूल गेल	माछी हन आउ टाटा!	अमाचीक झलुम मशीन सर
टिंग टांग	याउथ्याऊ--नाह	कुकुउक एकटा दिन	हमना नीक लागैए	नीनाक नव-झूलम यहिल दिन
कनी हँसियौ न!	लाल वनसागी	रूपघ्राक नाश्ताला-	आउ यजन गानी	कौs अछि ऌी अंक ग?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग चीत-अलाउत ▯डिया बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wf6zr5CoF (मसाऌी कान यनिवर्तनिकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गँ ठीक छी न!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ज चिउ सरकँ दखन छी?)

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional-गाइड ठाकुन

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (गिनहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयाग)

मैथिली प्रतियागिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारतीय भाषा यनिवान मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव आ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्याेतिरीश्वर, विद्यापति आ गाेविन्ददास सिलवसम छथि आ नसमय कवि चतुन चतुरगुज विद्यापति कालीन कवि छथि। भाय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ कनवासँ पूर्व चानू गाेटक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग दल जा नहल अछि। नव आ पुनान शब्दावलीक स्थानसँ ज्याेतिरीश्वर, विद्यापति आ गाेविन्ददासक प्रश्नाेत्तनम धान आउत, संगहि शब्दकाेष वढलासँ खाँटी मैथिलीम प्रश्नाेत्तन लिखवाम धाख आस्ते-आस्ते खतम हायत, लखनीम प्रवाह आयत आ सुद्धा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(वद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैद्यु भजीशन- प्रथम यत्र- लाेकिक गाथाम समाज आ संस्कृति)

(वैद्यु भजीशन- द्वितीय यत्र- विद्यापति)

(वैद्यु भजीशन- द्वितीय यत्र- यद्य समीक्षा- वानगी)

(वैद्यु भजीशन- प्रथम यत्र- लाेक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैद्यु भजीशन- द्वितीय यत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)
(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)
(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विधान)
(मिथिला लिपिक उद्भव आ विकास)
अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-७
(मैथिली आ आसन्न पड़ोसिया भाषाक बीचक सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ उड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-"ए", क्रम-७])
[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]
मैथिली

बांग्ला

असमिया

उड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01- गजेन्द्र ठाकुर
NTA_UGC_NET_Maithili_02- गजेन्द्र ठाकुर
Test Series-1- गजेन्द्र ठाकुर
Test Series-2- गजेन्द्र ठाकुर
GS (Pre)
Topic 1- गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-२७ www.videha.co.in

विदह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

दवनागरी	मिथिलाउन
विदह१ सदह:	विदहगिनहुता १ सदह :
विदहसदह: २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालाचना	विदह: सदह २ गिनहुता
विदहसदह: ३ मैथिली पद्य	विदह: सदह ३ गिनहुता
विदहसदह: ४ मैथिली कथा	विदह: सदह ४ गिनहुता
विदह मैथिली विहनि कथा [विदह सदह ५]	विदह: सदह ५ गिनहुता
विदह मैथिली विहनि कथा [विदह सदह ५२-संशाधन -[	विदहसद :ह ५ संशाधनगिनहुता २-
विदह मैथिली लघुकथा [विदह सदह ६[	विदह: सदह ६ गिनहुता
विदह मैथिली पद्य [विदह सदह ७[	विदह: सदह ७ गिनहुता
विदह मैथिली नाट्य उत्सव [विदह सदह ८[	विदह: सदह ८ गिनहुता
विदह मैथिली शिशु उत्सव [विदह सदह ९[	विदह: सदह ९ गिनहुता
विदह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालाचना [विदह सदह १०[	विदह: सदह १० गिनहुता
विदह११ सदह:	विदहगिनहुता ११ सदह :
विदह१२ सदह:	विदहगिनहुता १२ सदह :
विदह१३ सदह:	विदहगिनहुता १३ सदह :
विदह१४ सदह:	विदहगिनहुता १४ सदह :
विदह१५ सदह:	विदहगिनहुता १५ सदह :
विदह१६ सदह:	विदहगिनहुता १६ सदह :
विदह१७ सदह:	विदहगिनहुता १७ सदह :
विदह१८ सदह:	विदहगिनहुता १८ सदह :
विदह१९ सदह:	विदहगिनहुता १९ सदह :

विदेह२० सदेह:	विदेहमिथिला २० सदेह :
विदेह२१ सदेह:	विदेहमिथिला २१ सदेह :
विदेह२२ सदेह:	विदेहमिथिला २२ सदेह :
विदेह२३ सदेह:	विदेहमिथिला २३ सदेह :
विदेह२४ सदेह:	विदेहमिथिला २४ सदेह :
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ मिथिला
विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
विदेह:सदेह २६ (डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अनुप कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २६ मिथिला
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ नवि दुखन ठाकुरक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २७ मिथिला
विदेह) २८ सदेह:अनूदित गद्य आ पद्य-१ अंक -३७० सँ(	विदेह: सदेह २८ मिथिला
विदेह:सदेह २९ (नवि दुखन ठाकुर आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २९ मिथिला
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३७० सँ)	विदेहमिथिला ३० सदेह :
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३१ मिथिला
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३२ मिथिला
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३३ मिथिला
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३४ मिथिला
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३५ मिथिला
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३६ मिथिला

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३७

....

Videha-Sadeha

भाषापाक -विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

विदेह पुरान अंकक आर्काइव

Videha 1-50

Videha 51-100

Videha 101-149

Videha 150-250

Videha 251-Onwards

Audio Archive Folder

Mithila_Painting-Modern Art-Photos

Videha Old Issues Folder

Videha Classical Sites Folder

....

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन)

मैथिलीक प्रतिनिधि गजल

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

....

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

जीनियोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-२

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर पाण्डुलिपि)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili-English Dictionary Vol.I

Maithili-English Dictionary Vol.II

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

Videha English Maithili Dictionary

English-Maithili Computer Dictionary

....

दिनेश कुमार मिश्र (सौजन्य दिनेश कुमार मिश्र)

बन्दिनी महानन्दा

बागमती की सद्गति!

दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी)

न घाट न घर

बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी

भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूँक

The Kamla River and People On Collision Course

Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft

Refugees of the Kosi Embankments

....

पत्रिका-जर्नल-म्यागजिन

मैथिली कविता-त्रैमासिक (सौजन्य- नचिकेता)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाई १९६९)

मिथिला दर्शन (सौजन्य- नचिकेता)

मार्च २०२१

नवम्बर २०२१

कौशिकी (सौजन्य- पञ्जीकार विद्यानन्द झा)

कौशिकी (१९७१-७२)

दलित वयना (अखबार) (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

दलित वयना (अखबार)

Society Today (सौजन्य- सुमित आनन्द)

अंक ११

संकल्प (सौजन्य- योगानन्द झा)

अंक ७ १९८८

अंतिका (सौजन्य- गौरीनाथ)

जुलाई-सितम्बर २००८ (हरिमोहन झा विशेषांक) अक्तूबर २०१०सँ मार्च २०११ अक्तूबर २०११ सँ मार्च २०१२

स्वाती मंतन (सौजन्य- कदम्ब कानन)

अंक-१६

सन्धान (सौजन्य- अशोक)

सन्धान १

सन्धान २

सन्धान ३ प्रवास विशेष

सन्धान ४

मिथिलांगन (सौजन्य मुकेश दत्त)

अप्रैल-सितम्बर २०२२

मैलांग (सौजन्य- प्रकाश झा)

अंक२-३

धूआ-धजा (सौजन्य- घनश्याम कायस्थ)

अंक ७ अंक १४ अंक १७ अंक १६ अंक १८ अंक १० जून २०१२ अंक २४ जून २०१२ 23February2016 २७ जुलाई २०१२ ०७ अगस्त २०१२ आसिन २०१३

स्मारिका (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

स्मारिका (२०१०)

आंगन (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

आंगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँजुर (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि भ्रमर)

आँजुर (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सामदेव विशेष

गामघर (सौजन्य- रामभरोस कापड़ि "भ्रमर")

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०७-२०१९

गामघर-२१-०६-२०१९

दुभषी- (नेपाली आ मैथिलीमे) (सौजन्य- सुनील कुमार झा)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

घर-बाहर (सौजन्य- चेतना समिति)

अप्रैल-जून २०११

नवना (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

दिसम्बर "०७ मार्च "०६राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

पल्लव (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

पल्लव- १ गजल अंक

पूर्वोत्तर मैथिल (सौजन्य- प्रेमकान्त चौधरी)

अप्रैल-जून 2010 जुलाई-सितम्बर 2010 जनवरी सँ मार्च 2011 अप्रैल-जून २०११ जुलाई-सितम्बर २०११

लालदास स्मरणांजलि स्मारिका २०२२ (सौजन्य डॉ संजीव शमा)

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (डायरेक्ट लिंक)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

ज्ञआयल कनकनी- महेन्द्र

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलबस)

सृजन कन दीय पर्व- सं कदान कानन आ अनिरुद्ध ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदेव झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान रत्नाकर

मिथिला दर्शन

पीनगुकि

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI - English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

यात्री डॉट कॉम

I Love Mthila (यात्री डाउनलोड लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mthila

यात्री मैथिल चैनल- किसन चौधरी आ संगीता आनन्द

मिथिला चैनल

खिस्सा-पिहानी नेना भुटका लेल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

....

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

....

Videha e-Learning YouTube Channel

....

विदेह सम्मान: सम्मानसूची- (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीतनाटक अकादमी - (पूर्वमे नामसँ विख्यात /सम्मान

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रतिनिधि बुझाइत अछि, से एकर एकटा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, ताबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आन दास-नीतिंग दासन-उदाहरणमे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-

published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/documents.

३. मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन Maithili Audios-Videos

विदेह ऑडियो-वीडियो

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search for Audio-Video related information (including Print, Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili](https://books.google.com/)

https://books.google.com/

"Videha" Ist Maithili Fortnightly ejournal Archive of Audios-Videos 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो-वीडियो आर्काइव मैथिली ऑडियो-वीडियोक संकलन (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल)ऑडियो-वीडियो देखबाक लेल सम्बन्धित लिंकपर क्लिक करू। For viewing audios-videos click the respective links.

....

मिथिलाक संस्कार जाति आ धर्मक संस्थान, लोकगीत आ व्यवहार गीत (उमेश मंडल :सौजन्य)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

....

गुवाहाटी विद्यापति पर्व २०१०

पहिल भाग दोसर भाग तेसर भाग चारिम भाग पाँचम भाग

गुवाहाटी अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ विद्यापति पर्व २०११

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46

....

मैथिली फिल्म

ममता गाबय गीत -सौजन्य) Saregama(

कन्यादान (सौजन्य- BEJOD)

Maithili Movies on Rent

BEJOD

गामक घर

[illegible]

चौबटिया (धीरेन्द्र प्रेमर्षि -सौजन्य)

चौबटिया

सौराठ मिथिला

ललका पाग भाग१-

ललका पाग भाग२-

....

मिनाय१-

वृधियान छीठ आ नाऊस

मिनाय२-

राग१- राग२- राग३- राग४-

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

यं लक्ष्मीयणि सिंह (सौजन्य नमानह मा "नमध")

हिन्दी-मैथिली-शिउक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाय (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संका राखा सहित- मैथिलीम यहिल वन)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

यापन मैथिल चैनल- किनध चौधनी आ संगीणा आनन्द

मिथिनंग लाक गनंग

मिथिला वैशुन

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

मिनाय

मैलानंग

मिथिलांगन

रंगिमा

मैथिली नंगमंच

कोकिल मंच

मिथिला दर्शन

मिथिला मिनन

स्मृति ७ंटनटनमंट

BEJ OD

ञचल विप्र

नीलम मैथिली

मैथिली गंगा

मिथिला ॐक्लान

मैथिली क्लास

मैथिली समाचान (ञनता टलीविञन)

मैथिली टॉक्स

ञयन टी.वी.

टी.वी. टूड, ञनकयून

दृश्यम मीडिया

संस्थान मिथिला

सानगामा मैथिली

नवनस मीडिया

ग्राणि ७ंटनटनमंट

ञ्ञजानिया फिल्म्स

ञयाश्यानाथ चौधनी

नडिया ञनकयून

मिथिला टी.वी.

मधून मैथिली

मैथिली-नयाली सीखू

ञयन मैथिली

मैथिली या0

सुनङ्ग नाउग

मिथिलांचल

अमित झा

प्रवेश मल्लिक

आदित्य फिल्म्स एण्ड म्यूजिक

नेपाल टेलीविजन

आकाशवाणी मैथिली समाचार

आकाशवाणी अमृत महोत्सव

रश्मि दत्त

प्रिया मल्लिक

अनामिका झा

नेहा कश्यप, नचिकेता

कुंज बिहारी

नाम बाबू झा

बी. के., विकास झा

गिनहुन मिथिला

आइ लव मिथिला

लोक कला केन्द्र

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

रंजना झा

रूबी झा

मैथिली ठाकुर

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाञ्छी कान यनिवर्णनकानी नवका(

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलु हम गँ ठीक छी न(!

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (उकरा नीक दिन(

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर(

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ उ चिउ सरकँ दखन छी?)

जानकी उरुउम समाचान.

आकाशवाणी दनरंगा यू ट्यूब चैनल

I Love Mthila

online maithili journal

owner I Love Mthila

....

वृखश चन्द्र लाल, जनकपूनक सौजन्यसँ

मिमिया

ढालियियही-

यननकान्द मा (काश्यय कमल), रटसिमनि, मधूवनीक सौजन्यसँ

नसनचौकी

....

विद्यायनि गीन

गूलिका

गीत(गायन दीपा रानी) गोविन्ददास-

गोविन्ददास१-

गोविन्ददास२-

गोविन्ददास३-

गोविन्ददास४-

गोविन्ददास५-

गोविन्ददास६-

....

मैथिली गजल गजेन्द्र ठाकुर -गजल), गायन दीपा रानी(

वरुण मृगकानिव

गजल२-

गजल३-

गजल४-

....

११म सगर राति दीप जरय (२०१० अक्टूबर ०२), गाम बनमा , जिला मधुबनी (जगदीश प्रसाद मंडल -संयोजक)

राग१- राग२- राग३- राग४- राग५- राग६-

82 म सगर राति दीप जरय, स्थानगजेन्द्र ठाकुर जीक निज आवास -, गाममेंहथ -, जिलामधुबनी। --दिनांक 31 मई 2014 (शनि दिन(, समकथा बौद्ध सिद्ध महेथया सगर -संध्या छह बजेसँ गोष्ठीक नाओं -म आयोजन ८२ -दीप जरय। आयोजनक खय नाति , संयोजकवाल साहित्यायन -गजेन्द्र ठाकुर। विशेषता -कनिद्रा।

....

मैलोरंग१- (सौजन्य(प्रकाश झा -

नविकणाक एक छल नाजा -राग -1

नविकणाक एक छल नाजा -राग - 2

का0क लाक-महुञ्च मलंगिया राग -1

का0क लाक-महुञ्च मलंगिया राग -2

मैलानंग२-

कासी समीनान 12 सिणम्बन 2008 राग१-

कासी समीनान 12 सिणम्बन 2008 राग२-

....

मिथिलांगन

विदह मैथिली नाय उत्सव

यु ञुव लिंक

विदह मैथिली साहित्यनिवर्चा उत्सव /कनिणा /नाय /

विदह समानान्तन साहित्य अकादमी सम्मान समानाह

जनकयुनविद्यायणि यर्व -

जिणेञ्च मा, जनकयुन

नामरञ्च

सामा चकवा 1

सामा चकवा 2

मैथिली कवि सम्मलन (मिथिला कल्चनल □(गेनाञ्ज्जशन, यु(.क.

नियल्किक उ 2009 (रानण(

सगन नाणि दीय जन७, कविलयुन, ञुन २०१०

राग१- राग२-

कृष्ण कुमान कश्यसँ गजेञ्च 0कुन ञ्जाना लल साञाकान

भाग१- भाग२- भाग३- भाग४- भाग५-

भाग६- भाग७-

प्रबोध सम्मानसम्मानित : भा

(स्वाङ्हतनकँ वीवम ल'जाउ, अदहाक वाद नाजमाहन मासँ विनीत उपलक साजाबान छवि।(

साहित्य अकादमी पुरस्कारसम्मानित : भा

मिथिलाक खोज

1.(गौनीशकन

भाग१- भाग२-

2. बाङ्हीवसेटी-

नर्षकृत्य

भाग१- भाग२- भाग३- भाग४- भाग५-

भाग६- भाग७- भाग८- भाग९- भाग१०-

समन्वय २ङ्गिया हैवीटट सनुन भानीय भाषा २०१२ नवम्बर ४-महासव

Samanvay 2-4 November 2012 IHC Indian Languages' Festival. Venue: India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi -- 110 003.

3rd November 2012 Maithili- Love's Own Language/ Brahminism in Maithili/ Pre-Jyotirishwar Non-Brahmin Vidyapati

भाग१- भाग२- भाग३- भाग४- भाग५-

भाग६- भाग७- भाग८- भाग९- भाग१०-

भाग११- भाग१२-

2nd November 2012 Ugna Re- By Shovna Narayan (Pre-Jyotirishwar Non Brahmin Vidyapati's Life Episode)

भाग१- भाग२- भाग३- भाग४- भाग५-

भाग६- भाग७- भाग८-

१५म सगर राति दीप जरय म मुन्नाजीक पहिल विहनि कथा पुस्तक प्रदर्शनी

मिथिलाक मूतन(रसनचौकीक धुनक संग) -

हृदयनारायण झा

भाग१- भाग२- भाग३-

रंजन चौधरी आ रूबी मिश्र (गवला)

भाग१- भाग२- भाग३- भाग४- भाग५-

भाग६- भाग७- भाग८- भाग९-

ललित रंग आ रूबी मिश्र (गवला)

भाग१- भाग२- भाग३-

दीपा रानी

भाग१- भाग२- भाग३- भाग४-

सुषमा

बटगमनी

नन्द कुमार मिश्रक गजल पाठ

नन्द कुमार मिश्र जीक कविता पाठ

भाग१- भाग२-

मैथिलीभोजपुरी अकादमी -, नई दिल्ली

भाग१- भाग२- भाग३- भाग४- भाग५-

मैथिलीभोजपुरी अकादमी -, नई दिल्ली सेमीनार 29 मार्च 2009

भाग१- भाग२- भाग३- भाग४- भाग५-

भाग६- भाग७- भाग८- भाग९-

मैथिलीभोजपुरी अकादमी -, द्वारका, नई दिल्ली सेमीनार

भाग१- भाग२- भाग३- भाग४- भाग५-

भाग६-

....

विदेह सम्मान: सम्मानसूची- (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत /सम्मान नाटक अकादमी- (पुनर्स्थापन नामसँ विख्यात

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी -विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रतीत होइत अछि, से एकर एकरा एक उदाहरणमे उनटायूनटा दियौ-, तावत धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. मैथिली पठन लेल सेहो इग्नू पर्याप्त (कम्पलसरी) अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली पठन लेल छथि से एकर (कम्पलसरी) उदाहरणमे करथि-नीतिंग दासन-एकरा आन होएत|

IGNOU इग्नू BMAF-001

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

विदेह शिशु, बाल आ किशोर उत्सव

वि दे ह विदेह Videha बिदेह http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Children Literature (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Children Literature विदेह मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्यक आर्काइव (युनीकोड अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) सभ एतय पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं. लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य गजानन्द झा "गजन")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली **(मैथिली संग भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)**

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

विदेह मैथिली शिशु उत्सव

कथा बौद्ध सिद्ध मरुथया (बाल साहित्य कद्दिग) मंरुथम देल ८२ म सगर राति दीप जरयमे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध मरुथया

नेना भुटकाकेँ नानिम सुनबा लेल किछु लोककथा

राला लाल दास (आर्काइव जोट कोम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

नाग आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बतकही

विज्ञानक बतकही भाग-२

ननक विजय (सम्पूर्ण)

ननक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

यिनामितक दशम

रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

मैथिली लोककथा

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुरल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

बाल कविता

मुन्नाजी

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

दनांशु नस

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कॉमिक्स)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

चानहा (बाल उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

कृष्ण चन्द्र लाल (सौजन्य- कृष्ण चन्द्र लाल)

ढालक (बाल कविता संग्रह)

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

काठुली घुरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उठ न सकी यन विउ छी हम (भाग १-२) (पृ. १०७४-१०९७)

खिस्सा अण्टार्कटिका कन (पृ. १०७४-१०९७)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१७)

बाल कविता (पृ. १००४-१११३)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४१-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८७१)

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया रवी कुमारी

सुकन्या (पृ. ६३८-६१४)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद रूपा धीरू आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

रंगीन बढ़क दश-प्रमाण

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खण्ड

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

नस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

७ वी सी जी- प्रकृति अजान यात्री (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
सत खाड्ग अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
वा श्याउ वाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
नढ सत (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(०६) छाट आ येघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(०१) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
(११) हमर यनिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
यात्री १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)
वाजाक अवाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

नीना झा (सौजन्य- नीना झा)

बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

किरण चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-गाछी
आर्या कॉकपिट मे
दीया कनमाकन- सही संतुलन मे
जंगल मे अहाँक स्वागत अछि
फूल छथि आकाश मे
रैया क मुस्कान क चानीलक
बीज संचयक
अर्पित करय "हिवानाची"
शौचालयक खिस्सा
लाल वनसाती
गुल्लीक जादुई थटी
समीनाक विक0 राजन
विवाह मे जादुई छी

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कौआ सकै छी, नदिया कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बच्ची आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सबसँ नीक संगी

स्वाक्षिका ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गधा बूढ़ बाघक नै डरै छै

तूलिका (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा डर बाटी!

मधुलिका मिश्र (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

डॉक्टर रीमा

लक्ष्मी ठाकुर

आनन्न सर संग ईंट-घाँट

पूनम मण्डल

सूर्य कालक खिस्सा

गजेन्द्र ठाकुर

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

Learn Mithilakshar Script

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाढ़क बड़ोना (बाल-पद्य संग्रह)

उल्कामुख *(मैथिलीक 2012 मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक जगना

तनजनिम यनीलाक

बसी छुट्टी कम इस्कूल

बउद कनैत दाउन न यौ

बाल गजल

फिनिश लाइन

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाली कन यनिवर्णिकानी नवका

सूनु

घन सर

एकटा नीक दिन

चलू हम तँ ठीक छी ने!

की अहाँ ओ चिड़ै सभकेँ देखने छी?

टाटा

बड़ीटा! कनियटा!

एतऽ हम सभ नहि छी

रानीपोखरिक राजकुमारी

रानीपोखरिक राजकुमारी (बिनु शब्दक)

तृष्णा

कत-कत कताक

चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ

नेना ओ बेलूनसँ खेलाइत छल

अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला

हानू

अखन नै, अखन नै!

जन्मदिनक उत्सव आज

मार नाजा पागल-दुब्बर कुकुर

बचिया ओ अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि

अंग्रेजी

हम सूँघि सकै छी

छार लाल-टुहटुह आनी

कनू नीक, रागू नीक

ई सस्ता विलातिक दाख अछि!

चारा आम!

हमर टोलक बाट

जखन इकाउ स्कूल गेल

माछी हन आउ टाटा!

अमावीक झलूम मशीन सर

टिंग टांग

याउ-म्याउ-नाह

कुकुरक एकटा दिन

हमरा नीक लगैत

नीनाक नव-स्कूलम पहिल दिन

कनी हँसियौ न!

लाल वनसानी

रुग-ग्रमक नाट्यशाला

आउ यउन गानी

कान्s अछि ई अंक ?

विदेह मैथिली-अंग्रजी टॉकिंग नीत-अलाउउ ाित्या कुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई कन यनिवर्निकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलु हम गँ ठीक छी न!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ चिउ सरकँ दखन छी?)

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९[

विदेह: सदेह ९ गिनहुना

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

English-Maithili Computer Dictionary

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वस्त्र-आभूषण-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

मैथिलीक यान्त्रिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

(गोविंद झा)(IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

नामदत्त झा (शंकरदत्त झा -सौजन्य)

मैथिली शब्द संचय

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (डायन सार्स)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

निस्तान नन्नाकन

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI - English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक(

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक(

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउंडेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली प्रतिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

याथी डॉट कॉम

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

जानकी शरुसमाचार एम.

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

....

विदेह सम्मान: सम्मानसूची- **(समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीतनाटक अकादमी - (पूर्णस्थान नामसँ विख्यात /सम्मान**

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रचलित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उत्तरमे उनटा-पुनटा दियौ, तैयो ध्वनि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (ऐच्छिक) पत्र लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (ऐच्छिक) पत्र लेने छथि से एकरा एकटा आन शास्त्र-नीतिंग शासन-उत्तरमे करथि|

IGNOU इग्नू *BMAF-001*

for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

७.विदेह स्त्री कोना

विदेह स्त्री कोना

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Works (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili by Female Writers/ Artists

https://books.google.com/

Bottom of Form(पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल(सभ पोथी डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक .पी.डी.एफ. स्वरूपमे उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below.

....

सखुआनाली (नारी विमर्श कविता) स्यटियाह्वीम स्रल ८३ म सगर राति दीप जरयम पठित कथा सभक संकलन

सखुआनाली

अणिमा सिंह (नचिकेता -सौजन्य)

शिशु गीत खेल

फूलानानी सिंह (नविकता -सौजन्य)

प्रेम(अनूदित नाटक) एक कविता -

अनुश्री देवी ("रमण" रमानन्द झा -सौजन्य)

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ.कमला चौधरी . (सौजन्य(कमला चौधरी -

मैथिलीक वस्त्र२००८ प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली-रूपा-

समय२०१० (संग्रह-कथा) संकेत-

डॉ.ललिता झा . (सौजन्य(ललिता झा -

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

सुष्मिता पाठक (सौजन्य(कदान कानन -

यनिचिति (संग्रह कविता)

कनाजति (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (कदान कानन -सौजन्य)

पाथरक शहर (कविता संग्रह)

यन्ना झा (नन्द्र झा -सौजन्य)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)

कल्पना झा (कल्पना झा -सौजन्य)

(गासाउनिक गीत

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- (शरद्धालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (मुन्नी कामत -सौजन्य)

सूखल मन पनसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सूखल मन गमसल आँखि (कविता)

अंगाः (कविता संग्रह(

चूक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (नीता झा -सौजन्य)

बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (शेफालिका वर्मा -सौजन्य)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (कल्पना झा -हिन्दी अनुवाद)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा आकास (लघुकथा संग्रह)

रावांजलि (गद्य गीत)

किस्तकिस्त जीवन- (आत्म कथा(

आखरआखर प्रीत-

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सुशीला झा /प्रभा खेतान -सौजन्य)

छिन्नमस्ताप्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद -

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४७९-७१२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)

प्रीति ठाकुर

गानू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -यहिल मैथिली चित्रकथा (वाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (वाल साहित्य)

मिथिलाक लाकदेवता (वाल साहित्य)

विद्यायतिक यूनल यनीआ (वाल साहित्य)

मूस (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

७ वी सी डी- प्रकृति अउन याथी (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

सब खाइत अछि (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

वा म्याउ वाह (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

नढ़ सब (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

(०६) छाट आ पैघ (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

(०७) माल-जाल आ जानवन दिस देखु (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

(११) हमन यनिवान (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

जानवन (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

याथी १३: १...२...३... (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

वाजाक अवाज (अनूवाद- वाल चित्रकथा)

यंजी (११००० मूल मिथिलाउन तालयत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (वाल साहित्य)

किनस चौधनी (अनूदित सचित्र मैथिली वाल कथा(

हमन वालवाडी-

आर्या कॉकयिट म

दीया कनमाकनसही संतुलन म -

जंगल म अहाँक स्वागत अछि

फूल छथि आकाश म

रैया क मूस्कान क चानीलक

वीज संचयक

अचीरिन कनय "हिवानाची"

गोवालयक खिस्सा

लाल वनसाणी
गुल्लीक जादुळ्ली यटी
समीनाक लिक0 रजन
लिनाह म जाळ्ली छी

प्रियंका मा (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा(

हमन माँछ!नै हमन माँछ !

नश्मि प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा(

कैया सकै छी, नहिया कs सकै छी

सुनीता 0ाकुन (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा(

वधी आ ववली

नीलिमा चौधनी (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा(

हमन सहसँ नीक संगी

स्नास्मिका 0ाकुन (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा(

गघ्रु वृा नाचल नै हाळ्ळ छै

गुलिका (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा(

हमना 3ा वाही!

मधुलिका मिश्र (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा(

3ांघाळ्ळा रीमा

लक्ष्मी 0ाकुन

जानवन सह संगा हँट-घाँट

यूनम मण्डल

सुरौ कालक खिस्सा

कनकमणि दीक्षित मूल नयालीसँ मैथिली अनुवाद) **नुया धीनु** आ धीनेन्द्र प्रमर्षि, वाल साहित्य(धीनेन्द्र प्रमर्षि -सौजन्य) (

रुगणा वढक दशग्रमध-

डॉ शशिधन कुमन आ **सुप्रिया वबी कुमानी**

सुकन्य (पृ. ६३८-६७४)

....

लखकक आमंत्रित नचना आ डाध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीनीज

१. **कामिनीक** यांव टा कविता आ डाध्ययन मधुकान्त साक टिप्पणी

Vi deha_01_09_2016

३. **मुन्नी कामतक** एकांकी आ डाध्ययन गजेन्द्र "जिन्दगीक माल" ठाकुनक टिप्पणी

VI DEHA_354

यसपुलटी गीता

एतिटर्स चाइस सीनीज१-

मीना सा

एतिटर्स चाइस सीनीज२-

जगदीश चन्द्र ठाकुन टा वाल कविता जन्म ३)२ **टा कविता ववी चाइलडयन**)

एतिटर्स चाइस सीनीज३-

....

विद्यापति गीत

तुलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन दीक्षा रानी)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन दीक्षा रानी)

वरुन मृताकानिव

गजल-२

गजल-३

गजल-४

ध्यान मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द

सौम्या झा

रश्मि दत्त

प्रिया मल्लिक

अनामिका झा

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

नंजना मा

इली मा

दीयशिखा मा

मैंथिली 0कुन

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

६. विदेह ई-लर्निंग

विदेह ई-लर्निंग



[संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री] [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.- नेट-मैथिली लेल सेहो]

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उपरान्त एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रभावित बुझाइत अछि, से एकर एकटा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, गाव ध्वनि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पपन लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पपन लेल छथि से एकर एकटा आन भाष्ट-नीतिंग शासन-उदाहरणमे करथि।

IGNOU इग्नू BMAF-001

....

Maithili (Compulsory & Optional)

UPSC Maithili Optional Syllabus

BPSC Maithili Optional Syllabus

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)

मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)

....

यू. पी. एस. सी. (मेन्स) ऑप्शनल: मैथिली साहित्य विषयक टेस्ट सीरीज

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य होएत तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ डाकसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर व्हाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जकाँ ई सेहो पूर्णतः निःशुल्क अछि। - गजेन्द्र ठाकुर

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, मैथिली २ आ १ -पत्र-प्रश्न /लेल टेस्ट सीरीज (ऐच्छिक)

Test Series-1- एतऽ क्लिक करू

Test Series-2- एतऽ क्लिक करू

....

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- एतऽ क्लिक करू

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (सिद्धान्त)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव आ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ तत्समय कवि चतुर चतुर्भुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एहि समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व बाबू गोटक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे ध्यान आकृष्ट, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे बाध आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सूक्ष्म भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वीडियो एडीशन- प्रथम पत्र- लौकिक गाथामे समाज आ संस्कृति)

(वीडियो एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वीडियो एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वीडियो एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वीडियो एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वेब्लॉग एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली नाटक)

(वेब्लॉग एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वेब्लॉग एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(मिथिलाक्षर लिपिक उद्भव आ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-६

(मैथिली आ आसन्न पूर्वीया भाषाक बीचक सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-'ए', क्रम-६])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली

बांग्ला

असमिया

ओड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01

NTA_UGC_NET_Maithili_02

GS (Pre)

Topic 1

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह १७	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २५	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३७

....

General Studies

NCERT-Environment Class XI-XII

NCERT PDF I-XII

Sansad TV

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

....

Other Optionals

IGNOU eGyankosh

....

पटान (निसार्स सन्न)

....

मैथिली मुहावरा ओ लोकोक्ति प्रकाश- रमानाथ मिश्र मिहिर (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. कमला चौधरी-मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ योगानन्द झा- मैथिलीक यान्त्रिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

मैथिली शब्द संचय- डॉ श्रीरामदेव झा (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

दृष्ट-रीक रूप कौशल- डॉ. श्रीरामदेवझा

यनिचय निचय- डॉ शैलेन्द्र मोहन झा

English Maithili Computer Dictionary (Complete)- Gajendra Thakur

Maithili English Dictionary- गोविंद झा

अणिमा सिंह -शिशु गीत खल

आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा 'रमण')- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

मैथिली सुबोध व्याकरण- भोला लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी-A Survey of Maithili Literature

राधाकृष्ण चौधरी- मिथिलाक इतिहास

राजेश्वर झा- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव) (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

दत्त-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस) CIIL Site

सुभाष चन्द्र यादव-राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

शिव कुमार झा 'टिल्लू' अंशु-समालोचना

डॉ बचेश्वर झा- निबन्ध-निकुञ्ज

डॉ. देवशंकर नवीन- आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

प्रेमशंकर सिंह- मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

हिआउल

अखियासल CIIL Site

दुर्गानन्द मण्डल-चक्र

हर एहि मनलग्गू हाइकूल सभकेँ सङ्ग पढ़ू:-

नामलेवन ठाकुर- मैथिली लोककथा

कुमार पवन (साहित्य अंतिका)

पञ्च0 (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

डायरीक खाली पन्ना

केदारनाथ चौधरी

अबारा नहितन	चमेलीरानी	माहुर	करार	अयना	हीना

डॉ. नरेश झा

भिन्न-अभिन्न	मैथिली काव्य अलङ्कार	अलङ्कार-भास्कर	मैथिली काव्य शास्त्र	अहिरावण-वध	वाणिज्य-मञ्जरी

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

विज्ञानक बतकही	विज्ञानक बतकही भाग-२	अकटा मिसिया (कथा संग्रह)
नक्षत्र विजय (सम्पूर्ण)	नक्षत्र विजय (संशोधित)	किछु गीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)
हमर गाम	धिनामिठक दर्शन	नाकाट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

अनूदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ नागेन्द्र कुमार झाक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाइली कर पनिभरनिहारी नवका

शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनू	घर सन	एकटा नीक दिन	चलू हम गाँ ठीक छी ना!	की अहाँ ई चित्र सभकेँ देखने छी?
टास्क	बजैटा! कनियटा!	आइ हम सन नहि छी	भागलक राजकुमारी	भागलक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
बुधा	कचकच- कचाक	चुनमुनक- नहुनाइ	नेना ओ बेलुनसँ उनाइल छल	अद्भुत हिसाबकी अंक-शृंखला
हानू	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव राति	मोट राजा पातर-दुब्बर कुक्कुर	बच्चिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि
अंग्रेजी	हम सुधि सकै छी	छोट लाल-टुहटुह आगि	कनु नीक, रघु नीक	ई सभटा बिलाड़िक दाम अछि!
चारा आम!	हमर ट्रकक बाट	जखन ...क स्कूल गेल	माछी हुन आठ टाटा!	अमावीक शलुम मशीन सन

टिंग टांग	याउम्याऊ--नाह	कुकुरक एकटा दिन	हमरा नीक लागैए	नीलाक नव-स्कूलमे पहिल दिन
कनी हँसियौ न!	लाल बनसाती	रूपाक नाचशाला-	आउ फुल गानी	कोन अछि ओ अंक १?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग चीत-अलाउड [illegible]तिया बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wf6zr5CoF (मसाल्ली कान पनिलगलिकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गेँ ठीक छी न!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ चिते सरकँ देखन छी?)

....

किछु मैथिली पाथी ताउनलाउ साल्लट (उपायन सार्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

यं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य नमानह मा "नमक")

हिन्दीभिऊक-मैथिली-

मैथिली(घष्ठा ३) हिन्दी नार्गालाय-

मैथिली (मैथिली संकन रामा सहित(मैथिलीम पहिल वन -

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

इआयल कनकनी- मदनन्द

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

सृजन कल्पनाशील पर्व- सं करदान कानन आ अनिरुद्ध ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदेव झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विज्ञान रत्नाकर

मिथिला दर्शन

पीनाकि

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI - English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक(

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक(

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

याथी डॉट कॉम

I Love Mthila (याथी डाउनलाउ लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mthila

यान मैथिल चैनल- किनध चौधनी आ संगीता आनन्द

मिथिला चैम्न

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

जानकी अरु.अम समाचान

आकाशनाधी दनरंगा यू ट्यूव चैनल

आकाशनाधी मैथिली समाचान

आकाशनाधी अमृा महासन

सून्द्र नाउग

....

JNU

मैथिली

मैथिली लेक्सिकन

....

Videha e-Learning YouTube Channel

....

विदेह सम्मान: सम्मानसूची- (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीतअकादमी नाटक- (पुनर्स्थापन नामसँ विख्यात /सम्मान

....

Maithili eBooks/ eJournals/ Audios-Videos can be downloaded from **Maithili eBOOKS/ eJournals/ Audios-Videos**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

वि द ह विदह Videha বিদেহhttp://www.videha.co.in विदह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सर्फ़ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Information relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

सूचना

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes

articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

१

"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

विदेह अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक

समालोचना- अनिरुद्ध ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप]

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

विदेह कला-विमर्श विशेषांक (सम्पादक- संदीप दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ (श्वेता झा चौधरी)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

विदेह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

विदेहक एहि सीरिज विशेषांक शृंखलामे किनकर चयन हएत ताहि लेल मापा-मापी निर्धारक किछु बिन्दुक पालन कएल जाइत अछि-

१.छह मास पहिनेसँ विदेह अपन पाठककेँ सुझाव -लगभग पाँच (देबा लेल अनुसूचना दैत अछि।

२.आएल सुझावमेसँ विदेह मात्र सीमित लेखककेँ चयन करैत अछि। (संस्था सभ वर्तमानमे सीमित हएबाक चाही।

३.सभ सीमित लेखकक बीचमे हुनकर लेखन एवं आवश्यक सामग्री (देखल जाइत अछि। जाहि लेखकक लेखन आ आवश्यकमे बेसी सामग्री भेटैत ओहन छह टा नाम चयनित (कम होइत)होइत अछि।

४.छह नाम एलापर ओकर तुलना कएल जाइत छै आ ओकर छह (लेखक अथवा संस्थाकेँ रचना लिखबाक वा सामाजिक काज करबाक एवजमे समाजसँ की भेटलनि।

५.संस्थाकेँ -जिनका सभसँ कम भेटल बुझाइत अछि ताहि तीन लेखक (अगिला वर्ष लेल राखि लेल छी।

६ ७हि गीन चयनिग जीविग लखकक वा संस्थाक (नचना, काज, ह्नक उद्यश्य आदिक वीचम यनस्पन ग़ुलना क७ल जाऽऽग अछि।

१अंगिम नूयसँ विदह द्वाना ७कटा नाम चूनि सालक अंगम घाषणा (क७ल जाऽऽग अछि आ नियग समयपन ऽऽ विशेषांक निकालवाक प्रयास कनैग छी।

प्रश्न उठि सकैछ ज कि उपनक नियम ७हन छै जाहिम अंगिम नूयसँ सन सुपात्र जीविग लखक कन चयन समयपन भऽ जाणि? गऽ ७कन उत्तन छै वो। विदहक पाठक लग सहा अपन सीमा छनि। मूदा अही सीमाक संगे हमना सनकँ अपन वस्तु दवाक छै आ मैथिली लल ७कटा ७हन नम्या वना दवाक छै जाहिसँ आव७ वला 600-500 वर्षक साहित्य विदहक लीकसँ प्रनघा पाव७। अही विचानक संगे विदह उाहन जीविग लखकपन अपन ध्यान सहा केंद्रिग कऽ नहल अछि ज कि सुपात्र छथि मूदा जिनकापन विदहक विशेषांक काना कानघवश नहि प्रकाशिग भऽ सकल। ७कन नाम भल विदहक निग " "नवल सिनीज, जकन विवनघ नीचाँ म दल जा "निग नवल सिनीज" नहल अछि।

-गजेन्द्र ठाकुन, सम्पादक विदह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक वर्ष मे कएल एकटा संस्था/ पत्रिकाक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

विदेह अंक ३७१ (०१ जून २०२३) "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" विशेषांक

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह भाषापाक" शृंखला

विदेह अपन जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अनिरुद्ध ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (८) शरदिन्दु चौधरी, (९) रचनाकार अशोक आ (१०) राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक निकालने अछि। एही सन्दर्भमे हिनका सभपर "विदेह भाषापाक" शृंखला अन्तर्गत "भाषापाक" आमंत्रित कएल जा रहल अछि। "विदेह भाषापाक" शृंखलाक नियम निम्न प्रकार अछि: (१) इच्छुक लेखक उपरमे कोनो एक लेखकपर अपन भाषापाक लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.comपर पठा सकै छथि। (२) विदेह लेखकक नाम भाषापाक लिखबाक लेल चयनित कऽ राखत

सार्वजनिक घाषणा कनगा।
"निदह मानाग्रारु" लिखवाक निअम:
(१) मानाग्रारु यूर्ण नूँग नचनाकान/ कलाकर्मीयन कङ्खिग हुअय। साहित्य अकादमी, एन.वी.टी. आ किछु व्यक्तिगग नूँग लिखल मानाग्रारु/ वायाग्रारुीम लखक संस्मनध आ व्यक्तिगग प्रसंग जाेड़ि कय नचनाकान/ कलाकर्मीक वदला अयन-आत्म-प्रशंसा लिखै छथि। "निदह मानाग्रारु" हीरा नर्ल कय हूटवाल सन नहि। हीरा नर्ल कय हूटवाल एहन एकमात्र टूर्नामंट अछि जगय काना "डायनिंग" वा "क्लाजिंग" सनीमनी अलगसँ नै हाेइ छै, यहिल आ अन्तिम मैचक सङ हाेइ छै आ गकन कानध छै ज अलगसँ कएल "डायनिंग" वा "क्लाजिंग" म टूर्नामंटम नै खला नहल लाक मुख्य अगिथि/ अगिथि हाेइ छथि आ हाकस खिलाड़ी सँ दून चलि जाेइ छै। हीरा मात्र आ मात्र हूटवाल खिलाड़ीयन कङ्खिग नहैग अछि स डाकन टूर्नामंट "डायनिंग सनीमनी" नै ननन् साम "डायनिंग मैच" सँ आनङ्क हाेइग अछि आ डाकन समायन "क्लाजिंग सनीमनी"सँ नै ननन् "हाेइनल मैच आ ट्राही"सँ खगम हाेइग अछि आ हाकस मात्र आ मात्र खिलाड़ी नहैग छथि। गहिना "निदह मानाग्रारु" मात्र आ मात्र ओ नचनाकान/ कलाकर्मीयन कङ्खिग नहग आ काना संस्मनध आदि जाेड़ि कऽ हाकस नचनाकानसँ अयनायन कङ्खिग कनवाक अनुमगि नै नहग।
(२) मानाग्रारु लल "निदह यटान"म उयलब्ध सामग्रीक सहर्ष सहिग उययाग कएल जा सकैए।
(३) निदहम ई-प्रकाशिग नचना सरक कॉयीनाइट लखक/संग्रहकर्गा लाकनिक लगम नहैछि। सम्यादक 'निदह' ई-यत्रिकाम प्रकाशिग नचनाक

प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ई ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।
(४) "विदेह मोनोग्राफ"क फॉर्मेट: रचनाकारक परिचय (रचनाकारक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवरण सहित) आ रचनावली (समीक्षा सहित)।

घोषणा: "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर मोनोग्राफ निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम मोहन मिश्र द्वारा लिखल जायत। शेष १ लेखकपर निर्णय शीघ्र कएल जायत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (१)
विदेहक "नित नवल सिरीज"

विदेह द्वारा जे विशेषांक प्रकाशित भेल छै ताहि संग विदेह उत्कृष्ट लेखक-साहित्यकार पर ध्यान सहज केंद्रित करत जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। ई सभ विचारक मुख्य बिंदु एना अछि-

१) हम एकटा बाना लेखक वा कलाकारनयन एकाग्र आलावना कानव जकान राषा मैथिली अथवा अंग्रेजी नहला ई याथीक यहिल नूय ई-बुक कान नूयम जेंग आ प्रयास नहला ज एकान प्रिंट सह्य आवए ज कि यनिस्ठिगियन निरंग कना।

२) ई शृंखलाम:-

(i) सुराष चंद्र यादवनयन कंद्रिग "निग नवल सुराष चंद्र यादव",

(ii) नाजदव मंडलयन कंद्रिग "Rajdeo Mandal- Maithili Writer" आ

(iii) जगदीश प्रसाद मण्डल कद्रिग "Jagdish Prasad Mandal- Maithili Writer" प्रकाशित हल अछि।

यहिल दूनू याथीक लाकार्यक्ष ३१ दिसम्बन २०२२ कँ १११म सगन नागि दीय जनय म कएल गेल। गसन याथीक लाकार्यक्ष २१ मार्च २०२३ कँ ११२ म सगन नागि दीय जनय म कएल गेल।

(iv) "निग नवल दिनेश कुमान मिश्र" आ

(v) "निग नवल सुशील" जानी अछि।

आगाँक घाषक्षा

लल http://videha.co.in/investigation.htm दखेग नही।

यूर्वयीिकासमय समाज आ :मैथिली उयन्यास" कमलानन्द माक याथी : क (२०२१) "सनालशीर्षक ग्रामक अछि। ई दूनकन किछु सनर्व

उयन्यासकानयन किछु सिद्धिकरट कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ यन्नाक ई याथी प्रतिवादन्छम लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जाहि ई सेहो जायत, अमजनसँ हम ई चाहि सय पाँच टाकाम किनलौं मुदा ओम पाँचो पाइक सामिग्री ने अछि।

जाहि एकटा स्कूल सुधार अछि, एकटा गजन सन्दर्भ लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उयन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलहि आ नियटा देलहि, ओ दूनू पाँति हम जाहि अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो यढ़नहिये हएब, जँ ने यढ़ने छी तँ यहिने यढ़ि लिअ, कारण एखन धरि मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे http://videha.co.in/pothi.htm लिंकयर।

"उयन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक यत्रधनता नवनाक संग न्याय नहि कऽ यबैत अछि।"

जहिँ उयन्यासम राजनीति दून दून धनि ने छै ओहि-'राजनीतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक यत्रधनता'क तँ प्रश्न ने छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह वा यत्रधनताक साढ़न धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त कलहि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'राट' जे २०२२म आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे http://videha.co.in/pothi.htm लिंकयर, से राजनीतियर अछि मुदा ओतहुओ सुभाषजीक रचना शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह वा यत्रधनताक साढ़नक आवश्यकता ने पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल

सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खानाक घटी अछि। जेना हिसाब ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा नामपंथक साङ्ग पकड़ने छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बए चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। श्री अपन बाबाताराम गढ़न सनर्कसँ छीनि कए, समानान्तर धाराक लोकक हकार मानि कए लेल साहित्य अकादेमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्दसँ चर्चा करैत छथि। आ श्री असाइनमेण्ट हिनका मन्दिरसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बाबातराक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

आब अहाँ पूछब जे तकर प्रतिकार समानान्तर धारा कोना केलक, जे ताँ कन्नारोहट नै कैल, ताँ तकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, बेगूसराय सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादेमी गत दस बर्खसँ तोड़ि लेबाक प्रयास कए रहल अछि। अहाँसँ ऐ तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.comपर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षाशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि। तकरा बाद

जगदीश प्रसाद मण्डल जी यन याथी लिखल (गल सगन नागि ११२) (दीय जनय म लाकार्यधसरप्टा याथीक लिंक नीचाँ दल (गल अछि। 'निग नवल दिनेश कुमान मिश्र' आ 'निग नवल सुशील' जानी अछि।

Rajdeo Mandal - Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

निग नवल सुराष चन्द्र यादव

निग नवल सुराष चन्द्र यादव (मिथिलाऊन)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

निग नवल दिनेश कुमान मिश्र (जानी)

निग नवल सुशील (जानी)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (गिनहूगा)

संगम यदु कमलानन्द मा क ब्राह्मधनादयन प्रदान:

दुखद यश्री- The Black Book

दुखद यश्री- The Black Book (मिथिलाऊन)

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४(२)

निशा नवल दिनेश कुमार मिश्र

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच मे' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति।, दुइ पाटन के बीच में(कोसी नदी की कहानी) .., न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, गुम्ही नदी ओर तकनीकी माथा-पच्ची, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पैनाक पैना मैथिली अनुवाद कऽ अपना नाम उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ओ आन लेखकक निर्वच कहै छथिन्ह स्पष्ट ! कऽ रहल छी आन लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई निर्वच दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ. टी. खड़गपुरसँ सिविल इंजीनियरिंग मे बी. टी. आइ. .१९६८म आ स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंगमे एम.टेक१९७०म कने छथि .,

आ ऊहो निसर्ग लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हानिशालिक विद्वीमे नामांकन लैत-, नै तँ कमलानन्द झा कँ बूझू मे आबि जाइत छैक जे निसर्ग कोनो सिविल इन्जीनियरक रूप सकैत अछि, रूप सकैत बूझला होइछ। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सरल धानक कथा ऊ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर माध्यमसँ मिथिलावासी कहियो उन्मुक्त नै रहि सकल, मुदा मूलधानाक पुनस्थान आ ताइ लालुप लोकसँ कृपणता रहल से हुन सिद्ध रहल। ओ लेखककँ दस बानर वर्ष पहिने सहो गानानन्द नियोगी ठक्कानक रहल छलखिन्ह जे लिखने नहि छथिन्ह जे ऊ कहियाम प्रकाशित रूप अनायास अपन नवनाम दासनक सामिग्री बानि कए लैत छथि, ओहन सभ। आब ओ कमलानन्द झा क आश्रय तकलन्हि मुदा दुर्योधनक हिसाब ब्राह्मणवादकँ आगाँ ! बढ़बैत कमलानन्द झा नामपंथक साधन यकते छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बए चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सबल अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीनकम्युनिस्ट बनला जकावला लोक-आ आब ब्राह्मणवाद बचबालेल नामपंथक शरण, ओहन लोक सभसँ कम्युनिस्टकँ बहुत नुकसान रहल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे

http://videha.co.in/pothi.htm

ओगऽ ओकटा गय मान याति दी ज जखन विल (गझकँ यूछल (गलहि ज की ३ा ओक्ष वॉक्ष रानाम याॣन्श्रीक उनसँ दनीसँ आनि नहल छथि? गँ हनकन उन्दन नहहि ज माॣग्नासाँइ याॣन्श्रीक उन कान्। उग्राद दनीसँ नै उानन अछि। स निदह यटानम हम सट उ गनहक निम्न नहिगा ओकना आन समृद्ध कनेग नहव, कानय समानान्दन धानाम सउल माँछ ह्रान याखनिक सट माँछ नै सउेओ, ओगुक्षा मलाह (गाट-(गाट कऽ सउल माँछ निकालेग नहल छथि, निकालेग नहगा।

सिद्धीकाटउ समीजायन अन्दिम प्रहान।

मूल दिनेश कुमान मिश्र :(२००६ ...हुॣ यारन क वीच मं) यह ध्यान दन की वाग है कि 1923 स 1946 क वीच कासी उत्र मं मलनिया स 5,10,000, कालाजान स 2,10,000, हैज स 60,000 गथा चचक स 3,000 मौग कुल) 7,83,000) हुॣई। धान यंकज मा यनाश्न)**साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य**([जलप्रांगन २०११ :[(१०३ .यृ)

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया
से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक
सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमान मिश्र :(२००६ ...हुॣ यारन क वीच मं) रानगवर्ष मं विहान मं कासी नदी का वांधन का काम 12वीं शगाब्दी मं किसी नाजा लक्ष्मण द्वितीय न कनवाया था। ओन हुॣस काम क लिए उसन प्रजा स 'वीन' की उपाधि याॣई ओन नदी का गटवद्ध 'वीन वांध' कहलाया। हुॣस गटवद्ध क अवशेष अभी भी सुपौल जिल मं भीम नगन स काॣई 5 किलोमीटन दक्षिण मं दिखाॣई यड़गा है। डॉ फ्रांसिस वुकानन .

)1810-11) का अनुमान था कि यह वांध किसी किल की सुनआ क लिए वनी वाहनी दीवान नहा हागा क्योंकि यह वांध (धोस नदी क यश्चिमी किनान यन गिलयूगा स उसक संगम गक 32 किलामीटन की दुनी मं फैला हुआ था। जॉ) हनून .जब्लू.जब्लू .1877) वूकानन क ङ्गस गर्क क साथ सहमग नहीं (थ कि यह वांध किसी किल की सुनआ दीवान था। स्थानीय लागां क हवाल स हनून का मानना था कि अधिकांश लाग ङ्गस किल की दीवान नहीं मानग औन उनक हिसाव स यह कुछ औन ही चीज थी मगन वह निश्चिग नूय स कुछ कहन की स्थिगि मं नहीं (था। हिन री जा आम धानणा वनी है वह यह है कि यह कासी नदी क किनान वना काङ्गी गटवन्ध नहा हागा जिसस नदी की धाना का यश्चिम की आन खिसकन स नाका जा सका। लागां का यह री कहना था कि जैसा लगगा था कि ङ्गस गटवन्ध का निर्माण कार्य एकाएक नाक दिया गया हागा।

छग्न समीजक कमलानन्द मा झाना चान उयन्यासकानक यी0 (0ाकव, दखु छग्न समीजक कमलानन्द मा झाना उझूग चान यंकज मा यनाशन मैथिली उयन्यास), समय, समाज आ सवाल यृ:(२७८-२७१ .

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चान यंकज मा यनाशन)साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य([जलप्रांतन २०११ :[(३१ .पृ)

पढ़ुआ कका पछिला गप कैँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कैँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनैं छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कैँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कैँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनश कुमान मिश्र दु꣬꣬)याटन क वीच मं:(२००६ ... कासी क प्रवाह कि रयानहता की ७क मलकहिनाजशाह तुगलक की रौज क सन् 1354 मं वंगाल स दिल्ली लौटन क समय मिलती है। वताया जाता है कि जव सुल्तान की रौजं कासी क किनान यहूँवीं ता दखा कि नदी क दूसन किनान यन हाजी शम्सुद्दीन ꣬꣬लियास की रौजं मुकावल क लि७ तैयान खडी हैं। यह नदी हाजी शम्सुद्दीन (थ जिन्हांन हाजीयुन तथा समस्तीयुन शहन वसाय (थ। हिनाज की रौजं शायद कुनसला क आसकिसी जगह यन कासी क किनान साव मं य७ ग꣬꣬ी। यास-नदी की नक्शान उईं आग वढन स नाक नही थी। आखिनकान रैसला हुआ कि नदी क साथसाथ उत्तन की डान वढा जाय डौन - जहाँ नदी यान कनन लायक हा जाय वहाँ यानी की थाह ली जाय। क यास सुल्तान की रौजं प्रायः सौ कास ऊयन ग꣬꣬ी डौन जियानन, जा कि उसी स्थान यन अवस्थित था जहाँ नदी यहाडां स मैदानां मं उतनती थी, नदी का यान किया। नदी की धाना ता यहाँ यतली जनून थी यन प्रवाह ꣬꣬तना तज था कि याँवयाँव सौ मन क रानी यठन - नदी मं तिनकां की तनह वह नह (थ। जहाँ नदी का यान कनना मुमकिन लगा। उसक दानां डान सुल्तान न हाथियां की कतान खडी कन दी डौन वीच वाली कतान मं नस्स लटकाय गय जिसस कि यदि का꣬꣬ी आदमी वहता हुआ हा ता ꣬꣬स नस्सां की मदद स उस वचाया जा सक। शम्सुद्दीन न कभी सावा री न था कि सुल्तान की रौजं कासी का यान कन लंगी डौन जव उस का ꣬꣬स वात का यता लगा कि सुलतान की रौजां न कासी का यान कनन मं कामयावी या ली है ता वह राग निकला।

बान यंकज मा यनाशन)साहित्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदात्री समितिक सदस्य([जलप्रांगन २०११ :[(१०७ .यृ)

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र अहाँ लिंकयन आन स्क्रीनशॉट अयडट कऽल जायत। (

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ जनवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... विनवल दिनेश कुमार मिश्र

http://videha.co.in/ विदेह यत्रिका-प्रथम मैथिली याक्षिक ई-पत्रिका : ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) यना

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

विनवल सुशील

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि?

कारण ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ लिखै छथियात्राक लगभग सय वर्षक बाद -मैथिली उपन्यास" - मैथिल अन्तरजातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि। "

तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकारज हम ककरा बढ़ा सकै छिऐ आ - कर पराकाष्ठा थीक -ककरा उजारि सकै छिऐ, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण?

चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा कर स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादुवला साहित्यिक निश्छल दुनियाँमे।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यिक दुनियाँमे।

प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामवाली' (१९८२ज आब उपलब्ध अछि (विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामवाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि-

"विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे। "

आ उपन्यास आरम्भ।

गामवालीक मृत्यु आ रखन ममला, गामवालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?

मैथिलीक सिन्धीकरण समीक्षायन अन्तिम प्रहार।

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ जनवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... लिंक नवल सुशील

http://videha.co.in/ विदेह पत्रिका-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका : ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

१

विदेहक "साहित्यिक आख्यान विशेषांक"

विदेह "साहित्यिक आख्यान विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमी:-
(क) पुरस्कारक राजनीति
(ख) सरकारी अकादमीमे पैसबाक गैर-लोकतांत्रिक विधान
(ग) सभागृह आ अकादमी केर काज करबाक तरीका
(घ) सरकारी सभाक ठप्प विभागमे उपजल तात्कालिक समानान्तर सभाक

कार्यपद्धति

१. अकादमी पुरस्कारक पाछाँ रैकेट: मिथक वा यथार्थ

२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

३. प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सभहक आचरण।

५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, विज्ञ, मंच-माला-पागक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा।

७. लेखक सभहक जन्म-मरण शताब्दी कर चुनाव , कैलेंडरवाद आ रचना पाठक राजनीति

८. दलित एवं लेखिका सभहक संग भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका

९. कोनो आन विषय।

६

विदेह ब्लॉगकार लिस्ट

विदेह [WWW.VIDEHA.CO.IN](http://www.videha.co.in) सम्बन्धी सूचना लेल अपन whatsapp नम्बर देमए whatsapp no +919560960721 पर पठाउ, एकरा प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 [HTTP://VIDEHA.CO.IN/](http://videha.co.in/) ISSN 2229-547X VIDEHA

....

मैथिली आ मिथिलासँ संबंधित किछु मुख्य साइट:- *आन लिंकक विषयमे सूचना editorial.staff.videha@gmail.com केँ ई-मेलसँ पठाबी।*

http://www.videha.co.in/ ("विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका)

http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इन्टरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाइ २००४)

http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इन्टरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाइ २००४)

भालसरिक गाछ जे सन 2000 सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)* केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इन्टरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै। इन्टरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA पल्लनमिथिला

(धीरेन्द्र प्रेमर्षि) २०५९ माघ संक्रान्ति- २००३ जनवरी मैथिलीक पहिल इन्टरनेट पत्रिका अछि जे ऐ लिंक www.pallavmithila.mainpage.net पर छल मुदा आब ई उपलब्ध नै अछि। ई टिप्पणी मात्र इतिहास शुद्धता लेल अछि।

……………..

http://videha-aggregator.blogspot.com/ (मैथिली ब्लॉग एग्रीगेटर)

http://www.videha.com/ (इन्टरनेटपर मैथिली भाषाक सभसँ पुरान उपलब्ध उपस्थिति/ लोकप्रिय ब्लॉग- मैथिली ब्लॉग एग्रीगेटर १ जुलाइ २००४ www.gajendrathakur.blogspot.com)

http://esamaad.blogspot.com/ (पूनम मंडल आ प्रियंका झाक पहिल मैथिली न्यूज पोर्टल, ९ अगस्त २००४ सँ)

http://prakarantar.blogspot.com/ (प्रकारान्तर मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, फरबरी २००७)

http://vidyapati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००७)

http://www.vidyapati.org/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००७)

http://hellomithila.blogspot.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, पूजा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ३ मइ २००६)

http://pallav.blogsome.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, पूजा झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ११ मइ २००६)

http://hellomithilaa.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://www.hellomithila.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://shampadak.wordpress.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

http://www.esamaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

http://hellomithilaa.wordpress.com/

http://premarshi.wordpress.com/ (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

………………..

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय गजलक ब्लॉग)

https://mithilastudentunion.com/ (Mithila Student Union)

……………………

https://vigyanprasar.gov.in/vigyan-ratnakar/ (विज्ञान रत्नाकर)

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

....

ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

https://doordarshan.gov.in/

आकाशवाणी मैथिली पॉडकास्ट http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-1 http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-2 http://newsonair.com/Regional-Text.aspx

आकाशवाणी दरभंगा http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWTEMkVA

आकाशवाणी भागलपुर http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359

आकाशवाणी पूर्णियाँ http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256

आकाशवाणी पटना http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122

ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS

ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE

ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS

RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS

SANSAD TV

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/@videha-elearning

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

....

http://bramhanews.blogspot.com/ (मैथिली समाचार)

http://www.mithilakhabar.com/ (नेपालक मैथिली ई पत्रिका)

http://mithilanews.com/

http://www.maithilinews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.hamargami.in/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithiladotcomblogspot.com/ (मैथिली राष्ट्रीय दैनिक)

https://mppdainik.com/ (मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश, मैथिली दैनिक)

http://mithilasamad.blogspot.com/ (मिथिला समाद, मैथिली दैनिक)

http://janakpurnews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.mithilalok.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithimedia.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://www.mithimedia.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://mithiladharohar.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://simanchal.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://maithilijindabaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

....

https://kirtinath.blogspot.com/ (कीर्तिनाथ झाक ब्लॉग)

http://jct27novmaithili.blogspot.com/ (जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" क ब्लॉग)

http://brikhesh.blogspot.com/ (बृषेश चन्द्र लाल)

http://www.chetnasamiti.org/ (चेतना समिति, पटनाक वेबसाइट)

http://shiva-pustak-bhandar.blogspot.com/ (मैथिली पोथी कीनू)

https://mishrarn.blogspot.com/ (मानसँ साँस ध्वनि)

https://rjanakpuri.blogspot.com/ (साहित्ययूनी)

http://bataahmaithil.in/

http://maithilpravahika.org/

http://ganeshbawra.blogspot.com/

http://maithilinews.com/

http://anandjhakavitakahani.blogspot.com/

http://chaaywala.blogspot.com/

http://maithilputr.blogspot.com/

http://maithilputramanu.blogspot.com/

http://mithilanchalpatrika.blogspot.com/

http://mithilakbat.blogspot.com/

http://maithilitimesonline.blogspot.com/

http://mithilavidehavajjitirhut.blogspot.com/

http://samadiya.blogspot.com/

http://jitumaithili.blogspot.com/

http://pratipadamaithili.blogspot.com/

http://bhatsimar.blogspot.com/

http://maithilirangmanch.blogspot.com/

http://www.mithilavaani.blogspot.com/

http://www.maithilisongsjagat.co.in/

http://mithilablog.com/

http://www.lahakchahak.com/

http://www.jaimithila.com/

http://www.dahejmuktmithila.org/

http://mithilavaani.blogspot.com/

http://www.chamundanagarpachahi.com/

http://kisunsankalplok.wordpress.com/

http://www.kisunsankalplok.co.nr/

http://maithilisongshub.blogspot.com/

http://www.rajnipallavi.com/

https://maithilinewsnetwork.com/

https://mithilamirror.com/

https://www.emithila.in/

http://csts.org.in/ (CSTS)

http://www.samaysaal.com/ (समय साल)

https://www.maithili.org.in/ (जागन चौपनी)

https://doorvaksata.org/ (मिशन दुर्वाक्षत)

http://mithilaksharshikshaabhiyan.in.net/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

http://mithilakshar.in/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

https://missionmithilakshar.blogspot.com/ (सिद्धिरस्तु- मिशन मिथिलाक्षर लिपि)

https://mithilani.in/ (मिथिलानी)

https://www.maithilmanch.in/ (मैथिल मंच)

http://madhubani.co.in/

http://www.premkumarmallik.com

http://apandalan.wordpress.com/

http://www.mithilaworld.tk/

http://www.mithilachowk.com/

http://maithilisongsgeet.blogspot.com/

http://rayprabhatbhatt.blogspot.com/

http://amitmohanjha83.blogspot.com/

https://maithiliswasthyaparicharcha.blogspot.com/ (मैथिली स्वास्थ्य यनिचर्चा- नमाकन चौधनीक ब्लॉग)

http://maithili-darpan.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilatol.blogspot.com(मिथिलाटोल मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilicinema.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithilifilms.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithili-drama.blogspot.com/ (विदेह मैथिली नाट्य उत्सव- वचन 0कृनक ब्लॉग)

http://mjink.co.cc/ (ञ्ली जनकपुर न्यूज, गनाञ्ली मॉडल, मिथिला ञ्ञ्हामेशन)

http://www.TeraiNepal.co.cc/ (गनाञ्ली नयाल मिथिला जनकपुर मधेश हालचाल Anytime Anywhere see)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/ (मैथिलक आ मिथिलाक लाकप्रिय ब्लॉग)

https://www.mithiladainik.in/ (मिथिला दैनिक)

http://www.mithilaamanch.blogspot.com(मिथिला मंच)

http://maithilisong.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक ब्लॉग)

http://maithilifoundation.blogspot.com/ (मैथिली फाउन्डेशन)

http://maithilibhasha.blogspot.com/ (काश्यप कमलक ब्लॉग)

http://rkjteoth.blogspot.com/ (नूयश कुमार झा "ग्रांथ"क ब्लॉग)

http://paraati.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://singarhaar.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://vaachik.wordpress.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilainfo.blogspot.com(मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://mithlasamachaar.blogspot.com (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://pilakhwar.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://desilbayna.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilynjha.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://gaam-ghar.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://mithila-mihir.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://www.maithililekhaksangh.blogspot.com/ (मैथिली लखक संघक जालस्थल)

http://www.maithili.co.uk/ (मिथिला कल्चनल ए(गेनाइजशन, यू.क.)

http://minapjanakpur.org/ (मिनाप, जनकपुन)

http://www.airdarbhanga.org/ (आकाशवाणी दनरंगाक साइट)

http://mithilangan.org/ (मिथिलांगनक साइट)

http://www.desilbayana.com/ (दसिल वयना, हैदनावाद)

http://www.vmymin/ (विद्यापति मैथिल यूवा मंच)

http://www.jaimithila.com/ (मिथिलाक सयता, संस्कृति, विरति, गीत-संगीत आ वहुत नास जानकानीक लल)

http://sobhagyamithilatv.com/ (सौराग्य मिथिला- पहिल मैथिली चैनल)

http://kashyap-mithila.blogspot.com/

https://kashyapartschool.wordpress.com/ (कृष्ण कुमान कश्यप आ शशिवालाक साइट)

http://mithilapaintingtraining.blogspot.com/

http://dularuababumaithilifilmblogspot.com/

http://senuraklaajmaithilifilmblogspot.com/

http://maithlivideosongs.blogspot.com/

http://kalikantjhabuch.org/ (काली कांत झा "वुच")

http://saketanands.blogspot.com/ (साकतानन्दजीक जालवृत्त)

http://gunjang.blogspot.com/ (गुंजनजीक जालवृत्त)

http://darihare.blogspot.com/ (श्याम दनिहनक जालवृत्त)

http://deoshankarnavin.blogspot.com/ (दवशंकन नवीनक जालवृत्त)

http://www.udayanarayana.com/ (नविकताक साइट)

http://www.indianembassy.org.np/ (भारतीय दूतावास नेपाल)

http://www.purvottarmaithilsamaj.com/ (पूर्वोत्तर मैथिल समाज)

http://www.purvottarmaithil.blogspot.com/ (मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका)

http://apanmithladhaam.blogspot.com/

http://maithilikavita.blogspot.com/

http://pankajjha23.blogspot.com/

http://maithili-haiku.blogspot.com/

http://manak-maithili.blogspot.com/

http://mithilauday.org/

http://dsal.uchicago.edu/lsi/ (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings)

http://dsal.uchicago.edu/lsi/taxonomy/term/1718 (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings, Maithili)

http://music2.cooltoad.com/music/category.php?id=10576

http://maithiliacademy.org/

https://maithiliacademybihar.org/ (मैथिली अकादमी, पटना)

मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली

http://artandculture.delhigovt.nic.in/wps/wcm/connect/doit_art/Art+Culture+and+Language/Home/Maithili-Bhojpuri+Academy/

http://maithili.sourceforge.net/

http://ansiss.org/

http://fedoraproject.org/

https://fedorahosted.org/fuel/wiki/fuel-maithili

http://l10n.gnome.org/teams/mai

http://translate.fedoraproject.org/languages/mai

http://www.biharlokmanch.org/ (मिथिला-मैथिली पोथी ऑनलाइन कीनू)

http://www.biharlokmanch.org/mithila_products_online.php (Buy Mithila-Maithili books online)

http://mithila-haat.com/ (Buy Mithila-Maithili books/ other materials online)

http://www.antikaprakashan.com/ (अंतिका प्रकाशनक साइट- मैथिली प्रकाशक)

https://shashiprakashan.blogspot.com/ (शशि प्रकाशन-- मैथिली प्रकाशक)

https://pallavipublication.blogspot.com/ (पल्लवी प्रकाशन-- मैथिली प्रकाशक)

http://www.navarambh.com/ (नवारम्भ-- मैथिली प्रकाशक)

http://www.gorkhapatra.org.np/

http://www.sajha.org.np/

http://www.kantipuronline.com/

http://mithilahyd.org/

http://www.jyoticonsultant.com/ (मैथिलक नौकरी डॉट कॉम)

http://www.mithilamanthan.com/

http://www.brandbihar.com/

http://www.biharbrains.org/

http://maithilijokes.blogspot.com/

http://www.rdo91fmblogspot.com/

http://www.kfm961.com/ (हल्ला मिथिला कार्यक्रम प्रत्यक शनिकँ नयाली समयानुसान नाणि ९.३० वजसँ ११ वजधनि आ नाजनीणिक निषयनम्भ्यन कह्विग चौवटिया कार्यक्रम प्रत्यक सामकँ नाणि १० सँ ११ वजधनि प्रसानघ)

http://www.radiokantipur.com/ (हल्ला मिथिला कार्यक्रम प्रत्यक शनिकँ नयाली समयानुसान नाणि ९.३० वजसँ ११ वजधनि आ नाजनीणिक निषयनम्भ्यन कह्विग चौवटिया कार्यक्रम प्रत्यक सामकँ नाणि १० सँ ११ वजधनि प्रसानघ)

http://www.jumptv.com/en/channel/nepal1/ (नयाल१ टी.वी.-जम्प टी.वी. मैथिली कार्यक्रम सूचना)

http://janakifmorg.np/ (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचान नतिया)

http://www.mithilaradio.com/ (मैथिली नतिया)

http://www.youtube.com/user/Janakifm(जानकी एफ.एम., मैथिली समाचान नतिया Youtube channel)

http://www.radiomithila.org/ (मैथिली नतिया)

http://www.appanmithila.org/ (नतिया अप्पन मिथिला ९४.४ MHZ)

http://www.janakpurtoday.comnp/

http://madanpuraskar.org/

http://www.madheshuk.org/ (एसासिएशन ▯रू नयाली मधेसीज इन यू.के.)

http://www.mithilaart.com/ (श्रीमति प्रदा साक साहुट)

http://www.mithilavihar.com/

http://www.sugatisopan.com/

http://www.maithilsamaj.org.in/

http://www.maithilsamaj.com/

http://www.janakpurcity.com/

http://www.janakpur.com.np/

http://home.att.net/~maithils/

http://shyamprakashjha.com/

http://ramanathjha.com/

http://www.ramajha.com/

http://sudhakar.co.in/maithili

http://www.maithils.net/

http://www.getpredictiononline.com/

http://www.bihartimes.com/

http://www.bihar.ws/

http://www.patnadaily.com/

http://www.krraman.blogspot.com/

http://www.adi-maithili-kavita.blogspot.com/

http://www.mithilasevasamiti.blogspot.com/

http://www.jankitoday.blogspot.com/

http://opjha.blogspot.com/

http://chitthajagat.in/ (देवनागरी लिपिक ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://mailorang.blogspot.com/ (मैलोरंग नाट्य संस्थाक ब्लॉग)

http://mailorang.in/ (मैलोरंग)

http://mailorang.com/ (मैलोरंग)

http://vandanasgeet.blogspot.com/

http://www.darbhangaraj.blogspot.com/

http://mithila_samachar.tripod.com/mithilasamachar/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.ciilcorpora.net/maisam.htm

http://www.ildc.in/Maithili/Mindex.aspx (मैथिली अउआजान आ स्रोत)

http://www.mithilaarts.com/

http://www.mithilapainting.org/

http://www.maithili.net/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.mithilaonline.com/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.onlinemithila.in/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.nnl.gov.np/

http://www.nepalacademy.org.np/

http://www.karnagoshthi.org/

http://surmasti.com/

http://www.maithiliworld.com/

http://www.mithila-museum.com/aboutMM/Eindex.html

http://www.tribhuvan-university.edu.np/

http://www.swastifoundation.com/ (स्वस्ति फाउन्डेशनक साइट)

http://foundationsaarcwriters.com/

http://www.opmcm.gov.np/

http://www.moe.gov.np/ (नेपाल सरकारक साइट)

http://lnmu.bih.nic.in/

http://gov.bih.nic.in/ (बिहार सरकारक साइट)

http://www.india.gov.in/

http://rajbhasha.nic.in/

http://www.hindinideshalaya.nic.in/

http://themithila.tripod.com/

http://www.mithilaconnect.com/

http://www.esabha.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilvivah.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kanyadan.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilbrahminvivahbandhan.org/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.mithilashaadi.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kalyanifoundation.org/

http://www.madhubani.com/

http://www.janakpur.org/

http://www.darbhanga-friends.com/

http://www.hindisansthan.org/

http://www.biharassociation.net/

http://www.nationallibrary.gov.in/ (नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता)

http://dpl.gov.in/ (दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी)

http://www.connemarapubliclibrarychennai.com/ (कोनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी)

http://rrrlf.nic.in/ (राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन)

http://www.sahitya-akademi.gov.in/(साहित्य अकादमीक साइट)

http://www.nbtindia.org.in/ (नेशनल बुक ट्रस्टक साइट)

http://www.csuchico.edu/anth/mithila/

http://web.mac.com/nadjagrimm/iWeb/JWDC/Mithila%20Art%20.html

http://www.southasianist.info/india/mithila/index.html

http://www.mithilalive.com/

http://www.ethnologue.com/show_language.asp?code=mai

http://linguistlist.org/forms/langs/LLDescription.cfm?code=mai

http://www.languageshome.com/English-Maithili.htm

http://www.rosettaproject.org/archive/mai

http://www.nepalgov.gov.np/

http://maithili-mp3-songs.folkmusicindia.com/

http://www.ciil.org/ (केन्द्रीय भाषा संस्थानक साइट)

http://www.ciillibrary.org/

http://www.lisindia.net/Maithili/Maithili.html

http://www.ntm.org.in/languages/maithili/default_maithili.asp (राष्ट्रीय अनुवाद मिशन)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2012/tagore-literature-awards-bring-together-india-best-literary-talent (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2011/samsung-felicitates-the-winners-of-tagore-literature-awards-2010 (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/Tagore-Awards/index.html (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://jnanpith.net/ (रानगीय स्नानयी0क साइट)

http://bparishad.in/ (रानगीय राषा यनिषद, कालकाताक साइट)

http://www.bharatiyabhashaparishad.com/ (रानगीय राषा यनिषद, कालकाताक नागर्थ)

http://www.themanbookerprize.com/ (मैन-वूकन यूनस्कानक साइट)

http://www.commonwealthfoundation.com/ (कॉमनवल्थ स्राउन्डशनक साइट)

http://www.crossword.in/ (वाताशन-क्रॉसवर्ठक साइट)

http://www.pulitzer.org/ (यूलिउन यूनस्कानक साइट)

http://nobelprize.org/ (नावल यूनस्कानक साइट)

http://www.goakonkaniakademi.org/akademi/aims.htm((गावा कांकणी अकादमीक साइट)

http://www.museindia.com/

http://www.asiawrites.org

http://indianorway.wordpress.com/

http://samanvayindianlanguagesfestival.org/

http://jaipurliteraturefestival.org/

http://dscprize.com/

http://www.hindu.com/lr/2011/04/03/stories/2011040350010100.htm

http://southasianlitfest.com/

http://www.varnamala.org/

http://india.poetryinternationalweb.org/

http://www.fortunecity.com/victorian/charcoal/49/

http://www.tarainews.comnp/

VIDEHA IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली याक्षिक ई यत्रिका मैथिली याथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली याक्षिक ई यत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली याक्षिक ई यत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

विदेह:प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

विदेह ई पत्रिकाक सभटा पुरान अंक-Videha e journal's all old issues

http://sites.google.com/a/videha.com/videha/

विदेह ईअंक ५० पत्रिकाक पहिल-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/
विदेह ईम अंक १४६ ५०म सँ पत्रिकाक-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/
विदेह ई१५०म आ आगाँक अंक पत्रिकाक-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-iii/

मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi

मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio

मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video

मिथिला चित्रकला आधुनिक चित्रकला आ चित्र /Mithila Painting/ Modern Art and Photos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/

सगर राति दीप जरय

http://sagarraatideepjaray.blogspot.com/
http://sagarraatideepjaray.wordpress.com/

विदेह मैथिली क्विज :
http://videhaquiz.blogspot.com/

विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/
विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

http://madhubani-art.blogspot.com/
विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/
विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/
विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

Maithili Sign Language- पहिल मैथिली संकेत लिपि ब्लॉग

https://maithili-sign-language.blogspot.com/

विदेह ब्राह्मी- ब्राह्मी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-brahmi.blogspot.com/

विदेह खरोष्ठी- खरोष्ठी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-kharoshthi.blogspot.com/

विदेह कैथी लिपिमे- मैथिलीक कैथी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-kaithi.blogspot.com/

विदेह नेवारी लिपिमे- मैथिलीक नेवारी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-newari.blogspot.com/

विदेह आइ.पी.ए. लिपिमे- मैथिलीक आइ.पी.ए.मे पहिल ब्लॉग

https://maithili-ipa.blogspot.com/

विदेह- उर्दू नस्तालिक लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-urdu.blogspot.com/

विदेह- तिब्बती लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-tibetan.blogspot.com/

विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

विदेह गूगल-ग्रुप

https://groups.google.com/g/videha

गजेन्द्र ठाकुर ब्लॉग

http://gajendrathakur123.blogspot.com

मंगन खबास

http://mangan-khabas.blogspot.com/

Videha Radio विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

http://videha.listen2myradio.com/

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

http://maithili-drama.blogspot.com/

समदिया

http://esamaad.blogspot.com/

मैथिली फिल्म्स

http://maithilifilms.blogspot.com/

मैथिली हाइकू

http://maithili-haiku.blogspot.com/

मानक मैथिली
http://manak-maithili.blogspot.com/

बिहनि कथा

http://bihanikatha.blogspot.com/

मैथिली कविता

http://maithili-kavita.blogspot.com/

मैथिली कथा
http://maithili-katha.blogspot.com/

मैथिली समालोचना
http://maithili-samalochna.blogspot.com/
Maithili Literature in English

http://madhubani-art.blogspot.com/

तिरहुता- कैथी लिपि/ मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी आधारित इतिहास

https://deepblue.lib.umich.edu/bitstream/handle/2027.42/110341/pandey_1.pdf?sequence=1 (उत्पन्न-विधानक मैथिल ब्राह्मणक जाति)

https://www.unicode.org/L2/L2009/09329-maithili.pdf (यूनीकोड तिरहुता लिपि लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९- विदेहक सहयोग)

https://www.unicode.org/L2/L2011/11175r-tirhuta.pdf (यूनीकोड तिरहुता लिपि लेल आवेदन ९ मई २०११- विदेहक सहयोग)

http://www.tirhutalipi.4t.com/ (देवनागरी-तिरहुता लिपि- वर्तमान आधारित)

http://www.anujha.co.cc/ (देवनागरी यूनीकोड आधारित तिरहुता लिपि-मिथिला)

"विकीपीडिया"म मैथिली

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

अंतिम चारू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्ट अछि। एहि लिंकसँ एतय जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाउ।

यूनीकोड मिथिलाक्षर फॉन्ट, "विकीपीडिया"मे मैथिली आ आब मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो। अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"
गूगल ट्रान्सलेट
गूगल ट्रान्सलेटक लिंक
https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate
गूगल ट्रान्सलेटकेँ आर पूर्ण करबाक खगता छै तैँ लेल अगिला काज एना करू छी:
https://translate.google.com/about/contribute/
Crowdsource Maithili Community
Please fill the form
Next Step
Download the Crowdsource app from android play store and start contributing
or go to web on the following link for contributing:
https://crowdsource.google.com/about/
Crowdsource by Google is a gamified platform that empowers users to directly train Google's artificial intelligence systems and make Google products work equally well for everyone, everywhere.

प्रारम्भ:
विकीपीडिया ०१ जनवरी २००८ लिंक
https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false (मैथिली देवनागरी)
https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली मिथिलाक्षर)
https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली ब्रेल)
गूगल ट्रान्सलेट २३ जून २०११क लिंक
https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/
गूगल ट्रांसलेशन टूलमे
"विदेहा" शब्दक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रांसलेशन टूल बनेबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कोनो मे (अंग्रेजीमे) "विदेहा" नाम्ना कोनो शब्द नै देबाक चर्चा करू। ई लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन कएलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh (link closed)

मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉन्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ फेर संशोधित आवेदन ७ मई २०११केँ श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर ओकर विदेहक सहयोगक वर्णन देल। ११ जूनकेँ श्री अंशुमन पाण्डेय एकर स्वीकृतिक सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलनि। आब ई फॉन्ट बनि कऽ तैयार अछि आ नीचाँक लिंकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

तिरहुता, नेवारी आ कैथी फॉन्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉन्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवारी ओ.टी.एफ.	नेवारी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

https://keymanweb.com/?_ga=2.7155890.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_tirhuta

https://keymanweb.com/?_ga=2.241635586.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_malar_tirhuta

https://aksharamukha.appspot.com/converter (Script/ Website Convertor)

https://aksharamukha.appspot.com/keyboards [Input (IME]

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts (fonts- opensource)

https://www.cdac.in/ (Tirhuta/ Unicode Typing Tool)

अमजन अलक्सा मैथिली (शीघ्र....)

किछु मैथिली विकिपिडिया पन्नाक लिंक:

विदेह (पत्रिका) https://mai.wikipedia.org/s/kgv
इन्टरनेटक संसारमे मैथिली भाषा https://mai.wikipedia.org/s/s6h

भालसरिक गाछ https://mai.wikipedia.org/s/ipm

विदेह https://mai.wikipedia.org/s/ie1

विदेहक रुसबुक रर्सन https://mai.wikipedia.org/s/iu1

विदेह सम्मान https://mai.wikipedia.org/s/jc2

विदेह आर्काइव https://mai.wikipedia.org/s/jc0

विदेह मिथिला नक्शा https://mai.wikipedia.org/s/jc3

विदेह मिथिलाक खोज https://mai.wikipedia.org/s/jc4

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण https://mai.wikipedia.org/s/jc5

श्रुति प्रकाशन https://mai.wikipedia.org/s/iu7

अनचिन्हार आखर https://mai.wikipedia.org/s/ion

मैथिली गजल https://mai.wikipedia.org/s/idz

मैथिली बाल गजल https://mai.wikipedia.org/s/iex

मैथिली भक्ति गजल https://mai.wikipedia.org/s/if1

....

किछु मैथिल पोथी, ▯तिया-वीडिया, कलाकृति/ यू ट्यूब चैनल डाउनलोड साइट (डायन सार्स)
NCERT BHASHA SANGAM
NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)
मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)
मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)
https://www.youtube.com/@videha_ejournal
https://youtu.be/TebuC-lrSs8
https://ncert.nic.in/bs-2021.php
SAHITYA AKADEM

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisamhtm

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

डाआयल कनकनी- मन्त्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन कान दीय पर्व- सं कदान कानन आ अनिरुद्ध ठाकुर

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

ARCHIVE.ORG (विजयदेव झा)

https://archive.org/details/vijay_deo_jha

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Audio-Video Archive

http://videha.co.in/archive.htm

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm(MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

मिथिला दर्शन

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

तीरभुक्ति

https://archive.org/details/@teerbhukti_journal

OLE NEPAL's E-PUSTAKALAYA (https://pustakalaya.org/en/)

याथीक लिंक

आइ.जी.एन.सी.ए.- ए.एस.आइ. https://ignca.gov.in/divisionss/asi-books/

https://ignca.gov.in/Asi_data/16612.pdf (History of Navya-Nyaya in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/42365.pdf (Studies in Jainism and Buddhism in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/63227.pdf (Mithila in the Age of Vidyapati)
https://ignca.gov.in/Asi_data/64994.pdf (Cultural Heritage of Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/72754.pdf (Mithila under the Karnatas)

ए.एस.आइ. अंग्रेजी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temples_of_mithila_english.pdf

ए.एस.आई.हिन्दी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temple_of_mithila_hindi.pdf

मैथिली साहित्य संस्थान https://www.maithilisahityasansthan.org/resources

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक(

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक(

https://bloomlibrary.org/language:mai (ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली)

अरिपन फाउण्डेशन (http://www.aripanafoundation.org/)

PRATHAM BOOKS MAITHILI STORYWEAVER

https://www.youtube.com/playlist?list=PLAT74nNc2fmYaW29mRVAIgzRq63_9zWbI (मैथिली □तिया वृक्ष(

https://www.youtube.com/channel/UCE1HEUJEzc-NUbMsHzklHLw(विदग्ध मैथिलीअलावत □तिया वृक्ष आ संगम मैथिली संकाग -अंग्रेजी टॉकिंग नीत-(दुनू मैथिलीम यहिल वन -राखा

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाली कान यनिर्वानिकानी नवका(
https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गाँ ठीक छी न(!
https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMb (एकटा नीक दिन(

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर(
https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ विउ सरकँ दखन छी?)

याथी जॉट कॉम

https://store.pothi.com/browse/free-ebooks/?language=Maithili

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/maithili-books-pdf-free-download/ (याथी डाउनलोड लिंक)

https://www.ilovemithila.com/ *(online maithili journal)*

https://maithili.comnp/ *(owner I Love Mithila)*

मैथिली फिल्म

https://youtu.be/4jhaQ3Nw38I (ममता गावय गीत, सौजन्य- Saregama(

https://youtu.be/V3KWhhB6Kg (कन्यादान, सौजन्य- BEJOD)

https://www.bejod.in/ (Maithili Movies on Rent)

https://mubi.com/films/gamak-ghar (Maithili Movies on Rent)

https://mubi.com/films/dhuin (Maithili Movies on Rent)

थ्यान मैथिल

https://www.youtube.com/channel/UCq3OLlck2tNw8BI4t8jjzQg (*थ्यान मैथिल चैनल- किनध चौधनी आ संगीता आनन्द*)

https://www.youtube.com/@mithiranglokatarang677 (मिथिनंग लाक गनंग)

https://www.youtube.com/MithilaChapter (मिथिला चैप्टन)

https://www.youtube.com/soumyajha (खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल)

https://www.youtube.com/@maithilirangmanch9536 (मैथिली नंगमंच)

https://www.youtube.com/@kokilmanch4330 (काकिल मंच)

https://www.youtube.com/@mithilanatyakalaparishadmi5636 (MINAP)

https://www.youtube.com/@mlrmedia3097 (मैलानंग)

http://www.youtube.com/user/mailorang (मैलानंग)

https://www.youtube.com/@praakshjha (मैलानंग)

https://www.youtube.com/@mithilangan109 (मिथिलांगन)

https://www.youtube.com/@bhangimamaithilitheatre9509 (रंगिमा)

https://www.youtube.com/@MithilaDarshan (मिथिला दर्शन)

https://www.youtube.com/@MithilaMirror (मिथिला मिनन)

https://www.youtube.com/@SmritiEntertainmentMaithili (स्मृति अंटनटनमंट)

https://www.youtube.com/@achalchitra (अचल चित्र)

https://www.youtube.com/@Bejod (BEJOD)

https://www.youtube.com/@neelammaithili (नीलम मैथिली)

https://www.youtube.com/@maithiliganga4714 (मैथिली गंगा)

https://www.youtube.com/@MithilaJunction (मिथिला जंक्शन)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLgmlEgU89nhRIGV-rG2SXY3uuhnXGT-j5 (दीपशिखा मा)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLT8LMrml4tPHxM64K8Iov_Arr_3uPaPgf [मैथिली समाचान (जनता टलीविजन)]

https://www.youtube.com/@maithilitalks (Maithili Talks)

https://www.youtube.com/@AppanTV (Appan TV)

https://www.youtube.com/@TVTODAYJANAKPUR (TV Today, Janakpur)

https://www.youtube.com/@drishyambiharlok7552 (Drishyam Media)

https://www.youtube.com/@sanskarmithila (संस्कार मिथिला)

https://www.youtube.com/@saregamapanmaithili3522 (सनगामा मैथिली)

https://www.youtube.com/@NavrassMedia (नवनस मीडिया)

https://www.youtube.com/@jyotient778 (ज्योति इंटनटनमेंट)

https://www.youtube.com/@RKSMAITHILIPRODUCTION (ऌऌजानिया फिल्म्स)

https://www.youtube.com/@ayodhyanathchoudhary345 (अयोध्यानाथ चौधनी)

https://www.youtube.com/@RadioJanakpur97MhzOfficial (नेडियो जनकपुन)

https://www.youtube.com/@mithilatv1 (मिथिला टी.वी.)

https://www.youtube.com/@Madhurmaithilichannel (मधुन मैथिली)

https://www.youtube.com/@sktutorials8921 (मैथिली-नयाली सीखु)

https://www.youtube.com/playlist?list=PL_HQDKXbaRKq3YTS7-Pkks1Y-UIL33fiD (अयन मैथिली)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLH1UiGl69_SLRhxZMZ1TSxUi-JXcHhAZr (मैथिली याO)

https://www.youtube.com/@maithiliforiassurendraraut1589 (सुनेन्द्र नाउत)

https://www.youtube.com/@UdayaSingh (नरु काझ, नचिकता)

https://www.youtube.com/@kunjbiharimithilaratna (कुञ्ज विहानी)

https://www.youtube.com/@RAMBABUJHA (नाम बाबू झा)

https://www.youtube.com/@VJEntertainments008 (वी. ज., विकास झा)

https://www.youtube.com/@user-ib7pn3li5q (गिनहून मिथिला)

https://www.youtube.com/c/ilovemithila (आऌ लव मिथिला)

https://www.youtube.com/@LokKalaKendra (लोक कला केन्द्र)

https://www.youtube.com/@rajnipallavi (नजनी यल्लवी)

https://www.youtube.com/@PoonamMishra (यूनम मिश्र)

https://www.youtube.com/@ranjanajhasangeetdivyam2908 (नंजना झा)

https://www.youtube.com/@julijhaofficial8057 (जुली झा)

https://www.youtube.com/@maithilithakur (मैथिली Oाकुन)

जानकी एफ.एम समाचान

https://www.youtube.com/user/Janakifm/videos (जानकी एफ.एम समाचान)

https://www.youtube.com/@AmitJhaOfficial (Amit Jha)

https://www.youtube.com/@PMPCORNER (Pravesh Mallick)

https://www.youtube.com/@AdityaFilmsandmusic (Aditya Films & Music)

https://www.youtube.com/@NepalTelevision (Nepal Television)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLEqde8-nxNTHL78RKSiuTGeeTJXot3YrY (AIR MAITHILI NEWS)

https://www.youtube.com/playlist?list=PLJuuojdiqz3NMKxKUbbcO7cT3sPrgRejS (AIR AMRIT MAHOTSAV)

https://www.youtube.com/@Mithilanchal (Mithilanchal)

https://www.youtube.com/channel/UCsB8UkEYLZe471GrcAlcG1A (Rashmi Dutt)

https://www.youtube.com/channel/UCVYE4fcasReMKTpbXWgp2mg (Priya Mallick)

https://www.youtube.com/@AnamikaJhaOfficial (Anamika Jha)

Videha e-Learning

https://www.youtube.com/@videha-elearning

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

....

http://www.youtube.com/user/ggajendra71(विदेह)

https://www.youtube.com/gunjanshree

http://www.youtube.com/user/Maithilinews
http://www.youtube.com/user/jitumaithil (जितेन्द्र झा, जनकपुर)
http://www.youtube.com/user/sobhagya8 (सौभाग्य मिथिला)
http://www.youtube.com/user/bhaskaranjha (भास्कर झा)
http://www.youtube.com/user/mahakalijha
http://www.youtube.com/user/karia1885
http://www.youtube.com/user/omuniv
http://www.youtube.com/user/sumankumar137
http://www.youtube.com/user/gyansjha
http://www.youtube.com/user/bclalan
http://www.youtube.com/user/gareri1986
http://www.youtube.com/user/avinashjha84
http://www.youtube.com/user/chandankumarjha1
http://www.youtube.com/user/chandanmishra2010

http://www.youtube.com/user/nirmaana

http://www.youtube.com/user/Janakifm1

http://www.youtube.com/watch?v=XpSuVHtbaQ8&feature=mfu_in_order&list=UL

http://www.youtube.com/user/gxcng

http://www.youtube.com/user/gautamkrishna85

http://youtu.be/3i3OG5Nf3y8

http://youtu.be/sJnxSe-ckmo

http://www.youtube.com/user/jitmohanjha

http://www.youtube.com/user/MITJnPNN

http://www.youtube.com/watch?v=-9KaC8ji9t4

http://www.youtube.com/user/luvvivek2k7

http://www.youtube.com/user/bindassatyandra

http://www.youtube.com/user/rustymind1

http://www.youtube.com/user/MrDeveshKarna

http://www.youtube.com/user/rambabushah

http://www.youtube.com/user/mukeshjha84

http://www.youtube.com/user/Mauahi
www.youtube.com/user/MrBasantjha
http://www.youtube.com/user/themadan
http://www.youtube.com/user/sentukhu

http://www.youtube.com/user/yarowjha

http://www.youtube.com/user/mkoxp
http://www.youtube.com/user/luvvick21

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/MrRamkisor

http://www.youtube.com/user/pratyushsangita/
http://www.youtube.com/user/hellomithilaa

http://www.youtube.com/user/mariyoshj

http://www.youtube.com/user/dearshantanu/

www.youtube.com/user/RajuPrasadRajbanshi

www.youtube.com/user/premarshi
http://www.youtube.com/user/Dhipre (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

http://www.youtube.com/user/TheShubhaprabhat

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/mithilaconnect

http://www.youtube.com/user/NAYAKSAURABH80

http://www.youtube.com/user/Rabindra888

http://www.youtube.com/user/uday88mandal

http://www.youtube.com/user/nimesdeath

http://www.youtube.com/user/pawanks6102
http://www.youtube.com/user/sahayogee
http://www.youtube.com/user/sunilkumarpawan

http://www.youtube.com/user/videhuk

http://www.dailymotion.com/video/xjophq_documentary-kosi-katha_shortfilms#from=embed

http://blackbuddhas.com/

http://youtu.be/CPwpkn5YI1I

अयन मंगाय editorial.staff.videha@gmail.com यन यOाउ।

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

Issue No. 88 (November-December 2019) of Muse India at http://museindia.com/ displays Maithili literature in an extremely poor light. Moreover, it wrongly claims to be a representative review of Maithili Literature, whereas it was only in line with the Sahitya Akademi, Delhi; a mere representation of the so-called "dried main drain". It is expected that Muse India will correct itself by announcing an issue exclusively devoted to the parallel tradition of Maithili literature.

T.K. Oommen writes in the "Linguistic Diversity" Chapter of "Sociology", 1988, page 291, National Law School of India University/ Bar Council of India Trust book: "... the Maithili region is found to be economically and culturally dominated by Brahmins and if a separate Maithili State is formed, they may

easily get entrenched as the political elite also. This may not be to the liking and advantage of several other castes, the traditionally entrenched or currently ascendant castes. Therefore, in all possibility the latter groups may oppose the formation of a separate Maithili state although they also belong to the Maithili speech community. This type of opposition adversely affects the development of several languages."

T.K. Oomen further writes: "... even when a language is pronounced to be distinct from Hindi, it may be treated as a dialect of Hindi. For example, both Grierson who undertook the classic linguistic survey of India and S. K. Chatterjee, the national professor of linguistics, stated that Maithili is a distinct language. But yet it is treated as a dialect of Hindi". (Ibid, page 293)

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. - Robert Louis Stevenson

...

Parallel Literature

The references to parallel literature are found in Vedas, where Narashanshi is referred to as parallel literature.

Parallel Literature in Maithili

The need for parallel literature in Maithili arose due to the constant onslaught on literature and dignity by the Public and Private Academies, for example, Maithili-Bhojpuri Akademi of Delhi, Maithili Akademi of Patna, Sahitya Akademi of Delhi, Nepal's Prajna Pratishthan, all of which are government Academies. In addition to these Academies, the onslaught on Maithili Literature and dignity was constantly done by the so-called literary associations which were recognised by the Sahitya Akademi and were the main tool for usurping all the literary space meant for this language. Besides these, the funding to these and other parochial associations and organisations led to the

presentation of an interface in the name of Maithili, which was mediocre and non-representative.

The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor)

This book contains five translations from non-representative Maithili short stories into English by Vidyanand Jha. Nagarjun (Maithili's Yatri) and Usha Kiran Khan are from the Hindi quota though both got the Sahitya Akademi prize from the Maithili quota. Vibha Rani and Rajkamal Chaudhary are from the Maithili quota though both wrote in Hindi also.

This book is edited by Abhay K. who has read Sanskrit only up to high school. Yet he pretends to translate Arthashastra directly from Sanskrit into English. I am Kovid in Sanskrit and from the quality of the translation, I can presume that he has used some intermediary language in translating Sanskrit texts into English. It is a matter of ethics to acknowledge the source.

Vidyanand Jha's translation is below par, for example, he has no inkling what would be the English word for 'olak sanna', and there are plenty of such

instances. I have some suggestions for him. First, read A Bird's Eye View on Mithila by Rajnath Mishra, it mentions all the terms for which you could not find English equivalents. Then go to the Videha archive (www.videha.co.in) and look for Umesh Mandal's Picture Dictionary containing vegetation, animals and skill sets of Mithila, here you will find the actual photographs too. Further, under A Parallel History of Maithili Literature (Videha www.videha.co.in), you will find sample English translations of some Maithili short stories. Therefore, what Vidyanand Jha is presenting as exotic is the original thing of the Maithili Language (but not that of Maithili literature, as was two decades ago). Interestingly his choice of short stories reminds me of Contemporary Maithili Short Stories (Maithili short stories translated into English) edited by Murari Madhusudan Thakur and published by the Sahitya Akademi in 2005. It seems that the stories in this selection are leftover material from that collection. Rip Van Winkle awoke after two decades but Vidyanand Jha is

still in slumber not realizing the changes that have happened during the period.

If you compare the translation of this selection vis-a-vis the English translation of Latin American Spanish literature, you would be able to understand the difference.

But these types of selections are not known for their literary excellence, Harper Collins publishes these types of selections for five-star hotels and Airport lounges. The publishers announced this book on March 22, 2022. So, in 6-7 months, you will get old materials only.

The Bride: The Maithili Classic Kanyadan by Harimohan Jha (1908-1984) translated into English by Lalit Kumar (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi)- Harper Perennial (Harper Collins Publishers)

I had pre-ordered the book, which was scheduled to be delivered to my kindle account on the 1st of December 2022, but the delivery date was postponed,

and it was delivered to my account on the 14th of December 2022.

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

Sh. Harish Trivedi has committed the same mistake. In his foreword Harish Trivedi writes- "In Hindi, the language to which Maithili is the closest (and of which it was indeed an integral part until it was granted recognition as a separate language by the constitution in 1993) ..."

Harish Trivedi refers to the inclusion of Maithili in the eighth schedule of the constitution of India. Here the year mentioned should be 2003 instead of 1993. Moreover, Maithili was a separate language in 2003, 1993, and 1965 and during the time of pre-Jyotirishwara Vidyapati. The status granted to Maithili by Sahitya Akademi and the Constitution of India, on the other hand, strengthened the hands of

the obscurantist elements like Ramanath Jha, Shardananda Jha (he is not a famous person but why I have taken his name, I will explain it later) and others who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha's Khattar Kakak Tarang, Pranamya Devata, Rangshala and Charchari all these books were eligible for the Sahitya Akademi Award initiated in 1966 for Maithili (because of recognition given to Maithili by Sahitya Akademi in 1965. But a philosophy treatise was awarded the prize in 1966, this philosophy book itself is a horrific one, and if one has read the book to understand the nuances of Indian Philosophy, then he will have to unlearn first to be able to grasp the philosophical concepts from a new book on Indian Philosophy. In 1967 no award was given for the Maithili Language.

Ramanath Jha's obscurantism vis-a-vis Panji is evident from one example (because Lalit Kumar also seems to have followed in his footstep, though he gives credit for his ignorance to some other writers). He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to

him(but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us on google books in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila"-

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh Harimohan Jha? So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, is wrong and so is the assertion made by Sh. Harish Trivedi.

Mr Lalit Kumar is a young person, but he is being misused by some obscurantist elements, who

gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha stopped writing in Maithili following the recognition of it by Sahitya Akademi and was awarded the Sahitya Akademi prize for his autobiography in 1985, after his death, which means nothing.

Mr Lalit Kumar writes- "Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) and Shardananda Jha's Jayabara (1946) attack such social divisions that played a decisive role in marriages." Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) was indeed a pathbreaking novel, but Shardananda Jha's novel was reactionary. Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Yoganand Jha's 'Bhalamanusa' deals with the social problems connected with the problem of marriage. As a reply to this novel, Shardanand Jha wrote a second-rate novel 'Jayabara,' having little literary merit. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

Mr Lalit Kumar for his Panji-related ignorance gives credit to Mm. Parmeshwar Jha's "Mithila Tattva-Vimarsha." Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Mm. Parmeshwar Jha's 'Mithila Tattva-Vimarsha' is the history of Mithila in Maithili

prose and is based mainly on tradition. Mm Mukunda Jha Bakshi's 'Mithilabhashamaya Itihas' gives an account of the Khandawala dynasty. From the point of view of modern Maithili prose, these two works are important, though from the historical point of view, are unreliable. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

The following excerprt from Our Panji Paband ((part I&II) is being reproduced below for ready-reference: -

महाराज हरिसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरिसिंहदेव नायक आदि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त ओहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरिसिंहदेवक प्रमाणसँ- आ ई हरिसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, ई नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकमे स्थापना कएने रहथि- नन्देन्दु शून्यं शशि शाक वर्ष (१०१९ शाके)... मिथिलाक पञ्जिकारलोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे (था उ वृद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आद

श करबाक पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद याँ जिम (कखनो काल नर्हिण १६०० शाक माने १६७८ ई. नारूनम माधव सिंह के बादमे १८०० ई. के आसपास) (श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उप जातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files.

Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjīkara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panjī records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014]. Later these Panji Manuscripts were uploaded to google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

Mr Lalit Kumar further tries to put his agenda by writing- "Harimohan choose a middle ground in his reformist agenda." He gives laughable reasons for his contention viz. "he espouses the significance of local traditions, languages, scripts, education system, and moral values" thereby meaning that these are conservative values!

(All the referred books are available for free pdf download from the link http://videha.co.in/pothi.htm)

VIDEHA MAITHILI LITERATURE MOVEMENT AND A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE

Therefore, the missing portions, the ignored and non-represented aspects of society, started to be chronicled. It led to the depiction marked by the richness of vocabulary and experiences and was a revolution in literature and art as far as people speaking Maithili are concerned. The quality now has not remained mediocre. The real power of the Maithili language was realised by the native speakers, mediocrity was replaced by excellence. This attempt at the writing of History of Parallel Literature for the Maithili Language arose as the mediocre agency (private and governmental) funded so-called mainstream literature, which has no readership, and no acceptance among the speakers of Maithili continued to be presented by these Akademies as representative literature. The mediocre interface of Maithili literature was presented by the government radio and television stations also. Literary journals like Museindia

(www.museindia.com) & Publishers like Harper Collins were also used for their sinister design.

Pseudo-criticism in Maithili and the case of Kamalananda Jha

The title of Kamalanand Jha's book "Maithili Novel: Time, Society and Questions" (2021) is misleading. It is a collection of some syndicated so-called critical articles on some of his caste novelists. The 263-page book can only be sold in hardbound to libraries where it will rot. Here is a correction, a non-caste writer's work, i.e., Subhash Chandra Yadav's novel 'Gulo', has been dealt with by him in two lines, of course without reading it. I am presenting those two lines here for your entertainment. You must have read *Gulo*, if you haven't already, read it first because then you will have a more entertaining experience. Gulo is available on Videha Archive with the permission of Subhash Chandra Yadav at this link http://videha.co.in/pothi.htm

"The weakness of the novel is the author's political bias. The partisanship towards a particular politics does not do justice to the work."

In a novel where politics is not remotely involved, there is no question of 'political bias and partisanship of a particular politics'. Dhumketu and Yatri used political bias or partisanship. Subhash Chandra Yadav's 'Vote' which came out in 2022 and is available with permission of Subhash Chandra Yadav on Videha Archive at this link http://videha.co.in/pothi.htm, is on politics but even there Subhashji's enchanting style obviates the need of any political bias... Read my book 'Nit Naval Subhash Chandra Yadav' which is available at this link http://videha.co.in/pothi.htm. On the other hand, Mr Kamlanand Jha sounds like a spokesperson of some political party or a casteist organisation rather than a literary critic. Kamalananda Jha's Brahministic bias against Subhash Chandra Yadav is an alarm bell. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist stance to promote Brahminism and wants to

sacrifice social justice. In his biodata, he proudly mentions the Maithili translation assignment bestowed on him by the Sahitya Akademi, and this assignment was allotted to him not on account of merit but solely on the ground of his caste title and in lieu of these deeds. For people like him, Maithili-related work is merely a line in their *curriculum vitae*, but it is a question of life and death for the people of the parallel stream. Why did I call Kamalananda Jha a pseudo-critic? Because he is a pseudo-critic. He writes: "After nearly a hundred years of journey, Gaurinath is credited with writing a dignified novel on the dreams, struggles and ironies of inter-caste marriage. So, did Kamalananda Jha take away this credit from Sushil? Is this the culmination of the arrogance of his Brahministic upbringing ("*Through my whims and fancies I can place some literature on top and can downgrade some to the bottom*") or is this the evidence of his lack of study? Let me take you away from the selfish world of Kamalananda Jha, away from deception and disguise to the sincere world of Sushil's magical literature. Welcome to the

world of Sushil's literature. Here is Sushil's 'Gambali' (1982) which is now available in the Videha Archive at the link http://videha.co.in/pothi.htm. In the first line of this novel, even before the novel begins, Sushil writes about the novel 'Gambali': "In support of widow marriage and inter-caste marriage" and here begins the novel. The death of a village woman and then the trouble ensues, who will cremate this village woman? Brahmin community or Yadav community of the village? Dinesh Kumar Mishra's 'Dui Patan Ke Bich Me' is a historical biography of the Kosi River. He has also written historical biographies of other rivers of Mithila like 'Bandini Mahananda,' 'Bagmati Ki Sadgati!', 'Dui Patan Ke Bich Me... (Story of the Kosi River)', Na Ghat Na Ghar, Kamla River, 'Bhutahi River and Technical Herbalism', The Kamla River and People on Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a Ghost River and Engineering Witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments. Pankaj Jha Parashar, a member of the Maithili Advisory Committee of the Sahitya Akademi, Delhi has plagiarised paragraph after paragraph from his books and has published a novel

in Maithili in his name, which pseudo-critic Kamalananda Jha mentions as research of this thief author Pankaj Jha Parashar! Let me clarify here that both the thief writer and the pseudo-critic are in the Hindi department of Aligarh Muslim University. This research is done by Dinesh Kumar Mishra, who is a graduate of IIT, Kharagpur in Civil Engineering (in 1968) and M Tech in Structural Engineering (in 1970) and is qualified for that research. In Hindi, the cut-off for admission is the lowest across universities, otherwise, Kamalananda Jha would have known that this research could be done by a civil engineer only. The Hindi original and Maithili screenshots are attached below. Dinesh Kumar Mishra is not from Mithila, but he has authored the story of all the streams of Mithila. We are grateful to him, and the people of Mithila will remain indebted to him for this. This thief writer Pankaj Jha Parashar is a habitual offender. More than a decade ago he found a saviour in Mr Taranand Viyogi who wrote that he (thief writer Pankaj Jha Parashar) gets influenced involuntarily stole others' material in his works. Now he has found another

saviour in Kamalananda Jha. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist side to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. Communism has suffered a lot from people who became communists to escape the land ceiling.

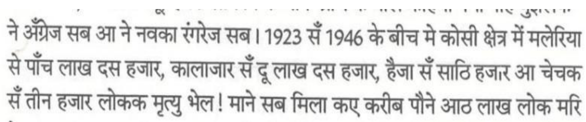
All books by Dinesh Kumar Mishra are now available in the Videha Archive with his permission:

http://videha.co.in/pothi.htm

Let us recall here that when Bill Gates was asked whether he was delaying the introduction of the X-Box in India for fear of piracy. His answer was Microsoft never delays the launch of products for fear of piracy. We will continue enriching Videha Archive (http://www.videha.co.in/archive.htm), despite such risks because not all the fish in the pond rot by some rotten fish in parallel streams. The fishermen here have been and will continue to remove such rotten fish.

The final blow to syndicated pseudo-literary criticism in Maithili.

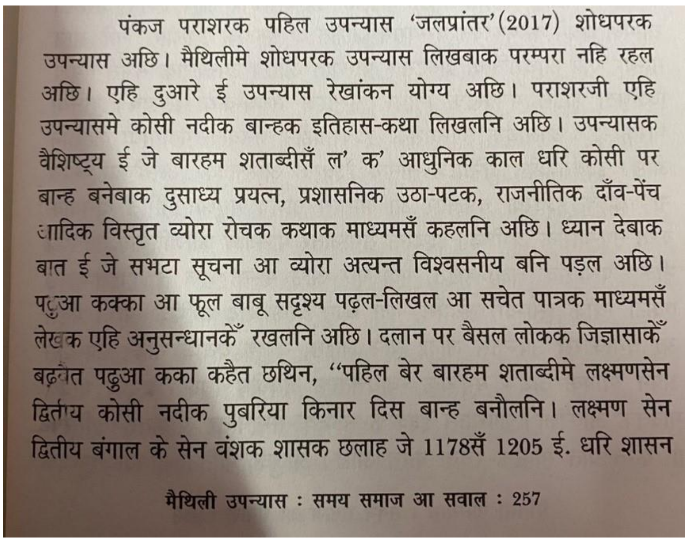
Original Dinesh Kumar Mishra(Dui Patan Ke Beech Me... 2006): It is noteworthy that between 1923 and 1946, 5,10,000 people died of malaria, 2,10,000 from Kala Azar, 60,000 of Cholera and 3,000 of smallpox in the Kosi region (783,000 total deaths). Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi)[Jalpranthar 2017 (p. 103)]:


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

Original Dinesh Kumar Mishra(Dui Patan Ke Beech Me... 2006): On the Kosi River in Bihar, India, a dam was built by King Laxman II in the 12th century and for this, he received the title of 'Bir' from the people and the embankment of the river was called 'Bir Dam' The remains of this embankment are still visible in Supaul district, about 5 km south of Bhim Nagar. Dr Francis Buchanan (1810-11) speculated that the dam must have been an outer wall built to protect a fort as it stretched over a distance of 32 kilometres from Tilyuga to its confluence on the western bank of the Dhaus river. Dr WW Hunter

(1877) did not agree with Buchanan's contention that the dam was the protective wall of a fort. Quoting locals, Hunter believed that most people did not consider it a fortress wall and according to him it was something else but he was not in a position to say anything. Yet the common impression is that it must have been an embankment built along the Kosi River to prevent the river's current from sliding westwards. People also said that it seemed that the construction of the embankment had suddenly stopped.

The pseudo-critic Kamalananda Jha's saviour of the habitual offender thief Pankaj Jha Parashar quoted the plagiarised work as follows: (Maithili Novel, Time, Society and Questions pp. 257-258):


पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi)[Jalpranthar 2017 (p. 31)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनि़यो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन ? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me... 2006): A glimpse of the horrors of the Kosi River can be seen in the event when the army of Feroz Shah Tughlaq returned to Delhi from Bengal. It is said that when the troops of the Sultan reached the banks of the Kosi, they saw that on the

other side of the river, the troops of Haji Shamsuddin Ilyas were waiting, ready for a battle. This was the same Haji Shamsuddin who founded the cities of Hajipur and Samastipur. Feroze's troops were stranded on the banks of the Kosi somewhere around Kursela. The speed of the river was preventing them from moving forward. It was finally decided to proceed northward along the river and to locate the water where it was navigable. The troops of the Sultan went up about a hundred *kos* and crossed the river near Ziaran, situated at the same place where the river descended from the mountains into the plains. The river was thin, but the flow was so fast that heavy stones weighing five hundred *manas* were floating like straws in the river. On either side of the river where it was found possible to cross it the Sultan erected a row of elephants, and ropes were hung in the bottom row so that if a man loses control he could be rescued with the help of these ropes. Shamsuddin never thought that Sultan's troops would be able to cross the Kosi and when he came to know that Sultan's troops had managed to cross the Kosi, he fled.

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi)[Jalpranthar 2017 (p. 105)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनेँ रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनेँ कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनेँ शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कनेँ आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनेँ छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

A Parallel History of Maithili Literature

I

Introduction

FESTIVAL OF LETTERS OR FESTIVAL OF SHAME

SAHITYA AKADEM AND the DOWNFALL OF INDIAN LANGUAGES (IN SPECIAL CONTEXT OF MAITHILI LANGUAGE)

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

He was wrong on this on two counts. What he referred to as applicable, if it applied at all, only to the part of Maithili speaking area, geographically located in India. Maithili is spoken, natively, in India and Nepal. After the treaty of sugauli (ratified in 1816), which was in the aftermath of the Anlo-Nepalese war of 1814-16, the hilly regions were incorporated in British India, including the Nepalese-speaking Darjeeling Area. Similarly in

1816 and 1860, the Britishers ceded some Terai region to Nepal. As a result, part of Maithili speaking Area, which was earlier ruled by Malla Kings (when Maithili was an official language of the region), was ceded to Nepal. Even today some Maithili scholars (!!) refer to the golden period of Maithili as the period of "Nepali (!!)" Malla Kings (Ramanath Jha, Introduction to Maithili Sahityak Itihas by Dr Durganath Jha "Shreesh").

Ramanath Jha himself admits that during his visit to "Vir Library" of Nepal (Kathmandu) he came to know about the Nepal legacy (his monograph on kirtaniya Natak, which he wrongly presents as Kirtaniya Nach) in respect of Maithili. So, he cannot be blamed for his lack of knowledge in this respect. He was wrong on the second count also, and this second count was an artificial creation. He began a tradition of elitism and conservatism in Sahitya Akademi, as the first convener of the Maithili language. The tradition got stronger and stronger in the last 55 years of the Existence of Maithili in that Akademi. So, he ensured that liberal writers,

like Sh. Harimohan Jha, attacking casteism and conservatism did not get the award, even though the year 1967 went unrewarded and the Ist award in 1966 was given to a non-literary book in Maithili (academic book of Philosophy!!!).

He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him, and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father. But he informed Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya in a distorted way. Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila".

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila-Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", and he writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh? Harimohan Jha. So, the Sahitya Akademi saved the

Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, was wrong on those two counts.

Now come to Nepal, the Prajna Pratisthan and other organizations often recognize Indian Maithili writers, but Sahitya Akademi of India does not recognize Nepalese Maithili writers, be it the Seminars or the poets meet, be it an anthology of poems or prose published by the Akademi. Regarding the treatment of Nepalese Maithili writers by Sahitya Akademi Sh. Ram Bharos Kapari "Bhramar" laments that there is demand in Nepal that they should also not award Indian Maithili writers/ publish them in their anthologies as reciprocity demands this.

The narrow-mindedness of the Maithili advisory board of the Indian Sahitya Akademi has its origin in the organizations that are recognized by the Sahitya Akademi, the basis of which is extra-literary credentials. These are pseudo-organizations running on paper, political organizations or casteist organizations pocket-run by a few. The complete list is:

MAITHILI LITERARY ASSOCIATIONs (!!!) RECOGNIZED by SAHITYA AKADEM

1. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P.C. Banerjee Road, Allahabad-211 002.

2. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag, Darbhanga-846 004.

3. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001.

4. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007.

5. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004.

6. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

Now the Literary Association lists read as under. Serial no. 1 & 6 above have been derecognised and

has been replaced by other non-literary associations at sr no 5, 6 & 7 below.

(1) The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, Professors' Colony, Digahi West, Opp. of Primary School, Darbhanga-846 004, (Bihar)

2) The Secretary, Chetna Samiti, Vidhya Pati Bhavan, Vidyapati Marg, Patna-800 001 (Bihar)

3) The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007, (West Bengal)

4) The Secretary, Vidhya Pati Sewa Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004, (Bihar)

5) The Secretary, Anand, Samajik Sanskritik Sahityik Manch, Rajkumarganj (Mirzapur Chowk), Darbhanga-846 004, (Bihar)

6) The General Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, Rosebery 5032, Sahara Garden City, Adityapur-2, Jamshedpur-831 014, (Jharkhand)

7) The General Secretary, Akhil Bharatiya Mithila Sangh, G-6, Hans Bhavan, Wing 2 I.T.O., Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (Delhi)

What is the literary credential of the Centre for the Study of Indian Traditions (now recognised and replaced by another pocket association)? Chetna Samiti and Vidyapati Seva Sansthan are casteist political outfits, vehemently displaying the casteist attire of a great ancient poet, whose caste is still uncertain (VIDYAPATI), but who was certainly not Brahmin. All India Maithili Sahitya Samiti (now derecognised and replaced by a non-literary association) became non-existent even during the lifetime of the Late Jaykant Mishra, same is the case with Akhil Bhartiya Maithili Sahitya Parishad. Mithila Sanskritik Parishad has done a crime through an investiture ceremony of the great Vidyapati, they tried to convert Vidyapati and "Maithili" language to the language of only the Brahmins (the name of the artist who sketched the Vidyapati has still not been disclosed by this organisation). When these non-existent organizations exercise voting powers granted by Sahitya Akademi and chose a convener, it is not a coincidence that for successive times only

conservative people among the Maithil Brahmin caste, are chosen. The complete list is:

1. Ramanath Jha, 2. Jaykant Mishra, 3. Surendra Jha Suman, 4. Sureshwar Jha, 5. Ramdeo Jha, 6. Chandranath Mishra Amar, 7. Vidyanath Jha Vidit, 8. Veena Thakur, 9. Prem Mohan Mishra, 10. Ashok Avichal.

The result is now for everybody to see. The complete list of Sahitya Akademi awards (till 2019) is:

Total booty distribution- 50 times, Maithil Brahmins- 42 times, Kayasthas- 6 times, Rajpoots- 3 times; Others- 0 times!!! (Now in 2021 Sh. Jagdish Prasad Mandal has been awarded this prize for his novel "Pangu", so the count is now not zero but one.

The result is not based on the quality of the books but solely upon the caste-based other considerations and the disease has its root in the faulty seedling that the Sahitya Akademi of India found through the faulty literary associations.

What were the objectives of the setting of this Akademi?

Sahitya Akademi was established (National Academy of Letters to be called Sahitya Akademi) by Government of India resolution No F-6-4/51G2(A) dated December 1952 "to set high literary standards, to foster and co-ordinate literary activities in all the Indian languages and to promote through them all the cultural unity of the country; to promote good taste and healthy reading habits, to keep alive the intimate dialogue among the various linguistic and literary zones and groups through seminars, lectures, symposia, discussions, readings and performances, to increase the pace of mutual translations through workshops and individual assignments and to develop a serious literary culture through the publications of journals, monographs, individual creative works of every genre, anthologies, encyclopedias, dictionaries, bibliographies, who's who of writers and histories of literature."

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international

levels, " along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year".

The Akademi recognises " Besides the twenty-two languages enumerated in the Constitution of India", English and Rajasthani as languages. Sahitya Akademi has constituted twenty-four language Advisory Boards "to render advice for implementing literary programmes in these 24 languages".

The Akademi gives prizes in twenty-four languages recognised by it for original and translated works. It gives " special awards called Bhasha Samman to a significant contribution to the languages not formally recognized by the Akademi as also for contribution to classical and medieval literature"; "It has also a system of electing eminent writers as Fellows and Honorary Fellows and has also established a fellowship in the names of Dr Anand Coomaraswamy and Premchand".

FESTIVAL OF LETTERS (SHAME)!!!!

In February every year, Sahitya Akademi "holds a week-long Festival of Letters; It begins with the

ceremony to present the Akademi's Annual Awards for creative writing".

In February every year, there is a need to examine whether Sahitya Akademi is fulfilling its objective and whether Sahitya Akademi is aware of the rich cultural and linguistic variety prevalent in India.

On scrutiny it is revealed that Sahitya Akademi believes in "forced standardisation of culture through a bulldozing of levels and attitudes" and it is not "conscious of the deep inner cultural, spiritual, historical and experiential links that unify India's diverse manifestations of literature".

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, "along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year". If we see the data in respect of Maithili it comes out that every year around twelve books should have been published in Maithili and the Maithili writers might have attended thirty seminars every year at

regional, national, and international levels and might have participated in eight literary gatherings every year. The number of Maithili books published by the Akademi is pathetically low, and when we see the assignments, through which these books get artificially prepared (be it translation, anthology or monograph), then the people getting these assignments are often related to the members of the advisory board (as the answer to RTI application by Sh. Vinit Utpal brings forth). The quality suffers, and as a result, there is no readership.

How this Akademi failed? And why this Akademi failed? And what action should be taken against Akademi for its intentional failure?

Firstly, Akademi is not the name of a man or woman. Akademi or its member of the Advisory Board consists of persons, and if the group of persons is failing the Akademi, that language itself is to blame! But again, the language is not the name of a man or woman. So, the people speaking that language are to be blamed for the failures of the Akademi. Really!!

Even if it is partially true, the Sahitya Akademy cannot shirk its responsibilities. How an advisory committee can be considered representative of Maithili-speaking people (even that of India), when the Convener of that language is nominated by six organisations (recognised by the Sahitya Akademi for reasons best known to it), having no remote connection with literature? Sahitya Akademi sowed seeds of Acacia and expected Mango fruit. Having said that it is also true that the Akademi or any organisation can transform itself, but only when the conservative people representing these find pressure from the literary fraternity, change themselves or are replaced.

What is the solution?

The literary fraternity has already taken initiative by establishing parallel Sahitya Akademi awards and parallel literary meets. It should be taken further. All legal means should be explored to take the Akademi to the task. On all available forums, the fact is made clear that the literature being prepared by Sahitya Akademi through

assignments is not grammatically correct, that it is not up to mark and is of inferior quality. On all available forums, it should be made clear that the thin, casteist-looking (quantitatively and qualitatively) and pale Maithili literature, which is being shown by the Sahitya Akademi of India to the world, has no readership or respect in its native speaking area of India and Nepal. And that Maithili has moved not because of Sahitya Akademi but despite it.

Demand

The six organisations representing Maithili should be derecognized with immediate effect and an inquiry initiated to ascertain their genuineness. A committee should be set up to scrutinize the work done by the Sahitya Akademi (in respect of Maithili) in the last 55 years. The awards should be kept in abeyance till the results of the inquiry are made public and corrective steps are taken.

II

THE CELEBRATION BEGINS

Videha Ist Maithili Fortnightly International e-journal has e-published more than three hundred issues to date. Meanwhile, we will enumerate the problems faced and the solutions found by us. The Journey began in the year 2000 at yahoo Geocities- the first words on the internet in Maithili were written by me on the yahoo Geocities sites (now yahoo has discontinued Geocities) towards the end of 2000 when I suffered a major accident which kept me confined to crutches for one and a half years. But that shaped my destiny. I could concentrate on my Maithili writings and my research on Tirhuta Manuscripts. On 5th July 2004, the first blog in Maithili came (gajendrathakur.blogspot.com) as "Bhalsarik Gachh", which was rechristened as Videha ejournal from 1st January 2008. From Ist January 2008 it came to be published as a fortnightly journal. The first rechristened issue brought the story of the life and creations of a forgotten Maithili poet Late Ramji Choudhary (1878-1952).

Till the eighth issue of Videha the columns on Music, Mithila Painting, Children column, learn

samskrit through Maithili got strengthened. Moreover, the projects on digitalisation of Maithili Classics and Panji Manuscript-leafs got started. The searchable dictionary (Maithili-English_Maithili) was designed and strengthened. From the eighth issue, a latest unpublished Maithili Play of Nachiketa "No Entry Maa Pravish" began its e-publication in Videha. Nachiketa, the greatest dramatist of Maithili Literature was silent for the last 25 years, as far as the drama was concerned.

Technology has two aspects, bad (its chances of misuse) and good (its effective use). It is a great leveller; it challenges status quo forces. It is applicable in all areas of knowledge. So, school-going children today have a clearer understanding of the universe and atoms than the Aryabhata or Sir Issac Newton had. After mass-scale use of printing education and literature expanded its wings, but only after the "Internet and electronic transformation of tools of knowledge", it has become universal, it has jumped geographical boundaries. All shackles unfurled, the weak links of the chain

were identified, and the chain which tried to capture knowledge, which tried to thwart its expansion, started breaking down. And the greatest beneficiary became the Maithili Literature. What is Videha, nothing, it is only its commitment to the Maithili Language, which helped it expand its base, and Videha became the means that were able to bind together the Maithili-speaking areas in both parts of the boundary (India & Nepal). Videha gave Maithili a batch of committed writers and a batch of committed readers. It challenged the status quo and casteist forces. It challenged confused writers, who were using Maithili as a tool to ride the ladder of Hindi. The lack of criticism, the lack of teeth in criticism was the reason that some writers and dramatists were using Hindi-Mix Maithili for cheap popularity, they were using derogatory language for the so-called lower castes of their society (some were finding plea in Natyashastra- when even the modern-day Samskrit Drama is not using Prakrit etc.!!), and for their mimicry, those castes started keeping distance with this kind of literature. And once the confusion of the confused thinned, a new

type of awakened literature, stage, and drama (top-class) became the norm.

Videha is regularly getting some excellent brains. Since its inception, Videha, the idea factory, is dependent upon them. As far as their versatile qualities are concerned, people associated with Videha are different. All are known for their perseverance and resilience. All are known for their arduous work. All are known for their quality work. All are known for their discipline. And all are committed; committed to Maithili and the Mithila. The cumulative force resulted in a natural revolution. A revolution in the field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. The only international e-journal in Maithili started this quality movement in Maithili. Nothing less than world standard was acceptable. The awards were instituted to recognize the parallel field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. Only the best was selected, there was no scope for the second best. The participation of readers in the decision-making processes was encouraged. The

readers got full access to the digitalised Maithili Literature. More than five hundred Maithili books and around 11000 palm-leaf mithilakshar manuscripts were digitalised and made available online under the "Videha Archive" section of www.videha.co.in (and the number is increasing every day). The audio-video-paintings-photographs were archived, and all these archived "art and lifestyle" of the people of Mithila were then placed online. The Videha Archive is a unique gift to the world.

So, what is the ideology of people associated with Videha? Is it collective thinking? No, of course not. In Videha all are welcome. Here all are welcome to discuss their respective ideology. Having said this, it needs emphasis that there are some basic human principles where no compromise is possible. The casteists, those having genetic superiority complex (which is another name for an inferiority complex), the practitioners of plagiarism, those who are unable to take part in a healthy discussion and persons who are not able to withstand the criticism of their creation, Videha is not a platform for

them. The ideology of people associated with Videha may have different tinges, not all need to toe the line taken by any member of the editorial board. Videha believes in the individuality of ideas and the editorial board never imposes its ideology upon its members. At the same time, it is being emphasized that each member of the Videha editorial board has a strong ideological leaning, the ideology of humanism is practised by all.

Videha-Maithili Literature Movement has its roots in the year 2000 when I started making Maithili Websites on Yahoo Geocities. After Yahoo Closed Geocities these sites were automatically deleted. However, the early form of Videha "Bhalsari Gachh" was started on 5 July 2004, and it is the earliest presence of Maithili on the internet. Videha and its vibrant members did their utmost in translating lacs of words on Wikipedia, and they successfully opposed the nomenclature "Bihari Languages" (Gerard M accepted the role of Umesh Mandal, the co-editor of Videha, go to Gerard Ms blog and click the Dasipat Aripan photo from Videha archive (Preeti

Thakur) placed at his blog, you will reach http://videha.co.in/). In Google translate/Wikipedia localisation drive, in Tirhuta and Kaithi script research and the localisation of Braille in consonance with the Maithili Language, Videha shouldered the responsibility as a pioneer in technology viz-a-viz Maithili Language. It was a pioneer in many respects. It started for the first time a Maithili Websites Aggregator at http://videha-aggregator.blogspot.com/, the first braille site in Maithili, the first mithilakshar site in Maithili among others (total list).

Videha has organised several dozen Maithili book fairs to date. The 16th Videha Maithili book fair was held at Sagar Rati Deep Jaray, Patna on 10-11th December 2011 and the 17th Videha Maithili book fair was held at Guwahati, on 22-23 December next year at the Vidyapati Parv organised by Mithila Sanskritik Samanvay Samiti. The detailed list of all the venues (datewise). Videha also organised a parallel Sahitya Akademi Kavi Sammelan, besides awarding parallel Sahitya Akademi prizes, as

corrective measures, as the awards and Kavi Sammellans of Sahitya Akademi were awarded/ organised in a unilateral manner where merit took a beating. Videha has, thus, fulfilled its obligation by interfering in the murky affairs of government organisations. Videha cannot remain a silent spectator, be it plagiarism or copyright violations. So, the authors like Pankaj Parashar, and Ashok Sahu, who were engaged in lifting other articles/ stories/ poems were banned after verifying the sources and target writings.

Literature in translation is a major issue with Videha. Lack of translation in America resulted in Americans lagging in quality literature. We practise literature in translation in both directions- from Maithili into English and from other languages into Maithili. As far as translations from other languages into Maithili are concerned English, Nepali, Sanskrit and Hindi function as buffer languages in the process. Direct translations into Maithili are limited; and it is done directly only from English, Sanskrit, Hindi, Nepali and Bengali,

although there are some exceptions. As far as the question of translations from Maithili into other languages is concerned, directed translations are again limited; and it is again done directly only into English, Hindi, Sanskrit, Bengali and Nepali, barring some exceptions. Videha contacted some notable personalities of class literature, took permission, and translated that literature into Maithili. Most of the time English was used as a buffer language and translation work from English, Hindi, Konkani, Telugu, Gujarati, Odia, Kannada, Nepali and Telugu into Maithili was completed; and these works were regularly published in Videha. Maithili novels, poems, and short stories, on the other hand, were translated from Maithili into English and were published regularly in Videha.

VIDEHA became a Maithili Literature movement. No, VIDEHA was from day one of the Maithili Literature movement. Many established misconceptions got cleared through VIDEHA. The well-known facts, the not-so-obvious plot of some people to kill Maithili through its twin institutions the Sahitya Akademi

and the CIIL was unearthed. The Right to Information came in handy. Sri Vinit Utpal asked for information from Sahitya Akademi through his RTI application dated 23.09.2011 (file no. RTI-125) and sought information on "Assignment assigned by Maithili Advisory Board, Sahitya Akademi under the convener ship of Sri Vidyanath Jha 'Vidit'". The information included a proposal received, a proposal rejected, and a proposal kept in abeyance." The statutory mandatory information supplied by the Sahitya Akademi unearthed a vicious circle of Maithili-speaking so-called litterateurs, hell-bent upon making Maithili a language- "of the Maithil Brahmin, for the Maithil Brahmin and by the Maithil Brahmin". More than 90% of the assignments went to the friends, relatives, and acquaintances of the 10-member Maithili Advisory Board. No assignment to Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Bechan Thakur (the greatest Short-story-novel writer of Maithili, the greatest living poet of Maithili and the greatest living Maithili dramatist; respectively), Sh. Umesh Paswan, Sh. Umesh Mandal, Sh. Ramdev Prasad Mandal "Jharudar", Sh. Durganand

Mandal, Sh. Sandeep Kumar Safi or to Sh. Anand Kumar Jha. When every member of the Maithili advisory board is hand in glove with the Sahitya Akademi to kill the Maithili language then where lies the hope? The demand for Mithila state by these people will see that 10 Maithil Brahmin families would loot the Mithila state. Then where lies the hope? Here lies hope. Sh. Bechan Thakur has created a parallel Maithili stage and theatre, a slap on the existing slapstick humouristic Maithili theatre. Sh. Umesh Paswan is a discovery of the Parallel Sahitya Akademi Poetry festival organised by Videha. Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Jharudar, Sh. Sandeep Kumar Safi and Sh Umesh Mandal have pumped their energy, wealth, and time into our Maithili Language. This language will live...proofs are given below: -

Google Translate:

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

then Wikipedia translate:

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator
http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai
http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://ultimategerardmblogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

[Monday, May 09, 2011

The #Bihari #Wikipedia is written in #Bhojpuri

This is the kind of article that has many people's eyes glazed over. It is about standards and scientific documents, and it is about languages most of my readers have never heard about. For the people that do speak one of the languages that are considered Bihari, it is extremely relevant, and it has implications for Wikipedia.

This is information provided by Umesh Mandal that explains the "Bihari group of languages" with the Maithili language:

Kellogg (1876/1893) and Hoernle (1880) regarded Maithili as a dialect of Eastern Hindi; Beames (1872/reprint 1966: 84-85), regarded Maithili as a dialect of Bengali, Grierson has done a great service to the Maithili language, however, he erred when he gave a false notional term of "Bihari" language after that western linguists started

categorizing Maithili as a dialect of "Bihari" language; although there is nothing known as "Bihari Language" and both Maithili and Bhojpuri are spoken in Bihar (of India) as well as in Nepal.

Umesh is working on the localisation of MediaWiki for the Maithili language and as this language is currently in the Incubator, the language committee does its due diligence and trying to understand if Maithili can have a place in the Bihari Wikipedia. The information provided by Umesh makes it quite clear: "no".

This still leaves us with the misnomer that is the Bihari Wikipedia. The language used for the localisation and the articles is Bhojpuri. Bhojpuri has the ISO-639-3 code "bho".

Are you still following all this? Ok, there is one question I am not asking: How about the Kaithi script?

Thanks, GerardM]

Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly

Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.]|

TIRHUTA UNICODE See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman Pandey at Page 23 of the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other

records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

The Maithili Speaking area is shrinking. It is shrinking due to a conscious-subconscious policy of the Governments of India and Nepal, and the situation became critical due to the invasion of Hindi and Nepali media and the biased educational system in Maithili-speaking areas, and due to the large-scale migration, which has happened in one single generation. The question of Hindi saw to it that Vajjika, Angika and now Thethi, Surjapuri etc. languages should get the tacit support of supporters of Hindi, first in the name of religion and second in the name of caste. Through this they did not support Vajjika, Angika, Thethi or Surjapuri; but they tried to weaken Maithili, which resulted in the weakening of Vajjika, Angika, Thethi and Surjapuri. For all this, the Maithili-speaking people, more so the officials (I will explain it later), are also responsible, as they tried to delimit Maithili within the two castes and four

districts. All other people and areas, than these, were considered northern, southern, eastern, and western deviations of so-called pure Maithili, which was fictitiously considered as being spoken by these Maithil Brahmins/ Karna Kayasthas of Madhubani, Darbhanga, Saharsa and Supaul districts. For the last 45 years the officials, yes, I call them officials, the officials of the Maithili Department of Sahitya Akademi, did not try to accommodate the people outside this fictitiously delimited domain. But the major problem lies somewhere else. The slow poisoning was given in many disguises, be it the faulty top-heavy education system, which neglected primary and middle school education through the Mother Language Maithili, or be it through the concept of dialect, which initially conveniently declared languages like Maithili as dialects. Elementary education through Maithili was a non-starter because the Maithili books published by the Bihar State Textbook Publishing Corporation Limited seemed to be in Avahatt, it was not fit for children. Further, the authors and subjects selected for these books had

a casteist bias. Maithili became a tool for caste-based politics, as once Hindi had been a tool for religion-based politics. Still, these officials, of the Maithili Department of Sahitya Akademi, are residing in their own built ghetto, bereft of any thinking or vision. Another reason for the present plight of Maithili is the policy undertaken by the tax collectors of Mithila (permanent settlement Zamindars of Cornwallis), whom the sycophants call King or the great king (Raja/ Maharaja) or Mithilesh (King of Mithila) these were mere tax collectors, the right for which were given to the highest bidders permanently; and there was not one such Mithilesh (tax collectors), but many within the borders of Mithila. These tax collectors employed mostly those two castes from four districts in their merchandise venture, and as the selection was based on sycophancy, so the work suffered. So, they imported the lathiyals from outside the Mithila region. The masses of Mithila suffered a blow from the double-edged weapon. First, from their people who did not consider them as their own and second, the outsiders looted them. Now after some time these

outsiders, the non-Maithili speaking people, found it convenient to declare the masses (not belonging to the two castes from four districts) as non-Maithili speaking people, and the officials/ sycophants from those two castes from four districts tacitly agreed to it. Now these outsiders, the non-Maithili speaking people, formed a majority in many places of Mithila, and they led the rumour that Maithili, like Sanskrit, is an upper-caste phenomenon, and thus they legitimized their anti-Maithili stance (all these facts have been brilliantly dealt with in the Maithili Novels of Sh. Jagdish Prasad Mandal) and they propagated the case of Hindi, first based on religion and second based on caste. But why our people fell into their trap, why these tax-collector Maharajas did not consider the masses of Mithila as their own and imported the perpetrators to loot their masses? The simple answer is that merit took a downward leap in auction-based tax collection rights allocation.

We started from one and reached number three, then thirty and now three hundred!! and we are growing-

... and are three hundred not out and are creating a grand history. http://www.videha.co.in/ Videha Ist Maithili Fortnightly e-Journal ISSN 2229-547X has e-published its 300th issue recently. When I began this venture in the year 2000 with a Samsung TV net appliance, and when the existing was posted on 5th of July 2004, I moved all alone. Then on 31st January 2007, I suddenly thought to include the public, as after some groundwork I was ready for it. I decided to e-publish Videha and did publish it, on a fortnightly basis, the first issue that came on 1st January 2008 tried to include all the previous posts.

From all corners of this planet earth, the people tried to change the destiny of Mithila and Maithili. Now Sh. Ashish Anchinhar, Sh. Munnaji (Manoj Kumar Karn), are part of our team, and together we are three hundred not out now. With three hundred plus issues, 30,000 pages of Maithili literature (one hundred lac words corpora) creation and 11000 Tirhuta manuscript transcription we maintained a

50000-word Maithili-English vocabulary database. Now we are 350 strong, with 350 authors.

Videha has faced challenges and has withstood them. We never shirk from any question and/ or problem. The question of the state of Mithila is one such question which often comes calling. We are in favour of the states of Mithila within the sovereign borders of India and Nepal. We are in favour of Mithila. But which type of Mithila, that type that we had during the Zamindari Raj, where means of sustenance and avenues of existence remained limited for a few castes? Or that culture that existed within "Aryavarta-Indian Nation newspaper" and other Industries during that Raj. A dozen families of Mithila galloped all these mostly from a single caste!! No, we are not in support of that Mithila, that Mithila where Maithili would be swallowed, as it is being swallowed by the Sahitya Akademi and the CIIL, swallowed by another dozen families. We are not in favour of that Mithila where the proceeding of the legislative assembly would be held in a language other than Maithili. Till the

misgivings of the people of Mithila are addressed, we cannot support any Mithila state movement. So the people striving hard for Mithila state should sit on a protest before the advisory board members of the Sahitya Akademi/ CIIL and sing patriotic songs in front of their houses, and pressurise them not to misuse government funds by unscrupulously awarding functions of Akademi outside Mithila and not to misuse the power of assigning translation and other rights to themselves and to those people who are hell-bent upon destroying our language. The RTI application by Sh. Vinit Utpal has thwarted an attempt to strangulate Maithili, but if the supplementary work is not done the sinister design would resurface again. We request the Maithili advisory board members of Sahitya Akademi immediately return their assignments taken in their name and the name of the members of their family. Otherwise, pressure should be mounted to force these 10-member Maithili Advisory Board members to voluntarily resign from their membership in the larger interest of Maithili. So, what is our answer

viz-a-viz demand of Mithila state: it is a categorical Yes.

The technology-centric venture called Videha became a success. The native speakers of Maithili reside in Bihar (of India) and South-East Nepal. The net connectivity had been extremely poor in these areas. Then how the authors, new and old, started using Unicode for writing for Videha. The Nepal Side of Mithila had been using Preeti, Kantipur, Himala etc. fonts, the Kolkata Maithili-speaking population had been using the Marathi fonts and the rest had been using the fonts based on the old Remington keyboard. All these three types of fonts are ASCII fonts. We researched these fonts and provided font converters to our Nepal-based authors. We also provided phonetic and Remington-based Unicode writers to all Maithili authors, who asked for them. We asked the authors if they may send their creations in any font, but at the same time, we encouraged them to use Unicode fonts. The technical support that we provided resulted in numerous receipts of typed entries from persons like Sh. Gangesh Gunjan, who in

earlier stages had been sending their creations in their handwritings. As Sh. Gangesh Gunjan was well versed in Remington keyboard typing, so he made wonderful use of the Remington Unicode typewriter. He sent that software to some of his friends too and he was courteous enough to intimate about this to us, although there was no need for that. Sh. Saketanand also used that software and sent his short story कालनाग्निश्च दानूक्षा in Unicode, and it was published in one of the issues of Videha. The technology-centric venture called Videha became a success because we made it simple and intelligible at a time when even the technologists were not sure about the future of this Unicode. The virtual medium was being seen with anxiety by the literary fraternity, and the copy-paste system of theft was rampant in those days. But we assured the authors that with Videha they may rest assured that the copyright thieves would not be spared, while at the same time we were firm, that only for fear of misuse of technology we should not stop our venture midway. With the internet and technology, the geographic barrier became non-existing. The end of the problem

of distribution in Maithili literature became possible due to our technology-friendly attitude and it proved a boon for our Maithili language. And it made the technology-centric venture called Videha a success... It is the success of the parallel Maithili literature movement.

III

HONOUR KILLING OF GANGESH UPADHYAYA (FIRST BY RAMANATH JHA, THEN BY UDAYANATH JHA 'ASHOK' *(A PARALLEL HISTORY OF MITHILA AND MAITHILI LITERATURE, WHY TODAY ITS NEED BEING FELT MORE INTENSELY?)*

I was not surprised, though I must have been when I saw a monograph on Gangesh Upadhyaya, whose copyright is being held by Sahitya Akademi, the author of the monograph is Udayanath Jha 'Ashok'. I thought that Udayanath Jha 'Ashok', who has been given Bhasha Samman also, by the same Sahitya Akademi, would do some justice. But truth and research seemelusive in Sahitya Akademi monographs, at least that I found in this monograph.

I searched and searched through chapters, that now the author will show courage. But the author like Ramanath Jha seems ashamed of the roots and offspring of Gangesh Upadhyaya. He tries to confuse the issue, but there is no confusion now at least since 2009. But in 2016 Sahitya Akademi seems to carry out the casteist agenda. Udayanath Jha mockingly pretends to search his name, lineage etc, where nothing is there to search for, yet he could not muster the courage, to tell the truth, and ends up just repeating the facts in 2016 that Dineshchandra Bhattacharya already has published way back in 1958.

The honour killing of Gangesh Upadhyaya by Prof. Ramanath Jha is being taken forward by Sahitya Akademi, Delhi in a most hypocritical way.

Ramanath Jha's obscurantism *vis-a-vis* Panji is evident from one example. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a

"Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila". (1958)

"*The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila----- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name-----...As there is no other reference to Gangesa we can assume that the family dwindled into insignificance again and became extinct soon after his son's death.*" [1958, Chapter III pages 96-99), which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha, and he seemed thankful to him

The following excerpt from Our Panji Prabandh (parts I&II) is being reproduced below for ready reference:

-

महाराज हरिसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरिसिंहदेव नायक आछि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरिसिंहदेवक प्रयाससँ- आ ई हरिसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकमे स्थापना कएने रहथि- नन्देद शून्यं शशि शाक वर्ष (१०१९ शाक)... मिथिलाक पञ्जिकार लोकनि शाक १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे (थोड़ वृद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (करबा काल वर्णित १६०० शाक मान १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजाति मिथिलामे उत्पन्न भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files. *Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjikara-s whose*

families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panji records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014].

Later these Panji Manuscripts were uploaded to Videha Pothi at **www.videha.co.in** and google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya

sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mthila even today. Srotriya before that referred to following some education streamin British India, in Nepal it still has that meaning.

ORIGINAL PANJI REFERENCES ARE PLACED BELOW

DOOSHAN PANJI- THE BLACKBOOK

४९.

१८८/२	चर्मकानिधी	माण्डन	नरनियाम	छादन
गाङ्गविंनामधि कानकगंगेश	छादनगंगेशक	नाँ्ी	*नन्ताकनक-मातृक (अङ्गाग)*	गंगेश
	नल्लरा	रनाू	मारश्चन	
			जीन	

२१//१० छादनसँ गाङ्ग विन्धामधि कानक जगङ्गनू गंगेश

छादनसँ गा्न विन्ामधि कानक

गंगेशक नल्लरा चर्मकानिधी यितृ यनाऊ यञ्च नर्ष न्यगीग गा्न विन्ामधि कानक गंगेशाग्यम्हि- **चर्मकानिधी मधाक सन्तानक लागिम छलहि**

छादन सँ गाङ्ग विन्धामधि कानक मōमō गंगेश

"गाङ्ग विन्धामधि कानक म. म. या. गंगेशक निषयक लख प्रावीन यञ्जीसँ उयलब्ध?||

पिगृ यनाऊ यंव नर्ब ब्यीग गंगेशोयाफ्ि ठ्लौगि प्राचीन लखनीय: कूप्राथि

दनानह्र यञ्री ३९-२ छादनसँ जगदगुनू गुंनू गंगेश सूनाय नरनियामसँ जयादिय सूग साधूकन यन्नी

दनानह्र यञ्री ३३९-३ जगदगुनू गंगेश सूग सूयन दो रगुनिसमसँ रुनादिय दो.।। यूत्र सूनाव गोना जजिनाल सँ जीव यन्नी ७ सूग सह्रगहि रनश्वना। अप्रस्तान सूयनत्रानृ रुनिश्मी दानिगि क्रावित् जजिनाल ग्राम

दनानह्र यञ्री ३०=७ छादनसँ उयायकानक म.म. या. नर्ह्रमान सूनाव खगुनलासँ निश्वनाथ सूग शिननाथ यन्नी गंगेश- म.म. नर्ह्रमान/ सूयन/ रुनिश्मी

Gangesh, the author of the Tattvachintamani, wrote one text equivalent to 12,000 texts. Now come to the fact mentioned in the Panji- it clearly states that Gangesh of Tattvachintamani was born five years after the death of his father and he married a tanner, so why did Ramanath Jha hide this from Dinesh Chandra Bhattacharya? Vardhamana, son of Gangesh, calls Gangesh *sukavi kairavakananenduh*. But the conspiracy under which the poems of a famous scholar like Gangesh are not available today is clear from the example given above. Vasudev of Bengal was a classmate of Pakshadhar Mishra of Mithila, he came to study in Mithila, passed the *shalaka* examination and received the title

of *sarvabhaum* Vasudeva memorised the *tattvachintamani* of Gangesh and the *nyayakusumanjali karika* of Udayana. Pakshadhar and other Mithila teachers did not allow writing (copying) *tattvachintamani*. Raghunath Shiromani, a disciple of Vasudeva, took the right of certification after he defeated his guru Pakshadhar Mishra in a scriptural debate *(shastrartha)*. The *Navya Nyaya* school was founded in Navadvipa by Vasudeva-Raghunath. Pakshadhar Mishra was a contemporary of Vidyapati (distinct from the Padavali writer who was of the pre-Jyotirishwar period) who wrote in Sanskrit and Avahatta. And the arrival of Mithila students of Bengal from Bengal stopped after Raghunath Shiromani. Gangesh Upadhyaya enjoyed *'param guru'* as well as *'jagad guru'* titles, the highest titles of the time and as per Panji only Vacaspati Mishra II was the other person who enjoyed the title of *'param guru'*. The extinction of Navya-Nyaya School from Mithila, as described above, was a revenge of nature against the honour killing of Gangesh Upadhyaya and his family.

[Translation of the Maithili Short Story, 'Shabdashastram' (based on the true Panji records of Gangesh Upadhyaya) was done by the author Gajendra Thakur himself: published as 'The Science of Words' Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

3

Kamlanand Jha has written a book on Nagarjun (Maithili's Yatri) where he credits him with giving a new direction to Maithili literature. Chandradhar Sharma Guleri wrote 'Usne kaha tha', a marvellous short story in Hindi, the best one of its time. But his literary corpora is very little in quantity, so if anyone tried to give him credit for giving direction to Hindi short story writing would make himself a laughing stock. And Yatri's Maithili literary corpora is even thinner than Guleri's. Moreover, Rajkamal Chaudhary calls him of the medieval age (Rajkamal Monograph, Subhash Chandra Yadav, Page no 14). He wrote Chitra (25 poems). He wrote, rather hurriedly published his 'Patrahin Nagn

Gachh' (44 poems) for Sahitya Akademi Award in Maithili, which he got in 1968. After that he stopped writing in Maithili, so how can he influence anybody when after getting the award one stops writing in that language? This is one example of his instability so far as his ideology is concerned. He became a Buddhist monk when he left for Sri Lanka and became a Brahmin again when he returned after a 2nd sacred thread ceremony performed in his village. This is another example of his instability so far as his ideology is concerned. Kamlanand Jha does not know Maithili literature. His comments should be exposed, as he tries to give a bad name to the great tradition of Maithili literature. There were mainstream writers, but there were writers of parallel tradition also (see below Annexures 1 & 2). He has confused the Sanskrit and Avahatt Vidyapati Thakkurah with the Padavali writer pre-Jyotirishwar Vidyapti. He should read the writing of Vijay Kumar Thakur, a leftist historian, who has given ample light on pre-Jyotirishwar Vidyapati. [*My article on Vidyapati in Prabandh Nibandh Samalochna Vol.II (available in Videha Archive) covers all*

these, the logo of Videha is the photograph of Pre-Jyotirishwar Vidyapati, sketched by Panak Lal Mandal, recipient of Videha Samman for fine arts.]

Annexure 1

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम-पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिअर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता कयलन्हि। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

१

न्यायक रहल कतहुँ नाम।

सभ अन्याय रहल गहि ठाम॥

सत्य वचन विरल जन भाष।

सभ मन धनक रहन अभिलाष॥

कपट रहल कत कतिक काटि।

ककर न कर मर्यादा छाडि॥

भन कवि 'चन्द्र' कतहुँ घूस।

𑒮𑒩 𑒮𑒯𑒧𑒰 𑒏𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒹 𑒠𑒳𑒮𑒰।

𑓒

𑒢𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒰!

𑒑𑒻𑒨𑒰 𑒖𑒑𑒞𑒏 𑒧𑒻𑒨𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒰

𑒏𑒙𑒨 𑒏𑒮𑒻𑒨𑒰 𑒯𑒰𑒟

𑒯𑒰𑒏𑒱𑒧 𑒦𑒹𑒪 𑒢𑒱𑒩𑒠𑒻𑒨𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒰

𑒏𑒰𑒑𑒨 𑒪𑒑𑒰𑒨𑒫 𑒧𑒰𑒟

𑒫𑒢𑒮𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒮𑒢𑒮𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒰

𑒁𑒢𑒮𑒰 𑒏𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒯

𑒢𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒳𑒢𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒰

𑒖𑒢 𑒡𑒢 𑒖𑒱𑒫𑒢 𑒮𑓀𑒠𑒯

𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒥𑓄 𑒥𑓄 𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒰

𑒁𑒢𑓂𑒢𑒫𑒏 𑒠𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒰𑒪

𑒏𑒹 𑒮𑒯 𑒏𑒰𑒢 𑒏𑒢𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧𑒰

𑒮𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒫𑒱𑒢𑒢𑒰 𑒙𑒰𑒪

𑓓

𑒁𑒮𑓂𑒩 𑒬𑒮𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒏 𑒂𑒫 𑒧𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒱।

भाग्य भाग्यकेँ पढैत नित्य नित्य गानि॥

ओक्त लोक रक्त याव साधु केँ उजानि।

दैव जे ललाट लेख के सकैत टानि?

चाही नहि धन, ललितनाम, पकवान जिलेबी,

मनोविनोदक हेतु भ्रमनयति सदन न टवी।

ग्यी अन्दन अभिलाष हमन कनूधामयि देवी

भकि भाव सँ सभ अहिंक पदपंकज सेवी॥

अन्न महग, तगमग अछि भानग, हयग कोना निस्फाना

उप्हन पश्चिम भूमि अगम्या पर्वत असह गुमाना।

धर्म-विनाशी सहसह कनग्यछ, कुमग कथा निस्फाना

करथु कृपा जगजननी देवी महिसीवाली माना॥

मिथिला की छलि की भय गेलि,

याज्ञवल्क्य मुनि, जनक नृपगिवन

स्नान भकि सौं गेलि।

वाचस्पति मिश्रादि जगज्ञन्

निर्जित बौद्ध समलि

स शानदा स्वर्ग जनि गेली

वढल कुनिश्चा कलि।

नर्णाश्रम निधि ककनह् नृवि नहि

श्रुति श्रद्धाकँ (0लि

यूजा या0 श्चान नकमृद्धा

सरुटा नंचन खलि।

कह कनिवद्ध कवहनी रनिदिन

वहूग राग कन ऊलि,

कलह कनाय धर्म धन ना(श

कलिक दनिद्रा वलि।

४

मय कहन रुल घान ह भिन।

(गाधन नियति, धनम अननति दखि कग हिय कनव क(0ान॥

साधु समाज नाजसँ यीति अति हनषित-चित वान।

अकुलिन लाकँ धनधि यनियुनिग कुलिन समादन (थाउ॥

धनम सुनीति य्रीति ककनह् नहि, खलहिक वलञ्ज्ह जान।

कन्द-मुल-हल सद्दा अव दुनलह अन्न (गल दशक ऊान॥

किछ गुरु साधन वनि नहि यउञ्ज्ह थाकल मन, मति रान।

कह कवि चन्द्र हमन दुख मटत हायत कृया शिव गान॥

ग।

सुमन् सुमन् मन! शंकर समय रयंकर जानि।

ककन हृदय नहि कलुषित शासन कलि नृप यानि॥

कवल शिव कनूधाकन सवयित नहि जन हानि॥

रकि कल्यलगि जानह यनम यनशमनि खानि॥

कगहु विषयम न लागह त्यागह अनुचित मानि।

सुखसौँ अन्त विलसवह 'चन्द्र' चुउ नजवानि॥

ANNEXURE 2

१

हनुमीलालक अकाली कविताअकाली कवित /

हनुमीलालक हसली वर्ख १२८१ .ऽश्री १४-१८१३)सनसालक (अकाली कविता

[ग्रियर्सन [(मैथिली क्रस्टामैथी ७ग्रु वाकावूलनी)

साल ७कासिक वर्शन सनुवैदिस य७ल अकाल / रल वनिसात खिन्न ७ सालककहाँ लगि ननौँ हाल /

नाहिम्हि आदि थीक वनिसाणक /जहिँ एला गहिँ गेला
म्रिगिसिना मन पूनल मनानथर्दे मीसा किछु गेला /
अनदता आतम्बन रानीगनजा हेँ वह्नु डान /
पूख नूख नाखल धनगी कनरल वनखा कन डान /
पूनर्वसु थिक वता पूनीणाडाह्न वता कसनस /
विआ विआनक ज किछु डयटलधनि वनिसल असनस /
मघा रल मंगाहिआ कल्लनजगरनि क नै जान /
पूनवा पून यछ नै नाखलककना कनव वखान /
उप्दना आऽ्ऽ जाय घन वैसलसयौं लै नै वून /
हथिआ शृंग मूँत दे मूनलणिकौं लागल घून /
विणना विण मिण नै नाखलडाह्न रल ताकु धागी /
नाक नंगोलहि सरे नछ्पनदाम नूकोलहि खागी /
जाणिष यढिसाधि र्हुगोल-साधि /यढि ज जन जेलाह-
नखागिम्नि वीजसँ डाआकिरनगनि कौं कद्दी वाल /
श्रीनाम कृयागणि डाह्न न जानथिजाहि कृया सर काज /
यानिक प्रश्न कवौं जौं पूछिजैहिसह्न करैण हाऽ्ऽहि लाज /
जहिखन नदी नाल नै रनलणहिखन नैदी सनगी /
विना जल जग किछु नै डयजलदगध रल छथि धनगी /
ग नन नैदीक आगम वूमलज छल कृषि किसान /
दैन वयछ यछ नै नाखलजात कटैलक धान /
कादा मतआ एका न डयजलनै डयजल किछु साम /
गह्नडी गह्नुनि खाहि सूखाएलरल निधाण वाम /
मगिजुनम क कन नछाकहौं जाऽ्ऽ कँ रागि /

सुखल यगाल हाल नै डागहुँसगनहुँ लागल आगि /
धृक जीवन डाङ्ङ नृयगि ङ्ङुङ्कँज नाकल गहि यानि /
जीवाजन्-गु निकल यूहमीमगाकँ हा नै आनि /
नवीन खठी डौ चीन /नाय ७का नै उयजल-
घनरल अव वीन दुनदिन /नानी-घन साव कनै नन-
धनिक लाक सर मनहि मगन छथिनाखथि वहूा ठनि /
हसाथि नूयेया घन कै नाखथिमहगी रल अव सन /
कडा कुनथी खग मास् वसाहलजाहि कौठि छल अयना /
कगक जना हनिवासन ०ानलरग वहूग कै सयना /
कगक जना मिलि जनन वसाहलनिनधन वैसल गकङ्ङ /
रल धनकिनि दुङ्ङ हसिल जगनाहठि आडान मकङ्ङ /
काल य७ल गिनहूगिम रानीगँ ङ्गी वहि (गल हाना /
घनहाँकि मकङ्ङ कन लाना /नानी-घन मगन कनै नन-
मालिक डौन महाजन सरकँघन ठनी अन्न-घन /
लाक वृसाडान डाहा नकै छथिमुँह / गनीवक सन
समै दखि वनिआँ सर सनकलठनँ ल(गौलक टट्टी /
सुन्न दाकान सहनम यनि (गलसून्न रल सर वट्टी /
सुखल गाग वाग रौ लटयटकगक वाग अव सहना /
नन नानी सर सान गआगलविकनी रल अव गहना /
मँगटीका खुटी डौ ग७कीनकमूल्नी नै नाक /
कटसनि विछिआ डौ मिममिमिआँवाङ्गवहू डौ वाक /
वछुहान, हैकल डौ सिक७ीडौन घमौनिक दाना /
सुगि, ननग्रह डौ यवखँ७ीलगुनी रल निदाना /

गायन दर्वजाग नै ववलकनम स्ल निखड़ /
गमघेल, अढेआ ऊै यिकदानीनै गसला ऊै गटू /
वाटी, वड्डा ऊै यनवड्डारराजन कनैक थानी /
माधव सीहि सहिग सावननानै ववल घन माउी /
धन संयगि घन किछ नै ववल/ सरटा यउि (गल वंधक
गैडा टुख छुटल नै ककनाउस्न यट स्ल खंधक /
दैव अंश अवगनल कम्यनीजा यन नाम सहाउ /
मिथिलायून वूउन जव लागयस सूनि यहुँवल धाउ /
खनिद अनाज जहाजहिँ वामलस्नगी कनि कनि वाना /
सदन गिलंगा डाआ यन स्नगीडौन डालाछूगि (गाना /
हाजीयूनम लाख हजानमकै लाखन हछू यटना /
वाजिगयून सूलगानयून (गालानै जानग हौँ कगना /
गाउी, वैल, छकउ, ऊँट विहानउवहग हछू सट दाना /
मिसन कहेआ कँ याखनन मयहिलुक अउी (Oकाना /
श्री लक्ष्मीश्वन सिंह नृयगिमहानाज मिथिलश /
अवल नाज दउिरंगाश्रीयगि हनहिं कलश /
गाउी वैल लाखन हजाननगाकँ यन घउन /
यहिलुक (गाला मधूवन, रौउाजहना डौन अउन /
वनीयद्दी, ऊै यवमहलाकूहनैल ऊै कमगैल /
हनिहनयून, यिउानूछ वननौकानज कगकाँ वनिडौल /
वानि याखनि, विनसायन वननौय(छौल का नै जान /
ननहद, सनिसा ऊा स्टयूना, गा साँ दऊिध उजान
संसानयून, महनैल, कह्नेलीम(धयून हछू खास /

वनीयून, कमान, नमेहिडावननौं फूलयनास /
समना हर्फ़ जगजानिग जगममहथा डीन वष्ठीन /
दूहवी डौ महिनाथयूनडीन डीनगन गक हर्फ़ डीन /
वलदवयून डौ ढंगा वननौंमिनजायून लघू हाट /
सीवीयटी डौ कयसीआसदन (गाला सीना0 /
गुनवाकँ यनवनसी हाकिमकन गिनहूगम आक /
नै गा मनग कग नन नानीवाल वव सूखा क /
कग मूनदा गनदा मै मिलगअसंख जीन चल जागा /
सन समधी कँ संगा न लक्ष्मनने ववग जलदागा /
सरकँ सर उयष्ठै रै (गलडौ स3क धून याखन /
नहि (गल ब्राह्मध सागी यष्ठिगकायथ यष्ठिमा 0क्कून हनक /
कडा डानसिअन नाम लिखाडालकडा माहनिन रँट /
धर्मकार्यम लूटथि नूयेआगँ रल सर कन रँट /
कडा जमानग डेकँ ववलाहजिनका अमला नही /
ककना मानि कँग यिथि0 गाउह्लिडगमेह्लि जन्मक (0ही /
ककनहूँ गानग गाग सूखाडालवहूगा हाअय चलाना /
मागुयिगा घन यनिजन नानयवावू (गलाह जहलखाना /
ककनहूँ घन रल खानागलासीरट माहनिन घाँठ /
कडा अदालगिम तिजिआहू छथिककनहूँ डयमेह्लि माँठ /
जगना सूनि हाकिम निसिआडालगँ लागल जन 0ीका /
नाक नंगोलह्लि सरै माहनिनलागल चूनक टीका /
जाग, विकीआ,लौकिक वंशकाकिनिआमंग सकूल /
गाछी, वाँस, वेल डौ महिसिजगह केल रकरूल /

नाहि नूपेआ सौँ कना गजनले कानट सौँ नीन /
गँ कानन वहुना घन मगउारा‰ रगीजा रीन /
आ৩ लाट वहादुन ऊै /दिउरंगा धाम
वावू ऊै ववूआन सहिना मिलिकीङ्ग कूमेटी खान /

......

......

......

৩ह सरु संग वौ0 कौजाय कूमेटी रुल /
अजव कान सनकान कानिनहुना यहुँवल नल /
वाजिपूनसँ स3क निकालैआय सौिरु सीउ /
हरुया गंउक यूल वह्रा৩आ৩ वौनही वौनी /
धर्मीवीन, वलवीन, कम्यनी जाना रु‰ /जगदीशन
लछमी सागन क यारवनिमाहि कीङ्ग ‰सटीसन /
वउ लाट कलकन्फ्नालश्रीदुर्गा हा৩ संग /
आगना क छाटा लाल वहादुनवौ(0 सरु ৩कनंग /
ङट कमिश्नन ऊैन कलङ्गनवालहिं वाग नअंट /
৩ह यावा ‰जलास यन वौ(0संग जाग ऊेह ऊंट /
खवनि ग৩ अखवान मौँमैथिल क ৩ह हाल /
सुनहु रिुनंगी अनध्र दैकँमटहु दुख क जाल /
हुकूम दीङ्ग दाउ लाट कासूनहु रुमान वौन /
मदाि कनहु नआआनकाक्षा वौ(0 ही वौन /
वउ लाट दाउ वीन 30।৩साख्व ऊै जनलैल /
मजन मजिस्नन ऊैन कलङ्गनसंगजाग काननैल /

दस दससौं अन्न मंगाउलदीह सरनि क दाम /
महामुँग, गहूम ओ बाउनवजउ औन बदाम /
उली, यटना ओ रुटसानदीली ओ अजमन /
आगना औन काहृयुन ढाकाजहाँ अन्न क ठन /
रुअ नमाना अन्न गिनहुगिमऔन वेल लादि गाउी /
गज, गुनंग, गदहा ओ ठकउसंग सियाही ठेल /
ठग्री ओ येOान मागल सरवाँकावीन नजयुग /
सारा वननि नजाग हुुुऔस हनूमन्द दुग /
आगे सरहन उा मैनायलटन वीन जमान /
वनठी ओ गनूआनि गहैकन गहै गीन कमान /
चढि गुनंग यन कनै कनाुुगजमादान हाअ संग /
सारा वननि न जाग हुुुनंग दखि गखनूक /
कनग काम सर धाममटूट अट सर लूट /
ढाहि रीउ गाठी सहिगवाह्र सउक ओ यूल /
जिल यटन ओ रुटसानप्रगन्ना महिसीन /
गहाँ वसहिँ अक सज्ञानगहि घन जा लक्ष्मी दीउ /
श्री ह्नानिका प्रशादिगधर्मधीन वृद्धिमान /
गहसीलदान कानट क खासाजानहिं सकल जहान /
वाव् ुुसनी प्रसाद दियोटीसा मधुवनम आअ /
हुकुम दीह सूयननउंटकँटाल टाल हाअ जाअ /
मन यँवा मनगन रै लिअवहुग लिअ खैनाग /
धन्य धन्य अंगनज वहादुनसरकँ ज्ञटल गाग /
गनिव, गनी, गुनवा, कनू ओ, औवाह्मण दग असीस /

श्री रघुनाथ बड़ बड़साहीगढ़ी लाख बतीस / फगुन लाल कहि बरनत हँक हाल एह रीती / गोरमिंट गोरतल बहादुरशिरहुति नाखहिँ बहाल /

२

राधाकृष्ण चौधरी (मिथिलाक इतिहास) (बिहार ग्रन्थ उपलब्ध)

"१७७० क अकाल मिथिलाक इतिहासमे अद्वितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकेँ एक तिहाइ कम्म भऽ गेल छल। १८७३मे पुनः १४-१५मे फगुनी एकटा भयंकर अकाल मिथिलामे पड़ल छल जकर विवरण फगुनी लाल कविक अकाली कवित्तसँ भेटइए, अकाली कवित्त अप्रकाशित अछि। अकालकेँ दूर करबाक हेतु आ मनुष्यकेँ राहत देबाक हेतु सरकारी काल रिलीफक योजना चलाओल गेल जकर सम्बन्धमे फगुनीलाल लिखैत छथि-

'कम्पनी अजान जान कलनका बनाय माना। पटना का छकाय मैदानमे धनाया है। छातर है अतरदान बड़ बीच धाय धाया। सरकार हटाजार कराजार खड़ा है। रानकी अयानकान खबरि दर नाल नाना। चल गया टिकसदान रेल की उतारी है। कतर है अनान पोरन पीछ करा लगर छाना। जान की धमाक से मशीन की बड़ारी है। कम्युसन यहूदान काथी सब अजबदाना।

काह्ला रुन कनल कान धूआँस उठाया है। वाजा ओक वजन लाग हाथी अस। यिकन लाग जैसा जा वढनदान वैसाधन याया है। गंगाकँ रनल धान उगनि गया हून यान गाठीकी। अजवकान कनिफ यह वनाया है।'"

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

८.विदेह मिथिलाक खोज

विदेह मिथिलाक खोज

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

*प्रस्तुत अछि विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति आ तिरहुतक नामसँ विख्यात वर्तमान राज्य आ नेपालमे पसरल माटिक प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्रांकित अभिलेख आ मूर्तिकलाक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रह editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्कियोलोजिकल सर्वाधिकार नवनालन्दा, सम्बन्धित छायाकारक आ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि। छाया सभ पठेबा लेल धन्यवाद पाठकगणकेँ। साभार। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू **दर्शनीय मिथिला, Brochure 1, Brochure 2, Brochure 3, Brochure 4, Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक), IGNCA ASI (Cultural Heritage of Mithila**-search keyword Mithila), **Temple Survey Project ASI-English** आ **Hindi**. पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल।*







गुवनश्वनी रुगवनीयून (Madhubani , Bihar) वौद्ध गाना सँ समानना नाकम कुण्डल दखु	सूर्य रुगवनीयून (Madhubani Bihar)	विष्नू रुगवनीयून (Madhubani , Bihar)
 दुर्गा, यारवनिसँ रुटल, उगाहि वरुनी मङ्घिन (वजानसँ दजिभ)म स्थापित	 रुनङ्घान मङ्घिन घनश्यामयून (दनरंगा)- चानि रुs गेल	 गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी
 गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी	 गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी	 गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी
 गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी	 गोनीशंकन, जमथनि, हँठी वाली, मधुवनी	 वाङ्सी- वसेटी, अनानिया मिथिलाउन गाम्र लख



वाॢॢसी- वसैटी, अननिया मिथिलाऊन गाम्रल ख



वाॢॢसी- वसैटी, अननिया मिथिलाऊन गाम्र लख



वाॢॢसी- वसैटी, अननिया मिथिलाऊन गाम्र लख



धनरुना, वनमनखी, यूर्थियाँ, ननसिंरु अवगान



धनरुना, वनमनखी, यूर्थियाँ, ननसिं रु अवगान



यूनधदवी, यूर्थियाँ



विदश्वन स्थान अरिलख, मध्ववनी



अनध्राOाढी अरिलख, मध्ववनी



वृद्ध अष्टधातु, सिसव वसंगयून, वग रुा



12 शताद्दी, काॢॢलख, मध्ववनी



अग्नि विदश्वन स्थान, मध्ववनी वृद्ध, मुं (गन



अरिल्या स्थान



अन्धराठाढी, मधुबनी



अशोक स्तंभ, वसाढ, वैशाली



बुद्ध



अवलोकितेश्वर तारा, भागलपुर



वसाढ, वैशाली



बुद्ध भूमिस्पर्श



बुद्ध, ताम्र



बुद्ध मस्तक, सुल्तानगंज



वैशाली मूर्ति



चामुण्डा नाग-नागिनी, मुंगेर



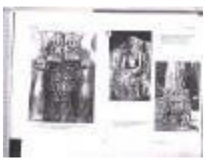
मुकुटधारी बुद्ध, अंतीचक, भागलपुर



नाचैत गणेश, 10म शताब्दी, दरभंगा



दरभंगा म्यूजियम

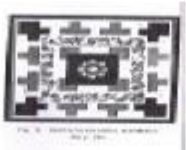
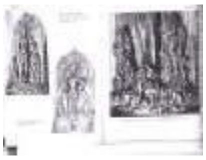
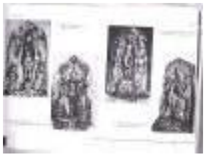
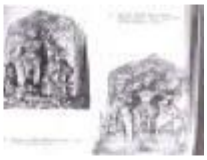


दरभंगा म्यूजियम



दुर्गा, कार्त्तिकेय

 10म शताब्दी, शीट एगलानयून, अनुश्चा 0ठी	 गणेश वृद्ध	 गौतम वृद्ध, वैशाली
 हनिरुन वृद्ध	 विउर्कं खुआवेग महिला, नाजमहल	 लौनिया नह्नगढ, अशोक स्तंभ
 लामश सुदामा गुहा	 मूंगेन	 नागनाज तीर्थंकन
 कुमानिल एटट स्कलाद, नालन्दा	 विक्रमशिला विश्वविद्यालय, सागलपुन	 0ाढ वृद्ध
		

यार्वनी	नामायध	नामयूनना वृषर
		
नामयूनना	वृद्धक अवशेष	संकिसा
		
सप्तमातृका	सर्वा रुद्र मण्डल	सूर्य
		
सूर्य	सूर्यक संगी	सूर्य, मधुवनी आ राजलयून
		
मूर्त्ति	मूर्त्ति	मूर्त्ति, वैशाली
		

उमा माहेश्वर, कल्याणेश्वर



विष्णु बुद्ध

वैशाली बुद्ध शीर्ष



पाँखियुक्त महिला

वैशाली, शालभंजिका भागलपुर



अहिल्या



उग्रतारा मन्दिर, सहरसा



वनगंगा



दरभंगा



दरभंगा नगर, 1934



दरभंगा मेडिकल कॉलेज



दुल्हदुल्हिन मन्दिर, जनकपुर



गण्डीश्वर



गंगासागर पोखरि, मधुबनी



हनुमान मन्दिर, मधुबनी







हनिरुनस्थान	मधुवनी हॉस्पीटल	जनकपुन जानकी मन्दिन
 जानकी मन्दिन	 जानकी मन्दिन, सीतामढी	 जानकी मन्दिन, सीतामढी
 जिला स्वास्थ्य कार्यालय नाजविनाज, नयाल	 कलनेश्वन वावा	 कपिलेश्वन
 कायलखाकार्यालय, नाजविनाज, नयाल	 मिथिला विश्वविद्यालय, दनरंगा	 लक्ष्मीश्वन यैलस, 1934
 माध्यमिकविद्यालय , जनकपुन	 मरुद्ध चौक, जनकपुन	 जनकपुन मंडप



मिथिला, 1988 स्कन्ध



यगलावावा धर्मशाला, जनकपुर, न याल



यंतील अहल्या



मधुवनी वस स्टैंड



नाज स्ट रिस, 1934



नाज हॉस्पीटल, दनरंगा, 1934



सीना0 सरा



शिव मन्दिर, 1934



शिवशंकन सिनमा, मधुवनी



श्यामा मन्दिर



विद्यापति मूर्त्ति, विस्फी



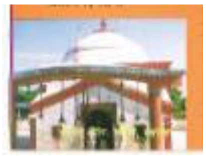
उग्रनाना, गानास्थान, मदिषी, सहनसा







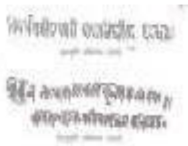
विद्यापति स्मारक, बिस्फी	बिस्फी, उगना महादेव	बिस्फी, विश्वेश्वरी भगवती
		
अहल्या मन्दिर, अहियारी	अशोक स्तंभ, वैशाली	स्तूप अशोक स्तंभ, वैशाली
		
बलिराजगढ़ किला पूर्वी गेट	बलिराजगढ़ किला मीनार	चण्डी स्थान, बिराटपुर, सहरसा
		
गाँधी यादगार, ढाका, मोतिहारी	गाँधी विद्यालय, ढाका, मोतिहारी	गिरिजा स्थान, मधुबनी
		
हरिहर मन्दिर, सोनपुर	जैन मन्दिर, भागलपुर	जैन मन्दिर, वैशाली
		

कमलादित्य स्थान	कपिलेश्वर शिव मन्दिर	लौरिया नन्दनगढ
		
मदनेश्वर शिव मन्दिर	मन्दार पर्वत, बाँका	मणिहारी सत्याग्रह स्मारक
		
यनमश्वनी मन्दिर, ठाढी, मधुवनी	रामजानकी मन्दिर, सीतामढी	सत्याग्रह स्मारक, सीतामढी
		
शान्ति स्तूप, वैशाली	उच्चै० भगवती	उच्चै० मन्दिर
		
सिंहेश्वर स्थान, मधेपुरा	सूर्यधाम, पनसा	उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा
		

वैशाली स्तूप	विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर	विराटपुर मन्दिर, मधेपुरा
 वृषभ शीर्ष, रामपुरवा	 सिंह शीर्ष, रामपुरवा	 शरभ, नेपाल
 यक्षिणी देवी, वैशाली	 बाबा वटेश्वर, देवना, वनगाँव	 वट वृक्ष, वनगाँव
 भगवान विष्णु, देवना, वनगाँव	 शास्त्रार्थ स्थल,तारास्थान महिषी	 शास्त्रार्थ स्थल,तारास्थान महिषी
 तारास्थान महिषी	 माता तारा, तारास्थान महिषी	 उग्रतारा (खादन वाली तारा) मूर्ति, महिषी

 वशिष्ठ मुनि, जन्मस्थान महिषी	 आनन्दिन काली उग्र0	 बौद्धक जाल वाली समस्तीपुर
 भगवती वकुली	 भगवती गिरिजा स्थान	 भगवती मूर्ति मधुबनी
 भगवती वाली समस्तीपुर	 पुनश्चनी कार्थ	 देवीकाली कार्थ
 गंगामूर्ति नगरौर दरभंगा	 गोसाउनि मन्दिर कार्थ	 हेरुक देवी हावीडीह
 काली उग्र0	 महिषासुरमर्दिनी वहनी दरभंगा	 महिषासुरमर्दिनी हावीडीह

 महिषासुनमर्दिनी नारुन-रुगनवीयून	 उमा म्लेच्छमर्दिनी मिर्जायून दनरुंगा	 यमुना रुँनन वलिया मधुवनी
 रुँनन, रुँनन-वलिया	 नटनाज, गानालाही	 शिव- यार्वती मन्दिन, कयिलश्वनस्थान
 शिव- यार्वती मन्दिन, कयिलश्वनस्थान	 शिव मन्दिन, सिंगिया, विस्थी	 उमामाहेश्वन, महादनम0
 उमामाहेश्वन, गिनह्न	 विष्णु, रुवानीयून	 विष्णु, रुी0 रुगवानयून
		

विष्णु, जयनगर	विष्णु, लदहा	विष्णु, साहा- यनी, हावीडीह
		
शेषशायी विष्णु, सवास, मुजफ्फरपुर	वराह मूर्ति, तीलकण्ठस्थान	मिथिलाक्षर अभिलेख, विष्णु बुद्ध मूर्ति
		
भगवती उग्रतारा, वनीपट्टी	भगवती वागेश्वरी, रंतीपुर	चामुण्डा मन्दिर, कटरा, मुजफ्फरपुर
		
अष्टभुज गणेश, हावीडीह	अष्टभुज गणेश, कार्थ	गंगा, आन्ध्रा-ठाढ़ी
		
महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा	महिषमर्दिनी मन्दिर, मिर्जापुर, दरभंगा	नटराज



नाममन्दिन, अन्दिल्यास्थान



सन्नी, वैशाली, विष्नु गिलक-यज्ञायवीगधानी



नूयनगन शिव मन्दिन



सूर्य, दक्नुली



सूर्य मूर्ति, तिलान्ही



सूर्य मूर्ति, विष्नु, वनूआन



उमामान्दश्वन



यमूना, आन्ध्रा-ठाढी



सिमनौनागढ मूर्ति



आदि काली, चैनपून सन्नसा

चैनपून सन्नसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिन, संगम आदिकालीन रुद्य काली-
मन्दिन सन्ना एहि गामम अछि। मन्ना शिवनात्रि आ कालीपूजा वएह धूमधाम सँ चैनपूनम हाछ्न अछि।



गाथागढक स्वामी माधानन्द कौलावार्य काली मन्दिन

गाथा गढ लग। पूनान गढ। एकन पूवम ब्रह्मपूनाक वावा हनिन्ननाथ मन्नादन मन्दिन आ दक्षिणम उग्रेठ रुगवती छथि।



गाथागढक दसमूखी काली

गाथा गढ लग। पूनान गढ। एकन पूवम ब्रह्मपूनाक वावा हनिन्ननाथ मन्नादन मन्दिन आ दक्षिणम उग्रेठ रुगवती छथि।



काऽ्लख (मध्रुवनी) दवीक मह्दिन



ऽक्रौन, वनीयह्दी, रुगवनी दूर्गा, रगवनीयी0



ऽक्रौन, वनीयह्दी, रुगवनी दूर्गा, रगवनीयी0



१.ऽष्टगुज ग(ध्श, कार्थ २.शिव मह्दिन, सिंघिया, विष्टी



१. वौद्व दवी गाना, वानी, समस्तीयून २.उग्रगाना मह्दिन, मह्दिषी, सरुनसा



१.रुगवनी, वानी २.रुगवनी, दक्ली



१. रुगवनी गिनिजा, रूलरुन २.काली, उद्वैO



१. रैनव, रैनव वलिया २. उमामारुश्वन, मराद्वमO



१. दवीकाली, कार्थ २. गुसाउनि स्थल मह्दिन, कार्थ



१. ग(ध्श, लह्दनियासनाय २.उमामारुश्वन ३. नटनाज, ४. विष्णु, गिलक, जनउ धानी, सहान, वैशाली



१. गंगा मूर्ति, नगनठीर, दनरंगा २. रुगवनी मृध्मूर्ति, गब्रवानि



१. रैरुड दवी, रावीठीर २.गुवनश्वनी, कार्थ

 १. कथित काली, उच्चै0, २.अष्टभुज ग णेश, कार्थ	 १. महिषासुर मर्दिनी, हावीडीह, २.उमा, महिषमर्दिनी, मिर्जापुर, दन रंगा	 १.महिषासुरमर्दिनी, रागवीपुर, नाहर, महिषासुर मर्दिनी, वरुनी, दनरंगा
 १. महिषमर्दिनी रागवी, मिर्जापुर, दन रंगा २. नाम मन्दिर, अहिल्यास्थान	 १. महिषमर्दिनी रागवी, मिर्जापुर, द नरंगा २.सिंहश्वर स्थान, मधेपुरा	 १. नटनाज, गानालाही २. उमामा हेश्वर
 १_मेषसायी, सनास, मुजफ्फरपुर, २ _नटनाज_गानालाही ३_ रागवी ४ _ उमा माहेश्वरी	 १- शिव पार्वती मन्दिर, कपिलश्वर स्थान २. सूर्य मूर्ति तिलाही	 १_ सूर्यमूर्ति, विष्णु वनुआन २. गं गा, आनन्द्रा 0ढ़ी
 १_उच्चै0 रागवी, वनीपट्टी २_महिषा सुरमर्दिनी, दुर्गा ३_ चामुण्डा मन्दिर, कटना, मुजफ्फरपुर ४._रागवी वान श्वरी, रुक्मिनिसम	 १. वनाहमूर्ति, गिलकश्वनस्थान, २. विष्णु, रत्नानीपुर	 १. विष्णु, जयनगन २.विष्णु, री0 रागवानपुर



१_विष्णु, लदहा, २.सूर्य, दकुली



१_विष्णु_साहा यनठी, स्थापित- हारीठीह २.बुद्ध- विष्णु मूर्ति अभिलेख



१_विष्णु, सहान, २_वनाह ३_गणेश ४.शिव मन्दिर_नुयनगन



१_यमुना, आन्ध्रा ठाढी, २.अष्टभुज गणेश, हावीडीह



१_यमुना, रैनव वलिया, २_शेष सायी, सवास, मुजफ्फरपुर, ३_नट नाज_गानालाही ४_ रुगवी ७_ उमा माहेश्वरी



कथित, काली, उच्चैठ, बनीपट्टी



मूर्ति (मिथिला उग्र)



सम्भवतः सूर्य



बधुरगोयाल, मिथिला



विष्णु, जाल, दनरंगा।



विष्णु



विष्णु, उमौल, दनरंगा।

मिथिलाक खोज

ई आलेख हमर दशकसँ ऊपरक मिथिलाक यात्राक अध्ययनक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ ऐमे ओ सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि। कखनो कालेँ भाड़ाक गाड़ीक ड्राइवर लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेला। -गजेन्द्र ठाकुर

"मिथिलापदपश्च मध्यं निवसा इति मिथिला नगरी" - मिथिला जाऽ शब्दकेँ मथल जाइत अछि- पाणिनीक विवरण।

किला आ गढ़

बलिराजपुर किला- मधुबनी जिलाक बाबूबरही प्रखण्डसँ ७ किलोमीटर पूब बलिराजपुर गाम अछि। एकर दक्षिण दिशामे एकटा पुरान किलाक अवशेष अछि। किला चारि किलोमीटर लमगर आ एक किलोमीटर चाकर अछि। दस फीटक मोट देबालसँ ई घेरल अछि।

असुरगढ़ किला- मिथिलाक दोसर किला मधुबनी जिलाक पूब आ उत्तर सीमा पर तिलयुगा धारक कातमे महादेव मठ लग ७० एकड़मे पसरल अछि।

जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्तमान जयनगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

नरहनगढ़- बेतियासँ १२ मील पश्चिम-उत्तरमे ई किला अछि। तीन पंक्तिमे १७ टा ऊँच डीह अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

रकुलीगढ़- शिवहर जिलासँ तीन किलोमीटर पूब हाइवे कात कातमे टूटा किलाक अवशेष अछि। चारू दिस खधाइ अछि।

कटरागढ़- मुजफ्फरपुरमे कटरा गाममे विशाल गढ़ अछि, रकुली गढ़ जकाँ चारू कात खधाइ खुनल अछि।

नौलागढ़-बगुसरायसँ २५ किलोमीटर उत्तर ३५० एकड़मे पसरल पुरान गढ़ अछि।

जयमंगलगढ़- बगुसरायमे बनियापुर थानामे काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच टील्हा अछि। एतऽ पुरान गढ़ अछि। नाउँकोठी (मझौल) गाम लग पुरान गढ़ अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग रजौर गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो कएलन्हि।

अलौलीगढ़- खगड़ियासँ १५ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल पुरान गढ़ अछि।

कीचकगढ़- पूर्णिया जिलामे डंगराघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे पुरान गढ़ अछि।

बनूगढ़- टढ़गाछ थानामे कनल थानक कातमे पुरान गढ़ अछि।

बरिजनगढ़- बहादुरगंजसँ छह किलोमीटर दक्षिणमे लोनसबरी थानक कातमे ई गढ़ अछि।

चानकी- रामनगरक बिनौल प्रखण्डसँ १३ किलोमीटर पश्चिममे एकटा गढ़ अछि जे लोरिकक मानल जाइत अछि।

बुद्ध

कुण्डग्राम- हाजीपुरसँ बत्तीस किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे बसाढ़-वैशाली आ लगमे वासोकुण्ड लग गाम गढ़-टीलासँ २ कि.मी. उत्तर-पूर्व अछि कुण्डग्राम , जाहि जैनक २४म तीर्थंकर महावीरक जन्म भेल छलन्हि। एहि बुद्धक छाउर, अभिषेक पुष्करणी (राजा अभिषेकसँ पूर्व एहि नहाइत रहथि), अशोक स्तम्भ आ संसद-भवन (राजा विशालक गढ़) अछि।

पजवागढ़ बनही टोल- एहि एकटा बुद्ध मूर्त्ति भेटल छल, मुदा डाकू आब कतऽ पता नै अछि। ई स्थल सेहो नखवारी गामक लगे अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग बड़ाढ़ गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश एहि भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एहि निवास सेहो केलन्हि।

मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊँच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाउ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजवाक अवशेष एहि अछि।

अकौन- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उत्तरमे अकौन गाममे एकटा ऊँच टीह अछि, जतऽ बौद्धकालक मूर्त्ति अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

विक्रमशिला- भागलपुरमे स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय। भागलपुर जिलाक अंतीचक गाममे राजा धर्मपालक बनाओल बुद्ध विश्वविद्यालय अछि। १०८ व्याख्याता लेल रहबाक स्थान आ बाहरसँ पढ़य बला लेल सेहो स्थान एतऽ निर्मित अछि।

चम्पानगर- भागलपुरक पश्चिममे, आब नगरसँ सटि गेल अछि। ई जैन लोकनिक एकटा पवित्रस्थल अछि, एतऽ महावीर तीनटा वर्षावास केने रहथि। दू टा जैन मन्दिर एतऽ अछि, जे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथकेँ समर्पित अछि। महावीर विदेहमे छह टा वर्षावास बितेलन्हि। वर्खा ऋतुमे चारि मास एक ठाम निवासकेँ वर्षावास कहल जाइत छल। बुद्ध एकोटा वर्षावास विदेहमे नै बितेलन्हि, मुदा वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सन्देश देने छला। आम्रपालीसँ भिक्षा ग्रहण कऽ बुद्ध गेला बेलुग्रामी करय चारि मासक वर्षावास।

अभिलेख

गौरी-शंकर स्थान, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ उपर मिथिलाक्षरमे

लिखल पालवंशीय अभिलेख। विदेश्वरस्थानसँ २-३ किलोमीटर उत्तर दिशामे ई स्थान अछि।

भी०-भगवानपुर अभिलेख- राजा नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवसँ संबंधित अभिलेख एतऽ अछि। मधुबनी जिलाक मधेपुर थानामे ई स्थल अछि।

भगीरथपुर- पण्डौल लग भगीरथपुर गाममे अभिलेख अछि जइसँ ओइनवार वंशक अंतिम दुनू शासक रामभद्रदेव आ लक्ष्मीनाथक प्रशासनक विषयमे सूचना भेटैत अछि।

मंदार पर्वत- बांका स्थित स्थलमे मिथिलाक्षरक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे चौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दुटा मूर्ति अछि, एक मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सामाँ दुटा पदचिह्न अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एतहि भेल छलन्हि।

विदेश्वर- मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कएलन्हि। एहि युगक मिथिलाक्षरक अभिलेख सेहो एतऽ अछि।

बसैटी (बाइसी-बसैटी), अररिया अभिलेख - पूर्णियाँमे श्रीनगर लग मिथिलाक्षरक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इन्द्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। रानी इन्द्रावती (११८४-

१८०२) ई अकालक समय फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कर रहथि।

जयनगर किला- मिथिलाक एहन किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्तमान जयनगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

विष्णु

हुलासपट्टी- मधुबनी जिलाक फुलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुलासपट्टी गाम अछि। कारी पाथरक विष्णु भगवानक मूर्ति भेटल अछि।

पिपराही- लौकहा थानाक पिपराही गाममे विष्णुक मूर्तिक चारू हाथ भग्न भऽ गेल अछि।

मधुबन- पिपराहीसँ १० किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुबन गाममे चतुर्भुज विष्णुक मूर्ति अछि।

कमलादित्य स्थान- अंधरा ठाढ़ी लगमे कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल।

संसारपुर अनुमण्डलक रखवारी गाममे वृक्षक नीचाँ राखल विष्णु मूर्ति, गांधारशैली मे बनाओल गेल अछि।

मटिहानी- विष्णु मन्दिर

जनकपुर- वृहद् विष्णुपुराणक मिथिलामाहात्म्यमे जनकपुर उत्तक वर्णन अछि। सत्रहम शताब्दीमे संत सूर किशोरकेँ अयोध्यामे सरयू धारमे राम आ जानकीक दू टा स्वर्ण मूर्ति भेटलन्हि, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जनकपुरमे स्थापित कऽ देलन्हि। वर्त्तमान मन्दिरक स्थापना टीकमगढ़क महारानी द्वारा १९११ ई. मे भेल। नगरक चारुकात यमुनी, गेरुखा आ दुग्धवती धार अछि। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी),जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) आ विवाह पंचमी (अगहन शुक्ल पंचमी) पर एतऽ मेला लगैए।

अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय वाचस्पति संग्रहालय- गौड़ गामक पश्चिमीक स्वर्ण मूर्ति एतऽ राखल अछि।

गौतम तीर्थ- कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पश्चिम ब्रह्मपुर गाम लग एकटा गौतम कुण्ड पुष्करणी अछि।

मुंगेरक पूब 'सीता-कुण्ड'गर्म कुण्ड अछि, सीता जी एतै पृथ्वीमे समाहित भेल छली। ठंढा जलक कुण्ड 'रामकुण्ड', लक्ष्मण कुण्ड, भरत कुण्ड, आ शत्रुघ्न कुण्ड सेहो अछि, स्थानीयमे बड़ मिलान। से मिलान बाबू गढ़ नानिकलमे सेहो छै, बसी पढ़ल लिखल गाममे से आब कहाँ?

हलावर्त्त- जनकपुरसँ ३७ किलोमीटर दक्षिण पश्चिममे सीतामढ़ी नगरमे हलेश्वर शिव मन्दिर आ जानकी मन्दिर अछि। एतसँ ३८ किलोमीटर पर पुण्डरीक उत्तम सीताकुण्ड अछि। हलावर्त्तमे जनक द्वारा हर चलबा काल सीता भेटलि छली। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) पर एतऽ मेला लगैए।

फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पवाटिका छल जतऽ सीता फूल लोढ़ै छली।

धनुषा- जनकपुरसँ १७ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि। नामक पाड़ल ई धनुष अछि। ऐसँ पूब नागगंगा धार बहैत जे लक्ष्मण द्वारा नागसँ उत्पादित भेल छल।

सुग्गा- जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्राममे शुकदेवजीक आश्रम अछि। शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला ऐल छला- ऐ ठाम हुनका ठहरबाक व्यवस्था भेल छल।

सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ७ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि।

कपिलेश्वर- कपिल मुनि द्वारा स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिममे अछि।

कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूब, लहेरियासरायसँ ६० किलोमीटर दक्षिण-पूब आ सहरसासँ २७ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि। एतऽ चिड़ै-अभयारण्य सेहो अछि जतऽ उज्जर आ कारी गैबर, लालसर, दिघौंछ, मैल, नकटा, गैरी, गगन, सिल्ली, अधानी, हरिअल, चाहा, करन, नारवा चिड़ै सभ नवम्बरसँ मार्च धरि देखबामे अबैत।

सिमरदह- थलवारा स्टेशन लग शिवसिंह द्वारा बसाओल शिवसिंहपुर ग्राम लग ई शिवमन्दिर अछि।

सोमनाथ- मधुबनी जिलाक सौराठ ग्राममे सभागाछी लग सोमदेव महादेव छथि।

मदनेश्वर- मधुबनी जिलाक अंधरा ठाढ़ीसँ ४ किलोमीटर पूर्व मदनेश्वर शिव स्थान अछि।

बाणेश्वर- संसारपुरमे हरठी ग्राम लग बाणेश्वर ठाकुर द्वारा स्थापित बाणेश्वर शिवस्थान अछि।

शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि।

उग्रनाथ- मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर ग्राममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि। विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पियौलखिन्ह। विद्यापतिक हठ कएलापर ओ स्थान पर उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह।

उच्चैठ छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चैठमे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छला। भगवतीक मौलिक मूर्ति मस्तक विहीन अछि।

उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि।

भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख ग्राममे भद्रकालिका मंदिर अछि।

चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लक्ष्मणा वा लखनदेइक धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल। ओहि स्थानपर एकटा मन्दिर अछि।

पनसा सूर्य मन्दिर- समस्तीपुरमे सग्रामसँ पाँच किलोमीटर पूर्व पनसा गाममे साढ़े चारि फीटक एकटा सूर्य मूर्ति रहल अछि।

बैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगम आदिकालीन एकटा काली-मन्दिर सेहो एहि गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ बैनपुरमे होइत अछि।

धनहा, वनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह अवतारक स्थान अछि, एकटा खाह जकाँ पैघ पाया अछि जाहिमे जँ किछु फेकबै तँ बड़ी काल धरि गों-गोँ अवाज होइत रहत। एहि स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्ति आ मन्दिरक कानधसँ बस निकसित भऽ गेल अछि। एहि नरसिंह पाया हाटि अवतरित भेल छला।

बिसफी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिसफी गाम अछि। महाविनीश्वर पूर्व महाकवि विद्यापतिक जन्म-स्थान एहि गाम अछि।

मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ- १.गिरिजास्थान (फूलहर, मधुबनी), २.दुर्गास्थान (उचैठ, मधुबनी), ३.भगवती (दाखन, मधुबनी), ४.भुवनेश्वरीस्थान (भगवतीपुर, मधुबनी), ५. भद्रकालिका (कोइलख, मधुबनी), ६.चामुण्डा स्थान (पचाही, मधुबनी), ७.सोनामाइ (जनकपुर,

नयाल), ८.याग़निद्रा (जनकयून, नयाल), ९.कालिका स्थान (जनकयून स्थान), १०.नाजश्वनी दवी (जनकयून, नयाल), ११.छिनमस्ता दवी (उजान, मधूवनी), १२.वनदूर्गा (खननख, मधूवनी), १३.सि(धश्वनी दवी (सनिसव, मधूवनी), १४.दवी-स्थान (अंधना ०ाढी, मधूवनी), १५.कंकाली दवी (रानाा नयाल सीमा आ नामवाग़ ब्लस, दनरंगा), १६.उग्रनाना (महिषी, सहनसा), १७.कात्यानी दवी (वदलाघाट, सहनसा), १८.यूनन दवी(यूर्णियाँ), १९.काली स्थान (दनरंगा), २०.जैमंगलास्थान(मूंग़ेन), ५२. जनकयून यनिक्रमाक १५ स्थल आ उाकुक्ता मूख्य दवना १. हनूमाननगन- हनूमानजी, २.कल्या(धश्वन- शिवलिंग़, ३.गिनिजा-स्थान- शक्ति, ४.मटिहानी- निष्णू मन्दिन, ५.जालश्वन- शिवलिंग़, ६.मनाव्ऽी- माण्डव ऋृषि, ७. श्रून कूण्ड- ध्रून मन्दिन, ८.कंचन वन- काना मन्दिन नै माात्र मनानम दृश्य, ९.यर्वा- याँच टा यर्वा, १०.धनूषा- शिव धनूषक टूकडी, ११.सानाखडी- सफर्षिक साा टा कूण्ड, १२.हनूषाहा- विमलागंगा, १३. कनूझा- काना मन्दिन नै माात्र मनानम दृश्य, १४. विसौल- विश्वामित्र मन्दिन आ १५.जनकयून।

दनरंगा कैथोलिक वर्व- १८९१म स्थायित ऽी वर्व १८९१ कान एूकम्यम उाणिग्रस्त रऽ ग़ेल। ऽकना हाली नाजनी वर्व सहा कहल जाऽऽइ। संट फांसिस ▯सिसी वर्व मूजफ्फनयूनम अछि।

रिखा सलामी मजान- गंगासाग़न याखनि दनरंगाक महानयन ऽी मजान अछि। मकदूम वावाक मजान:ललित नानायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामश्वन सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दनरंगाक वीच स्थित ऽी मजान हिन्दू आ मूस्लिम मतावलम्बीक ऽकटा यावन स्थान

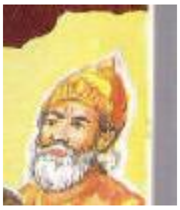
अछि। दरभंगा टावन मस्जिद इस्लाम मतावलम्बीक एकटा रम्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि।

६.विदेह मिथिला रत्न

विदेह मिथिला रत्न

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। प्रस्तुत अछि मिथिला रत्नक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रहकेँ editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आधिकारिक सर्वाधिकार रचनाकार, संग्रहकर्ता आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। हुनका सभक पठएबा लेल धन्यवाद पठाओल गेल। सारांश पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र ऐतिहासिक प्रयोग लेल। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू VIDEHA_346, VIDEHA_347, VIDEHA_366 आ **मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत।**



वैदिक जनक

'वैदेह राजा' ऋग्वेदिक कालक नमी साप्यक नामसँ छलाह, जहि कारण सदेह स्वर्ग गेलाह, ऋग्वेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग दलहि असुर नमूचीक विरुद्ध आ बादमे इन्द्र हुनका बचओलन्हि। शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एक छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरोहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग जयन्त आ मिथि -जिनका मिथिला नामसँ सहा



वाल्मीकि



सीतायणि राम

सान कएल जाइत छथि, **मिथिला** नगरक निर्माण कएलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भए सकल अछि, अनुमानित अछि जनकपुरक लग । �सीरध्वज जनक� सीताक पिता छथि आ एतयसँ मिथिलाक राजाक सूची परम्परा देखबामे अबैत अछि। �कृति जनक� सीरध्वजक बादक 18म पुरुष भेल छलाह। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह। याज्ञवल्क्य हिरण्याभक शिष्य छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भए गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)।



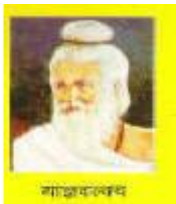
लव कुश



विदघ माथव

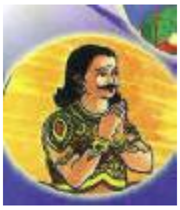
शतपथ ब्राह्मणक विदघ माथवक विदेह आगमन, आगिक सदानीरासँ आगाँ नहि बढ़बाक चर्चा।

शतपथ ब्राह्मणक विदघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एक छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ।



वाजसनयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक राजा कृति जनकक दरबारमे छलाह। हुनकर माताक वा पिताक नाम सम्भवतः वाजसनी छलन्हि। ओना हुनकर पिता देवरातकेँ मानल जाइत छन्हि। याज्ञवल्क्य १. शुक्ल यजुर्वेद, २. शतपथ ब्राह्मण, ३.बृहदारण्यक उपनिषद आ ४.याज्ञवल्क्य स्मृतिक द्रष्टा/लेखक छथि।



अंगराज कर्ण



वैशेषिक दर्शन कणाद

वैशेषिक दर्शन कणाद



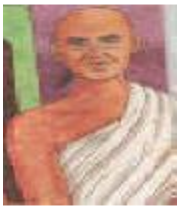
महावीर जैन 599-527

महावीर विदेहमे छह टा वर्षावास बितेलन्हि।



गौतम बुद्ध BC 563-483

जातकमे महावीर विदेहमे छह टा वर्षावास बितेलन्हि मुदा बुद्ध एकोटा नै मुदा मिथिलामे बौद्ध धर्मक प्रचार खूब भेल। बुद्ध वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सम्बोधन देने छलाह।



चाणक्य BC 350-283

धर्म आ विधिक जनक कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ याज्ञवल्क्य स्मृतिमे बड़ समानता अछि जे चाणक्यक मिथिलावासी हेबाक प्रमाण अछि।

अर्थशास्त्रम्(१.६ विनयाधिकारिक प्रथमाधिकरणे षष्ठोऽध्यायः इन्द्रियजय अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक यानक सेहो चर्चा अछि।

यद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यामभिमन्यमानः सबन्धुराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।



चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्यक शिष्य BC 340-293

चाणक्यक शिष्य



आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550

पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण- (२१)(३४/०८) महियपिय: मंगरौनी माण्डेन से पीताम्ब न सुत दामू दो माधव से नीती त्रिनयनभट्ट: ७ सुता *आर्यभट्ट:* ७ सुता उदयभट्ट: ७ सुता विजयभट्ट ७ सुता सुलोचनभट्ट (सुनयनभट्ट) ७ सुता भट्ट ७ सुता धर्मजटीमिश्र ७ सुता धानाजटी मिश्र ७ सुताब्रह्मजटी मिश्र ७ सुता त्रिपुनजटी मिश्र ७ सुत विघ्नजटी मिश्र ७ सुता अजयसिंह: ७ सुता विजयसिंह: ७ सुता ७ सुता आदित्यनाथ: ७ सुता महादेवनाथ: ७ सुता दुर्योधन सिंह: ७ सुता साउन जयसिंह्काचार्याभ्यास महाभ्य विद्या यानठगा महामहोपाध्याय प: ननसिंह:।।



सिद्ध सरहपाद 700-780

सरहपाद-�सिद्धिरस्तु मङ्गल पठम पढिअउ,मण्ड पिवन्तौ विसरउ अमङ्गुउ�। मिथिलाम अउनानस्म सिद्धिरस्तु जकर पूर्वम सिद्धिरस्तु, गणेशजीक अंकुश आँजी, लिखल जाइत अछि। मिथिलाम ई धारणा जे माँउ पिलासँ स्मरण शक्ति क्षीण होइत अछि; ई सरहपादक मिथिलावासी होएबाक प्रमाण अछि।

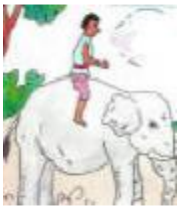


आदि शंकराचार्य 788-820 मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ



म.म.गोनू झा 1050-1150

करमहे सानकनियाम गोनू झाक वर्णन पञ्जीम अछि- महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनू। पञ्जीक अनुसार पीढ़ीक गणना कएलासँ गोनूक जन्म (गोनूक सानकनियाम करमहे-वसम २४म पीढ़ी चलि रहल अछि) *आर्यभट्टक बाद (आर्यभट्टक माण्डन-काश्यप ३९ म पीढ़ी चलि रहल अछि) आ विद्यापतिक पहिने (विद्यापतिक विसइवार विष्णु-काश्यप १४म पीढ़ी चलि रहल अछि)*लगभग १०५० ई.म सिद्ध होइत अछि। कारण



कृष्णानाम आ हाथी सुवनन

मिथिलाक यादव (गुआर) जातिक लोकदेवता कृष्णानाम अपन हाथी सुवननपर सवार।



वंशीधर ब्राह्मण

ओहि गणनेँ एक पीढ़ीकेँ ४० सँ गुणा कला सँ आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६ ई. आ विद्यापतिक जन्म लगभग १३५० ई. अबैत अछि जे इतिहाससम्मत अछि।



छेछन महराज

मिथिलाक डोम जातिक लोकदेवता



दीना- भदरी

मिथिलाक मुसहर जातिक लोकदेवता



ऋषि यँजियान



राजा सलहेस

मिथिलाक दुसाधवंशी (दुसाध) जातिक लोकदेवता



दुलरा दयाल

गोनू झाक गाम भरौराक राजकुमार, "बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल" लोककथाक मनोहर कथानायक। भरौराम एखनो हिनकर गहबर छन्हि।

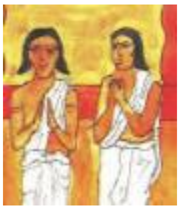


कालिदास



वाचि कायस्थ

विद्यापतिक पुरुष-परीक्षाम मृत्युकालमे गंगा नदीक आयब आ वाचि-कायस्थकेँ अपनाम समवाक खिसा वर्णित अछि जे बादमे विद्यापतिकेँ लऽ कऽ सेहो प्रचलित भेल।



राधाकृष्ण आ करताराम मल्लिक

मिथिलाक अमता घरानक ध्रुपदिक गवैया



महाराज नान्यदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक 1097 ई. मे स्थापना। 1147 ई. मे मृत्यु।



मल्लदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र। मिथिलाक गंधवरिया राजपूत मल्लदेवकेँ अपन बीजीपुरुष मानैत छथि।



महाराज हरिसिंहदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरिसिंहदेव नायक आछि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरिसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरिसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, ई नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकमे स्थापना करैत छथि- नन्देन्दु बिन्दु विधु शाक वर्ष (१०१९ शाक)... मिथिलाक पञ्जिकार लोकनि शाक १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे शाखा वृद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ताकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाक माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) *श्रोत्रिय*नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजाति मिथिलामे उत्पत्ति भेल।



मंत्री चण्डेश्वर

मिथिलाक कर्णाट वंशक राजा हरिसिंहदेवक मंत्री। *राजनीतिरत्नाकरमे* मिथिलाक सांवैधानिक इतिहासक वर्णन।



मीनां साह्व

मिथिलाक मूस्लिम लाकनिक वीच प्रसिद्ध लाकगाथाक नायक।



अमन वावा

मिथिलाक मलाह जातिक लाकदवता।



गनीवन वावा

मिथिलाक धावि जातिक लाकदवता।



लालवन वावा

मिथिलाक चर्मकान जातिक लाकदवता।



वंठा चमान



कानिख पजियान



लानिक



नाय नणपाल



अयाची मिश्र

यन्नहम शताब्दीक रघनाथ मिश्र वत यैघ नैयायिक छलाह आ कहिया ककनासँ काना नस्फक याचना नहि कएलहि, तहि लल सरह हुनका अयाची मिश्र कहए लगलहि।



शंकन मिश्र



यज्ञधन मिश्र



"वालाऽहं जगदानन्द न मे वाला सरस्वती। अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥" के वक्ता। पन्द्रहम शताब्दीमे रत्नाथ मिश्रक घरमे मधुवनी जिलाक सरिसव ग्राममे शंकर मिश्रक जन्म भेल। शंकर मिश्र महाराज भैरव सिंहक कनिष्ठ पुत्र राजा पुरुषोत्तमदेवक आश्रित छलाह। हिनकर वर्णन रसार्णव ग्रंथमे भेटैत अछि। शंकर मिश्र कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री आ न्याय-वैशेषिकक व्याख्याकार छलथि। शंकर मिश्र ग्रंथावली- १.गौरी दिगम्बर प्रहसन २.कृष्ण विनोद नाटक ३.मनोभवपराभव नाटक४.रसार्णव५.दुर्गा-टीका६.वादिविनोद७.वैशेषिक सूत्र पर उपस्कार८.कुसुमांजलि पर आमोद९.खण्डनखण्ड-खाद्य टीका १०.छन्दोगाह्निकोद्धार ११.श्राद्ध प्रदीप १२.प्रायश्चित प्रदीप।

विद्यापतिक समकालीन जयदेव मिश्र, जे अपन अकाट्य तर्कक कारण पक्षधर मिश्रक नामसँ जानल गेलाह।

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)

कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्चा अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरसँ भिन्न। सम्भवतः विस्फी गामक वार्त्तिक कारक श्री महेश ठक्कुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक विद्यापति नामसँ विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) पृथ्-अस्तित्व स्पष्ट अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)-ग्रन्थ �तंत्रालोक प्रत्याभिज्ञा- विमर्शिनी� मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरवरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत कएने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी।

�जाव न मालती कर परगास

ताव न ताहि मधुकर विलास।� आ

�मुद्रला मुकुल काय मकरन्द�

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) **षष्ठः कल्लोल-** ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ **अष्टमः कल्लोलः-** ॥अथ नायक वर्णना॥ मे उल्लेख।



महाराज शिव सिंह

मिथिला नरेश विद्यापतिक आश्रयदाता ओइनवार वंशक महाराज शिव सिंह।



उगना महादेव

महादेव विद्यापतिक अहिठाम शीश सेवा लेल उगना चाकर बनि रहैत छलाह।



महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435 (मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठमे लेखन)

महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435

विद्यापति ठाकुर 1350-1435 विषज्ञान विद्यी-कार्य (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ भिन्न छथि।

(चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनवाओल , कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।)



शंकरदेव 1449-1569

पारिजातहरण।



जगज्ज्योतिर्मल्ल १६१३-३१

हरगौरी विवाह नाटक, कुंज बिहारी नाटक।



सुनीति कुमार चटर्जी मैथिली प्रेमी 1890-1977



अरविन्द घोष मैथिली प्रेमी 1872-1950

विद्यापति गीतक अंग्रेजीमे अनुवाद



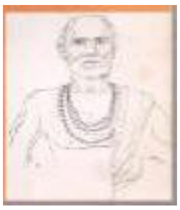
डॉ. सर आशुतोष मुखर्जी मैथिली प्रेमी 1864-1924



सर जी. ए. ग्रियर्सन मैथिली प्रेमी 1851-1941



कवि चन्दा झा 1831-1907



महाकवि लालदास 1856-1921



म. म. परमेश्वर झा 1856-1924

मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारूछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिअर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता कयलन्हि।

कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

हिनक जन्म खड़ौआ ग्राममे १८७५ ई. मे तथा मृत्यु १९२१ ई. मे भेलन्हि। हिनक अनेक रचना उपलब्ध होइत अछि, यथा�रामेश्वर चरित रामायण,� श्री शिक्षा,� �सावित्री-सत्यवान,� �चण्डी चरित,� �विनयावली,� �दुर्गा सप्तशती,� तन्त्रक मिथिला माहात्म्य� आदि। मैथिलीक अतिरिक्त ई संस्कृत, हिन्दी तथा फारसीक ज्ञाता छलाह। कविताक अतिरिक्त गद्यमे सेहो ई रचना कएल। रामेश्वर चरित रामायण हिनक सभसँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि। राम-कथाक उल्लेखमे सीताक महिमाक महत्व दए मिथिला तथा मैथिलीक प्रति ई अपन श्रद्धा तथा भक्तिकेँ व्यक्त कएल अछि।

जन्म 1856 ई. मे तरौनी ग्राम (दरभंगा) जिलामे भेल छलन्हि तथा निधन 1924 ई. मे। संस्कृत व्याकरणक ई दिग्गज विद्वान् छलाह तथा �वैयाकरण केशरी�क उपाधिसँ विभूषित छलाह। मैथिली साहित्यमे अपन कृति �मिथिलातत्त्व विमर्श� तथा �सीमन्तिनी आख्यायिका�क कारणे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत छथि। ई महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारमे राज-पण्डितक पदपर अनेको वर्ष धरि सुप्रतिष्ठित छलाह।



अवध विहारी प्रसाद शाही 1859-1929



सर्वतंत्र स्वतंत्र बच्चा झा 1860-1921

मधुबनी जिलान्तर्गत नवानी(नवानी) गाममे हिनकर जन्म भेलन्हि। हिनक कृति सभ अछि। 1. सुलोचन-माधव चम्पू काव्य, 2.न्यायवार्त्तिक तात्पर्य व्याख्यान, 3.गूढार्थ तत्त्वालोक(श्री मद्भगवद्गीता व्याख्यारूप मधुसूदनी टीका पर) 4.व्याप्तिपंचक टीका 5.अवच्छेदकत्व निरुक्ति विवरण 6.सव्यभिचार टिप्पणी 7.सत्प्रतिपक्ष टिप्पणी 8.व्युत्पत्तिवाद विवरण 9.सिद्धांत लक्षण विवेक 10.व्युत्पत्तिवाद गूढार्थ तत्त्वालोक 11.शक्तिवाद टिप्पणी 12.खण्डन-खण्ड खाद्य टिप्पणी 13. अद्वैत सिद्धि चन्द्रिका टिप्पणी 14.कुसुमाञ्जलि प्रकाश टिप्पणी।



म. म. शशिनाथ झा 1860-1930







मुंशी रघुनन्दन दास 1860-1945

ग्राम-सखवाड़, जिला-मधुबनी। "मिथिला नाटक" आ "दूतांगद व्यायोग"क लेखक।

मधुसूदन ओझा 1866-1939

म.म. मुरलीधर झा १८६८-१९२९

जन्म- ग्राम- भराम (जिला मधुबनी), अपन मातृक ठामसीधपमे बसि गेलाह। काशीसँ १९०६ ई. मे ओ "मिथिलामोद" नामक मासिक मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन शुरू कएलन्हि। हितोपदेश (अनुवाद), मैथिली व्याकरण, "अर्जुन तपस्या" (उपन्यास) प्रकाशित।



मुकुन्द झा "बख्शी" 1869-1936

जन्म हरिपुर बख्शी टोल ग्राम (मधुबनी जिला) मे 1869 ई. मे भेल तथा हिनक निधन काशीमे 1937 ई. मे भेलन्हि । हिनक लिखल संस्कृत मे अनेक ग्रंथ अछि । मैथिलीमे हिनक महत्वपूर्ण कृति अछि �मिथिला भाषामय इतिहास�। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक स्फुट निबन्ध सभ सेहो प्रकाशित भेल । मिथिलाक ऐतिहासिक वर्णन सभसँ पहिने हिनक प्रकाशित भेल । एहि इतिहासमे मिथिलाक सर्वतोमुखी परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि ।



डॉ. सर गंगानाथ झा 1871-1941

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही ग्राममे 1871 ई. मे भेल तथा निधन प्रयागमे 1941 ई. मे । ई अपना समयक संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान म. म. चित्रधर मिश्र, म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. शिवकुमार शास्त्रीसँ मीमांसा एवं दर्शनक अध्ययन कएलन्हि तथा दर्शनक विभिन्न दुरूह ग्रंथक अंग्रेजीमे अनुवाद कए पाश्चात्य संसारक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि । ई गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज बनारसमे 1917 सँ 1923 धरि प्रिंसिपल छलाह तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालयक 1923 सँ 1932 पर्यन्त कुलपति रहलाह । मैथिलीमे हिनक सम्पादित वह्य माक �महेशवाणी संग्रह� तथा �गङ्गानाथ-विश्वनाथ पदावली� प्रकाशित अछि । मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित हिनक �वेदान्त दीपक� (दर्शन) विषयक अपूर्व ग्रंथ अछि । एहिसँ भिन्न हिनक निबंध सभ सामयिक मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि ।



जनार्दन झा जनसीदन 1872-1951



नासविहानी लालदास 1872-1940

"मिथिला दर्पण" क लखक।



नामवह्ब मिश्र "चह्ब" 1873-1937 मैथिल प्रस्त



महावैयाकनधावार्य यं दीनवह्ब् मा 1878-1955



रुवनाथ मिश्र 1879-1933

मैथिली शह्बकाष "मिथिला शह्ब प्रकाश"क लखक।



कीर्त्यानह्ब सिंह



टंकनाथ चौधनी 1884-1928



रुवग्रीतानह्ब ऊाभा 1886-1970



कयिलश्चन मिश्र 1887-1987

गाम सलमयुन, थाना- उजियानयुन, जिला समस्तीयुन। �सीतादाह्ल� युस्तक रुंतानसँ प्रकाशित।



वालकृष्ठ मिश्र 1888-1948







वलदव मिश्र 1890-1975

हिनक जन्म सहरसा जिलाक वनगाँव ग्राममे 1890 ई. मे ओर निधन रुनवनी, 1975मे भेलन्हि । प्रारम्भ मे पं. गेनालाल चौधरीसँ ज्योतिष पढि ई काशीमे पं. सुधाकर द्विवेदीजीक शिष्य रहलाह । बहुत वर्ष धरि सरस्वती भवन (वाराणसी) मे हस्तलिखित विभागमे कार्य कएल । पश्चात् पटनाक काशीप्रसाद जयसवाल रिसर्च संस्थानमे अनेक प्राचीन पोथी हस्तलिपिकेँ देवनागरीमे लिप्यन्तरित
कएल। �मिथिलामोद� प्रकाशन ओ म.म. मुरलीधर झाक प्रयाससँ ज्योतिषीजी १९१० ई.सँ �मोद�मे लिखए लगलाह। हिनक प्रकाशित रचना अछि��रामायण शिक्षा�, �बुद्ध झा�, �संस्कृति�, �राजा शिक्षा�, �गद्य-सद्य विवेक�, �समाज� आदि । पण्डितजी यावत् धरि पटना रहलाह वराबरि �मिहिर�मे लिखैत रहलाह ।

आचार्य रामलोचन शरण 1889-1971

सीतामढीमे जन्म आ दरभंगामे मृत्यु। "मैथिली रामचरित मानस" सहित तुलसीदासक समस्त रचनाक मैथिलीमे लेखन। मिथिलाक्षरमे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ कनिहार। प्रकाशन संस्था "पुस्तक भण्डार", लहेरियासराय, पटनाक संस्थापक।

सीताराम झा 1891-1975

जन्म चौगामा ग्राममे १८९१ ई.मे तथा निधन १९७५ ई. मे भेलन्हि । संस्कृतमे ज्योतिष शास्त्रक अनेक रचनाक .आधुनिक मैथिलीमे हिनक �अम्ब चरित� (महाकाव्य), �सूक्ति सुधा,� लोक लक्षण,� �पञ्चआचरित,� �पूर्वायन व्यवहार,� उपटा वसात,� �अलंकार दर्पण�, �सूक्त्य वर्णन�, �काव्य षट-रस�, �मैथिली काव्यायतन�, आदि ग्रन्थ उपलब्ध अछि । हिनक गीताक मैथिली अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि । मिथिला मोदक सम्पादन १९२० ई.सँ १९२१ ई. धरि ई कएल ।



रामावतार झा 1892-1928



वद्रीनाथ झा 1893-1973

जन्म मधुवनी जिलाक सरिसव ग्राममे १८९३ ई. मे भेलन्हि तथा १९१४ ई. मे ई काशी गेलाह । बहुत दिन धरि ई मुजफ्फरपुरक धर्म समाज संस्कृत कॉलेजमे साहित्यक अध्यापक छलाह । मैथिलीक विख्यात कवि लोकनि यथा सुमनजी, मधुपजी, मोहनजी आदि हिनक शिष्य छथि । संस्कृत साहित्यमे हिनक अनेक रचना अछि । जाहिमे राधा परिणय�



जीवनाथ राय 1893-1964

(महाकाव्य) क स्थान विशिष्ट अछि । मैथिलीम हिनक �कावली यनिश्चय� (महाकाव्य) एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कएलका काना अलंकानक दृष्टान्त एकवाक रूप �कावली यनिश्चय� यर्याप्त अछि ।



उमश मिश्र 1895-1967

जन्म मधुवनी जिलाक गजहना ग्राममे 1895 ई. म रल छलहि । ई एकरानि वर्षक आयुम १९६७ ई. म प्रयागम स्वर्गवासी रलाह । ई अयन स्वनाम-धन्य पिता म. म. जयदव मिश्र तथा म. म. डा. गंगानाथ भाक सान्निध्यम विद्यार्जन कएला १९२३ सँ १९७९ धनि मिथ्जी इलाहावाद विश्वविद्यालयम संस्कृतक प्राध्यापक छलाह । दनरंगा �मिथिला शोध संस्थान�क निदशक यदयन किछु समय कार्य कए १९६२ सँ ६७ धनि कामश्वन सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलयति नहलाह ।म. म. मुनलीधन भासँ प्रत्नावित रए �मिथिलामाद�म ई लिखव प्रानम्भ कएलहि तथा अयन विविध प्रकानक नचनासँ मैथिलीक गद्यकँ समृद्ध कएलहि । मैथिलीम हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि��कमला� (शक्मीयनक �टम्यस्ट�क रायानुवाद), �नलायाख्यान�, �मैथिली-संस्कृति� तथा अनक वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक निवन्ध; मनवाधक कृष्णजन्मक सम्यादन, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तियताका, गोनक्ष विजय आदिक अनुवाद-सम्पादन सहो कएल।



वावू धनुषधानी दास 1895-1965

मैथिलीम विद्यानी कविक अनुवाद प्रकाशित।



अमननाथ भा 1897-1955

सनिसव याडीटाल ग्राममे १८९७ ई. म रल । हिनक निधन यटनाम जखन ई विद्यान लाक सवा आयाग क अध्यक्ष छलाह, १९७७ म रलहि । ई इलाहावाद विश्वविद्यालयक नओ वर्ष धनि कुलयति नहि यश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालयक सहो कुलयतिक यदकँ सुशोभित कएलहि । ई अंगनजीक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह, ताहि संग हिन्दी, उर्दू, फानसी, संस्कृत, वङ्गला एवं मैथिलीक सहो अद्भुत विद्वान् छलाह ।मैथिलीम हिनका द्वाना सम्यादित �हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली� तथा �गोविन्ददासक शृङ्गानभजन� महत्त्वपूर्ण अछि । एहिसँ भिन्न हिनक मैथिली साहित्य यनिषदक अध्यक्षीय भाषण तथा अन्य लख प्रकाशित अछि ।



भोलालाल दास 1897-1977

हिनक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर मे भेलन्हि। साहित्य सर्जनाक अतिरिक्त अपन संगठन क्षमता तथा मैथिली साहित्यक सर्वांगीण विकासक हेतु सतत तत्पर रहबाक कारणेँ भोला बाबू मैथिली संसारक एक स्तम्भक रूपमे रहलाह। हिनक निधन 1977 ई. मे भेल। मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे ई अपन जीवन समर्पित कएने छलाह। पाठ्यक्रममे मैथिलीकेँ स्थान दिआबए हेतु ई बीड़ा उठौलन्हि। विद्यालय स्तरक अनेक पाठ्यक निर्माण कएल। मैथिली साहित्य परिषदक ई संस्थापक मण्डलक सदस्य छलाह। 1931 सँ 1940 ई. पर्यन्त ओकर प्रधान मन्त्री रहलाह। हिनक मन्त्रित्वकालमे �भारती� नामक मासिक पत्रक प्रकाशन भेल। एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कुमार गंगानन्द सिंहक संग संयुक्त सम्पादनमे �मिथिला� नामक पत्र चलौल। ई नवीन एवं प्रगतिशील विचारक लोक छलाह। नवतुर लेखककेँ प्रोत्साहित करब, शैलीमे एकरूपता आनब, नव प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य भंडारक पूर्ति करब हिनक कर्त्तव्य बनि गेल छल। हिनक लिखल �मैथिली व्याकरण� तथा हिनकहि द्वारा सम्पादित �गद्यकुसुमांजलि बहुत दिन धरि विद्यालयमे पढ़ाओल जाइत रहल। हिनक लिखल अनेक निबन्ध समालोचना, कविता, संस्मरण, जीवनी-साहित्य मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल अछि।



कुमार गंगानन्द सिंह 1898-1971

जन्म�बनैली राजपरिवारमे 24-9-1898, मृत्यु:-श्रीनगर पूर्णियाँमे 17-1-1970। भूतपूर्व शिक्षामंत्री, बिहार एवं कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय। रचना�अगिलही (अपूर्ण उपन्यास) तथा अनेक कथा एवं एकांकी। युगक अनुरूप सामाजिक कुरीति आदिकेँ आधार बनाए सुधारवादी दृष्टिएँ कथा साहित्यिक रचना।



ब्रजमोहन ठाकुर 1899-1977



भुवनेश्वर प्रसाद 1902-

दरभंगा जिलाक बनौली गाम, निवास रायसाहेब पाखनि लहेरियासराय। सरस्वती स्कूल लहेरियासरायमे १९३०-१९६४ ई. धरि अध्यापन। मैथिलीमे "बाल रामायण� प्रकाशित।



जयनारायण झा 'विनीत' 1902-1991



नरेन्द्र नाथ दास विद्यालंकार १९०४-१९९३



सुधाकर झा "शास्त्री" 1904-1974



दामोदर लाल दास विशारद 1904-1981



बबुआजी झा 'अज्ञात' 1904-1996

२००१- बबुआजी झा �अज्ञात� (प्रतिज्ञा पाण्डव, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



श्रीवल्लभ झा व्हाटी 1905-1940



रमानाथ झा 1906-1971

जन्म दरभंगा जिलाक उजान (धर्मपुर) ग्राममे 1906 ई. मे एवं हिनक निधन दरभंगामे १९७१ ई. मे भेलन्हि । 1930 ई. मे अङ्गरेजीमे एम. ए. कएलाक बाद ई कतोक वर्ष धरि मधेपुर उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापक छलाह, तकरा बाद दरभङ्गा-राज-



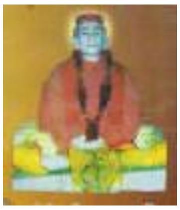
काशीकान्त मिश्र "मधुप" 1906-1987

१९७०- काशीकान्त मिश्र �मधुप� (राधा विरह, महाकाव्य) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त मैथिलीक प्रसिद्ध कवि आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक समर्पित कार्यकर्ता �झंकार� कवितासँ क्रान्ति गीतक आह्वान कएलनि । प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि । �घसल

लाङ्ग्वनीक यूस्कालयाध्यउक नूयम 1936 सँ अन्किम समय धनि नहलाह । 1952 सँ 62 वङ्कधानी मिथिला कॉलजम प्रा. मा अढनजीक प्राध्यायक नूयँ काजka यश्चात् उाही कॉलजम मैथिली निरागाध्यउ वनाउाल गेलाह । 1965 म नमानाथ वावू साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित रलाह जाहि यद यन उा जीननक अन्द समय गक नहलाह ।

हिनक नचनाक उाम्न वहुग ब्यायक छल । हिनक अनूसंधानाभक निवंक दु गाट संग्रह �निवन्धमाला� गथा �प्रवंध संग्रह� प्रकाशित अछि । संकलित सम्यादित यूस्क सरम �मैथिली यद्य-संग्रह�, �मैथिली गद्य-संग्रह�, �प्राचीन गीत�, �कथा काव्य�, �ननीन गीत�, �कनिता कूसुम�, �कथा संग्रह� आदि अछि । �कथासनिसागन�क आधान यन प्राञ्जल गद्य शैलीम हिनक �उदयन-कथा� गथा �वननूचि-कथा� वश ख्याति यउालक । ब्याकनधक �मिथिला राषा प्रकाश�, �अलङ्कानप्रनश� आदि अनक ग्रन्ठ प्रकाशित अछि । �मैथिली साहित्य यत्र� त्रैमासिक यत्रिकाक संयादक।

अ0न्नी कनिगाक लल कथ्य आ शिल्य-संनदना�दृढ़ स्कन यन चनम लाकप्रियता रटलनि।



लक्ष्मीनाथ गोसाञ्जी 1793-1872



मही दास

धनहना काठी_वनमनखी_असली नाम_नामानुग्रहलाल दास_आश्रम_मायामाहल्ला, कूप्याघाट, रागलयून



वूवन रगत, संग 1928-1991



हरिनाम दास

मिथिलाक प्रसिद्ध भगता गायक।



स्नेहलता 1909-1993

ग्राम- उजान, समस्तीपुर। पूर्ण नाम- कपिलदेव ठाकुर "स्नेहलता"। रामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक संत। हिनकर रचित वैदेही विवाह संकीर्तन, विनय पदावली, शिवनामी, भजनावली, झूला-संकीर्तन, सीतायनानन्द प्रबन्धकाव्य आ स्नेहशतक- दोहावली-कवित्त आदि मिथिलाक महिला वर्ग आ संकीर्तनकार लोकनिक कंठमे परिव्याप्त अछि आ लोकमंगलक अनुष्ठानमे गायक सूँ व्यवहृत अछि। हिनक "वैदेही विवाह" मिथिलाक कीर्तनिया नाट्य परम्पराकेँ लोकरुचिक अनुकूल बनौने अछि।



स्वतंत्रता सेनानी स्व. रामफल मण्डल



सुन्दर झा "शास्त्री" 1930-1998

जनकपुर, नेपाल, युवावस्थाक अलभ्य दुर्लभ फोटो। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक मानद सदस्य- स्व. सुन्दर झा शास्त्री।



काञ्चीनाथ झा "किरण" 1906-1988

जन्म स्थान-धर्मपुर,लोहना गाम, दरभंगा। विद्वान । मैथिली भाषा आंदोलनमे महत्वपूर्ण भूमिका। �पराशर� महाकाव्य लेल साहित्य अकादमी आ �कथा किरण� लेल वैदेही पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चंद्रग्रहण (उपन्यास), बीन-प्रसून (बालकथा), जय जन्मभूमि (एकांकी), विजेता विद्यापति (नाटक), कथा-किरण (कथा-संग्रह), किरण-कवितावली, कथक दिनक बाद (कविता-संग्रह), पराशर



श्यामानन्द झा 1906-1949

(मद्दाकाव्य) उा किनध-निवंधानली (निवंध-संग्रद्द) आदि। १९८९- काशीनाथ मा �किनध� (यनाशन, मद्दाकाव्य)यन मैथिली म साद्दित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानित।



नमाकांत मा, नयाल 1907-1971



शिनाथ मा 1907-1965

वद्दमूखी प्रगित्ताक कनि। प्राचीन आ ननीन यद्धगिक काव्य-नचनाक निलऊध संयाग द्दिनकन कनिताम द्दटैग अछि। दलित नर्ग, (शाषधक समस्या, स्नदश प्रमक यथार्थनादी नचनाक संग संग व्यक्तिनिष्ठ कल्यनाक अनक निशिष्ठ कनिता मैथिलीम लिखलनि।



गुननश्वन सिंद्द 'गुनन' 1907-1944

अयन खाढीक वद्दमूखी प्रगित्ताक कनि। प्राचीन आ ननीन नीगिक कनिताक नचना नियूल संख्याम कएलनि। �गुनन द्दानगी� कनिता संकलन प्रकाशनसँ मैथिली उाज आ नन चागनाक शंख द्दूकलनि।



द्दनिमाद्दन मा 1908-1984

द्दिनकन मैथिली कृगि १९३३ म �कन्यादान� (उयन्यास), १९४३ म "द्विनागमन�(उयन्यास), १९४७ म �प्रधम्य दनगा� (कथा-संग्रद्द), १९४९ म �नंगशाला�(कथा-संग्रद्द), १९६० म �चर्चनी�(कथा-संग्रद्द) आऽ १९४८ ई. म �खट्टन ककाक गनंग� (व्यंग्य) अछि। मृत्यायनांग १९८७म (जीनन



कालीकान्द मा 1909-

मूल गाम ढंगा (द्दनियून), मधूवनी। द्दन मागृक वनदवड्डा,या. उनलाद्दा, द्दाया- मदनयून, जिला- यूर्णियाम वसि (गलाद्दा। सगघना (मधूवनी), मदनयून आ काशीम याधिनी व्याकनधक अध्ययन। "द्दनूमान चनिग"क लखक।



गंग्रनाथ मा 1909-1984

जन्म १९०९ ई म दनरंगा जिलाक धर्मयून ग्रामम द्दलद्दि मृत्यू ४-७-�८४,चद्धधानी मिथिला कॉलजम अर्थशास्त्रक प्राध्यायक छलाद्द। अनकाश ग्रद्दध क काव्य साधनाम लागल नद्दलाद्द। मद्दाकाव्य, मूक्तक, एकांकी सद्द निधाम ई सिद्ध द्दस्त छलाद्द। द्दिनक �कीचक नंध� मद्दाकाव्य अढ्नजीक �ब्लैंक र्स्स� (अमित्राऊन छन्द) म लिखल अछि। मैथिलीम �सौनट� एनं ब्लैंक

याणा, आणमकथा)यन मैथिलीक साहित्य अकादमी युनस्कानसँ सम्मानिण।

रर्स�क ई्ी प्रथम प्रयाका थिकाह । संस्कृण यनम्यनाम काब्य नवना कनिणहुँ याश्चाय शैलीक नवीनणा हिनका नवनाम रल । हिनक �कीचक नध� ङा �कृष्ण चनिण� महाकाब्य��मङ्गल-यञ्चशिका� एवं �नमस्या� मैथिली साहित्यम अयन निशिष्ट स्थान नखैछ । णकन अणिनिक मूकाक काब्यम निषय नस्फूक ब्यायकणा एवं शिल्य शैलिक प्रवृनणा अवैण अछि । एक दिश यदि प्राचीन ढंगक ई्श्वन नह्नाक नचना कएलहि णँ दासन दिस �सौनट� (चणुर्दशयदी) �वैलड� आदि लिखवाम यूर्ण सरूलणा प्राप्त कएलहि ।�कृष्ण चनिण� महाकाब्य यन हिनका 1979 ई्ी क साहित्यक अकादमी यूनस्कान रटलहि । 1980 ई्ी. म हिनका अभिनन्दन ग्रन्थसमर्यिण कएल गेलहि ।



जीवनाथ झा 1910-1977



सुनेन्द्र झा 'सुमन' 1910-2002

जन्म: ग्राम : वल्लीयून, जिला-समस्तीयून । प्रकाशिण कृणि: प्रणियदा, अर्चना,साऊन-रायन,अंकावली, अन्तर्नाद, ययस्विनी, उत्तना आदि णीससँ अधिक मौलिक कविणा-युस्तक;युनुष-यनीज्ञा, अनुगीणांजलि, मृणु श्रृंगान णथा नर्धनम्नाकन, यानिजाण-हनध, कृष्णजन्म, आनन्द-निजय आदि कणियय ग्रन्थक अनुवाद-संयादन; �मैथिली काब्य यन संस्कृणक प्रभाव� नामक समीज्ञा-ग्रंथ। �ययस्विनी� लल १९७१ म साहित्य अकादमी युनस्कान णथा �उत्तना� यन १९१८ म मैथिली अकादमीक निद्यायणि युनस्कान प्राप्त । मैथिलीक प्रथम दैनिक यत्र �स्वदश�क लब्धप्रणिष्ठ सम्यादक। १९९७- सुनेन्द्र झा �सुमन� (नवीन्द्र नाटकावली- नवीन्द्रनाथ टैगोन, वांग्ला)लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद युनस्कान। २००० ई्ी.- यं.सुनेन्द्र



यं. नामचन्द्र झा 1910-

गाम गणौनी। काशी मिथिला ग्रन्थमालाक सम्यादक।

मा �सुमन�, दत्तरंगा;यात्री-चाना यूनस्ञान।



'नागार्जुन' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 1911-1998

जन्म अयन मामागाम सालखाम रलहि, जे दूलकन गाम गनौलीक समीयहिम अछि, जिला-दनभा । मूल नाम: वैद्यनाथ मिश्र । हिद्दीम नागार्जुन नाम प्रख्याग । प्रकाशिग कृगि: विद्या, यत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविगा-संग्रह); यात्रा, वलचनमा, नवगुनिया (मैथिली उपयास); युगधारा, सगरंग पंखोंवाली, थारी यथनाक्षी आंखें, खिवडी विप्लव देखा हमन, गुमन कहा था, हजार हजार वाहो वाली, यूरानी जूगिया का कानस, नागर्जी, उस रो हम हआ ! उस रो गुम हआ !(हिदी कविगा-संग्रह); नगिनाथ की चाची, वलचनमा, नई पौध, वावा वटसननाथ, वरूण क वट, दुखमावन, कुम्भीयाक, अभिनदन, उग्रगारा, इमम नगिया (हिदी उपयास); आसमान में चन्दा गैन (कहानी संग्रह); रल्मांकुन (हिदी खण्ड काव्य); अन्नहीनम् क्रियाहीनम् (निवन्ध-संग्रह); गीग गोविद; मघदूग; विद्यापगि के गीग, विद्यापगि की कहानियां (अनुवाद) । �यत्रहीन नग्न गाछ� लल १९६८ म साहित्य अकादमी यूनस्ञान प्राप्त । यायावनी जीवन । मैथिली प्रगिनिधिक नूयम नूस प्रमधु । नागार्जुन (स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र �यात्री�), हिदी आ मैथिली कवि, १९९४ ई.म **साहित्य अकादमीक** **रलो** (रागक दशक सर्वोच्च साहित्यिक यूनस्ञान)।



आनसीप्रसाद सिंह 1911-1996

जन्म: ग्राम-अगौग, जिला-समस्तीयून । प्रकाशिग कृगि: माटिक दीप, यूजाक फूल, सूर्यमुखी (कविगा-संग्रह), मघदूग (अनुवाद), आनसी, नन्ददास, संजीवनी (हिदी काव्य संग्रह)। �सूर्यमुखी� लल १९८४ म साहित्य अकादमी यूनस्ञान प्राप्त ।



गुरु जयदत्त मिश्र 1911-1991 शिष्य गंगानाथ झा



यशोधन झा

मिथिला वैभव, दर्शन मैथिली याथीयन 1966 म यहिल साहित्य



वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' 1912-1987

१९७६- वैद्यनाथ मल्लिक �विधु� (सीगायन, महाकाव्य) लल



रीम झा 1912-

यूर्णिया जिलाक मदनयून गामक। जन्म ७ नवम्बन १९१२ ई.। वनौलीक श्री थामानन्द सिंहक

अकादमी पुरस्कार मैथिली लेल प्राप्त।

मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कार।

अध्यात्म �नाटक� संकीर्तन महामण्डली�क स्थापना।



राधानाथ दास १९१२-



उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 1913-1980

जन्म १९१३ ई. मे दरभंगा जिलाक बानिया ग्राममे भेलन्हि । मृत्यु २४-७-१९८० । संस्कृत शिक्षामे साहित्याचार्य आ बड़ौदा नामक विद्वत्-परिषद्सँ �साहित्य-रत्न�क उपाधिसँ विभूषित भेलाह । दैनिक आर्यावर्त आदिमे रहि, पश्चात् १९६० सँ मिथिला मिहिरक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपेँ कार्य कएल १९७७ मे सेवा निवृत्त भेलाह ।मोहनजी करीब पचास वर्ष साहित्य साधनामे लागल रहलाह । विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, शास्त्री, वामन आदि छद्म नामसँ पत्र-पत्रिकामे विविध विषयपर हिनक लेख सभ प्रकाशित भेल अछि ।मोहन जीक �बाजि उठल मुरली�मे १०१ गोट कविताक संकलन अछि जाहिमे हिनक सुदीर्घ काव्य-आराधनाक विशिष्ट विचारधाराक आ विशिष्ट अनुभूतिक सामग्री उपलब्ध अछि । एहि पुस्तकपर मोहन�जीकेँ १९७८ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि। एहिसँ बहुत पूर्व हिनक �फूलडाली� नामक कविता संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल ।



जयनाथ मिश्र 1913-1985



श्रीकांत ठाकुर "विद्यालंकार"



पञ्जीकार मोदानन्द झा 1914-1998

लब्ध प्रौढ़ पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया। पिता-स्व. श्री रिखिया झा। गुरु- पञ्जीकार रिखिया झा। पूर्णिया जिलाक बनैली लगक शिवनगर गामक। जन्म २२ सितम्बर १९१४ ई.। सौराठमे अपन मौसा स्व. लूटनझा सँ



आनन्द झा 1914-1988

पंजीशास्त्रक अध्ययन। १९४८-१९७१ ई. धरि दरभंगामे रहि आचार्य रमानाथ झाकेँ पाँजि पढ़ओलनि। शास्त्रार्थ परीक्षा- दरभंगा महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसर पर महाराजाधिराज(दरभंगा) कामेश्वर सिंह द्वारा आयोजित परीक्षा-1937 ई. जाहिमे मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा छलाह।



टोकियो हासेगावा, निदेशक मिथिला म्यूजियम, निगाटा



माँगनि खवास 1908-1943 संगीतज्ञ

पचगछियामे जन्म आ अल्प बएसमे मृत्यु। पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंहक शिष्य।



रामाश्रय झा 'रामरंग' अभिनव सदारंग 1928-2009

जन्म ११ अगस्त १९२८ ई. तदनुसार भाद्र कृष्णपक्ष एकादशी तिथिकेँ मधुबनी जिलान्तर्गत खजुरा नामक गाममे भेलन्हि। अभिनव गीतांजलि, हिनकर उत्कृष्ट शास्त्र रचना अछि। मिथिलावासी श्री रामरंग राग गीतगोविन्द, राग वैदेही भैरव, आऽ राग विद्यापति कल्याण कए रचना सेहो कएने छथि आऽ मैथिली भाषामे हिनकर खयाल �रंजयति छन्हि राग� कए अनुरूप अछि।



रामचतुर मल्लिक ध्रुपद संगीत 1905-1990



अभयनारायण मल्लिक



कुमार श्यामानन्द सिंह, संगीतज्ञ





पंडित परमानन्द चौधरी, संगीतज्ञ



हृदयनारायण झा

संगीताचार्य रायबहादुर लक्ष्मीनारायण सिंह



संगीत शास्त्र राजकुमार श्यामानन्द सिंह १९१६-१९९४



मिथिलेश कुमार झा, तबला वादक



नागेश्वर लाल कर्ण, तबला वादक



बाबू साहेब चौधरी 1916-1998

दरभंगा जिलाक दुलारपुर गामक। १९४३ ई. स जीविकार्थ कलकत्ता अएलाह। बरम कठाम स्वराज आन्दोलनमे बाजि कए जेलक हवाखोरी। कलकत्ताक स्थानीय मैथिल संघमे प्रवेश। कलकत्ताक मैथिली आर्ट प्रेस. ९/१, खिलात घोष लेन, कलकत्ता-७००००६ सँ मैथिली-मिथिला आन्दोलनमे सक्रिय। �कुहेस� आ �बाधक� दुटा नाटक। १९७१-७९ धरि �मिथिला दर्शन� आ �मैथिली दर्शन� मैथिली मासिकक सम्पादन।



लक्ष्मण (लखन) झा 1916-2000

मिथिला राज्य अभियानी।



शुकदेव झा 'उत्पल' 1916-

गोड्डा जिलाक अलखदत्त-महेशपुरक निवासी। जन्म १६ अक्टूबर १९१६ ई.।



रामचरित्र पाण्डेय "अंशु" १९११-२०१०



लक्ष्मीनाथ झा मिथिला चित्रकला 1917-1990



उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' 1917-2002

जन्म स्थान-हनियून वकशीटाल, मधुवनी, विहान । १९६९- उयछनाथ मा �यास� (दु यत्र, उयायास) लल साहित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानित । साहित्य अकादमीक अनुवाद यूनस्कान याप्त । प्रकाशित कृति: कुमान, दु यत्र (उयायास), विउंवना, हजना हजल (कथा-संग्रह), यान संयासी, प्रतीक (काव्य), महाहानत (यहिल दु यर्व) आदि।



मनमाहन मा 1918-2009

जन्म सनिसवम, अशुकथ, वीनहाखा, मिथिलाक निशायूनम। २००९- स्व.मनमाहन मा (गंगायुत्र, कथासंग्रह)यन मृत्युयनांत साहित्य अकादमी यूनस्कान।



व्रजकिशोन वर्मा 'मणियद्म' 1918-1986

जन्म स्थान-वहआ, दनभंगा विहान । १९७३- व्रजकिशोन वर्मा �मणियद्म� (नैका वनिजाना, उयायास) लल साहित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानित । उयायासकान, कथाकान आ कवि । प्रकाशित कृति: कावागल, कनकी, अछिनानीथन, लानिक विजय, नैका-वनिजाना, लवहनि-कुशहनि, नाय नथयाल, आदिम गुलाम आदि उयायास आ कंOहान (नाटक) आदि।



यं. सहदन मा १९१९-

"मिथिला की धनाहन" याथी प्रकाशित।



वृद्धिवानी सिंह नमाकन 1919-1991

जन्म मधुवनीम 1919 ई. म हल । अयन यिता स्व. उमधानी सिंहसँ विहित विषयक शिजा ग्रहण कयलहि । ई नामकृष्ण कॉलेज, मधुवनीक मैथिली विहागाध्यज छलाह । जाहिसँ अवकाश याप्त कयलहि । वाल्या-



आद्याचनथ मा 1920-



वछ हानु सिंह 1922-

२००४- वछहानु सिंह (शकुन्तला, महाकाव्य)लल साहित्य अकादमी यूनस्कान।

वस्तुहिसँ ओ कविकार्यम लागल नहलाह अछि। संयुग तथा मैथिली दुनू रावाम हिनक रचना प्रकाशित अछि । यथा�मैथिलीम�प्रयास� (कथा-संग्रह), �मधुमती�, �अमनवायु� (कविता-संग्रह), �शनशय्या� (खंड-काव्य) �स्मृति साहत्री� (महाकाव्य) आदि।



सुधांशु शेखर चौधरी 1922-1990

जन्म दनरँगाक मिश्रटालाम 1922 ई. म रहलहि तथा मृत्यु 1990 ई. म रहलहि । किछु दिन विभिन्न जीविकाम नहि पश्चात् साहित्यकारक जीवन प्रारम्भ कएल। किछु दिन �वैदेही�क सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1960 ई. सँ 1982 ई. धरि पटनाम �मिथिला मिहिर��क सहल सम्पादन कएल। हिनक दु गोट नाट्यकृति-�ढहैत्त वालुक भिनगी�, लटाएल आँचर�, तथा �पहिल साँझ� हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुभवक परिचायक अछि ।छद्मनामसँ हिनक दु गोट उपन्यास मिहिर�म प्रकाशित रहल अछि । हिनक उपन्यास ई बतहा संसार� ज मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित रहल आ जाहि पर 1980 क साहित्य अकादमीक पुरस्कार दल गेल।



गोविन्द झा 1923-

जन्मस्थान- इसहपुर, सनिसव पाही, मधुबनी, बिहार । सिद्ध कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, भाषा वैज्ञानिक ओ अनुवादक। साहित्य अकादमी पुरस्कार, साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित। बिहार सरकारसँ कामिल बुल्के पुरस्कार, प्रियर्सन पुरस्कार आदिसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति:

उपन्यास, नाटक, कथा, कविता, भाषा विज्ञान आदि विभिन्न विधाम अठतीस टा पोथी प्रकाशित । प्रकाशन: सामाक पौती,नेपाली साहित्यक इतिहास (अनु) आदि । १९९३- गोविन्द झा (सामाक पौती, कथा)पुरस्कृत लल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।१९९३- गोविन्द झा (नेपाली साहित्यक इतिहास- कुमार प्रधान, अंग्रेजी) लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2006 सँ सम्मानित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी रहला पुरस्कार २०१० (समग्र योगदान लल)



योगानन्द झा 1923-1986

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक काछलख ग्रामम 1923 ई. म रहलहि । मृत्यु 1986 म रहलनि । अंग्रेजीम एम. ए. कएलाक पश्चात् ओ किछु दिन चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजम प्राध्यापक नहलाह । बिहार प्रशासनिक सेवाम 1981 धरि विभिन्न पदपर कार्य कएल । तत्पश्चात्मैथिली अकादमीक निदेशक�84 धरि ।योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यम अपन उपन्यास �रूपमानुस� एवं �पविप्रा�क हेतु ख्यात छथि। हिनक नाटक �मुनिक मतिभ्रम� एवं कथा संग्रह �उत्तर दंशी� पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त कएने अछि । एकर अतिरिक्त ओ महात्मा गांधीक आत्मकथाक अनुवाद एवं �आमक जलखनी� नामक एक कथा संग्रहक सम्पादन सेहो कएने छथि।



नामकृष्ण झा 'किसुन'

1923-1970



उमानाथ झा 1923-2009



जटाशंकर दास 1923-2006

आधुनिक धाराक विशिष्ट कवि, कथाकार, चिन्तक। प्रकाशित कृति: आत्मनेपद (कविता संग्रह), मैथिली नवकविता (सम्पादन)।

जन्म:-01-01-1923, मृत्यु 07-12-2009 मङरौनी, मधुबनी। स्नातकोत्तर अङ्ग्रेजी विभागाध्यक्ष एवं प्रति-कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा। रचना:- रेखाचित्र, अतीत (कथा संग्रह); मैथिली नवीन साहित्य, इन्द्र धनुष, विद्यापति गीतशती (सम्पादन)। १९८१- उमानाथ झा (अतीत, कथा) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



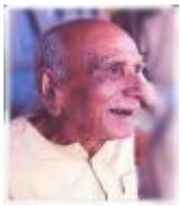
प्रबोध नारायण सिंह 1924-2005

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाली एवं बांग्लाक विद्वान्। मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक प्रति अनन्य स्नेह छथि। कलकत्ता सँ मिथिला दर्शन�, मैथिली कविता�, मैथिली रंगमंच� आदि पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यमसँ श्री प्रबोधजी मैथिलीक जे सेवा कएल अछि तकर वर्णन शब्दमे सम्भव नहि। अनेक बङला कृतिक सेहो अनुवाद सेहो कएल अछि। हिन्दीमे सेहो हिनक �कविता संग्रह� प्रकाशित अछि। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे हिन्दीक पूर्व अध्यक्ष। २००२- डॉ. प्रबोध नारायण सिंह (पतझड़क स्वर- कुर्रतुल ऐन हैदर, उर्दू) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



मदनेश्वर मिश्र 1924-2004

"एक छलीह महारानी" प्रकाशित।



अमोघ नारायण झा "अमोघ" 1924-



मुरलीधर सिंह, ब्रजमोहन ठाकुर, शुभंकर झा, मदनेश्वर मिश्र 1924 -



मणिनाथ मिश्र मतंग 1924-



आनन्द मिश्र 1924-2007

2004, ललित नानायण मिश्र, दन नाथ नाय



डॉ. जयमन्द मिश्र १९२७-२०१०

जन्म १७-१०-१९२७ मृत्यु ०१-०९-२०१०, गाम-ढंगा-हनियुन-मजनही।

१९९७- जयमन्द मिश्र (कविता कुसुमांजलि, पद्य) लल साहित्य अकादमी पुनस्कान- मैथिली।



चन्द्रनाथ मिश्र अमन 1925-

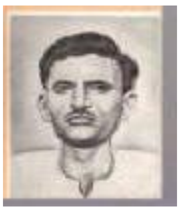
जन्म: खाजपुन, मधुवनी । वनिष्ठ कवि, कथाकान-उपन्यासकान । हास्य-व्यंग्यक कविताम वखाउ। मैथिलीक लल समर्पित व्यक्तित्व । पांच दर्जनसं वसी कथा आ विदागनी, वीनकथा (उपन्यास) जल समाधि (कथा संग्रह) प्रकाशित । १९८३- चन्द्रनाथ मिश्र �अमन� (मैथिली पत्रकानिताक इतिहास) लल साहित्य अकादमी पुनस्कानसँ सम्मानित। एम. एल. एकडमी, लहेनियासनायसं शिक्षकक पदसँ अवकाश प्राप्त। आशा दिशा, गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल आदि कविता संग्रह प्रकाशित। १९९८- चन्द्रनाथ मिश्र �अमन� (पनशुनामक वीठल वनायल कथा- नाजशेखन वसु, वांग्ला) लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुनस्कान। चन्द्रनाथ मिश्र अमन २०१० म मैथिली साहित्य लल साहित्य अकादमीक फेलो (सानत दशक सर्वोच्च साहित्यिक पुनस्कान)।



मुक्तिनाथ झा (1926-2009)



शुरंकन झा 1926-



दीनानाथ पाठक 'वन्धु' 1928-1962



अनंत विहानी लाल दास "इन्दु" 1928-2010

२००१- अनन्त विहानी लाल दास �इन्दु� (युद्ध आ योद्धा-अगम सिंह गिनि, नेपाली) लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुनस्कान।



कृष्णकान्त मिश्र १९२८-२०००



जगदानन्द झा 1928-



दुर्गानाथ झा "श्रीश"

हिनकर जन्म मधुबनी जिलाक निहा गाममे १९२९ ई. मे भेलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीमे एम.ए. आ बी.एड. कएलाक बाद किछु दिन स्कूलमे अध्यापन, फेर मिल्लत कॉलेज, लहेरियासरायमे मैथिली आ हिन्दी विभागक अध्यक्ष। मैथिली भाषामे पहिल पी.एच.डी.। "श्रीश" जीक मैथिलीमे प्रकाशित रचना अछि- "मैथिली साहित्यक इतिहास", "भुवन भारती" (सम्पादन), "महामानव आ मनु" (कविता), "नाट्य कथा सार" (सम्पादन), "पुरुषार्थ" (पद्य नाटक) आ अनेक कविता, एकांकी आ आलोचनात्मक निबन्ध।



राजकमल चौधरी 1929-1967

महिषी, सहरसा। रचना:- आदि कथा, आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमे अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरंगी (बङ्गला उपन्यासक हिन्दी अनुवाद) अत्यन्त प्रसिद्ध।



विश्वनाथ झा "विषपायी" 1929-2005

"राम सुयश सागर" (मैथिली रामायण) १९८० ई. मे प्रकाशित। २१ जनवरी २००१ कँ मृत्यु।



जयधारी सिंह 1929-2007

समीक्षक, कवि । प्रकाशन: बौद्धगानक तांत्रिक सिद्धांत, समीक्षा शास्त्र आदि । रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीमे मैथिली विभागक पूर्व अध्यक्ष ।



शैलद्ध माहन झा 1929-1994

१९९२- शैलद्ध माहन झा (शनाचद्ध चक्रि आ कलाकान-सुवाधवद्ध सन, अंग्रजी)लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुनस्कान।



विजयनाथ ठाकुन 1929-2008



नमशवद्ध वर्मा 1930-



गोयालजी झा 'गोयश' 1931-2008

जन्म मधुवनी जिलाक महथ गामम १९३१ ई.म हलधि। हिनकन नविन�सान दालक विठी�, �गुम हल ठाड ठी�, �वलवम� �भाव कहू मन कहन लगैछ�, "मखानक पात" प्रकाशित हल आहिम सानदालक विठी वश लाकप्रिय हल। २००६ ई.-श्री गोयालजी झा गोयश, मंहथ, मधुवनी;यात्री-चतना पुनस्कान।



विवकानद्द ठाकुन 1931-

२००१- विवकानद्द ठाकुन (वानन घन गछिया, पद्य)मैथिली लल साहित्य अकादमी पुनस्कान।



गानाकांत मिश्र 1931-



ललित 1932-1983

जन्म स्थान वसैठ वानयूना मधुवनी, विहान । प्रसिद्ध कथकान ओ उपन्यासकान ।



मूनानि मधुसूदन ठाकुन 1932-

गानाशंकन वंद्यापाध्याय वंगला उपन्यास "आनाग्य निकतन"क मैथिली अनुवाद



विद्यानानायण ठाकुन 1933-

प्रकाशित कृति: प्रतिनिधि, (कथा संग्रह), पृथ्वी-पुत्र (उपन्यास) आदि।

लेल साहित्य अकादमीक अनुवाद पुरस्कार 1999 रटल छथि।



धूमकेतु 1932-2000

जन्म स्थान काऽलख, मधुवनी, विहान । प्रसिद्ध कथाकान, उपन्यासकान ञ कवि । प्रकाशित कृति : दु टा कथा संग्रह ञ एक टा उपन्यास ।



नाजमोहन झा 1934-

जन्म स्थान कुमनवाजितपुन, वैशाली, विहान । प्रख्यात कथाकान ञ संपादक । आऽ काल्हि यनसु (कथा-संग्रह) लेल १९९६ म साहित्य अकादमीसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति : एक आदि एकांत, मु0 साँच, एकटा गसन, अनुलक्षक, आऽ काल्हि यनसु (कथा संग्रह), गलतीनामा, रनहि निश्चायति, टीयश्रीयादि (आलावना)। �आनस्�यत्रिकाक संपादन। प्रवाध सम्मान 2009 सँ सम्मानित।



डॉ. धीनेन्द्र 1934-2004

जन्म स्थान लाहना, मधुवनी, विहान । प्रसिद्ध कथाकान,उपन्यासकान ञ कवि । प्रकाशित कृति: कुरुस आ किनण, यमाऽन घुनक आगि, शानुया ञ मनु अपन महिन (कथासंग्रह) हैंगनम टाँगल काट, काल्हि ञ आऽ (कविता संग्रह) सहित कैक निधाम निरित्न याथी।



नमण नानायण १९३४- २०११

नाम- नमण नानायण दास, जन्म १७ मार्च १९३४ कँ मधुवनीक वहना गाममा पिता-श्री हनिवल्लर लाल दास। शिञा मधेपुन, मधुवनी आ यटनामा। १९६१ ऽी.सँ १९९४ ऽी. धनि ए.एन. कॉलज, यटनाम हिन्दी निरागम अध्यायन। याथनक नाव (मैथिली कथा संग्रह, १९७२) प्रकाशित। मृत्यु १२ जनवनी २०११ कँ यटनामा।



वावू श्री सत्यनानायण सिंह आ नाघवाचार्य



मायानन्द मिश्र 1934-

हिनक जन्म १७ अगस्त १९३४ ऽी. कँ सुपौल जिलाक वनैनियाँ गामम हलनि। राक्ष लाटा, आगि माम आ�याथन आञान वस्त्र-विस्तु- हिनकान कथा संग्रह सर छथि। विहाञि याग याथन, मंत्र-पुत्र ,खाता आ�चिञ आ�सूर्यास्त हिनकान उपन्यास सर अछि॥ दिशांतन हिनकान कविता संग्रह अछि। एकान अगिनिक्र सान की नैया माटी क लाग, प्रथमं शैल पुत्री च,मंत्रपुत्र, पुनोहित आ�स्त्री-धन हिनकान हिन्दीक कृति अछि। १९८८- मायानन्द मिश्र (मंत्रपुत्र, उपन्यास)यन

मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

प्रबोध सम्मान 2007सँ सम्मानित।



गंगानन्द गन्धु १९३७-२०११



सोमदेव 1934-

उपन्यासकार आ कवि । साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चानोदाइ, होटल अनारकली (उपन्यास), काल ध्वनि (कविता संग्रह), चरैवेति (गीति नाट्य) सोम सतसई (दोहा)। २००२- सोमदेव (सहस्रमुखी चौक पर, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। २००१ ई. - श्री सोमदेव, दरभंगा;यात्री-चेतना पुरस्कार, प्रबोध साहित्य सम्मान २०११।



राजनन्दन लाल दास 1934-

"कर्णामृत"क सम्पादक। "चित्रा-विचित्रा" प्रकाशित।



रमानन्द रेणु 1934-2011

जन्म स्थान उसमामठ, दरभंगा, बिहार । वरिष्ठ कवि, कथाकार आ उपन्यासकार। साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: कचोट, प्रिकाश, अंगहीन आकाश (कथा-संग्रह), दूधफूल (उपन्यास), अंततः, उचरैत नाम (कविता-संग्रह)।

२०००- रमानन्द रेणु (कतेक रास बात, पद्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी



कालीकांत झा "बूच"

1934-2009

हिनक जन्म, महान दार्शनिक उदयनाचार्यक कर्मभूमि समस्तीपुर जिलाक करियन ग्राममे 1934 ई. मे भेलनि । पिता स्व. पंडित राजकिशोर झा गामक मध्य विद्यालयक प्रथम प्रधानाध्यापक छलाह । माता स्व. कला देवी गृहिणी छलीह । अंतरस्नातक समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुरसँ कयलाक पश्चात बिहार सरकारक प्रखंड कर्मचारीक रूपमे सेवा प्रारंभ कयलनि । बालहिं कालसँ कविता लेखनमे विशेष रूचि छल ।



श्याम दरिहरे 1934-

उपन्यास "जूता दीदी" प्रकाशित। गाम मलंगिया, जिला- मधुबनी।

हला पुरस्कार २०११ (समग्र योगदान लेल)

मैथिली पत्रिका - मिथिला मिहिर, माटि - पानि, भाखा तथा मैथिली अकादमी पटना द्वारा प्रकाशित पत्रिकामे समय - समय पर हिनक रचना प्रकाशित होइत रहलनि। जीवनक विविध विधाकेँ अपन कविता एवं गीत प्रस्तुत कयलनि । साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा प्रकाशित मैथिली कथाक विकास (संपादक डॉ वासुकीनाथ झा)मे हास्य कथाकारक सूचीमे डॉ विद्यापति झा हिनक रचना ��धर्म शास्त्रार्थक उल्लेख कयलनि । मैथिली अकादमी पटना एवं मिथिला मिहिर द्वारा प्रशंसा पत्र भेटल जाइत छल ।शृंगाररस एवं हास्य रसक संग-संग विचार मूलक कविताक रचना सेहो कयलनि । डॉ दुर्गानाथ झा श्रीश संकलित मैथिली साहित्यक इतिहासमे कविक रूपमे हिनक उल्लेख कएल गेल अछि । **प्रकाशित कृति (मृत्युपरान्त)** : कलानिधि- कविता-संग्रह।



डनीलाल शर्मा "श्रोत्रिय" १९३७ -

"मिथिला की पाण्डित्य परम्परा" पोथी प्रकाशित।



रामभद्र, धनुषा, नेपाल १९३७-२०२०

साहित्य तथा अन्यान्य जगतक कलाक सफल व्यक्तिसभ अपन प्रेरणास्रोत आ पथ-प्रदर्शक मानैत छथि । मैथिली साहित्य-जगतमे हिनक परिचयक मादे एतबाए कहब पर्याप्त होएत जे मैथिलीक सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा. धीरेन्द्र हिनका मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कथाकार मानैत छथि ।हिनक कथामे प्रतीकात्मकताक अद्भुत प्रयोगहिटा नहि, अपितु एकटा आदर्श कथाक समस्त वैशिष्ट्यसँ विद्यमान रहैत अछि । कथाकारक अतिरिक्त ई उत्कृष्ट समालोचक, नाटककार आ कवि सेहो छथि । नेपालमे मैथिलीक पहिल मानात्रामा लिखबाक श्रेय सेहो हिनका जाइत छनि ।सामाजिक कुरीतिसभकेँ कुशलतासँ चित्रण करबामे, चिन्तनीय बनएबामे आ मन-मस्तिष्कपर अमिट छाप



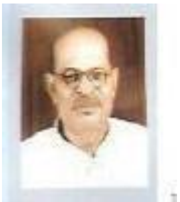
केदारनाथ चौधरी (१९३६-)

मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गाबय गीत' केर निर्माता त्रयमेसँ एकटा निर्माता छथि केदारनाथ चौधरी आ दोसर मदनमोहन दास। बादमे आर्थिक मजबूरीवश तेसर सहनिर्माता रहथिन उदयभानु सिंह। माता-स्व. कुसुमवती देवी, पिता- स्व. किशोरी चौधरी, जन्म: ०३/०१/१९३६

ग्रा.+पो. नेहरा (दरभंगा), अन्य पारिवारिक सदस्य-पत्नी-श्रीमती कुमुद चौधरी, संतान-प्रथम पुत्री-श्रीमती किरण झा, द्वितीय पुत्री-श्रीमती अर्चना

ष्टा७वाम नामस्ट्र सिद्धस्त्क ष्टथि । धनूषा जिलाक कूर्था गामम जनमल नामस्ट्रक यूर्ण नाम नामस्ट्र कर्ण ष्टनि । अङ्गनजी विषयक अवकाशप्राप्त शिउक नामस्ट्र ब्याकनण, याठ्ययूस्कक आ सस्तायक यूस्ककसर लिखवाक काजम निनन्तन सक्रिय ष्टथि।

चौधनी, शिउा- १९७८ ई.म अर्थशास्त्रम स्नाणकोत्तन, १९७९ ई.म लॉ। १९६९ ई.म कैलिस्फोर्निया वि.वि.सँ अर्थस्कास्त्र म स्नाणकोत्तन, १९७१ ई.म मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्युशन विषयम गोल्डन गेट यूनिवर्सिटी, सानफ्रांसिस्को, USA सँ एम.बी.ए., १९७८ म स्वना आगमन। १९८१-८६ क बीच गस्नान आ प्रैंकस्तूर्मि। स्तन बम्बई, पुणे स्वाइण निरायनमेंटक बाद २००० सँ लस्तनियासनाय, दनस्टंगाम निवास। ६ टा उयन्यास- चमलीनानी २००४, कनान २००६, मास्तून २००८, अवाना नस्तिन २०१२, स्तीना २०१३, अयना २०१८. सम्मान- १) विदस्त साहित्य सम्मान, वर्ख-२०१३ (मानखंड मैथिली मंच, नाँची द्वाना), २) प्रवाध साहित्य सम्मान, वर्ख-२०१६ आ ३) कदान सम्मान, वर्ख-२०१६,'अवाना नस्तिन' लल।

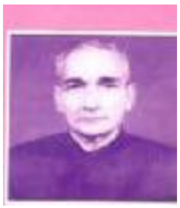


जीवकांग 1936-

नाम- जीवकान्द मा,यिणा-गुधानस्त मा, माणा-मस्तश्वनी स्वी, जन्म-२७.०१.१९३६ अगुआ८, जिला-सूयौल। नौकनी-विस्तान शिउक (उ.वि.खजौली १९७१-८१), स्लिन्दी शिउक (उ.वि.उउा८ एवं उ.वि.याखनाम १९८१-९८)। यस्लिल नवना-ई्जाउिया आ टिटस्ती (कविणा, जननी १९६७ मिथिला मिस्तिन)। यस्तिल ष्टयल याथी- दु कूस्तसक वाट (उयन्यास १९६८)। नूणन याथी-खिखिनक वीअनि (२००१ वाल यद्य कथा), अ०ळी खसलइ् ननम (यद्य-कथा संग्रस्त) आ यंजनि प्रम प्रकासिया (जीवन-वृन्दक अंश)। यूनस्कान-साहित्य अकादमी 1998 गकौ अष्ठि



स्वकांग मा 1936-



डॉ अमनेश याठक 1936-

स्लिनक जन्म सीणामढी जिलाक अन्दर्गण सामानि ग्राममे १९३६ म स्ललस्ति । १९७१ म यटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक एम. ए. यनीउाम प्रथम श्रेणीम प्रथमस्कान याउाल । १९७१ सँ १९६० धनि नामकृष्ण मस्तविद्यालय, मधूवनीम ब्याख्याणा नूयँ गकना वाद यटना विश्वविद्यालयम ब्याख्याणा नूयम कार्य कनण लगलास्त । यटना विश्वविद्यालयम मैथिली विस्तागाध्यउ नूयँ । मैथिली उयन्यासक आलावनात्मक अध्ययन� शोध प्रवन्धयन स्लिनका विस्तान विश्व-विद्यालय द्वाना डि. लिद्ध उयाधि स्टलस्ति । ई शोध प्रवन्ध यूस्ककाकान नूयँ सस्त प्रकाशिण स्टल अष्ठि विस्तान नाष्ट्रस्तासा यनिषदक विद्यायणि ग्रन्थावलीक सम्यादक मण्डलक सदस्य । स्लिनक अन्य प्रकाशिण नवना

विदेह, पत्र, किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८७)। प्रकाशित पोथी-

कविता संग्रह: नावू ह पृथ्वी (७१), धान नहि हाल्हुक मूक (९१), पक्षी अछि विदेह (९७), खाँता (१९९६), पानिम जागल अछि वक्षी (९८), रूनगी नीलाकाशम (२०००), गाछ मूल-मूल (२००४), छाह साहाउन (२००६), खिखिनिक वीअनि (२००७)

कथा-संग्रह: एकसनि ठाढ़ि कदम तन न (७२), सूर्य गलि नहल अछि (७७), नक्षू (८३), कनमी मील (९८)

उपन्यास: दु कुहसक वाट(६८), पनियत(७७), नहि, कतहु नहि (७६), पीयन गुलाब छल (७१), अगिनवान (८१)

हिन्दी अनुवाद- निशान्त की वितिया (पक्षी अछि विदेह, साहित्य अकादमी, दिल्ली २००३)।

प्रबोध सम्मान 2010 सँ सम्मानित।



वलनाम 1936-2008

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार । विशिष्ट कथाकार । प्रकाशित कृति : दकचल दवाल (कथा-संग्रह)।



मैथिलीपुत्र प्रदीय 1936-

ग्राम- कथवान, दनरंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य नत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर नचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमन" आ "सरक सूधि अहाँ लए छी ह अम्ब, हमना किए विसरै छी पै" मिथिलाम लजंत रए गेल अछि।



नामदन मा 1936-

कथाकन, समीक्षक, अनुवादक, ग्रंथ सम्यादक । साहित्य अकादमीक मूल एवं अनुवाद पुनस्कान प्राप्त कर्पी ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय दनरंगाक मैथिली विभागक पूर्व प्राचार्य । प्रकाशन: पसिस्पै पाथन, (अनु.) आदि । १९९१- नामदन मा (पसिस्पै पाथन, एकांकी)लल साहित्य अकादमी पुनस्कानसँ सम्मानित । १९९४- नामदन मा (सगाहू- नाजिहन सिंह वदी, उर्दू) लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुनस्कान।

अछि �निवन्ध संकलन�। एकना छाति निरित्र पत्र-पत्रिकाम हिनक कतेका निवन्ध प्रकाशित छन्हि। मैथिली अकादमी द्वाना प्रकाशित कथा-संग्रहक हुहा एक सम्यादक छथि । हुनी अधिकान उत्त स्तनीय आलोचनात्मक निवन्ध लिखेत छथि । २०००- डॉ. अमनेश पाठक, (पमस- रीष्म सारुनी, हिन्दी)लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुनस्कान।



रवीन्द्र नाथ ठाकुर 1936-

जन्म पूर्णिआ जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलन्हि । बचपनसँ गीत गएबाम एवं कविता लिखबाम विशेष रुचि । बादमे मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रोताकेँ आह्लादित करैत छथि । हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपन्यास, एक नाटक�एक नाटि� एवं एक हिन्दी नाटक, प्रकाशित भेल छन्हि ।



विनोद बिहारी वर्मा 1937-2003

मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, बलानक बाढ़िमे उा पल्लवी तथा अन्य कथा (कथा संग्रह)



धीरेन्द्र मल्लिक 1937-

जन्म-

3 जनवरी 1937 ई. परसौनी, मधुबनीमे। कवि, सम्पादक, समीक्षक । आखर, अरिपनक सम्पादन । अग्नि-शिखा (कविता संग्रह)।



कीर्तिनारायण मिश्र 1937-

जन्म ११ जुलाई १९३७ ई. कँ ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बेगूसरायमे भेलन्हि। हुनकर प्रकाशित कृति अछि सीमान्त,महानगर (दीर्घ कविता), हम स्वर नहि लिखब, ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप (एहि पोथीपर साहित्य अकादमी 1997 पुरस्कार), आदमीकेँ तोड़ैत (कविता संग्रह)। संस्मरण-अपन एकांत, स्मृति यात्रा, पत्रक दर्पणमे। सम्पादन- आखर मासिक पत्रिका, आधुनिक मैथिली साहित्य, '63, राजकमल जीवन आ साहित्य, '68, कथा-संकलन- काल कामिनी। आलोचना- अर्थान्त-2004



गौरीकांत चौधरीकांत 1937-2001



युगल किशोर मिश्र १९३८-२००१

मैथिली शब्दकोष।



प्रफुल्ल कुमान सिंह 'मौन' 1938-

ग्राम+यास्ट- हसनयून, जिला-समस्तीयून। मैथिलीम १.नयालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विनाटनगन,१९७२ई.), २.ब्रह्मग्राम(नियाॅज दनसॅंग। १९७२ ई.), ३.�मैथिली� त्रैमासिकक सम्यादन (विनाटनगन,नयाल १९७०-७३ई.), ४.मैथिलीक ननागीग (यटना, १९८८ ई.), ५.नयालक आधुनिक मैथिली साहित्य (यटना, १९९८ ई.), ६. प्रमचन्द चयनिग कथा, राग- १ आऽ २ (अनूनाद), ७. नाल्मीकिक दशम (महनान, २००५ ई.)। २००४- डॉ. प्रफुल्ल कुमान सिंह �मौन� (प्रमचन्द की कहानी-प्रमचन्द, हिन्दी) लल साहित्य अकादमी मैथिली अनूनाद यूनस्कान।



महेन्द्रनाथ मल्लिक 1938-



यनशुनाम झा १९३८-

गाम- मंहथ (मधुवनी), कृगि- ताइमन्नस □ह यीस इन इन्नलिश ड्रामा,क्रिश्चियन याउटिक ड्रामा।



कुलानन्द मिश्र 1940-2000

जन्म यकठी काठी, सीतामढ़ी, विहान। सुविख्याग कवि,, संयादक, समालाचक। प्रकाशिग कृगि- गानग ओव, रानक प्रगीजाम (कविगा संग्रह), रानाक राषा सर्वजेध, याना, नाजकमल चौधनी की थानह कहानियाँ (अनूनाद)।



विलट यासनान 'विहंगम' 1940-

जन्म मधुवनी जिलाक ओकहठा ग्रामम १९४० ई. म रलहि।



हजलुन नहमान हासमी 1940-2011

जन्म-यटना जिलाक वनाह गाममा वृगि अध्यायक। हिन्दी कविगा संग्रह "नश्मि नाशि" आ मैथिली कविगा संग्रह "निर्मोही" प्रकाशिग। १९९६म अवुलकलाम आजाद- अब्दुलकवी दसनवी, उर्दूसँ मैथिली अनूनादयन साहित्य अकादमीक मैथिली अनूनाद यूनस्कान।







गुणनाथ मा

गुणनाथ मा "लाक मञ्" मैथिली नाय्र यत्रिकाक संचालन - सम्यादन कन छथि। मैथिलीम आधुनिक नाटकक यृ यना। हुनकन नाटक सरु अछि:

मधुयामिनी: एकाङ्क नाय्र शैलीम दुटा यात्र, युनुष संयुक्त यनिवानक यञ लनिहान आ स्त्री गकन विनाथी।

याथेय: एकाङ्क नाय्र शैलीम नविन, मुदा यूर्णाङ्कक सरु विशेषना ओम रुटा। मुख्य अरिन्ना मिथिलाक अयोगनिसँ दुखी रुऽ गामकँ कर्मस्थली बनबैत छथि, स्वजन विनाथ कनै छथि।

लाल-वृम्ककन: एकाङ्क नाय्र शैलीम नविन। दाही नैदीसँ ममानल निम्न आ मध्य-निम्न वर्ग स्वांगाक यहिनहिया आ वादा जीविकायाजैन लल प्रवास कनवा लल अरिन्क छथि।

सागम चनिन: एकाङ्क नाय्र शैलीम नविन। मैथिली नंगमंचयन महिला अरिन्नीक अराव, सागम चनिक्र प्रनीजाम यूर्वायास स्थाम रुऽ जाल्ल अछि।

शेष नऽि: आधुनिक सामाजिक यूर्णाङ्क नाटक। यिना-मानाक मृयुक वाद अग्रजक अनुजक प्रति यिनृवन व्यवहान।

आजक लाक: यूर्णाङ्क नाटक। विषय निम्नमध्यवर्गीय बनाजगानी आ वियाहक दायित्वक वाम।

जय मैथिली: यूर्णाङ्क नाटक। मिथिलाक रािवक-सांस्कृतिक समस्या एकन कथावस्तु अछि।

महाकवि विद्यायनि: विद्यायनिक नव विश्लेषण।

प्रराास कुमान चौधनी 1941-1998

गाम- यिंडानुख, जिला- दनरंगा। ।प्रख्यान कथाकान आ उयन्यासकान । प्रराासक प्रकाशिन कृनि : कथा-प्रराास, प्रराासक कथा, नव घन उठय युनान घन खसय, दिवलल (कथासंग्रह), अरिन्क, युगयुनुष, हमना लग नहव, नवानह, नाजा याखनिम काक महनी (उयन्यास) । विनिन्न महत्वयूर्ण यत्रिकाक सम्यादन । त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगन नानि दीय जनय' कन प्रानह। १९९०- प्रराास कुमान चौधनी (प्रराासक कथा, कथा) लल साहित्य अकादमी युनस्कानसँ सम्मानिन ।

साकानन्द 1940-

वनिष्ठ कथाकान, गहनायक (कथा-संग्रह) लल साहित्य अकादमी युनस्कानसँ सम्मानिन। प्रकाशिन कृनि: मैथिली कथा साहित्यम 1962 स� सक्रिय । गोटक चालिस_यचास टा कथा, नियारनिउ. संस्मनण, यात्रा_विवनण मैथिलीम प्रकाशिन अधिकांश यत्र_यत्रिकाम छयल । यहिल मैथिली कथा �धोसियन� 1962म �मिथिलामिहिन�म प्रकाशिन । हिन्दियाम दु दर्जन कथा आदि प्रकाशिन । सन 99म छयल यहिल कथा_संग्रह �गहनायक� क उाही वर्ष �साहित्य अकादमी युनस्कान। येघ वाड्र� स� अवैवला विययिक नखाँकिन कनैत, यर्यावनण क कथा वस्तु वना क� नाजकमल प्रकाशन स� प्रकाशिन एवं अर्याम चर्चिन उयन्यास (�जैकुमंडी रिब्रान�) �सर्वखान्न�। आकाशवाणीक नाष्ट्रीय कार्यक्रमम प्रसानिन दु टा उल्लेखनीय वृन नुयक_ �महानन्दा अरियानम्� यन आधानिन �उंगल वालना हे� एवं मानखंड क ग्रामीण जनक ज्वलंन जाल्लक समस्या यन आधानिन वृन्दनुयक � नैना जागन � चर्चिन एवं प्रसिद्ध ।



गंगेश गुंजन 1942-

जन्म स्थान- यिलखवाड, मधुवनी। श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौवटिया नाटक वुधिवधियाक लखक छथि आ हिनका उचिनवक्ता (कथा संग्रह) क लल साहित्य अकादमी युनस्कान रुटल



प्रमशंकन सिंह 1942-

ग्राम+यास्ट- जगियाना, थाना- जाल, जिला- दनरंगा। मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक उ नंगमंच,मैथिली अकादमी, यटना, १९७८ २.मैथिली नाटक यनिचय, मैथिली अकादमी, यटना, १९८१ ३.युनुषार्थ उ विद्यायनि, मृचा प्रकाशन, राागलयुन, १९८६ ४.मिथिलाक विरृनि जीवन मा, मैथिली अकादमी, यटना, १९८७ ७.नाय्राह्यायय, शखन



मार्कण्डेय प्रवासी 1942-2010

जन्म ग्राम: गनुआन, जिला: समस्तीयुन । प्रकाशिन कृनि: अगस्त्यायिनी (महाकाव्य); एनदर्थ (कविना संग्रह), अजन वाना (काव्य संग्रह)। अरियान, हम

छथि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथिला पनिचय, लोक सुनु (कविता संग्रह), अह्वान- ऊर्जा (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आत्म रान (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मधिपस्मक नौका- बनिजानाक मैथिलीसँ हिन्दी अनूवाद आ शब्द शैयान हे (कविता संग्रह)। १९९४- गंगेश गुंजन (उचितवक्ता, कथा)पुस्तक लल सहित्य अकादमी पुनस्कानसँ सम्मानित ।

प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रयाधिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००७, ८.ऊर्जाधा, मृदा प्रकाशन रागलपुन २००८ ९.पुगसंधिक प्रतिमान, मृदा प्रकाशन, रागलपुन २००८ १०.चेतना समिति आ नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८। २००९ ऊी.-श्री प्रमशंकन सिंह, जोगियाना, दनरंगा। यात्री-चेतना पुनस्कान।

कालिदास (उपन्यास)। �अगस्त्यायिनी� लल १९८१मे साहित्य अकादमी पुनस्कान प्राप्त।



रवन्द्र झा १९४३-

गाम- चानपुना (मधुबनी), कृति- निश्चायणिक शृंगानिक पदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन, लालदास, सुधाकन झा "शास्त्री", अनूरल, बदलि जाऊक घन टा।



डॉ. रीमनाथ झा 1945-

जन्म:कोऊलख, मधुबनी, बिहान । प्रखन कवि, समालोचक, प्राध्यापक । �विविधा�निबन्ध पुस्तक लल सन् १९९२मे सहित्य अकादमी पुनस्कानसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: त्रिधाना, वीथा, की रूनैउ की नहि, नाम गँ थिक ओउरु (कविता संकलन), पनिचायिका, सीतानाम झा, कवि चूडामधिक काव्य साधना, विविधा (निबंध, आलोचना),टालन चौकसँ आदि ।



महेन्द्र मलंगिया 1946-

गाम- मलंगिया, जिला- मधुबनी । मैथिलीक सुपनिचित नाटककान, नंग निर्देशक एवं मैलानंगक संस्थापक अध्यक्ष । लोक साहित्य पन गंरीन शोध आलेख । मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा नतिया नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसानित । सीनियन रुलाशिप (रानत सनकान), ऊँटननशनल थिएटन ऊँस्टिच्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान आदि सँ सम्मानित । संप्रति श्यातिनीश्वन लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक वर्णनत्नाकन पन शोध कार्य । श्री महेन्द्र मलंगियाक जन्म २० जनवनी १९४६ म मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे रेलहि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली राषाक जानकान आ थियटन शिऊध, पटकथा लखन आ तत्सम्बन्धी शोधक फ्रीलान्स शिऊक छथि। २००२ ऊी.- श्री महेन्द्र मलंगिया, मलंगिया;यात्री-चेतना पुनस्कान। प्रबोध सम्मान 2005 सँ सम्मानित।



डॉ राम दयाल राकेश, सर्लाही, नेपाल 1942-

मैथिली मातृभाषा, हिन्दीक प्राध्यापक आ नेपालीक लेखक श्री गीनू दादा �राकेश�क व्यक्तित्व एना न मिसनाउल छैक जे कानहुँसँ हिलका स्थिर नहि कउल जा सकैत अछि। श्री विशेषता: नेपालीमे लिखैत छथि, मुदा लेखनक विषय मूलत: मैथिली ओ संस्कृति रहैत छनि। ओना मैथिली, हिन्दी आ अङ्ग्रेजीमे सेहो श्री अनेक रचना कएने छथि। नेपालक राजकीय-प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक सदस्य �राकेश� दिल्ली विश्वविद्यालयसँ पीएचडी आ अमेरिकास्थित इण्डियाना युनिवर्सिटीसँ पत्रकारिता निसर्व कएने छथि। डा. �राकेश�क जन्म २७ जुलाई १९४२ ई. कऽ सर्लाही जिलाक सिसौटियामे भेल छनि। नेपाली, मैथिली, हिन्दी आ अङ्ग्रेजीमे मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कऽ कनीव दु दर्जन पोथी प्रकाशित, दर्जनोंनि देशक प्रमुख सेहो कएने छथि। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम दयाल राकेश (1999)।



उपेन्द्र दोषी 1943-2001

जन्म स्थान नामपुर-कानिगामा, दरभंगा। कवि-कथाकार, गीत-गजलकार। प्रकाशित कृति: पंचध्वा (कविता संग्रह)। हिन्दीमे अनेक पोथी प्रकाशित। उड़ियासँ मैथिली अनुवाद हेतु मृत्युपरान्त साहित्य अकादमीसँ पुरस्कृत। २००३- उपेन्द्र दोषी (कथा कहिनी- मनोज दास, उड़िया) लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



उदयचन्द्र झा "विनोद" 1943-

जन्म 5 अप्रैल 1943 ई.। गाम- रहिका, मधुबनी। जन्म-ग्राम- दुलहा, मधुबनी। प्रकाशित कृति: संक्रान्ति, मौसम अपना पर, अहुना स्थितिमे, एनि दह गेना, अहि जनपदमे, दाहा गीत सप दु, कहलनि पड़ी, सहनशील, अपन, प्रश्नवाचक (कविता-संग्रह), धूनी (सहयोगी कविता संग्रह); जाँत (कथा संग्रह), उदास गाछक बसँ (नाटक)। �माटि पानि�क वनथ सम्पादक। २००१ ई.-श्री उदय चन्द्र झा �विनोद�, रहिका, मधुबनी; यात्री-चेतना पुरस्कार।



रवीन्द्र नाथ लाल, जनकपुर 1943-



मंत्रेश्वर झा 1944-

जन्म ६ जनवरी १९४४ ई. ग्राम-लालगंज, जिला-मधुबनीमे। प्रकाशित कृति: खाधि, अग्निस्नान गाम, वहसल नाविक इंजार (कविता संग्रह); एक बट दु (कथा संग्रह), उगमा लेख गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा संग्रहक हिन्दी अनुवाद �कंतली� नामसँ प्रकाशित। दि फूल पेनाल्टी (अंग्रेजीमे ललित निबन्ध)। २००६ ई.-श्री मंत्रेश्वर झा, लालगंज,मधुबनी यात्री-चेतना पुरस्कार। २००८- मंत्रेश्वर



नरेश्वर मिश्र 1945-

अनुवादक, निबंधकार। प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास,स्वरूप (हिन्दू अनुवाद)।

झा (कागक तनि
पर, आत्मकथा) पर साहित्य
अकादमी पुरस्कार।



जगदीश प्रसाद मंडल

गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.। कथाकार (गामक जिनगी-कथा संग्रह आ तरेगन- बाल-प्रेरक लघुकथा संग्रह), नाटककार(मिथिलाक बेटी- नाटक), उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत- उपन्यास)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)। मैथिली उपन्यास 'पंगु' लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार २०२१



राज



महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह

1858-1898



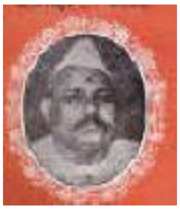
महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह 1860-1929



महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह 1907-1962



सर हरगोविन्द मिश्र, अलीगढ़ आ कामेश्वर सिंह



विनोदानन्द झा 1895-1971



ललित नारायण मिश्र 1922-1975



डॉ. रामबरन यादव, नेपाल राष्ट्रपति



स्वर्गीय विश्वेश्वरी प्रसाद मंडल, राजनेता 1919-1982



सूर्यदेव नारायण मण्डल



कर्पूरी ठाकुर 1921-1988



रामविलास पासवान १९४६-

जन्म ५ जुलाई १९४६, गाम- शहरवन्नी, जिला खगड़िया। राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ।



राम लखन राम "रमण"



राजेन्द्र झा



बाबुनाथ मिश्र



रमाकांत मिश्र



रमानाथ मिश्र "मिहिर"

"मैथिली मूल्यांकन एवम् लोकोक्ति प्रकाश" प्रकाशित।

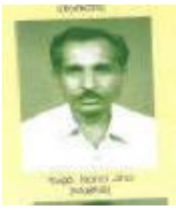


गजेन्द्र नारायण चौधरी, पत्रकार 1929-2008



मोहन भारद्वाज 1943-

गाम- बलानी, जिला- मधुबनी । मैथिलीक प्रखर समालोचक। २००७ ई.-श्री आनन्द मोहन झा, भारद्वाज, बलानी, मधुबनी; यात्री-



योगानन्द झा 1955-

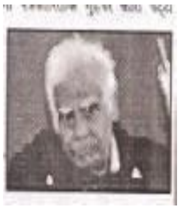
२००७- डॉ. योगानन्द झा (विहारक लोककथा- पी.सी.राय चौधरी, अंग्रेजी)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद

रचना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2008 सँ सम्मानित।

पुरस्कार। **प्रकाशित कृति:** लोकजीवन ओ लोक साहित्य (निबन्ध) 1986, पनिभौता (कथाकन्यांश) 1987, रूकीन मारुन सेनापति (अनुवाद) 2000, आलेख सञ्चयन (निबन्ध) 2002, बिहारक लोककथा (अनुवाद) 2003, स्नेहलता (विनिबन्ध) 2006, मैथिली पत्रकारिताक सौ वर्ष (निबन्ध) 2006, गहवरगीत (निबन्ध) 2007, लोक-साहित्य ओ शब्द-सम्पदा (निबन्ध) 2007, मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (शोध-ग्रन्थ) 2009



दीनानन्द झा "शास्त्री" ,पत्रकार



दीनानाथ झा, पत्रकार



नरेन्द्र झा, अर्थशास्त्री-पत्रकार

"विकास ओ अर्थतंत्र" प्रकाशित।



प्रेमशंकर झा, पत्रकार



शरदिन्दु चौधरी, पत्रकार



राजेश्वर झा (१९२३-१९७७)

जन्म- सहरसा जिलाक नसुआन गाम (आब सुपौल जिला)।

कृति- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास, अवहट्ठ: उद्भव ओ विकास, मैथिली साहित्यक आदिकाल, विद्यापतिक संगीत

वर्णित नायक-नायिका रूप एवं नाग-नागिनी वर्गीकरण।

महाकवि विद्यापति नाटक, गोरक्षविजय नाटक, कहयीघाट नाटक, एकादशी, विद्याधन-कथा, उर्वशी, धर्मध्वज- कथा, मनका।



एस. एन. सत्यार्थी

मिथिलाक कला आ शिल्पकलायन लेखन।



राधाकृष्ण चौधरी, इतिहासकार 1921-1985

मिथिलाक इतिहास, A Survey of Maithili Literature, THE POLITICAL AND CULTURALHERITAGE OF MITHILA प्रकाशित।



प्रो. रामशरण शर्मा १९२०-२०११



विजयकान्त मिश्र इतिहासकार 1927-1994

डॉ. विजयकांत मिश्रक जन्म १० अगस्त १९२७ मंगरौनी ग्राम- जे न्याय आ तांत्रिक साधनाक जन्म-स्थली अछि- (जिला मधुबनी) मे भेलन्हि। ओ 1948 मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विषयमे इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ स्नातकोत्तर उपाधि कएलाक बाद किछु वर्ख धरि बिहार सरकार आ पटना विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध रहलाह आ 1957 ई. सँ भारतीय पुरातत्व विभागमे काज कएलन्हि आ ओकर शिशुपालगढ़, कौशाम्बी, वैशाली, हस्तिनापुर, कुम्हरार, पाटलिपुत्र, कनियन, सारनाथ, विलावली, नालन्दा, राजगीर, चन्द्रवल्ली, आ हम्पी खुदाइमे विशिष्ट भूमिकाक भाग लेलन्हि। हिनकर लिखल-सम्पादित पोथी सभ अछि: 1.वैशाली,1950 2.कुम्हरार एक्सकवेशंस: 1950-1957 3.पुरातत्व की दृष्टिमे वैशाली 4.नागेश भट्टाज यानिरोधक्षत्रलेखन 5.मिथिला आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर (सम्पादित) 6.कल्चरल



द्विजेन्द्र नारायण झा, इतिहासकार



सुरेन्द्र झा, राजनीति विज्ञान

२००१- सुरेन्द्र झा (अरुन्धती विराट- जयन्त विष्णु नार्लीकर, मराठी)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

हनिटज रु मिथिला 7.श्रृंगार रचनावली- एक अध्ययन 8.उग्र यूनानीविज्ञान- 9.यूनानी शब्दावली।



रागीनथ लाल दास

रामाक कएक वर्ष राजदूत रहल छथि आ जी.ए.टी.टी. म रामाक प्रतिनिधि सेहो छलाह।



लक्ष्मीकान्त झा रिजर्व बैंक गवर्नर 1913-1988



एन. एन. झा डिप्लोमट



कामेश्वरनाथ झा "अमल" 1938-

जन्म- 4 जनवरी 1938, गाम कोइलख (मधुवनी)।
थिरांस (कथासंग्रह) प्रकाशित।



राधानारायण झा 1941-



रमाकांत राय "रमा" 1947

जन्म- राधा पूर्णिमा सम्वत् 2003, प्रथम रचना- वटृक, बाल मासिक प्रयाग, कथा विशेषांक द्वितीय भाग 1964ई., प्रकाशित कृति(क) गीनटा बाबाजी-(रुसीसँ मैथिलीम मैथिलीम टाल्सटायक कथाक अनुवाद-1967ई.म, (ख) फूलपात, कविता संग्रह 1978, (ग) रांगक शाला (2004 ई.म), (घ) कटैत पाँखि: हँसैत आँखि , कथा संग्रह-2005, शीघ्र प्रकाश्य- कृष्णकान्त मिश्र (विनिबन्ध) साहित्य अकादमी नई दिल्ली। प्राय: ३८ सए रचना (कथा-निबन्ध कविता) मैथिली हिन्दीक पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रकाशित/ प्रसारित। साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित कवि सम्मेलनक आयोजनक क्रमम रेलक चपेटम पडिदहिना पएर छावा धनिगमा विकलांग। सेवा निवृत्त अध्यापक

(उच्च विद्यालय) सम्पर्क- श्री नमानिवास, मानानाय टाल या. ननरुन (समस्तीयून)।



प्रारुसन मरुन्द्र 1947-

जन्म: रुलाही, सुयौल, विरुान । प्रसिद्ध कवि, कथाकान, आलावक । वृत्ति: रु.ना. विश्वविद्यालयक स्नाग्कात्तन कन्द्र, सरुनसाम मैथिली विराागाध्यक्ष। प्रकाशित कृति साहित्य अकादमीसँ प्राकाशित मानाग्रारु शैलन्द्र मारुन मा । सरुयागी संकलन-संकल्य । �नाजकमल जयन्ती प्रसंगक संयादन।



मरुन्द्र 1944-2009

जन्म मधूवनी जिलाक जमसम गाममा। प्रसिद्ध मैथिली गीग्कान आ गायक।



सुराषचन्द्र यादन 1948-

जन्म ०१ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुयौलमा। यैतृक स्थान: वलवा-मनारुी, सुयौल। घनदरिखया (मैथिली कथा-संग्ररु), मैथिली अकादमी, यटना, १९८३, रुाली (अंग्रजीसँ मैथिली अनूवाद), साहित्य अकादमी, नङ्ली दिल्ली, १९८८, वीछल कथा (रुनिमारुन माक कथाक चयन एवं रूमिका), साहित्य अकादमी, नङ्ली दिल्ली, १९९९, विरुाडि आउ (वंगला सँ मैथिली अनूवाद), किसुन संकल्य लाक, सुयौल, १९९१, रुानग-निरुाजन ञौन रिुन्दी उयन्यास (रिुन्दी आलावना), विरुान नाष्ट्ररुाषा यनिषद्, यटना, २००१, नाजकमल चौधनी का सरुन (रिुन्दी जीवनी) सानांश प्रकाशन, नङ्ली दिल्ली, २००१, वनैत-विगरैत (कथा-संग्ररु) २००९। मैथिलीम कनीव सत्तनि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ रिुन्दी, वंगला तथा अंग्रजी म अनक अनूवाद प्रकाशित।



सूरुन्द्र मा 1909-2000

"रुॉर्मशन ऑरु मैथिली लेंगुएज"क लखक। १९८६- सूरुन्द्र मा (नाटिक यत्रक उत्तन, निवन्ध)यन मैथिलीक साहित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानित।



नामानतान यादन, मैथिली रुाषिकी, नयाल 1942-

दश-विदशक रुाषाविस्नान जर्नलम यवासा आलखक द्वाना मैथिलीक विशिष्टताकँ उजागन कनिरुाना। *मैथिली ध्वनिशास्त्र* 1984 र्इ. म जर्मनीसँ आ *मैथिलीक संक्षिप्त व्याकनण* 1996 र्इ. म वर्लिन आ न्यूयार्कसँ प्रकाशित। 2000 र्इ..म लंदनसँ प्रकाशित *रुानतीय आर्यरुाषायूस्तक* म संकलित रिुनकन मैथिली रुाषा संवंधी



याागेन्द्र प्रसाद यादन, रुाषिकी, सिनरुा, नयाल 1946-

1998 र्इ. म जर्मनीसँ प्रकाशित *रुङ्गुज ङ्ङन मैथिली सिंटैक्स आ टॉयिक्स ङ्ङन नयालीज लिग्विस्टिक्स, नीतिंग्स ङ्ङन मैथिली लंगुएज- लिटनचन एण्ड कल्चन आ लक्ष्मीग्राद्वी ङ्ङन नयाल* (सम्यादित) प्रकाशित। नयाल नाजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानम रुाषा-विराागक प्रारुु नहि कताक मरुत्त्वयूर्ण कार्यक सम्यादन। नयाल

आलख विशेष उल्लखनीय। नयाल नाजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ यासाढ ह्वाम् प्रज्ञा-पुनस्कानसँ सम्मानित।

प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्या श्री यागेन्द्र प्रसाद यादव (1994)। नयाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आजीवन सदस्या श्री यागेन्द्र प्रसाद यादव।



नमानन्द झा 'नमध'

1949-

जन्म: 02 जनवनी 1949, शिक्षा- एम.ए., पीएच.डी., आजीविका- स्तानीय निजर्व वैंक, पटना (सवा निवृत्त)। **प्रकाशन:** 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली नडव कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य डा नाजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. वसाहल,2003, 6. स्जानल, 2005., 7. निर्याण कौस शुनु कनं? हिन्दी- निजर्व वैंक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित 8. मैथिलीक आनन्दिक कथा, 1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द नचनानली, 1981, 10. जनार्दन झा जनसीदन कृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. चन्दनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. गजनाथ झाकृत सुननाजविजय नाटक (1919), 1994, 13. नासविहानीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीवछ मिश्रकृत नामश्वन (1916), 1996, 15. स्टघाँट (स्टवार्ता), 1998, 16. नुवय गँ सय न गँ स्तुसि, 1998, 17. पुश्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. यदुनन्दन नचनानली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विननद्ध, 2005, 20. मैथिली उपन्यासम चित्रित समाज, 2003। अनुवाद लल **स्तावा-स्तानी सम्मान** 2004-05 (सी.आइ.आइ.एल., मैसून) डडा विगहा आ0 कहा- स्तीन माहन सनायणिक उडिया उपन्यासक मैथिली अनुवाद लल प्राप्त।



नामलावन 0ाकुन 1949-

श्री नामलचन 0ाकुन, जन्म १८ मार्च १९४९ डी.पलिमाहन, मधुवनीमा। वनिष्ठ कवि, नंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। स्ताषाडी आश्वलनम सक्रिय स्तागीदानी। **प्रकाशित कृति-** डतिहासहन्ता, माटियानिक गीत, दशक नाम छल सान चिडैया, अपूर्णा (कविता संग्रह), वगाल कथा (ग्रंथ), मैथिली लाक कथा (लाककथा), प्रतिध्वनि (अनुदित कविता), *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ*(अनुदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तनित (कविता), जादुगन (अनुवाद), स्मृतिक धाखनल नंग (संस्मनणात्मक निवन्ध), आँखि मूनन: आँखि खालन (निवन्ध)। अनुवाद लल **स्तावा-स्तानी सम्मान** 2003-04 (सी.आइ.आइ.एल., मैसून) *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ* शक्ति चट्टापाध्यायक वांग्ला कविता-संग्रहक मैथिली अनुवाद लल प्राप्त। विदह सम्पादकक समानान्तन साहित्य अकादमी पुनस्कान २०१२ अनुवाद पुनस्कान- श्री नामलावन 0ाकुन- (पद्मानदीक माझी, वांग्लासँ मैथिली अनुवाद, वांग्ला-उपन्यास - मानिक वंद्यापाध्याय)



गंगा प्रसाद मंडल "अकेला", नयाल 1944-

यं सुन्दन झा शास्त्री नाष्ट्रिय प्रतिस्ता पुनस्कानसँ सम्मानित। मिथिलांचलक किछु लाक कथा (संकलन आ सम्पादन) आ शिनीषक स्तूल (अनुवाद) प्रकाशित।



महेन्द्रनारायण निधि, धनुषा, नेपाल



रामभजन कायस्थ, धनुषा, नेपाल



जयनारायण झा "जिज्ञासु", नेपाल



सुरेश झा, नेपाल 1920-1995



साहित्यी रमण झा 1950-



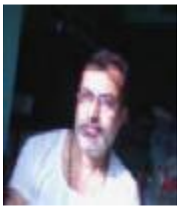
डॉ. कमलाकान्त भण्डारी 1952 -

कवीन (मैथिली) एवं लेखक।



विनोद बिहारी लाल 1953-

जन्म स्थान यदही, मधुबनी, बिहार। वरिष्ठ कथाकार। सयसँ उपर कथा प्रकाशित।



अनिरुद्ध ठाकुर 1954-

धरती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह), अज्ञानक निनाश्रम (कथा संग्रह), बहुरिया ब्रदश म (गजल संग्रह)।



श्याम दरिहरे 1954-

जन्म स्थान वनहा, बनीरही मधुबनी, बिहार। कवि, कथाकार। प्रकाशित कृति : सरिसाम रूप (कथा संग्रह) अनूदित कृति : कनुप्रिया (धर्मवीर भारती)



दिनेश कुमार झा

मैथिलीक इतिहासपर लेखन।



अशोक कुमार ठाकुर

जन्म 2 जनवरी 1944 ई.। ग्राम बड़गाँव (पंडौल)।



प्राणनारायण झा, नेपाल

नागमंडल (नाटक-अनुवाद), निशांत, बसुधाक संतान (उपन्यास)



शीतल झा, नेपाल



उग्रनारायण मिश्र "कनक"



डॉ. शम्भुनाथ चौधरी 1920-2008



कृष्णकांत झा



पंचानन मिश्र



प्रारूसन गुनमेगा

स्वागिनीश्वनयन लखना।



महेन्द्र नारायण सिंह "मगन"



सूर्यकांत झा, जनकपुर



रमण झा (1957-)

रचना: पश्चात्ताप (कथा-संग्रह)-1995, काव्य-नाटिका (कविता-संग्रह)- 1999, अलंकार-दर्पण (पूर्व-खण्ड) - 2002, अलंकार-दर्पण (अलंकार शास्त्र)- 2003, भिन्न-अभिन्न (समीक्षा)- 2008, सं. सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका) - 1996, सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका)- 2007,2008



बिजयनाथ झा

"अर्हींक लल" (गीत-गजल संग्रह प्रकाशित)।



योगानन्द हीरा



बाबा वैद्यनाथ

यहूना क्लमानयन (गजल संग्रह)



जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" १९५०-

मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950,गंगुआन, मधुबनी । सेवा निवृत्त बैंक अधिकारी। मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-1. गाना अतनाम -गीत संग्रह-1978; 2. धानक उठ्ठ यान-दीर्घ कविता-1999, गीत गंगा (गीत संग्रह), गजल गंगा (गजल संग्रह)।



विद्यानन्द झा 1965-

वृद्धयुर्णिमा, १९६५ंक कॅथिनियाँ, संमानपुन मधुबनीमे जन्म। यनागी जकाँ, विष्ठेल काना यिमीत जकाँ, दनूरूक फूल जकाँ (कविता संग्रह) प्रकाशित । मूलतः कवि, थोड़ कथा लिखलनि, जे अपन मार्मिक अभिव्यक्तिक कारण बेस चर्चित रहल । वितम्बनापूर्ण यनिस्थितिक याठ्ठ जिम्मवान समाजार्थिक कारणक खोज हिनकर मूल सृजन प्रेरणा थिक ।



हरनकृष्ण झा 1950-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- काउललखमा। अरिव्यंजक अध्ययन छाडि मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिया। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक गादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। "एना त� नहि जे" (कविता संग्रह)।२००८ ई. -श्री हरनकृष्ण झाकेँ कविता संग्रह �एना त नहि जे�लल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



उदय नारायण सिंह नचिकेता 1951-

जन्म-१९५१ ई. कलकत्तामे। यहिल काव्य संग्रह �कनया नदन्हि�। १९७१ �अमृतस्य पुत्राः� (कविता संकलन) आऽ �नायकक नाम



आशीष अनचिन्हार

मूल लेखन: कुमानि क्लच्च (गजल संग्रह), उंघाजाठी (गजल संग्रह), अनचिन्हार आखर (गजल, रूबाई आ कताक संग्रह), मैथिली गजल



कुमान यवन 1958

गाम मुतैठी। कथा संग्रह, कविता संग्रह आ यांत्र संग्रह शीघ्र प्रकाश्य। मैथिलीमे १९८० ई सँ नियमित लेखन। २००८ ई. सँ

जीवन� (नाटक)| १९७४ म �एक छल राजा�/ �नाटकक लल� (नाटक)। १९७६-७७ �प्रत्यावर्त्तन�/ �रामलीला�(नाटक)। १९७८म जनक आऽ अन्य एकांकी। १९८१ �अनुत्तरण�(कविता-संकलन)। १९८८ �प्रियंवदा� (नाटिका)। १९९७-�रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य�(अनुवाद)। १९९८ �अनुकृति�- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। १९९९ �अश्रु ओ परिहास�। २००२ �खाम खयाली�। २००६मे �मध्यमपुरुष एकवचन�(कविता संग्रह। २००८ ई. मे नाटक "ना ओधरी: मा प्रविश" सम्पूर्ण नूतन "विदेह" ई- पत्रिकामे धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भए एकटा कीर्तिमान बनलक। २००९ ई.-श्री उदय नारायण सिंह �नचिकेता�केँ नाटक ना ओधरी: मा प्रविश लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।

क व्याकरण ओ इतिहास, मैथिली नव प्रकाशिताक इतिहास, मैथिली गजलक नवी स्थापन, शब्द-अर्थ-शक्ति।

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन): मैथिलीक प्रतिनिधि गजल, मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

दस सालक मौन रंगक बाद पुनः नवनाक दासन पालीक प्रारम्भ।



कीर्तिनाथ झा 1955-

कुनल: मैथिली रामायण



महेन्द्र हजारी



स्व. चन्द्रकान्त मिश्र, आसी, दरभंगा।



स्व. महेन्द्र नारायण झा, बलौंजा, मधुबनी



स्व.राजकुमार मल्लिक, सारुनाथ (पाखनिरीआ), मधुबनी



लक्ष्मीपति सिंह



फूलचन्द्र मिश्र रमण



किशोरनाथ झा



सूर्यनारायण झा "सरस"

गाम- सिहा, पो. सनिसरपाही, मधुबनी। "लोकवेद" पोथी प्रकाशित।

पोथी "मैथिली श्री सीतारामचरितमानस" प्रकाशित।



कलानन्द भट्ट

काँच परक लहास रूमन मैथिली गजल संग्रह



दयानाथ झा

गाम नागदह, मधुबनी। मैथिली रंगमंचक मिथि-यात्रिक, कोलकाता।



डॉ. सुधाकर चौधरी १९४६-

जन्म १७ मार्च १९४६ ई.। प्रकाशित पोथी: काजर, तीन रंग सात चित्र (कथा संग्रह), पंडी जी छथि (प्रहसन), निर्वाणी सुराज (नाटक)।



स्व. चुनचुन मिश्र, नहिका, मधुबनी।

मिथिला नाटक आन्दोलन कर्मी।



सत्यनारायण लाल कर्ण

मिथिला चित्रकला



ले. कर्नल मायानाथ झा 1945-

जन्म 1 अप्रैल 1945 ई.।
गाम- रनाम (मधुबनी)। जकर नारि चतुर होइ (मैथिली लोक कथा संग्रह) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)



श्याम किशोर सिंह



सचिन्द्रनाथ झा

मिथिला लोक चित्रकला



कालीनाथ ठाकुर

ग्राम सर्वसीमा



राजेन्द्र विमल, जनकपुर, नेपाल 1949-

मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिवाक एकम विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि। कथा लिखिकऽ यथेष्ट यश अर्जनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक संगसंग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन कएनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाल छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई.कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा.धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि।



रमेश कुमार विकल 1950-

जन्म २१ जुलाई १९७० भगवानपुर देसुआ (समस्तीपुर)। काव्य- अभियान, महुआ मदन रस टपकय, बिन पानी दीप जरय। कथा-संग्रह- भरि गेल दर्दक ईनान। उपन्यास- टहकैत टीस। नाटक- बाखरि खोंच।



जनक किशोर लाल दास



कृष्णचन्द्र झा "मयंक"



लक्ष्मण झा "सागर" 1953-

"उगल पेसू कौआ" मैथिली कविता संग्रह प्रकाशित।



रघुवीर मोची



शान्तानन्द दास "अनिमल"



शशिनाथ मिश्र "शशि" 1946-



सुरेन्द्रनाथ



अमरनाथ

१९७५ ई. मे "जड़िका" लघुकथा संग्रह प्रकाशित। हास्य कथाकार।



बबुआ ठाकुर



बुद्धिनाथ मिश्र



राजाराम सिंह राठौर, धनुषा



बैद्यनाथ विमल 1955-



डॉ बासुकीनाथ झा 1940-



शिवेन्द्र मिश्र "जीवन"



वीरेन्द्र नारायण झा



वीरेन्द्र झा 1956-

गोनू झा पर लेखन।



बैकुण्ठ झा 1954-

पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म- २४-०७-१९५४ (ग्राम-हरनाड़ा, जिला-दरभंगा), शिक्षा- स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र), पेशा- शिक्षक। मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गोटेक रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक "हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी" क लेखन।



बैकुण्ठ झा



विद्यानन्द झा 'पञ्जीकार' 1957-

जन्म- 09.04.1957, पण्डुआ, तौल, ककरौड़(मधुबनी), रशाढ्य(पूर्णिया), शिवनगर (अररिया) आ सम्प्रति पूर्णिया। पिता लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया। पितामह-स्व. श्री रिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष

एकर अलावा हिन्दीमे लगभग १७ उपन्यास तथा कथाक लेखन।

धनि 1970 ई.सँ 1979 ई. धनि अध्ययन, 22 वर्षक वयससँ पत्री-प्रबंधक संबद्ध आ संपादन संलग्न। कृति- पत्री शाखा पुस्तक लिपिबद्ध आ संबद्ध।



महेन्द्र नारायण कर्ण



डॉ. विश्वेश्वर मिश्र



अर्जुन नारायण चौधरी



नरेन्द्र

गजलकार।



महेन्द्र मिश्र, नेपाल



कमल कांत झा 1943-



महाप्रकाश 1946-

जन्म: बनगाँव, सहरसा, बिहार। वरिष्ठ कवि आ कथाकार। प्रकाशित कृति: कविता संग्रह, संग समय के (कविता संग्रह)। कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान २०१० ई.- श्री महाप्रकाश (कविता संग्रह �संग समय के�)।



छत्रानन्द सिंह झा 1946-



अयोध्यानाथ चौधरी, धनुषा, नेपाल 1947-

मूलतः कविक रूपमे परिचित छथि। नेपालक आधुनिक कविताक उत्थानमे हिनक नाम उल्लेखनीय अछि। श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि। कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि। ऐतिहासिक लेखन हिनक विशेषता थिकनि। धनुषा जिलाक दुहबी गामक निवासी श्री चौधरीक जन्म ६ अक्टूबर १९४७ क' भेल छनि। हिनक प्रतिनिधि उद्यान नामसँ एक कविता-संग्रह प्रकाशित छनि।



विद्यानाथ झा 'विदित'



सियाराम झा "सरस" 1948-

जन्म स्थान मंगरौना, मधुबनी बिहार। प्रसिद्ध गीतकार, वादमे कथा लेखन प्रारम्भ कयलनि। प्रकाशित कृति आंगन रवि सिंगरहार, शोणिताक्त उगैत सूर्यक धमक (कथा संग्रह)।



अग्निपुष्प 1948-

जन्म: गनौली, दरभंगा। मूलनाम : महेन्द्र झा। मैथिलीम सद्यःप्रकाशित कविता संग्रह प्रकाशित। मुक्ति प्रसंगक अनुवाद प्रकाशित। वामपंथी आन्दोलनमे सक्रिय। शिक्षा, सम्वाद आदि पत्रिकाक सम्पादन। वामपंथी विचारधाराक सशक्त कवि।



मधुकान्त झा 1949-



वीनू राजू



सच्चिदानन्द पाठक



योगीराज



कुणाल 1951-



राम भरोस कापड़ि भ्रमर, धनुषा, नेपाल 1951-

जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)। प्रकाशित: तोरा संगे धूँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), रानी संग जखनी ग कुजवा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर वसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्हार (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सरक संग्रह), विसनल-विसनल

सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्स), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता- श्री राम रमास कार्यते 'अमन' (2010)।



धीरेन्द्रनाथ मिश्र



शिवेन्द्रलाल कर्ण, धनुषा, नेपाल 1951-

लेखकसँ अधिक शिक्षकक रूपमे परिचित आ प्रतिष्ठित छथि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा. ब. कैम्पस, जनकपुर-धामक सह-प्राध्यापक श्री कर्णक ऐतिहासिक विषय-वस्तुपर लिखल कतेक लेख मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजी भाषामे प्रकाशित अछि। स्वान्त-सुखाय ई कहियो कालकऽ कविता-कथा सेहो लिखि लैत छथि। हिनक लेखन ज्ञानवर्द्धक, जानकारीमूलक एवं सामान्यतः नवीन अछि। देखलापर बूझना जाइत अछि जे ई हिनक गम्भीर अध्ययनक परिणति थिक। सामाजिक तथा साहित्यिक संघ-संस्थासभसँ सेहो सक्रिय प्राध्यापक कर्णक जन्म धनुषा जिलाक देवडीहा गाममे २ जनवरी १९५१ ई. कऽ भेल छनि।



ब्रह्मदेव लाल दास



चण्डेश्वर खान

ग्राम- पट्टीटोल, जिला मधुबनी। लघुकथा लेल चर्चित प्रशंसित।



दयाकान्त झा



राजेन्द्र नारायण सिंह, नेपाल



पद्मश्री श्री राजेन्द्र नारायण सिंह



हरिकान्त झा



इन्द्रनारायण झा



प्रवासी साहित्यालंकार



सीताराम सिंह



गुलानन्द मिश्र



शैलेन्द्र कुमार झा 1952-

जन्म स्थान हरिपुर, बकशी टोल, मधुबनी बिहार। प्रकाशित कृति: आगाह अनगाह, दशम खुट्टी (कथा संग्रह), इकानामिक हिस्ट्री ऑफ मिथिला (अंग्रेजी) ।



शिवशंकर श्रीनिवास 1953-

जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार ओ आलोचक। गीत ओ कविता सेहो कहियो काल लिखैत छथि। प्रकाशित कृति : त्रिकोण, अदहन, गाछ-पात, गामक लोक (कथा संग्रह)।



अशोक 1953-

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, कवि ओ सम्पादक। प्रकाशित कृति : चक्रव्यूह (कविता संग्रह) त्रिकोण (सहयोगी कथा संग्रह), ओहि रातिक राग (कथा-संग्रह), मातवर (कथा संग्रह)।



विभूति आनन्द 1953-

जन्म: शिवनगर, मधुबनी, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार, संपादक। प्रकाशित कृति दूटा उपन्यास दूटा समीक्षा, तीन टा कथ संग्रह, दूटा गीत-गजल संग्रह ओ बालनिटा कथा-संग्रह
प्रकाशित। २००६- विभूति आनन्द (का0, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



केदार कानन 1959-

जन्म स्थान सुपौल, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार ओ संपादक। प्रकाशित कृति : आकार लैत शब्द (कविता संग्रह), अनुदित कृति राजा राम मोहन राय, प्रायश्चित। सम्पादन संकल्प, राती मंडन (पत्रिका)।



डॉ. शशिनाथ झा 1954-

ग्राम-दीप, जिला- मधुबनी। मैथिली, बांग्ला, नेवारी आ देवनागरी पांडुलिपिक विशेषज्ञ। साहित्य अकादमीक भाषा सम्मान 2007 क्लासिकल आ मध्यकालीन साहित्य लेल।



धनुर्धर झा

ग्राम- बिरौली। "वाक्यार्थविवरणम्" लेल श्रीवाणीपुत्रालंकरण। पुरस्कार 2010 प्राप्त।



शिवकान्त पाठक



डॉ. योगेन्द्र पाठक "वियोगी", वैज्ञानिक

"विज्ञानक बतकही" प्रकाशित।



राजनन्द झा

२००६- राजनन्द झा (कालबेला- समरेश मजुमदार, बांग्ला)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



आद्यानाथ झा "नवीन"



अमलदास 1956-



चंद्रनाथ मिश्र



दिगम्बर ठाकुर



गणेश झा 1950-



कन्हैयानारायण लाल कर्ण



शैलेन्द्र आनन्द 1955-



कमलाकांत झा

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना



ललन प्रसाद ठाकुर 1951-1995

जन्म ७ जनवरी १९५१ मुंगेर मे श्रीमती सुभद्रा देवी आ श्री दीनानंद ठाकुरक द्वितीय बालक । हिनक ग्राम-समौल,जिला-मधुबनी। सिविल इंजीनियर, टाटा स्टील चाकरी। प्रकाश झाक फिल्म "कथा माधोपुर की" मे मुख्य भूमिका। नाटककार आ मंच अभिनेता। हिनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिली नाटक छन्हि :चलता साहेब,मिस्टर नीलो काका, लौंगिया मिरचाई,चकलेल आदि ना अंग।



डॉ. कमलानन्द झा



लोकनाथ मिश्र



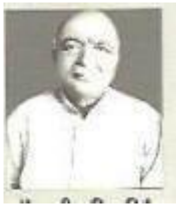
डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी 1966-

जन्म:5 मार्च 1966 ई. गनपतगंज, सुपौल। मैथिलीक प्राध्यापक। राज्यमंत्रीक पदक आ बिहार आ झारखण्ड सरकार द्वारा पुरस्कृत। झारखण्डक मैथिली आन्दोलनमे अग्रणी।



अशोक अविचल

जन्म- ७ जनवरी १९६७, गाम- नरुआर संग्राम, जिला मधुबनी। मैथिली प्राध्यापक। रचना: एक चनु नक चनु (लघु नाटक), मैथिली भाषा: सर्वेक्षण आ विश्लेषण, हमरा देशक भागम (मैथिलीक प्रथम असंगत नाटक), सम्पादन: झारखण्डक सनेश, कपाट (नौ अंक), झारखण्ड वाणी (हिन्दी साप्ताहिक), सम्मान: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक सम्मान (२०००), परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति सम्मान (२००८)



डॉ. श्रीपति सिंह १९४४-

"उमंग-तरंग" कविता-संग्रह प्रकाशित।



डॉ. उमाकान्त

मैथिली व्यंग्य-आलेखक पोथी "अपन बात" प्रकाशित।



सुशील 1942-

अस्मिता (लघुकथा संग्रह), रामती (नाटक) प्रकाशित।



श्रीदत्त

मूल नाम- बागेश्वर झा। कथा-संग्रह "हिलकान", नाटक "लाल्हक कठना", गीत-प्रबन्ध "पुलामा" प्रकाशित।



सुकांत सोम 1950-

जन्म दरभंगा जिलाक गनौली ग्राममे 1950 ई. मे भेलन्हि । बी. ए. पास कए ई पटनाक दैनिक �जनशक्ति�क सहायक सम्पादक भेलाह । हुनक नव रागक टाल्स्म, पटनामे बाल्यावस्थासँ अपन पैतृक (पिता पाण्डीजी) गुणे कविता करबाक तथा कथा लिखबाक सेहो यश अर्जन कएलन्हि अछि । वर्त्तमान राजनीति सामाजिक विषयसँ सम्बद्ध व्यंग्यात्मक, सरल रचना लिखल नव कविता हिनक विशेषता छन्हि । ग्रामघरक परिवेश परदनकुल शब्द एवं बिम्ब रचनामे क्रमहि सिद्ध छथि ।



डॉ. देवकांत मिश्र 1952-

पिता कविचूडामणि पं. काशीकांत मिश्र "मधुप", "पनीपुर अनुमण्डलमे मैथिली" पोथी प्रकाशित।



डॉ. नित्यानन्द लाल दास

पिता स्वर्गीय सूर्यनारायण दास। किशनगंज कॉलेज, किशनगंज सँ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष पदसँ १९९८ मे अवकाशप्राप्त। डॉ. सुरेन्द्र झा "सुमन"क संयोजकत्वक कार्यकालमे "मैथिली परामर्शदातृ समिति" (साहित्य अकादमी, दिल्ली)क सदस्य। मैथिली पत्रिका सभ जेना वटुक, प्रयाग; मिथिला मिहिर, पटना; स्वदेश, दरभंगा; पहुँच, पटना आ पटी पलान, अतिनियाम नवरा प्रकाशित। १९६१ ई. सँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मे सक्रिय। प्रांतीय प्रतिनिधि २००४ धरि जिला सहसंघचालक। जे.पी. आन्दोलनमे लोकतंत्र सेनानी। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामक अंग्रेजी पोथी "इग्नाइटेड माइन्ड्स"क मैथिलीमे "प्रज्वलित प्रज्ञा" नामसँ अनुवाद। साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार २०१०- डॉ. नित्यानन्द लाल दास- (इग्नाइटेड माइन्ड्स- डॉ. ए.पी.जे. कलाम, अंग्रेजी) लेल।







नाजनाथ मिश्र 1950-

"अ वर्ष आ्ुं ब्यु न मिथिला" प्रकाशित।

यशुयतिनाथ मा, मह्लाप्दनी, नयाल 1954-

ह्निक लखन विवनधात्मक हाउुन अछि आ सम्बद्ध विषयम नीकजकाँ जानकानी दैत अछि। विभिन्न यत्र-यत्रिकाम ह्निक लख-नवना वनावनि दखवाम अवैत नहैछ।ना.ना.व. कैम्पस, जनकयुनधाममे मैथिली विषयक प्राध्यायनम संलग्न श्री मा मैथिलीसम्बद्धी सदृOनात्मक गतिविधिसँ सहृ जुउल छथि। मैथिली रृाषाक लायाम्रुख अवस्थाम नहल अयन लियि तिनह्नाम विशेषरृुता नखनिहान श्री मा धकन संनऊध-सम्वद्धनक दिशाम सह्ल क्रियाशील छथि।प्रध्यायक मा मैथिली मह्लाकाव्यम नस निनूयध विषययन विद्यावानिधि कधन छथि आ शिजा तथा कानून विषयम सहृ स्नातक छथि। मह्लाप्दनी जिलाक धकनह्निया नहनिहान श्री माक जन्म ४ दिसम्बन १९७४ कs हलछनि।वर्त्तमे मिथिला नत्नसँ सम्मानित।

अनिलवद्ध ठाकुन 1954-2009

जन्म 13 सितम्बन 1954 ई.कँ कटिह्लान जिलाक समेली गाममे हलाहि। 1982 ई.म हिन्दी साहित्यम स्नातकोत्तन कलाक वाद नवम्बन '93 सँ नवम्बन '94 धनि "सुवह" हस्तलिखित यत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कधलहि आ काशी ऊत्रीय ग्रामीध वैंकम अधिकानी नहथि। मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीम समानूयेँ लखन। मृत्युक यूर्व वृन घुमनसँ वीमान वलि नहल छलाह। **प्रकाशित कृति**: आव मानि जाउ(मैथिली उयन्यास)- यहिन रानी-मंजन यत्रिकाम प्रकाशित हल, हुन मैलानंग द्वाना युस्तकाकान प्रकाशित हल।; कव(अंगिकाक यहिल खण्ड काव्य,1975); धक ठौन नाम (हिन्दी नाटक,1981); धक घन सजक यन (हिन्दी उयन्यास, 1982); द ययन्न (अंग्रेजी उयन्यास, 1990); अनत कहाँ सुख यावे (हिन्दी कहानी संग्रह,2007)। आव मानि जाउ (मैथिली उयन्यास) - धहि उयन्यासम धक धहन युवतीक संघर्ष-गाथा अंकित अछि ज अयन लगनसँ जीवन वदलैत अछि। असंख्य गामक ई कथा कुलीनताक अधःयतनक कथा, संधानविहीनताक उद्घाटन आ रुविवेक यीडीकँ ववधवाक कथानी छी।



वृषश वद्ध लाल

जन्म 29 मार्च 1955 ई. कँ हलाहि। यिताः स्व. उदितनानायध लाल,माताः श्रीमती युवनश्वनी दवी। ह्निकन छOह्लानक नाम विश्वश्वन छहि। मूलतः नाजनीतिककर्मी। नयालम लाकतन्त्रलल निनन्धन संघर्षक क्रमम ११ वन गिनफ्तान। लगरृग ८ वर्ष जल।सम्प्रति तनाई�मधेश लाकतान्त्रिक यार्टीक नाष्ट�ीय उयाध्यज।



नानायधजी 1956-

जन्म: घाघनडीहा (मधुवनी)। मैथिली रृाषा-साहित्यम धम. ध., यी-धच. डी. कामश्वन लता संस्कृत विद्यालय, घाघनडीहाम अध्यायन। प्रकाशित कृति: �घनि घूनि नहल छी� (काव्य-संग्रह)।



डॉ. श्री श्रीशंकन मा 1952-

मैथिलीमे किछु कथा विभिन्न पत्रपत्रिकामे प्रकाशित। आन्दोलन कविता संग्रह आ बी.पी. कोइरालाक प्रसिद्ध लघु उपन्यास मोदिआइनक मैथिली रुपान्तरण तथा नेपालीमे संघीय शासनतिर नामक पुस्तक प्रकाशित। डा. विश्वेश्वर प्रसाद कोइरालाक प्रतिबद्ध राजनीति अनुयायी आ नेपालक प्रजातांत्रिक आन्दोलनक सक्रिय योद्धा छथि। नेपाली राजनीतियेन बनावनि लिखैत रहैत छथि।



जगदीपनारायण "दीपक"



राजदेव मंडल

शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल एल बी., पता- ग्राम- मुसहरनियाँ, रतनसारा (निर्मली, मधुबनी)। **प्रकाशित कृति**- अम्बरा-कविता-संग्रह, हमर टोल (उपन्यास), वसुंधरा(कविता संग्रह), जाल (पटकथा), लाज (एकांकी), जल रंगन (उपन्यास), त्रिवेणीक रंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह), पंचैती (लघु पटकथा), नायसी।



शिवप्रसाद यादव



धीरेन्द्र कुमार झा 1958-

जन्म 30 अगस्त 1958, ग्राम- कोइलख (मधुबनी), पिता श्री कामेश्वर नाथ झा। प्रांसदर्शन (मैथिली कथा संग्रह) प्रकाशित।



मानेश्वर मनुज 1958-

जन्म गढ़निया (मानयौन, मधुबनी)मे, 1978सँ 1992 धरि नौसेनामे विभिन्न जहाजपर कार्यरत, हर यात्री नलमा। सम्बन्ध (कथा संग्रह) प्रकाशित।



रवानाथ झा



मरुड्ढ नानायध नाम 1958-



गानानद्द नियागी 1966-

मरिषी, सरुनसाम जन्म। यरिल याथी अयन यूड्डक साङ्घ (गजल संग्रह) १९९१ म प्रकाशित। अन्य यूस्फक रुस्फउय, प्रलय नरुश्य(कनिता-संग्रह), अगिक्रामध (कथा-संग्रह), शिलालख (लघूकथा संग्रह), कर्मधानय। नाजकमल चौधनीक कथाकृगि ॐकटा चंयाकली ॐकटा निषधन संकलन-सयारुन। साहित्य अकादमी मैथिली वाल साहित्य यूनस्कान २०१०-गानानद्द नियागीकँ याथी "ॐ रुटल गँ की रुटल" लल। यात्री-चाना यूनस्कान २०१० ॐ.- डॉ. गानानद्द नियागी।



रालचड्ड मा

ॐ.टी.डी., वी.ॐ., (अर्थशास्त्र), मूम्बॐीसँ थिॐटन कलाम तिप्लामा। मैथिलीक अगिनिक्र रिन्दी, मनाठी, अग्रेजी आ गुजनागीम निष्नाग। १९७४ ॐ.सँ मनाठी आ रिन्दी थिॐटनम निदशक। महानाष्ट्र नाग्य उयाधि १९८६ आ १९९९ मा। आॐ.ॐन.टी. कन लल नाटक �सीता� क निर्देशन। �नासुदन संगगि� आॐ.ॐन.टी.क लाक कलाक शाध आ प्रदर्शनसँ ज्ञुडल छथि आ नाय्यशालासँ ज्ञुडल छथि निकलांग वाल लल थिॐटनसँ। निम्न टी.नी. मीतियाम नचनाभ्रक निदशक नुयँ कायी लखन-वीठ्ठल वनायल मनाठी ॐकांकी(अनूनाद), सिंरानलाकन (मनाठी सारियक १७० नर्ष), आकाश (जी.टी.नी.क धानानारिकक ३० ॐयीसात), जीनन सन्ध्या(मनाठी साप्तारिक, डी.डी, मूम्बॐ), धनाजी नाना चौधनी (मनाठी), स्नयम्बन (मनाठी), रिन नहीं करी नहीं(रिन्दी), आरुट (रिन्दी), यात्रा (मनाठी सीनयल), मयूनयड्ड (मनाठी वाल-धानानारिक), रुल्लकअन ॐन २०० ॐ.डी.) (डी.डी.)। २००९ म- रालचड्ड मा (वीठ्ठल वनायल मनाठी ॐकाँकी- सम्पादक सुधा जाशी आ नत्नाकन मगकनी, मनाठी)लल साहित्य अकादमी मैथिली अनूनाद यूनस्कान।



मनमोहन झा



कुमार शैलेन्द्र



रमेश 1961-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार आ कवि। प्रकाशित कृति: समांग, समानांतर, दखल (कथा संग्रह), नागफेनी (गजल संग्रह), संगोर, समवेत स्वरक आगु, कोसी घाटक सभ्यता, पाथर पर दूबि (काव्य संग्रह), प्रतिक्रिया (आलोचनात्मक निबंध)।



मघन प्रसाद 1961-



प्रदीप बिहारी 1963-

जन्म स्थान कन्होली मल्लिक टोल, खजौली, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, उपन्यासकार आ रंगकर्मी। प्रकाशित कृति: गुमकी आ बिहाड़ि, विसूवियस (उपन्यास), औँठीक कमला जयन्तीक कमला, खण्ड-खण्ड जिनगी, सरोकार (कथा संग्रह)। २००७- प्रदीप बिहारी (सरोकार, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



चन्द्रमोहन झा पड़वा



डॉ. सुरेन्द्र लाभ, नेपाल



रोशन जनकपुरी, नेपाल



डॉ. अरविन्द अक्कू 1957-



फूलचन्द्र झा "प्रवीण" 1961-

गाम तुमौल दरभंगा, आयल नवल प्रभात, पाँखुर गाछक छाहरि, हमरा मानक खञ्जन चिड़ैया, वसन्तक बरजनिआ (कविता संग्रह), फूल हाँसल रविरश्मि (कथा संग्रह)।



हरिशंकर नवीन 1962-

डा ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक रचना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पत्थर पर (हिन्दी कहानी), अंगुरी (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।



कुमार मनीष अरविन्द 1964-



बदरी नारायण वर्मा



राजेन्द्र किशोर, नेपाल



श्याम सुन्दर शशि, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पत्र-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम. ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुतो रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आऽ बहुतो रास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रकाशनक अनव ब्युरोमे कार्यरत।



हिमांशु चौधरी, नेपाल

पिता : स्वर्गीय कामश्वनर चौधरी,माताः श्रीमती वद्धावती चौधरी,जन्मः वि स २०२०/६/७ लहान, सिनहा,शिक्षाः स्नातकोत्तर(नेपाली),पेशाः पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति),कृति : की रान सांQ ? (मैथिली कविता संग्रह),विगत दु दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आवद्ध ।



सत्यनारायण महतो



गुननन्दन पाठक



नागेन्द्र झा, धनुषा



अशोक कुमार महतो



धर्मेन्द्र विह्वल, सिनहा, नेपाल 1967-

नक्षा नकौन जिनगी, एक सृष्टि एक कविता, एक समयक बात, धूमिलाएल आकृति सन (मैथिली कविता संग्रह), ग्रामनका उत्कृष्ट नाटकहरू, गानुसाका कथाहरू (मैथिलीसँ नेपाली अनुवाद), मैथिलीक कक्षा 1 सँ 5 आ बाल-साहित्य संदर्भक गीनटा पाठीक सह-लेखक। पत्रकारिताक मूल सिद्धांत (मैथिली, प्रेस), दलित रिपोर्टिंग मैनुअल (नेपाली, प्रेस)।







धीरेन्द्र कुमार झा

निमिष झा, नेपाल

गोपीनाथ (अनलकान्त)

"अन्बिका"क सम्पादन।







आनन्द कुमार झा 1977-

जन्म स्थान: मेंहथ, झंझारपुर; पिता स्व. अवधकांत झा, माता श्रीमती इन्दुकाली देवी, प्रकाशन- "धधाइत नवकी कनियाँक लहास", "हठात् परिवर्तन", "बदलैत समाज", "टाकाक मोल", "कलह" (पाँचू मैथिली नाटक) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)

वनदेवीपुत्र रघुनाथ, नाटककार

बहुश



राम सेवक सिंह



शहीद दुर्गानन्द झा, नेपाल



उदयनाथ झा "अशोक"



कपिलेश्वर राउत

उसरल (विहनि - लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।



कपिलेश्वर साहु



डॉ. शम्भू कुमार सिंह

जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरम्भिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक

ग्राप्ध) गिलका माँमी राग्लयून विश्वविद्यालय, राग्लयून, विहान सँ BET [विहान यान्ना यनीजा (NET क समनुल्य) ह्यान्याना हनु उन्मीर्ण, 1995] �मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्प्पन� विषय यन यी-एव.जी. वर्ष 2008, गिलका माँ. रा.विश्वविद्यालय, राग्लयून, विहान सँ मैथिलीक कगाक ग्रनिष्ठिन यत्र-यत्रिका सरूम कविना, कथा, निवंध आदि समय-समय यन ग्रकाशिन। वर्नमानम गैक्षिक सलाहकान (मैथिली) नाष्ट्रीय अनूवाद मिशन, कह्रीय रानीय राषा संस्थान, मैसून-6 म कार्यनन।



कृष्णचन्द्र यादव, नयाल



शिवकान्न ठाकुन



(शान्राकान्न झा



उमाकान्न झा आ ग्रियंका, मैथिली नंगमंच



श्यामानह ठाकुन



हनिकांन लाल दास, नयाल



शशिनाथ ठाकुन, नयाल



दुर्गानह मंडल

संचयिका, कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह), वह्र ग्रकाशिन।



शिव कुमान झा 1973-

शिव कुमान झा ��टिल्लू��,पिनाक नामः स्व. काली कान्न झा ��बूव��, मानाक नामः स्व. चन्द्रकला दवी,जन्म निथिः 11-

12-1973,शिजा: स्नागक (प्रगिष्ठा),जन्म स्थान: मागृक- मालीयून मा.ठान, जि. - वगुसनाय, मूलग्राम: ग्राम- यत्रालय - कनियन, जिला - समस्तीयून, यिन: 848101,संप्रगि: प्रवंधक, संग्रहस्र,ज. एम. ए. स्पार्स लि.,मन नाउ, विसूयून जमशेदयून - 831 001, अन्य गगिनिधि: नर्ष 1996 सँ नर्ष 2002 धनि निद्यायगि यनिषद समस्तीयूनक सांस्कृगिक ,गगिनधि एनं मैथिलीक प्रचान-प्रसान हेगु डॉ. ननश कुमान निकल आ श्री उदय नानायण चौधनी (नाष्ट्रयगि यूनस्कान प्राप्त शिजक) क नागृत्नम संलग्न। **प्रकाशिग कृगि:** उधप्रस्गा-कनिगा-संग्रह, अंशु-समालाचना।



नाम निलास साहु

मनक मैल, अंकुन- लघुकथा संग्रह, नथक चक्का उलटि चलै वाट (कनिगा/ टनका संग्रह), कर्म विनु जग सुन्ना (दा सन कनिगा/ टनका संग्रह), स्कूलक खिचडी (निहनि/ लघु कथा संग्रह), दुखवचनी (लघु कथा संग्रह) प्रकाशिग।



महाकान्ग ठाकुन



वचश्चन झा, निर्मली

"निवन्ध-निकुञ्ज" प्रकाशिग।



धीनेन्द्र कुमान, निर्मली



चन्द्रशेखन कामगि 1959-

मैथिली कनि। शिजा- एम.ए. (नाजनीगिशास्त्र), यिगा- स्न. यागेन्द्र कामगि , गाम-यास्ट- कनियन, हाया- दूलमास नगन, थाना- नासडा, जिला- समस्तीयून, निहान। संप्रगिप्रखण्ड सहकानिगा प्रसान यदाधिकानी (चनीयट्टी)।



नन्द निलास नाय

"हनदुगिया", "ठाकिक डाला", "हमन चानुधाम" प्रकाशिग।



विनय भूषण

उजना यनवाक खोज (कविता संग्रह)



सुधाकर झा, महोत्तरी , नेपाल

सएसँ बेसी सउक नाटकमे मंचन।



सदरे आलम "गौहर"

ग्राम-पुनसौलिया, थाना-जयनगर, जिला मधुबनी।



डॉ. गुनन किशोर मिश्र "गुनेश"

मैथिली कथा संग्रह- गोवनछ्टा।



दिनकर कुमार

"पूर्वोत्तर मैथिल"क सम्पादन।



डॉ. विनय विश्वबन्धु



रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार

मैथिलीक लिखारी ०क्रुनक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक यहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल �झारूदार�।

"हमरा बिनु जगत सूना छै" आ "गीताञ्जलि झारू" प्रकाशित।



उमेश पासवान

"वर्णित रस" प्रकाशित।



ओम प्रकाश झा

घोघरडीहा (मधुबनी)।

"कियो बूझि नै सकल हमरा" (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह) प्रकाशित।



जगदानन्द झा मनु



अम्बलाल शास्त्री



डॉ अमोल राय

नडिया गुर्कैउ रुमन घनाठीयन (गजल संग्रह), नाह्न काणक नंग (विहनि कथा संग्रह), चानहा- (वाल उपयास), वृथा- (कविता-गीत संग्रह)।



नद्द कुमान मिश्र नद्द



डॉ. नद्द कुमान मिश्र



शिव कुमान प्रसाद



दिलीप कुमान झा



डॉ नानाकान्त झा



अमनकान्त, नयाल



मुनलीधन झा

कविलपुन, दनरंगा। वाल कथा संग्रह "पिलपिलहा गाछ" (2010) प्रकाशित।



कमलधन दास

"मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवन, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध" पाथी प्रकाशित।



श्रीकान्त मण्डल, मैथिली नंगमंच



वचन ठाकुन

गाम: वनौनागंज, मधुवनी। प्रकाशित कृति: वटीक अपमान आ छीननदवी (नाटक), वाप रूल पिपी आ अधिकान



गंगा झा

मैथिली नंगमंचल काकिल मंच, कालकाता। कालकाता आ



नवानानायण मिश्र 1955-

पिता-श्री गाविद मिश्र, माता- श्रीमति अढ़ुला दवी। गाम- कुशमौल,पा.नागदह-वलाह्न, थाया-अनढाढ, जिला-

(नाटक), विसवासघात (नाटक), ऊँच-नीच (नाटक), रॉंट (नाटक); एक दर्जनसँ बेसी नाटक प्रकाशनक प्रतीक्षामे।

ग्राम यवागामिनीक टोलमे मैथिली रंगमंच निर्देशन।

मधुबनी। मैथिली रंगमंचसँ सम्बद्ध "कोकिल मंच" संस्थाक माध्यमसँ।



कमलेश कुमार दास, रंगमंच कलाकार



किशोर केशव, मैथिली रंगमंच



कुमार गगन, मैथिली रंगमंच



अशोक दत्त, जनकपुर



मदन ठाकुर

वरिष्ठ रंगकर्मी, जनकपुरक वरिष्ठ संस्था मिथिला नाट्यकला परिषदक संस्थापक । तीन दशकसँ बेसी समयसँ रंगमंचमे सक्रिय। करीब ३०�४० गोट मंचीय नाटकक सफल प्रस्तुति, २०�२५ गोट सडक नाटकक दर्जनसँ बेसी प्रदर्शनमे अभिनय ।२० गोट टेली-सीरियल आ आधा दर्जन मैथिली फीचर फिल्ममे अभिनय । पुरस्कार: सगरम अन्तर्राष्ट्रिय महोत्सवमे सर्वश्रेष्ठ अभिनेता २०४६ वि.स., उदीय प्रतिभा पुरस्कार (नेपाल सरकार) २०६३ वि.स.।



अरुण कुमार यादव, मैथिली रंगमंच







आशुतोष यादव अरिन्दम

कृष्ण कुमार कश्यप 1949-

जन्म १७ सितम्बर १९४९ ई.। पिता- कवि-उपन्यासकार स्व. उग्रनारायण लाल "सँवलिया"। जनवरी १९६७ ई. मे नवा सत लल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला आधारित जीवन आ शिक्षा पद्धति"क प्रवर्तन आ तकर कार्यान्वयन लल शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ "ज्ञानदीप विकास संस्था"क स्थापना। रचना: शशिबालाक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, मातृ-खण्ड, मिथिला चित्र-शिक्षा, खण्ड-१, मिथिला चित्र-कला, खण्ड-३।

ललित कुमुद



बउआही झा, मिथिला चित्रकला



प्रदीप कुमार ठाकुर

जन्म तिथि -31 दिसम्बर 1977; जन्म स्थान - कहोली, सकरी, मधुबनी ; शिक्षा- सूर्य नारायण हाई स्कूल - नरपतिनगर, बी. एस. सी - महारानी कल्याणी कॉलेज - दरभंगा, डिप्लोमा इन डिजाइन (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन - नयी दिल्ली), चित्रकला �आओर डिजाइन पूर्वानुमानमे विशेष योग्यता, निवास स्थान- दिल्ली, इंडिया; पिता- श्री सत्य नारायण ठाकुर, सकरी - कहोली� ; माता- श्रीमती मालती ठाकुर, सकरी - कहोली । वर्तमानमे अयन एक्सपोर्ट बिजनस ग्रुप)�क नामसँ शुरुआत, पूर्वमे प्राप्त उत्पादन आओर मर्चेंटक प्रमुख कार्यरत।



लाला पंडित, मिथिला मूर्तिकला



राजेन्द्र पंडित, मिथिला मूर्तिकला



गिरीश चन्द्र लाल



नरेन्द्र कुमार झा, पत्रकार



चन्द्र किशोर लाल, यत्रकार, नयाल



उयन्द्र रुगन नागवंशी, नयाल

स७क नाटक।



नमश नंजन, यननाह्, नयाल 1966-

यननाहु, नयालम जन्म । नयालीय कथा-जगनक नवीन मूदा सम्मानित नाम । जनयजवन कथा-दृष्टि आ माह्रक शिल्य । (था७ लिखलनि, मूदा वन-वन चर्चित नइलाह ।



विनीन 0ाकुन

"वाँकी अछि हमान दुधक कर्ज" प्रकाशित।



सुजीन कुमान मा, नयाल

जिद्दी (लघुकथा संग्रह), विउ (लघुकथा-संग्रह), नियार्टन डायनी (नियार्तज), गन्ध (लघु कथा संग्रह), खड़ नीवाली (लघु कथा संग्रह), काह्ली घुनि आउ (वाल लघु-विहनि कथा संग्रह), दुधमनी- (सम्यादन- नयाली आ मैथिलीम)।



सनाज खिला७ी

नयालक यहिल मैथिली नतिया नाटक संचालक



हनांशु नम

जन्म- गुलायड्डी, सुयौल। मास कम्युनिकशनम एम.ए., हिन्दी, अंग्रजी आ मैथिलीक विभिन्न यत्र-यत्रिकाम कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजनान नाड्य शाला याथ-यूस्तक मंतल द्वाना आ0म कडाक लल विज्ञान कथा �जंग� प्रकाशित (2004 ई.), नताशा: मैथिलीक



संगाष मिश्र, नयाल

यासयून (लघुकथा-संग्रह), उदास मान (लघुकथा-संग्रह), एना-कि७ (कविता-संग्रह), अ७ना (संयादन- कविता-संग्रह)।



सुनील कुमान मल्लिक, गायक, जनकयुन, नयाल 1968-

मैथिलीक गायक-सङ्गीतकानक नूयम प्रसिद्ध छथि । मैथिली हाषाक गीतसहम मौलिक तथा सार्थक सङ्गीतक सृजनम हिनक सक्रियता प्रशंसनीय छनि । सुनीलक गायन तथा सङ्गीतम कैसट एलवमसह सहा वाहन हल अछि । लखनदिस हिनक सक्रियता यनिमाधात्मक नूयम कम नहिहँ गुधात्मक दृष्टिएँ हृदयस्यर्शी मानल जाइत अछि । यशासँ विज्ञान-शिक्षक छथि ।

यित्रिल-चित्र-शृंखला (कॉमिक्स) प्रकाशित।



धीरेन्द्र प्रमर्षि, सिरहा, नेपाल 1967-

वि.सं.२०२४ साल रादव १८ गते सिरहा जिलाक गोविन्दपुर-१, बस्तीपुर गाममे जन्म लेनिहार प्रमर्षिक पूर्ण नाम धीरेन्द्र झा छियनि। कान्तिपुरसँ रहला मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुत कर्ता आओ नूआ-धीरेन्द्रक धीरेन्द्रक अवाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत अछि। �पल्लव� मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ �समाज� मैथिली सामाजिक पत्रिकाक सम्पादन।



नवीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नामःस्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नामःस्वर्गीया दया काशी देवी, पैतृक ग्रामःअरेर डीह, मातृकःसिंहिआ खुर्द। वृत्तिःपु र्व आयोगक उप सचिव, दिल्ली प्रदेश महानगरपालिका मजिस्ट्रेट। आब सेवा निवृत। शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस सी. रौतिकी विज्ञानमे प्रतिष्ठा; दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक। प्र काशित कृति : मैथिली:-

१. �रानसँ साँस धनि� (आत्म कथा), २. �प्रसंगवश� (निबंध), ३. �स्वर्ग एतहि अछि� (यात्रा प्रसंग), ४. �रूसाद� (कथा संग्रह) ५. `नमस्ते� (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज (मै थिली उपन्यास) ,८.लजकारन (मैथिली उपन्यास) ,९.सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास) १०.समाधान(निबंध संग्र ह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उ पन्यास)।



कुमार राघवन



अमरेन्द्र यादव, नेपाल



रघुनाथ मुखिया



प्रदीप पुष्प



संदीप कुमार साफी

"वैशाखमे दलानपर" प्रकाशित।



उमेश मंडल

निश्तुकी- कविता संग्रह, मिथिलाक संस्कार गीत, विध- व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन),



चन्द्रमणि

"मिथिलाक वनस्पति स्टाम्प शो मिथिलाक जीव-जन्तु स्टाम्प शो मिथिलाक जिनगी स्टाम्प शो", सगर राति दीप जरय- इतिहास, दृश्य-श्रव्य रचना-रचनाक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)-(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल), हिन्दुस्तानी मुसलमान और हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीरश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल।



स्व. रमाकान्त झा, गायक



मुरलीधर, मैथिली फिल्म निर्देशक



कुंज बिहारी, मैथिली गायक



रामबाबू झा, गायक



वि.पि.उदासी



जितेन्द्र सहयोगी



उदितनारायण फिल्म गायक



प्रकाश झा, फिल्म निर्देशक



कीर्ति आजाद क्रिकेट



श्रीराम झा शतरंज



अभिषेक झा गोल्फ



अशोक कुमार 1981-

साधारण काश्तकारक परिवारमे समस्तीपुर जिलाक माखियारपुर सखवानी गाममे जनमल अशोक कुमार कहिया स्कूल नहि गेलाह।

दिनमे पचास टाका कमनिहान दिल्लीक एकटा गोल्फ क्लावक एहि कैडीकेँ 1994 ई. मे चानिक मिथ्यानाय लगा कए गोल्फ क्लासँ बाहन कए देल गेल। बेह कैडी दस सालक भीतन भानतक नम्बन एक गोल्फन बनि गेल।



नाजेश नंजन, मैथिली स्तिाना प्राज्ञ क्रु



संजय झा

सुल्तानगंज, भागलपुन।
माटाशालाक सी.ई.ओ.।



विश्वश्वन पाठक



विनाद मिश्र

डॉ. विनाद मिश्र सम्प्रति आई आई टी नुडकी, उत्तनाखंडमे अंग्रेजी पढ़बैत छथि आ हिनक नचना‍b अंग्रेजी आ हिंदी मे प्रकाशित भेल छन्हि। एहि वर्ष हिनक कविता संग्रह Silent Steps and Other Poems प्रकाशित भेल छन्हि। एकन अतिनिक्त ई अंग्रेजीमे आलाचनाक उत्तम आठ टा पाथी संपादित कन छथि। हिनक पाथी Communication Skills for Engineers and Scientists वहुत इंजीनियनिंग संस्थानमे पाठ्य पुस्तक नुपमे पढ़ाओल जाइत अछि।



नाजकमल झा, अंग्रेजी लखक, पत्रकान

हिनकन अंग्रेजी उपन्यास "द ब्लू वडसप्रेड" , "इफ यु आन अफ्नेड ऑफ हाईट्स" आ "फायनप्रूफ" प्रकाशित छन्हि। "द ब्लू वडसप्रेड" (१९९९)पन हुनका "कॉमनवेल्थ नाईटर्स प्राईज फॉन वस्ट फर्स्ट वुक- युनशिया" भेटल छन्हि। नाजकमल झा श्री मुनीश्वन झा आ श्रीमती नंजना झाक पुत्र छथि, "आई.आई.टी.खड़गपुन"सँ वी.टक.छथि, आ आई काल्हि दिल्लीमे नहै छथि, जाए डा "इण्डियन एक्सप्रेस" मे एडिटन छथि।



मानस विहानी वर्मा, वैज्ञानिक



फणीश्वर नाथ 'रेणु' मिथिला रत्न 1921-1977



रामधारी सिंह 'दिनकर' मिथिला रत्न 1908-1974



रामवृक्ष बेनीपुरी 1899-1967



डॉ. हरिवंश तरुण 1927-2009

जन्म 21 जून 1927 ई.।
ग्राम- चकसलम, पो.- पटोरी, जिला- समस्तीपुर।
तीन दर्जन सँ बेशी हिन्दी पोथी जाहिमे काव्य-कथा-प्रबन्ध सम्मिलित अछि।



हरिशंकर श्रीवास्तव "शलभ" 1934-



स्व. जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'

हिन्दीक साहित्यकार।



रामेश्वर प्रेम

हिन्दीक नाटककार।



डॉ. नवल किशोर दास "नवल"



सदानन्द झा 1955-



रामाज्ञा शशिधर



गणेश चंचल १९३०-२०११



डॉ. अमरेन्द्र



गोरलाल मनीषी



कुन्दन अमिताभ



शंभु अगेही

जन्म ८ जनवरी १९४१, प्रकाशित कृति: ओसनाएल तीर (कथा-काव्य) १९९८, साँझ (कथा संग्रह)१९९९, गमनी बनिआ (कथा काव्य)२००३, वज्जिका छंद विलास २००१



याद्वान नामावगान अनूप १९२३-१९९९



मजहरुल इमाम १९३०-२०१२



अनूप प्रकाश १९४८-२०१२



अंशुमन पाण्डेय

तिरहुता यूनीकोड आवेदनकर्ता।



दिनेश कुमार मिश्र

मिथिलाक बाढ़िक एक्सपर्ट। मिथिलाक माटा-माटी सन धानयन किताब प्रकाशित। उफन विहान की व्यथा कथा (१९९०), कोसी- उम्र कैद से सजा-ए-मौत तक (१९९२) बंदिनी महानंदा (१९९४), बोया पेड़ बबूल का- बाढ़ नियंत्रण का रहस्य (२०००), बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी (२००४), दुइ नदी और तकनीकी मात- ड्रूब (२००६), , दुइ पाटन के बीच में- कोसी



ओमप्रकाश भारती १९६८-

कोसी नदीक लोक सांस्कृतिक अध्ययन - नदियाँ गाती हैं, बिहार के पारम्परिक नाट्य आ मैथिलीक लोक नाट्य प्रकाशित

नदी की कहानी (२००६) तथा बागमती की सद्गति (२०१०)।



वैदेही सीता



याज्ञवल्क्य पत्नी मैत्रेयी

याज्ञवल्क्यक दू टा पत्नी छलथिह्न पहिल कात्यायनी आ दोसर मैत्रेयी। मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी छलीह। कात्यायनीसँ हुनका तीनटा पुत्र छलन्हि- चन्द्रकान्त, महामेघ आ विजय।



मोतीदाइ

मिथिलाक रजक (धोबि) जातिक लोकदेवता



विहुला

चम्पानगरक विहुला।



गांगो देवी

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता। गांगोदेवीक पूजा अखनो मिथिलाक मलाह लोकनिमे प्रचलित अछि।



रेशमा, कुसुमा, रूपा



मानंगक मोतीसायन



विन्ध्यवासिनी देवी मैथिली लोकगीत 1920 -2006



कामेश्वरी देवी 1922-

मधुबनी जिलाक नवानी गामक। जन्म १९२२ ई. मे अपन मातृक नाहसम भेलनि। पति पं. मदनमोहन झा। बनौलीवासी प्रसिद्ध तान्त्रिक पण्डित केशव मिश्र

हिनक पिता छलथिन। "मिथिला संस्कार गीत" पोथी।



कुसुमलता कर्ण



अणिमा सिंह 1924-

समीक्षिका, अनुवादिका, सम्पादिका। प्रकाशन: मैथिली लोकगीत, वसवश्चन (अनु.), शिशु खेल गीत आदि। लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज, कलकत्ताम पूर्व प्राध्यापिका।



लिली रे 1933-

जन्म: २६ जनवरी, १९३३, पिता: भीमनाथ मिश्र, पति: डॉ. एच. एन. रे, दुर्गागंज, मैथिलीक विशिष्ट कथाकार एवं उपन्यासकार। मरीचिका उपन्यासपर साहित्य अकादमीक १९८२ ई. मे पुरस्कार। मैथिलीमे लगभग दू सय कथा आ पाँच टा उपन्यास प्रकाशित। विपुल बाल साहित्यक सृजन। अनेक रानीय रोमांस कथाक अनुवाद- प्रकाशित। पहिल प्रबोध सम्मान 2004 सँ सम्मानित।



चित्रलेखा देवी 1935-



मोहिनी झा 1937-



डॉ. सावित्री झा



कविता देवी 1942-



प्रमिला झा



शान्ति सुमन 1942-

जन्म 15 सितम्बर 1942, कासिमपुर, सहरसा, बिहार, प्रकाशित कृति, �ओ प्रतीक्षा, पनडुब्बी टूटती, सुलगते पसीने, पसीने के रिश्ते, मौसम हुआ कबीर, समय चेतावनी नहीं देता, तप रहे कचनार, भीतर-भीतर आग, मेघ इन्द्रनील (मैथिली गीत संग्रह), शोध प्रबंध: मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य, उपन्यास: जल झुका हिरना। सम्मान:

साहित्य सेवा सम्मान, कवि रत्न सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान। अध्यापन कार्य।



प्रभावती झा 1945-1999



स्व. शैलजारानी सिंह 1945-1993

शैलजारानी सिंह: जन्म 1 जुलाई, 1945, निधन : 13 जून, 1993, पिता : श्री. प्रबोध नारायण सिंह सम्पादिका : मिथिला दर्शन, विशेष अध्ययन : मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, तथा विज्ञान एवं लोक साहित्य। प्रकाशित कृति : सलामा (आश्चर्य बालुकाक ऊँच नाटकक अनुवाद 1965), प्रेम एक कविता (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विषवृक्ष (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विदुषी (1972), स्वनिका: मैथिली कविता संग्रह (1973), हिन्दी संग्रह।



उषाकिरण खान 1945-

जन्म:२४ अक्टूबर १९४७,कथा एवं उपन्यास लेखनमे प्रख्यात । मैथिली तथा हिन्दी दुनू भाषाक चर्चित लेखिका। प्रकाशित कृति:अनुत्तरित प्रश्न, दूर्वाक्षत, हसीना मंजिल, भामती (उपन्यास) । २०१०-श्रीमति उषाकिरण खान (भामती, उपन्यास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार- मैथिली।



नीरजा रेणु 1945-

जन्म: ११ अक्टूबर १९४७,नाम: कामाख्या देवी,उपनाम:नीरजा रेणु,जन्म स्थान:नवटोल,सनिसवराही । शिक्षा: बी. ए. (आनर्स) एम. ए., पी-एच.डी.,गृहिणी। प्रकाशित रचना : ऋतम्भरा (कविता सि.सि., १९६०) लेखन पत्र पत्रिकादिक, सांस्कृतिक पत्रिकामे प्रकाश । मैथिली कथा धारा साहित्य अकादमी नई दिल्लीसँ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक पहिल टा प्रतिनिधि कथाक सम्पादन । सृजन धारा पियासल कथा संग्रह,जागल उर्ध्व ल कविता संग्रह,मृगतृष्णा कथा संग्रह,प्रतिध्वनि हिन्दी कथा संग्रह,१९६० सँ आइधरि सएसँ अधिक कथा, कविता, शोधनिबन्ध, ललितनिबन्ध,आदि



वीणा ठाकुर 1954-

जन्म- रतनीपुर, पण्डौल (मधुबनी)। पिता श्री श्रीमोहन ठाकुर। प्रकाशित कृति: मैथिली नाटककाव्य रचना, इतिहास- दर्पण (समीक्षा), विद्यापतिक उत्स (समालोचना), भामती (उपन्यास)



ज्ञानसुधा मिश्र

पटनाक उच्चतम न्यायालयक वरिष्ठ महिला न्यायाधीश आ पहिल मैथिलानी।

अनेक पत्र-पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थमे प्रकाशित। मैथिलीक अतिरिक्त किछु रचना हिन्दी तथा अंग्रेजीमे सेहो। २००३- नीरजा रेणु (मृगतृष्णा, कथा)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



जस्टिस मृदुला मिश्र



नीरा कर्ण 1946-

जन्म 3 नवम्बर 1946, ग्राम- पटानी, पो.पंचगछिया, जिला- सहरसा। सदस्य, मैथिली साहित्य अकादमी परामर्शदातृ समिति 1987-1993, सदस्य, भाषा परामर्शदातृ समिति (मैथिली), भारतीय ज्ञानपीठ। अवकाशप्राप्त विश्वविद्यालय आचार्य आ अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय। **प्रकाशित कृति**- अर्गला, भावनाक अस्थिपंजर (मैथिली काव्य संग्रह), शंखनाद, पुष्पमन समर्पण, अनुबन्ध (हिन्दी काव्य संग्रह)। प्रकाश्य: सप्तपदी (मैथिली निबन्ध संग्रह), चारित्रिक पृष्ठभूमिमे मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा किछु कहैत अछि (मैथिली आलोचना); जिन्दगीनामा (हिन्दी काव्य संग्रह), क्रमशः (हिन्दी आलोचना)।



शेफालिका वर्मा 1943-

जन्म:९ अगस्त, १९४३,जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर । शिक्षा: एम., पी-एच.डी. (पटना विश्वविद्यालय), ए. एन. कालेज, पटना मे हिन्दीक प्राध्यापिका पदसँ सेवानिवृत्त । नारी मनक ग्रन्थिकेँ खोलि:करुण रससँ भरल अधिकतर रचना। प्रकाशित रचना:मधुमती राग, विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकाश (लघुकथा संग्रह), यायावरी (यात्रा-वृत्तान्त), भावाञ्जलि (काव्य-प्रगीत) , किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथा साहित्य अकादमी पुरस्कार) । अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)आखर-आखर प्रीत, नागफांस (उपन्यास)। २००४ ई.- डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा, पटना;यात्री-चेतना पुरस्कार।



नीता झा 1953-

जन्म : २१-०१-१९५३,व्यवसाय:प्राध्यापिका । लेखन पर समाजक परम्परा तथा आधुनिकताक संक्रमण सँ उत्पन्न विसंगतिक प्रभाव। प्रकाशित कृति : हस्ताक्षर, कथा संग्रह १९८४, कथानवनीत १९९०,सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य शोध समीक्षा



आशा मिश्र 1950-

जन्म:६-१-१९५० ई.,प्रकाशित कथा मे मैथिलीक संग हिन्दी मे सेहो । सरसँ पैघ विजय मैथिली कथा संग्रह ।



डॉ. सुनीति झा

। बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)।



प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' 1948-

जन्मस्थान:नदिका,माता:श्रीमती वृद्धा देवी,पिता:पं. दीनानाथ झा,शिक्षा: एम.ए., बी.एड.,प्रसिद्ध अभिनेत्री दु सयसँ बेशी नाटकमे भाग लेलनि। रंगमा (नाट्यमंच) केर रूपपूर्ण उपाध्यक्षा, पत्रिकाक सम्पादन, कथालेखन आदिमे कुशल। �अभिनय� आदि अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।



डॉ. [illegible] झा 1957



मेनका मल्लिक 1966-



शारदा सिन्हा मैथिली लोकगीत 1953-



लालपरी देवी



शकुन्तला चौधरी



गोदावरी दत्ता, मिथिला चित्रकला



उषा वर्मा 1948-



कमला चौधरी 1953-

कृति- मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, प्रकाशनाधीन: बाट बिलायल पानि (कथा संग्रह), पिया मधुमास (कविता संग्रह), आशापूर्णा देवीक बंगला लघु उपन्यास **मन मंजूषा**क मैथिली

अनुवाद। मुजङ्कनयूनसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यिक यत्रिका स्वाँगीक सम्पादन (१९८४-८७)।



सीता दवी, मिथिला चित्रकला



सनस्मी चौधनी, जनकयून



डॉ. अनुश्रा चौधनी



निरा नानी 1959-

मैथिली क 3 साहित्य अकादमी यूनस्कान निजत्रा लखकक 4 गोट किताव "कन्यादान" (हनिमाहन मा), "नाजा याखन मं किननी मछलियां" (प्रराास कुमान चाऊधनी), "विल टलन की तायनी" व "यटाऊय" (लिली न) हिदीम अनुदित छथि। 2 गोट लाककथाक यूस्तक "मिथिला की लाक कथाऐं" व "गानू मा क किस्स"। मैथिली कथा संग्रह "खाहसँ निकसैत"।



श्रासना वडूम 1963-

जन्मतिथि: ७७ दिसम्बन, १९६३,जन्मस्थान : मनूआना, सिधिया खुर्द, समस्तीयून,यिता : श्री मार्कण्डय प्रवासी,माता: श्रीमती सुशीला मा,अध्यायन । सुयनिचित कवयित्री, कथाकान । प्रकाशित कृति: वानसाञ्जी (कविता संग्रह), मिमिनकाना (कथासंग्रह)।



सुस्मिता याठक 1962-

जन्म: सुयौल, विहान । यनिचित कविता संग्रह प्रकाशित । कथावाचक, कथसंग्रह प्रकाशनाधीन । नाजनीति शास्त्रम एम.ए.। संगीत, यंटिंगम रुचि । मैथिलीक याथी यत्रिका यन अनक नखाचित्र प्रकाशित । समकालीन जीवन, समय, आ शकन स्यंदनक कवयित्री । अनक रावाम नवनाक अनुवाद प्रकाशित।



उर्मिला दवी, मिथिला चित्रकला



यमूना दवी, मिथिला चित्रकला



यशादा दवी, मिथिला चित्रकला



नमा मा, सम्पादक मिथिला दर्पण



यन्ना मा

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)।



सुधा कर्ण



नूतन दास

सम्पादिका, मिथिलांगन



नाधिका मा, अंग्रेजी लखिका

हिनकन अंग्रेजी उपन्यास "स्मल" आ "लैटर्स □न दयन हॉर्स" आ अंग्रेजी लघु कथा संग्रह "द एलीफेन्ट एण्ड द मारूति" प्रकाशित अछि। उपन्यास "स्मल" लल हिनका "क्रेन्च प्रिक्स गुएनलन" पुनस्कान भटल छहि आ ई पाँच सालक भीतन अनुदित भल अछि। नाधिका "एमहर्स्ट कॉलज"सँ "एन्थ्रोपालाजी" पढ़न छथि आ "शिकागो विश्वविद्यालय"सँ नाजनीति विज्ञानमे मास्टर्स डिग्री लेन छथि। ओ "हिन्दूस्तान टाइम्स" आ "बिजनस वर्ल्ड"मे काज कन छथि आ संगमे "नाजीव गांधी फाउन्डेशन, दिल्ली" मे सह, जाए ओ आतंकवादसँ पीड़ित बच्चा सभ लल सम्पर्क कार्यक्रमक प्रानम्भ कन नहथि। आइ काल्हि ओ अपन पति आ बच्चीक संग टाक्यामे नहै छथि।



स्वयंप्रभा मा 1970-



नुया धीनू 1973-

नुया धीनू- जन्मस्थान- मयनाकतनी, सफनी, श्रीमती पूनम मा आ श्री अनुधकुमान माक पुत्री। स्थायी पता- अञ्चल-



नंजना मा, विद्यापति संगीत गायिका



नश्मि दत्त, गायिका, जनकपुन

सगरमाथा, जिल्ला- सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-कान्हुली कानए, माटिसँ सिनेह (कविता), रगता वळक दश-प्रसंग (कनक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रेमर्षिसँ मैथिलीमे सह-अनुवाद, सङ्गीतसम्बन्धी कृति- राष्ट्रियगान, रान, नटक नजन, बाना, प्रियतम हमर कमौआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम रस गतघुस्कीम, सुनजित मातृप्र गीतमाला, सुखक सनसा। सम्पादन-पल्लव, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, सम्पादन- सहयोग, हमर मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ७ आ कक्षा 9-10 क ऐच्छिक मैथिली विषय पाठ्यपुस्तकक भाषा सम्पादन)।



कामिनी कामायनी



मुन्नी झा युवा रचनाकार



कामिनी 1978- युवा कवियित्री



रुक्साना सिद्दीकी



कल्पना मिश्र, मैथिली रंगमंच



श्रुति झा,
, मैथिली रंगमंच



किरण झा, मैथिली रंगमंच



प्रियंका झा, मैथिली रंगमंच



मृदु कर्ण, मैथिली रंगमंच



ज्योति वत्स, रंगमंच



नेहा वर्मा, रंगमंच



सविता



अनुप्रिया



मृदुला प्रधान



अनुभा मिश्र, महिला बॉक्सिंग



राखी दास, मिथिला चित्रकला



बनारसी यादव,मिथिला चित्रकला, धनुषा, नेपाल



देवकला देवी कर्ण,मिथिला चित्र कला, नेपाल



मदनकला कर्ण,मिथिला चित्रकला, नेपाल



महासुन्दरी देवी,मिथिला चित्रकला



निर्मला झा, मिथिला चित्रकला, नेपाल







रूला साह, मिथिला चित्रकला, मह्ब फ्नी, नयाल

नजनी यल्लनी

संगीता कूमानी, मैथिली रूतना प्राजक्त



निहुथ्नी दास



ग़ौनी सन



सीमा मा



वाधी मिथ्र, कवियित्री १९७३-१९९६

काहूलख, मधूवनी। जन्मस्थान गिलाठी, नयाल।



मौसमी वनर्जी, कवियित्री



ग़ैल मा



शान्ति रुवी



शशिवाला

यिना श्री उग्र नानायध लाल, यनि श्री उमश कूमान कण्ठ (विसरुथ)। शिना कथ्यय आ कृष्ण कूमान कथ्यक सरुयागसँ "रानगी निकास संस्था"क स्थायना। नचना: कृष्ण कूमान कथ्यक संग "मघदूत" आ "गीन-ग़ोनिन्द"क मैथिली अनूनाद, माछ-राग, मिथिला चित्र-शिजा, राग-१, मिथिला चित्र-कान, राग-३।



मुन्नी कामन

सुखल मन गनसल आँखि (कविना संग्रह)।



प्रज्ञा झा

मिथिला लोक कला



अंशुमाला

मैथिली लोकगीत।



श्वेता झा चौधरी, चित्रकार

गाम सरिसब-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स। कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप)। कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि वसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटल बूलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग। प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉनफ्लुएन्स

कम्यूनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को ; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक □ह इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक।

हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ डान्स-डान्स।



श्वेता झा

मिथिला चित्रकला, सम्प्रति सिंगापुरमे निवास।



रानी झा



मणी कर्ण

मिथिला चित्रकला







निक्की प्रियदर्शिनी



नीलम चौधरी, कथक नृत्यांगना



पूनम मंडल

प्रियंका झाक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन।



डॉ. ललिता झा १९३१

जन्म शनिवार, दरभंगामे। "मैथिलीक रोजन सम्बन्धी शब्दावली" प्रकाशित"।

प्रज्ञा झा



रूना मल्लिक

पिता स्व. शिवनन्दन मल्लिक, ग्राम- महिसानि, दरभंगा। पति श्री कमलेश
कुमार, रानहुली, दरभंगा।



प्रियंका झा

पूनम मंडलक संग मैथिली न्यूज पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन।



आनन्दी कुमारी १९६७-

"मैथिली मुक्तक काव्यम नानी" प्रकाशित।

डॉ. नलिनी चौधरी



गुंजन कर्ण

राँटी मधुबनी, सम्प्रति यू.के.मे रहै छथि। www.madhubaniarts.co.uk पर हुनकर कलाकृति देखि सकै छी।



स्मृति नानायक्क



मीना झा

ग्रन्थ कौसनक समग्रायन विदेह मे मीना झा कान एक टा लघु कथा प्रकाशित रहल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ग्रन्थ कौसन पर लिखल गेल। द्वितीय स हा गाधनि ओहि विषययन कथा नहि लिखल गेल छल।



अनूयमा प्रियदर्शिनी

यगि डॉ. नान कर्ण, गाम- उजान (वउकागाम), या. लाहना नाउ, जिला दनरंगा। सम्प्रगि लाजियाना (संयूक्त नाग्र अमनिकाम), शिजा- एम.एस.सी. (जंगु निस्नान), ल.ना. मिथिला नि.नि., दनरंगा; वी.एस.सी. वी.आन. अम्बेडकन नि.नि. मुजफ्फनयूनसँ, हॉवी, मिथिला चित्रकला, कमयूटनाल्ड्ज चित्रकला, ललिग कला। उयलब्धि: अखिल रानगीय कला आ दस्तकानी प्रगियागिगाक यूनस्कान 1995 म; संस्कान रानगी राव नृत्य प्रगियागिगा 1989 म सहराणी।



आनाधना मल्लिक

मैथिली नंगमंच।



शिखा

मैथिली नंगमंच।



प्रीगि ठाकुन

गाम- जगेली, राया गानानगन, यूर्णियाँ। मैथिली वाल साहित्यम "गानू झा आ आन चित्र कथा २००८", "मैथिली चित्रकथा २००९" आ "मिथिलाक लाकदनगा २०१०", निद्यायगिक यूनुष यनीजा (वाल साहित्य) २०१४ प्रकाशिग।



अनूयमा झा

प्रांसयनंसी इंटननेशनल, राना।



निनीगा मल्लिक







रजनी मिश्र

अनामिका राज

आरती झा



प्रियंवदा राना झा



डॉ अपर्णा



शान्ति लक्ष्मी चौधरी

ग्राम गोविन्दपुर, जिला सुपौल निवासी आ बाजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा मे कार्यरत पुस्तकालयाध्यक्ष श्री श्यामानन्द झाक ज्येष्ठ सुपुत्री, आंडान ग्राम महिषी (पुनर्वास आनापट्टी), जिला सहरसा निवासी आ दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनामिक्स सँ डबल अध्ययक आ समाजशास्त्री श्री अजय कुमार चौधरीक अर्धांगिनी छथि। प्राणीशास्त्र सँ स्नातकोत्तर तहिना शिक्षाशास्त्रक स्नातक शिक्षार्थी आ एकटा समाजशास्त्री सँ सान्निध्यक चलते ग्राम जीवनक सामाजिक विषय-वस्तु आ खास कऽ महिलाजन्य सामाजिक समस्या आ प्रघटनाम हिनक विशेष अभिरुचि स्वाभाविक।



अनुपम रैना



डॉ चित्रलेखा



डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र

पिता डॉ शिव कुमार झा, गाम नाटी, सासुर- गजहारा। मेडिकल शिक्षा ज. ज. हॉस्पीटल/ ग्रान्ट हॉस्पीटलसँ सम्पन्न कय स्त्री-रोग विशेषज्ञ। मुम्बइसँ १९८०-८२ मे प्रकाशित हल्लवला मैथिली पत्रिका "विदेह"क पति डॉ मणिकान्त मिश्र (निर्माता- मैथिली फिल्म-

			आउ पिया हमर नगरी) संग सम्पादन।

